IUC ACADEMY

INCLUSIVE UNIVERSAL CAREERS ACADEMY

Learn. Prepare. Progress. • www.iucacademy.com

IUC अकादमी नोट्स

संपूर्ण
पाठ्यक्रम • विस्तृत व्याख्या • तुलनात्मक सारणियाँ • अभ्यास प्रश्न

संपूर्ण सामान्य हिंदी एवं व्याकरण अध्ययन नोट्स

COMPLETE GENERAL HINDI, GRAMMAR & LITERATURE Study Notes

UPPSC RO/ARO, State PCS, UP/Bihar/MP Police SI & Constable, SSC GD, CTET/TET, DSSSB, Lekhpal, VDO, B.Ed, CUET एवं IBPS RRB के लिए भाषा विकास, वर्णमाला, संधि, समास, शब्द-सामर्थ्य, पद-विचार, रस-छंद-अलंकार एवं हिंदी साहित्य का संपूर्ण ग्रंथ

विषयवार परीक्षा प्रश्न भार विभाजन (%)

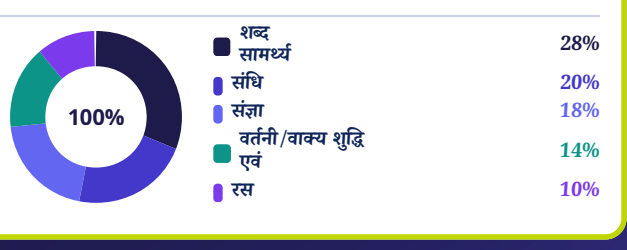

विगत वर्षों में पूछे गए प्रश्नों का रुझान

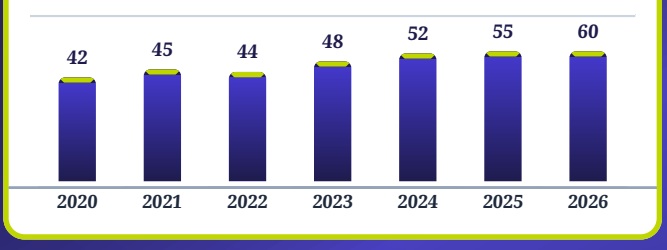

लक्षित प्रतियोगी, प्रवेश एवं विभागीय परीक्षाएँ (Target Exams Coverage)

UPPSC RO/ARO • State PCS • UP/Bihar/MP Police SI & Constable • SSC GD • CTET/UPTET • Lekhpal • VDO • B.Ed • IBPS RRB

इस पुस्तक के प्रमुख खंड एवं परीक्षा प्रश्न भार (%)

- शब्द सामर्थ्य (पर्यायवाची, विलोम, तत्सम-तद्भव, एक शब्द) (28%)
- संधि, समास, उपसर्ग एवं प्रत्यय (20%)
- संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, कारक व वाच्य (18%)
- वर्तनी/वाक्य शुद्धि एवं मुहावरे-लोकोक्तियाँ (14%)
- रस, छंद एवं अलंकार (10%)
- हिंदी भाषा का विकास, बोलियाँ एवं साहित्य (10%)

संपूर्ण पाठ्यक्रम
NCERT एवं मानक स्रोत

तुलनात्मक सारणियाँ
प्रवाह आरेख व चार्ट

स्मृति सूत्र
त्वरित रिवीजन बिंदु

अभ्यास प्रश्न
व्याख्या सहित हल

आमुख, परीक्षा भार विश्लेषण एवं अध्ययन रणनीति — संपूर्ण सामान्य हिंदी एवं व्याकरण अध्ययन नोट्स

IUC Academy (Inclusive Universal Careers Academy | www.iucacademy.com) • आधिकारिक अध्ययन नोट्स

प्रिय अभ्यर्थियों,

अखिल भारतीय प्रतियोगी परीक्षाओं, प्रवेश परीक्षाओं एवं विभागीय पदोन्नति परीक्षाओं के नवीनतम पैटर्न में अवधारणात्मक स्पष्टता और सटीक तथ्यों का समन्वय अत्यंत आवश्यक है। इसी उद्देश्य से **IUC Academy (www.iucacademy.com)** द्वारा इन विस्तृत अध्ययन नोट्स का संकलन किया गया है। इसमें प्रत्येक अध्याय के साथ **तुलनात्मक सारणियाँ, प्रवाह आरेख, महत्वपूर्ण सूत्र, 'क्या आप जानते हैं?' बॉक्स, 'परीक्षा सतर्कता (सामान्य गलतियाँ)', स्मृति सूत्र (Memory Tricks)** और **व्याख्या सहित हल प्रश्न** दिए गए हैं ताकि आपको पढ़ने और याद रखने में पूर्ण सुगमता रहे।

कठिनाई स्तर के अनुसार लक्ष्य सटीकता एवं कट-ऑफ (%)



नियमित रिवीजन (1-3-7-21 दिन नियम) एवं स्मृति धारण ग्राफ

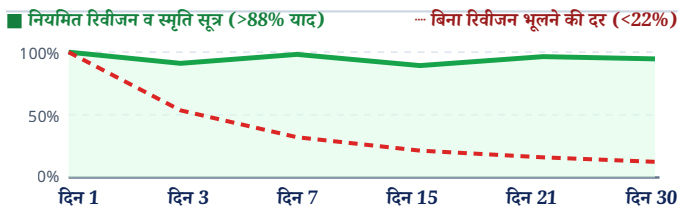

अध्यायवार एवं खंडवार प्रश्न भार सूचकांक (Topic-wise Weightage %)



प्रामाणिक पाठ्यक्रम एवं आधिकारिक संदर्भ स्रोत (Verified Official Sources)

- भारतीय संविधान (अनुच्छेद 343–351) (https://www.legislative.gov.in/constitution-of-india)
- UP Police Hindi Syllabus (https://uppbpb.gov.in/)
- IUC Academy UPPSC Syllabus (https://uppsc.up.nic.in/)
- NCERT हिंदी पाठ्यपुस्तकें (https://ncert.nic.in/textbook.php)

विस्तृत विषय-सूची एवं अध्याय संरचना (Table of Contents)

संपूर्ण सामान्य हिंदी एवं व्याकरण अध्ययन नोट्स • संपूर्ण अध्याय, तुलनात्मक सारणियाँ, अभ्यास प्रश्न एवं त्वरित रिवीजन

1. अध्याय 1: हिंदी भाषा का विकास, उपभाषाएँ, बोलियाँ एवं संवैधानिक स्थिति

- 1.1 विस्तृत सैद्धांतिक व्याख्या

2. अध्याय 2: वर्णमाला एवं ध्वनि तंत्र (Phonetics & Alphabet System)

- 2.1 विस्तृत सैद्धांतिक व्याख्या

3. अध्याय 3: संधि एवं समास (Sandhi & Compound Words)

- 3.1 विस्तृत सैद्धांतिक व्याख्या

4. अध्याय 4: शब्द भेद, तत्सम-तद्भव, देशज-विदेशज, उपसर्ग एवं प्रत्यय

- 4.1 विस्तृत सैद्धांतिक व्याख्या

5. अध्याय 5: शब्द सामर्थ्य — पर्यायवाची, विलोम, अनेकार्थी, समश्रुत भिन्नार्थक एवं वाक्यांश के लिए एक शब्द

- 5.1 विस्तृत सैद्धांतिक व्याख्या

6. अध्याय 6: पद-विचार — संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, काल, वाच्य, कारक एवं अव्यय

- 6.1 विस्तृत सैद्धांतिक व्याख्या

7. अध्याय 7: रस, छंद, अलंकार, मुहावरे-लोकोक्तियाँ एवं वर्तनी/वाक्य शुद्धि

- 7.1 विस्तृत सैद्धांतिक व्याख्या

8. अध्याय 8: हिंदी साहित्य का इतिहास, प्रमुख रचनाएँ, वाद एवं साहित्यिक पुरस्कार

- 8.1 विस्तृत सैद्धांतिक व्याख्या

9. अध्याय 9: पर्यायवाची, विलोम, तत्सम-तद्भव, अनेकार्थी एवं वाक्यांश के लिए एक शब्द — मास्टर शब्द-सामर्थ्य कोष

- 9.1 परीक्षा में सर्वाधिक पूछे जाने वाले 50 उच्च-प्राथमिकता पर्यायवाची शब्द समूह (RO/ARO, PCS, Police, TET)
- 9.2 वाक्यांश के लिए एक शब्द (One Word Substitution) एवं समश्रुत भिन्नार्थक शब्द

10. अध्याय 10: वाक्य एवं वर्तनी शुद्धि, मुहावरे-लोकोक्तियाँ तथा संवैधानिक राजभाषा प्रावधान

- 10.1 परीक्षा में बार-बार पूछी जाने वाली शीर्ष 40 अशुद्ध बनाम शुद्ध वर्तनी सारणी
- 10.2 हिंदी भाषा का संवैधानिक विकास (अनुच्छेद 343–351), विश्व हिंदी सम्मेलन एवं प्रमुख साहित्य अकादमी पुरस्कार
- अध्याय 1: हिंदी वर्णमाला, उच्चारण स्थान एवं प्रयत्न भेद (स्वर, स्पर्श, अन्तःस्थ, ऊष्म एवं संयुक्त व्यंजन का वैज्ञानिक वर्गीकरण)
- अध्याय 2: संधि मास्टरक्लास (स्वर, व्यंजन एवं विसर्ग संधि के सूत्र, पहचान चिह्न एवं अपवाद नियम)
- अध्याय 3: समास संरचना एवं विग्रह विज्ञान (अव्ययीभाव, तत्पुरुष, कर्मधारय, द्विगु, द्वंद्व एवं बहुव्रीहि का सूक्ष्म अंतर)
- अध्याय 4: शब्द-भेद, व्युत्पत्ति एवं रूपांतरण (तत्सम, तद्भव, देशज, विदेशज, संकर तथा रूढ़, यौगिक व योगरूढ़ शब्द)
- अध्याय 5: संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया एवं अव्यय (पद-परिचय एवं विकारी-अविकारी शब्दों का व्याकरणिक विश्लेषण)
- अध्याय 6: कारक, विभक्ति चिह्न (परसर्ग), लिंग, वचन, काल एवं वाच्य (कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य एवं भाववाच्य परिवर्तन नियम)
- अध्याय 7: उपसर्ग, प्रत्यय एवं शब्दकोश वर्ण-अनुक्रम (क्ष, त्र, ज्ञ एवं अं/अँ के शब्दकोशीय स्थान निर्धारण का नियम)
- अध्याय 8: रस, छंद एवं अलंकार (काव्यशास्त्रीय तत्व, स्थायी भाव, मात्रा गणना सूत्र एवं शब्दालंकार-अर्थालंकार पहचान)
- अध्याय 9: शब्द-संपदा एवं वाक्य शुद्धि (पर्यायवाची, विलोम, अनेकार्थी, समश्रुत भिन्नार्थक, वाक्यांश के लिए एक शब्द एवं वर्तनी शुद्धि)
- अध्याय 10: संवैधानिक राजभाषा प्रावधान (अनुच्छेद 343–351), राजभाषा विंग, कार्यालयी पत्र-लेखन एवं जनसंचार शब्दावली

• परिशिष्ट 1: कार्यालयी पत्राचार के 10 प्रमुख प्रारूपों की तुलनात्मक पहचान सारणी (बुक 11 LDCE/PCS एवं बुक 12 हिंदी पत्राचार हेतु)
• परिशिष्ट 2: संधि, समास, रस, छंद एवं अलंकार की 50-बिंदु त्वरित पहचान चेकलिस्ट (बुक 12 प्रैक्टिकल ड्रिल)
• परिशिष्ट 3: अखिल भारतीय परीक्षाओं के लिए आधिकारिक सरकारी पोर्टल निर्देशिका (100% सत्यापित स्रोत)
• परिशिष्ट 4: उच्च-स्तरीय व्याकरण एवं परीक्षा-प्रणाली निदानात्मक प्रश्नोत्तर बैंक (बुक 11 व बुक 12 संयुक्त अभ्यास)

11. अध्याय 1: हिंदी वर्णमाला का वैज्ञानिक एवं ध्वनि-शास्त्रीय विश्लेषण (Scientific Analysis of Hindi Alphabet)

• 1.1 हिंदी वर्णमाला के 52 वर्णों का मानक वर्गीकरण
• 1.2 स्वरों का बहु-आयामी वर्गीकरण (Multi-Dimensional Classification of Vowels)
• 1.3 व्यंजनों का उच्चारण स्थान, घोषत्व एवं प्राणत्व मैट्रिक्स (Complete Consonant Matrix)

12. अध्याय 2: संधि के सभी भेद, सूत्र एवं दुर्लभ अपवाद (Complete Sandhi Rules & Critical Exceptions)

• 2.1 स्वर संधि के 5 भेदों का सूत्रबद्ध चार्ट
• 2.2 स्वर संधि के अति-महत्वपूर्ण अपवाद (Most Asked Sandhi Exceptions in UPPSC / SI / TET)
• 2.3 व्यंजन संधि के 10 स्वर्णिम नियम (Golden Rules of Vyanjan Sandhi)
• 2.4 विसर्ग संधि के 7 प्रमुख नियम एवं अपवाद

13. अध्याय 3: समास — 6 मुख्य भेद, उपभेद एवं सूक्ष्म विभेदक नियम (Complete Samas Analysis)

• 3.1 समास के 6 भेदों की मास्टर तालिका

14. अध्याय 4: रस, छंद एवं अलंकार का गहन सोदाहरण विश्लेषण (Rasa, Chhand & Alankar Master Guide)

• 4.1 रस संप्रदाय — 11 रस एवं उनके स्थायी भाव
• 4.2 छंद शास्त्र — प्रमुख मात्रिक एवं वर्णिक छंदों की पहचान सारणी
• 4.3 अलंकार — शब्दालंकार एवं अर्थालंकार का तुलनात्मक चार्ट

15. अध्याय 5: उच्च-स्तरीय शब्द-संपदा — 100+ कठिन पर्यायवाची, विलोम, तत्सम-तद्भव एवं वर्तनी शुद्धि

• 5.1 परीक्षाओं में सर्वाधिक पूछे जाने वाले 105 क्लिष्ट पर्यायवाची समूह (105+ Master Synonym Groups)
• 5.2 परीक्षा में पूछे जाने वाले 105 कठिन विलोम युग्म (105+ High-Yield Antonym Pairs)
• 5.3 परीक्षा में सर्वाधिक पूछे जाने वाले 105 तत्सम-तद्भव शब्द युग्म (105+ Tatsam-Tadbhav Pairs)
• 5.4 वर्तनी शुद्धि मास्टर-चार्ट — 105 सर्वाधिक भ्रामक शब्दों का शुद्ध रूप (105+ Spelling Correction Master List)

16. अध्याय 6: हिंदी साहित्य का काल-विभाजन, प्रमुख रचनाएँ एवं साहित्यिक पुरस्कार (Hindi Literature & Awards)

• 6.1 आचार्य रामचंद्र शुक्ल का काल-विभाजन एवं नामकरण (1929 ई. — 'हिंदी साहित्य का इतिहास')
• 6.2 हिंदी साहित्य को प्राप्त ज्ञानपीठ एवं प्रमुख साहित्य अकादमी पुरस्कार सारणी

17. अध्याय 7: स्मृति ट्रिक्स एवं परीक्षा जाल (Memory Tricks & Exam Trap Tables — Book 12)

• 7.2 परीक्षा जाल सारणी (Exam Trap Comparison Table — Book 12)

18. अध्याय 8: वाक्यांश के लिए एक शब्द, विशेष्य-विशेषण एवं मुहावरे-लोकोक्तियाँ (100+ High-Yield Lists)

• 8.1 अनेक शब्दों के लिए एक शब्द — 105 परीक्षा-उपयोगी वाक्यांश (105+ One-Word Substitutions)
• 8.2 विशेष्य एवं विशेषण रूपांतरण सारणी (UPPSC RO/ARO स्पेशल)

19. अध्याय 9: बुक 12 — 60 वास्तविक परीक्षा-स्तरीय बहुविकल्पीय प्रश्न (60 Authentic Exam-Level MCQs)

यह अध्ययन सामग्री उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग (UPPSC RO/ARO, PCS), उत्तर प्रदेश पुलिस भर्ती (SI एवं Constable), बिहार/मध्य प्रदेश/राजस्थान पुलिस, कर्मचारी चयन आयोग (SSC GD), सीटीईटी/टीईटी, DSSSB, बीएड प्रवेश परीक्षा, सीयूईटी, लेखपाल, ग्राम विकास अधिकारी (VDO) तथा ग्रामीण बैंक (IBPS RRB) के नवीनतम पाठ्यक्रम एवं भारतीय संविधान के राजभाषा प्रावधानों पर आधारित है।

अध्याय 1: हिंदी भाषा का विकास, उपभाषाएँ, बोलियाँ एवं संवैधानिक स्थिति

1.1 विस्तृत सैद्धांतिक व्याख्या

• **भाषा की व्युत्पत्ति एवं स्वरूप:** 'भाषा' शब्द संस्कृत की **'भाष्'** धातु से निर्मित है, जिसका शाब्दिक अर्थ है— 'वाणी को व्यक्त करना' या 'बोलना'। हिंदी विश्व की लगभग 3,000 भाषाओं में से एक प्रमुख भाषा है। आकृति या रूप (Morphology) के आधार पर हिंदी **'वियोजात्मक या विश्लिष्ट' (Analytic)** भाषा है (क्योंकि इसमें कारक चिह्न या परसर्ग शब्दों से अलग लिखे जाते हैं, जैसे— राम ने, जबकि संस्कृत संयोगात्मक भाषा है— रामेण)। भाषा-परिवार के आधार पर हिंदी **'भारोपीय' (Indo-European)** परिवार की सबसे प्रमुख शाखा 'भारतीय-ईरानी' (Indo-Iranian) के अंतर्गत 'भारतीय-आर्य उपशाखा' (Indo-Aryan) की भाषा है। भारत में कुल 4 प्रमुख भाषा-परिवार पाए जाते हैं: भारोपीय (73%), द्रविड़ (25%), ऑस्ट्रिक/आग्नेय (1.3%) और चीनी-तिब्बती (0.7%)।

• **भारतीय आर्यभाषा का काल-विभाजन एवं क्रमिक विकास:** भारतीय आर्यभाषा के इतिहास को तीन प्रमुख कालखंडों में विभाजित किया जाता है:

1. **प्राचीन भारतीय आर्यभाषा काल (1500 ई.पू. से 500 ई.पू. तक):** इसमें **वैदिक संस्कृत** (छंदस— जिसमें चारों वेद, ब्राह्मण ग्रंथ एवं उपनिषद रचे गए) और **लौकिक संस्कृत** (पाणिनि के 'अष्टाध्यायी' द्वारा नियमबद्ध भाषा, जिसमें रामायण, महाभारत एवं कालिदास के ग्रंथ लिखे गए) आती हैं।

2. **मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषा काल (500 ई.पू. से 1000 ई. तक):** यह काल तीन चरणों में विकसित हुआ:

• **प्रथम प्राकृत काल (पालि - 500 ई.पू. से 1 ई. तक):** इसे भारत की **'प्रथम देशभाषा'** कहा जाता है। भगवान बुद्ध के समस्त उपदेश एवं बौद्ध धर्म का 'त्रिपिटक' (सुत्त, विनय, अभिधम्म) साहित्य पालि भाषा में ही संकलित है।

• **द्वितीय प्राकृत काल (प्राकृत - 1 ई. से 500 ई. तक):** भगवान महावीर के उपदेश और जैन आगम साहित्य प्राकृत में रचे गए। इसके प्रमुख भेद शौरसेनी प्राकृत, मागधी प्राकृत, अर्धमागधी प्राकृत और महाराष्ट्री प्राकृत थे।

• **तृतीय प्राकृत काल (अपभ्रंश एवं अवहट्ठ - 500 ई. से 1000 ई. तक):** 'अपभ्रंश' का शाब्दिक अर्थ है— 'बिगड़ा हुआ' या 'गिरा हुआ रूप'। आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार अपभ्रंश का सर्वप्रथम उल्लेख वल्लभी के राजा धारसेन द्वितीय के शिलालेख में मिलता है। स्वयंभू को 'अपभ्रंश का वाल्मीकि' कहा जाता है (रचना: पउमचरिउ)। अपभ्रंश के उत्तरकालीन या परवर्ती रूप को **'अवहट्ठ'** (संक्रमणकालीन भाषा - 900 ई. से 1100 ई.) कहा गया, जिसमें विद्यापति ने 'कीर्तिलता' और 'कीर्तिपताका' तथा अब्दुर्रहमान ने 'संदेशरासक' की रचना की।

3. **आधुनिक भारतीय आर्यभाषा काल (1000 ई. से अब तक):** लगभग 1000 ई. के आसपास अपभ्रंश के विभिन्न क्षेत्रीय रूपों से आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओं (हिंदी, बांग्ला, उड़िया, मराठी, गुजराती, पंजाबी, सिंधी आदि) का जन्म हुआ।

• **'हिंदी' शब्द की व्युत्पत्ति:** 'हिंदी' शब्द मूलतः **फ़ारसी (ईरानी)** भाषा का शब्द है। ईरानी लोग सिंधु नदी के पार के क्षेत्र को 'हिंद' कहते थे (क्योंकि फ़ारसी के 'अवेस्ता' ग्रंथ में संस्कृत की 'स' ध्वनि 'ह' में और 'ध' ध्वनि 'द' में बदल जाती थी: सिंधु → हिंदू → हिंद + ईक = हिंदीक → हिंदी)।

• **अपभ्रंश के क्षेत्रीय भेद, हिंदी की 5 उपभाषाएँ एवं 18 बोलियाँ:** प्रसिद्ध भाषावैज्ञानिक जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन ने अपनी पुस्तक '*A Linguistic Survey of India*' (1889 ई.) में हिंदी क्षेत्र की बोलियों को **5 उपभाषा वर्गों** में बाँटा है, जिनके अंतर्गत कुल **18 बोलियाँ** (17 भारत में + 1 नेपाली) आती हैं:

1. **पश्चिमी हिंदी (स्रोत: शौरसेनी अपभ्रंश):** इसके अंतर्गत 5 बोलियाँ आती हैं— (i) **खड़ी बोली (कौरवी):** (राहुल सांकृत्यायन ने इसे 'कौरवी' नाम दिया; यह **आकार-बहुला** है; मेरठ, बिजनौर, मुजफ्फरनगर, सहारनपुर, देहरादून के मैदानी भाग, दिल्ली, गाजियाबाद), (ii) **ब्रजभाषा:** (ओकार-बहुला; मथुरा, आगरा, अलीगढ़, बरेली, एटा, मैनपुरी, धौलपुर), (iii) **बुंदेली:** (ओकार-बहुला; झाँसी, जालौन, हमीरपुर, उरई, महोबा, ओरछा, सागर, छतरपुर), (iv) **कन्नौजी:** (ओकार-बहुला; कन्नौज, इटावा, फर्रुखाबाद, हरदोई, पीलीभीत, शाहजहाँपुर, कानपुर का पश्चिमी भाग), (v) **बांगरू (हरियाणवी):** (आकार-बहुला; रोहतक, हिसार, करनाल, जींद)।

2. **पूर्वी हिंदी (स्रोत: अर्धमागधी अपभ्रंश):** इसके अंतर्गत 3 बोलियाँ आती हैं— (i) **अवधी:** (उदासीन आकार-बहुला; लखनऊ, प्रयागराज, अयोध्या, रायबरेली, सुल्तानपुर, बाराबंकी, प्रतापगढ़, उन्नाव, सीतापुर; सूफी एवं रामभक्ति काव्य की प्रमुख भाषा), (ii) **बघेली:** (रीवा, सतना, शहडोल, सीधी, मैहर), (iii) **छत्तीसगढ़ी:** (रायपुर, बिलासपुर, दुर्ग, राजनांदगाँव, कांकेर)।

3. **राजस्थानी हिंदी (स्रोत: शौरसेनी अपभ्रंश):** इसमें 4 प्रमुख बोलियाँ हैं— (i) **मारवाड़ी** (पश्चिमी राजस्थानी - जोधपुर, बीकानेर, जैसलमेर, मेवाड़), (ii) **जयपुरी या ढूँढाड़ी** (पूर्वी राजस्थानी - जयपुर, अजमेर, किशनगढ़), (iii) **मेवाती** (उत्तरी राजस्थानी - अलवर, गुड़गाँव, भरतपुर के आसपास का मेवात क्षेत्र), (iv) **मालवी** (दक्षिणी राजस्थानी - इंदौर, उज्जैन, देवास, रतलाम, भोपाल)।

4. **बिहारी हिंदी (स्रोत: मागधी अपभ्रंश):** इसमें 3 बोलियाँ हैं— (i) **भोजपुरी:** (वाराणसी, गोरखपुर, देवरिया, बलिया, गाजीपुर, आजमगढ़, भोजपुर, छपरा, सीवान; हिंदी की सर्वाधिक बोली जाने वाली बोली), (ii) **मगही:** (पटना, गया, नालंदा, मुंगेर, औरंगाबाद, हजारीबाग), (iii) **मैथिली:** (दरभंगा, मुजफ्फरपुर, पूर्णिया, सहरसा, मधुबनी; यह हिंदी की एकमात्र ऐसी बोली है जिसे **92वें संविधान संशोधन, 2003** द्वारा संविधान की **8वीं अनुसूची** में स्वतंत्र भाषा का दर्जा प्राप्त है)।

5. **पहाड़ी हिंदी (स्रोत: खस अपभ्रंश / शौरसेनी प्रभावित):** इसमें 2 (नेपाली सहित 3) बोलियाँ हैं— (i) **कुमाऊँनी:** (नैनीताल, अल्मोड़ा, पिथौरागढ़, रानीखेत), (ii) **गढ़वाली:** (टिहरी, पौड़ी, चमोली, उत्तरकाशी, रुद्रप्रयाग), तथा (iii) **नेपाली** (हिमाचल व नेपाल सीमा क्षेत्र)।

• **हिंदी की संवैधानिक एवं प्रशासनिक स्थिति (भारत का संविधान):**

• **14 सितंबर 1949** को संविधान सभा ने **'मुंशी-आयंगर फॉर्मूले'** (गोपालस्वामी आयंगर और के.एम. मुंशी) के तहत हिंदी को भारत संघ की **'राजभाषा' (Official Language)** स्वीकार किया। इसीलिए प्रतिवर्ष **14 सितंबर** को **'राष्ट्रीय हिंदी दिवस'** और **10 जनवरी** को **'विश्व हिंदी दिवस'** (10 जनवरी 1975 को नागपुर में आयोजित प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन की स्मृति में) मनाया जाता है।

• भारतीय संविधान के **भाग-17** में **अनुच्छेद 343 से 351** तक राजभाषा संबंधी उपबंध हैं:

• **अनुच्छेद 343 (1):** संघ की राजभाषा **हिंदी** और लिपि **देवनागरी** होगी तथा संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग होने वाले अंकों का रूप **'भारतीय अंकों का अंतर्राष्ट्रीय रूप'** (1, 2, 3...) होगा। अनुच्छेद 343(2) के तहत संविधान लागू होने से 15 वर्षों (अर्थात् 1965) तक अंग्रेजी का प्रयोग जारी रखने का प्रावधान किया गया।

• **अनुच्छेद 344:** राष्ट्रपति द्वारा संविधान के प्रारंभ से 5 वर्ष की समाप्ति पर और तत्पश्चात् प्रत्येक 10 वर्ष की समाप्ति पर **राजभाषा आयोग** के गठन का प्रावधान। प्रथम राजभाषा आयोग का गठन 7 **जून 1955** को **बाल गंगाधर खेर (बी.जी. खेर)** की अध्यक्षता में किया गया था। अनुच्छेद 344(4) के अंतर्गत 30 सदस्यीय **संसदीय राजभाषा समिति** (20 लोकसभा + 10 राज्यसभा सदस्य) का प्रावधान है, जिसके प्रथम अध्यक्ष गोविंद बल्लभ पंत थे।

• **अनुच्छेद 345:** राज्य की राजभाषा या राजभाषाएँ।

• **अनुच्छेद 346:** एक राज्य और दूसरे राज्य के बीच या किसी राज्य और संघ के बीच पत्रादि की राजभाषा।

• **अनुच्छेद 347:** किसी राज्य की जनसंख्या के किसी अनुभाग द्वारा बोली जाने वाली भाषा के संबंध में विशेष उपबंध।

• **अनुच्छेद 348:** उच्चतम न्यायालय (Supreme Court) और उच्च न्यायालयों (High Courts) में और अधिनियमों, विधेयकों आदि के लिए प्रयोग की जाने वाली भाषा।

• **अनुच्छेद 349:** भाषा से संबंधित कुछ विधियाँ अधिनियमित करने के लिए विशेष प्रक्रिया।

• **अनुच्छेद 350:** व्यथा के निवारण के लिए अभ्यावेदन में प्रयोग की जाने वाली भाषा। **अनुच्छेद 350 (क):** प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा में शिक्षा की सुविधाएँ (7वाँ संशोधन, 1956)। **अनुच्छेद 350 (ख):** भाषाई अल्पसंख्यक-वर्गों के लिए विशेष अधिकारी की नियुक्ति राष्ट्रपति द्वारा (7वाँ संशोधन, 1956)।

• **अनुच्छेद 351: हिंदी भाषा के विकास के लिए निदेश** (सामासिक संस्कृति की अभिव्यक्ति और मुख्यतः संस्कृत से शब्द ग्रहण कर समृद्धि सुनिश्चित करना)।

• **अनुच्छेद 120:** संसद में प्रयोग की जाने वाली भाषा। **अनुच्छेद 210:** राज्य के विधानमंडल में प्रयोग की जाने वाली भाषा।

• **आठवीं अनुसूची (Eighth Schedule):** मूल संविधान में **14 भाषाएँ** थीं। वर्तमान में इसमें **22 भाषाएँ** हैं (अंग्रेजी, राजस्थानी एवं भोजपुरी 8वीं अनुसूची में शामिल **नहीं** हैं):

1. **21वाँ संविधान संशोधन अधिनियम, 1967: सिंधी** (15वीं भाषा) जोड़ी गई।
2. **71वाँ संविधान संशोधन अधिनियम, 1992: कोंकणी, मणिपुरी और नेपाली** (16वीं, 17वीं, 18वीं भाषा) जोड़ी गईं।
3. **92वाँ संविधान संशोधन अधिनियम, 2003: बोडो, डोगरी, मैथिली और संथाली** (19वीं से 22वीं भाषा) जोड़ी गईं।
4. **96वाँ संविधान संशोधन अधिनियम, 2011:** 'उड़िया' का नाम बदलकर **'ओडिया'** किया गया।

• **शास्त्रीय भाषाएँ (Classical Languages):** भारत सरकार द्वारा वर्ष 2004 से अब तक कुल **11 भाषाओं** को शास्त्रीय भाषा का दर्जा दिया जा चुका है: (1) तमिल (2004), (2) संस्कृत (2005), (3) कन्नड़ (2008), (4) तेलुगु (2008), (5) मलयालम (2013), (6) ओडिया (2014), तथा **अक्टूबर 2024** में 5 नई भाषाएँ— (7) **मराठी**, (8) **पालि**, (9) **प्राकृत**, (10) **असमिया** और (11) **बांग्ला** जोड़ी गईं।

संकल्पनात्मक प्रवाह आरेख (Step-by-Step Process Flow)

चरण 1
नोड 1: प्राचीन आर्यभाषा (1500-500 ई.पू.)

चरण 2
नोड 2: मध्यकालीन प्राकृत चरण (500 ई.पू.-500 ई.)

चरण 3
नोड 3: संक्रमणकालीन अपभ्रंश चरण (500-1000 ई.)

चरण 4
नोड 4: आधुनिक मानक हिंदी (1000 ई.-वर्तमान)

1.2 विस्तृत तुलनात्मक सारणी: अपभ्रंश भेद, हिंदी की 5 उपभाषाएँ, 18 बोलियाँ एवं प्रमुख क्षेत्र

क्र.सं.	मूल अपभ्रंश स्रोत	उपभाषा वर्ग	प्रमुख बोलियाँ (कुल 18)	ध्वनि प्रकृति (बहुला)	मुख्य भौगोलिक क्षेत्र (उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश, राजस्थान आदि)
1.	**शौरसेनी अपभ्रंश**	**पश्चिमी हिंदी** (5 बोलियाँ)	1. खड़ी बोली (कौरवी) 2. ब्रजभाषा 3. बुंदेली 4. कन्नौजी 5. बांगरू (हरियाणवी)	खड़ी बोली व बांगरू: **आकार-बहुला** ब्रज, बुंदेली, कन्नौजी: **ओकार-बहुला**	**खड़ी बोली:** मेरठ, बिजनौर, मुजफ्फरनगर, सहारनपुर, दिल्ली, गाजियाबाद **ब्रज:** मथुरा, आगरा, अलीगढ़, बरेली, एटा, मैनपुरी **बुंदेली:** झाँसी, जालौन, हमीरपुर, महोबा, सागर, ओरछा **कन्नौजी:** कन्नौज, फर्रुखाबाद, इटावा, हरदोई, पीलीभीत **बांगरू:** रोहतक, हिसार, करनाल
2.	**अर्धमागधी अपभ्रंश**	**पूर्वी हिंदी** (3 बोलियाँ)	6. अवधी 7. बघेली 8. छत्तीसगढ़ी	**उदासीन आकार-बहुला**	**अवधी:** लखनऊ, अयोध्या, प्रयागराज, रायबरेली, सुल्तानपुर, प्रतापगढ़, उन्नाव **बघेली:** रीवा, सतना, शहडोल, मैहर, सीधी **छत्तीसगढ़ी:** रायपुर, बिलासपुर, दुर्ग
3.	**शौरसेनी (नागर) अपभ्रंश**	**राजस्थानी हिंदी** (4 बोलियाँ)	9. मारवाड़ी (पश्चिमी) 10. जयपुरी/ढूँढाड़ी (पूर्वी) 11. मेवाती (उत्तरी) 12. मालवी (दक्षिणी)	**ओकार-बहुला** ('ड़' एवं 'ण' ध्वनि की प्रधानता)	**मारवाड़ी:** जोधपुर, बीकानेर, जैसलमेर, नागौर **जयपुरी:** जयपुर, अजमेर, कोटा, किशनगढ़ **मेवाती:** अलवर, भरतपुर, गुड़गाँव (मेवात) **मालवी:** इंदौर, उज्जैन, रतलाम, देवास, भोपाल
4.	**मागधी अपभ्रंश**	**बिहारी हिंदी** (3 बोलियाँ)	13. भोजपुरी 14. मगही 15. मैथिली	**इकार-बहुला**	**भोजपुरी:** वाराणसी, गोरखपुर, बलिया, गाजीपुर, आजमगढ़, भोजपुर, छपरा **मगही:** पटना, गया, नालंदा, मुंगेर, औरंगाबाद **मैथिली:** दरभंगा, मधुबनी, मुजफ्फरपुर, पूर्णिया
5.	**खस अपभ्रंश**	**पहाड़ी हिंदी** (2+1 बोलियाँ)	16. कुमाऊँनी 17. गढ़वाली 18. नेपाली (हिमाचली)	**ओकार-बहुला**	**कुमाऊँनी:** नैनीताल, अल्मोड़ा, पिथौरागढ़ **गढ़वाली:** टिहरी, पौड़ी, चमोली, उत्तरकाशी **नेपाली:** शिमला, मंडी, चंबा व नेपाल सीमा

1.3 परीक्षा-भार (Chart Data %) विश्लेषण एवं स्मृति ट्रिक्स

• **बोली एवं उनके भौगोलिक क्षेत्र (UPPSC/UP SI/Lekhpal/VDO):** 38%

• **संवैधानिक अनुच्छेद (343–351) एवं 8वीं अनुसूची के संशोधन:** 30%

• **अपभ्रंश के भेद एवं उपभाषाओं का वर्गीकरण:** 18%

• **भाषा विकास का कालक्रम (संस्कृत → पालि → प्राकृत → अपभ्रंश) एवं विश्व हिंदी सम्मेलन:** 14%

★ **स्मृति ट्रिक 1 (8वीं अनुसूची में जोड़ी गईं 8 नई भाषाओं का क्रम— 21वाँ, 71वाँ, 92वाँ संशोधन):** "सिंहासन (21वाँ-1967: सिंधी) पर नमक (71वाँ-1992: नेपाली, मणिपुरी, कोंकणी) और बोडो-डोगरी की मेथी-थाली (92वाँ-2003: बोडो, डोगरी, मैथिली, संथाली)!"
स्मृति ट्रिक 2 (हिंदी की 5 उपभाषाओं और 18 बोलियों का मास्टर कोड): "पूर्वी 'अबछ' (अवधी-बघेली-छत्तीसगढ़ी), बिहारी 'भोज-मग-मैथिल', और पश्चिमी 'कब-कब-है' (कौरवी, ब्रज, कन्नौजी, बुंदेली, हरियाणवी)!"

अध्याय 2: वर्णमाला एवं ध्वनि तंत्र (Phonetics & Alphabet System)

2.1 विस्तृत सैद्धांतिक व्याख्या

• **वर्ण, ध्वनि एवं अक्षर और वर्णमाला:** भाषा की सबसे छोटी **मौखिक इकाई 'ध्वनि'** है और ध्वनि की सबसे छोटी **लिखित इकाई 'वर्ण'** है (जिसके और टुकड़े नहीं किए जा सकते, जैसे— क्, च्, अ)। वर्णों के व्यवस्थित एवं क्रमबद्ध समूह को **'वर्णमाला'** कहते हैं। देवनागरी हिंदी वर्णमाला में कुल **52 वर्ण** हैं (उच्चारण के आधार पर 45 वर्ण: 10 स्वर + 35 व्यंजन; लेखन के आधार पर 52 वर्ण: 11 स्वर + 2 अयोगवाह + 25 स्पर्श व्यंजन + 4 अंत:स्थ + 4 ऊष्म + 4 संयुक्त व्यंजन + 2 द्विगुण/उत्क्षिप्त व्यंजन)।

• **स्वर (Vowels - कुल 11):** **अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ**। मात्राओं की संख्या **10** होती है क्योंकि 'अ' की कोई दृश्य मात्रा नहीं होती ('अ' = शहीद वर्ण या अमात्रिक स्वर)।

1. **मात्रा के आधार पर स्वरों के भेद (3 भेद): ह्रस्व स्वर (4):** **अ, इ, उ, ऋ**। **दीर्घ स्वर (7):** **आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ** (मूल दीर्घ/सजातीय 3: **आ, ई, ऊ**; संयुक्त/विजातीय 4: **ए = अ+इ, ऐ = अ+ए, ओ = अ+उ, औ = अ+ओ**)। **प्लुत स्वर (त्रिमात्रिक):** **ओ3म्**।
2. **जिह्वा के उत्थापित भाग के आधार पर (3 भेद): अग्र स्वर (4):** **इ, ई, ए, ऐ**। **मध्य स्वर (1):** **अ** (केंद्रीय स्वर)। **पश्च स्वर (5):** **आ, उ, ऊ, ओ, औ** (तथा आगत स्वर **ऑ**)।
3. **मुखद्वार खुलने के आधार पर (4 भेद): विवृत (1):** **आ**। **अर्ध-विवृत (3):** **अ, ऐ, औ**। **संवृत (4):** **इ, ई, उ, ऊ**। **अर्ध-संवृत (2):** **ए, ओ**।
4. **ओष्ठों की आकृति के आधार पर (2 भेद): वृत्तमुखी (4):** **उ, ऊ, ओ, औ**। **अवृत्तमुखी (6):** **अ, आ, इ, ई, ए, ऐ**।

• **अयोगवाह (2 वर्ण - अं, अः):** आचार्य किशोरीदास वाजपेयी ने इन्हें **'अयोगवाह'** नाम दिया। **अं** अनुस्वार और **अः** विसर्ग है। `` (चंद्रबिंदु) अनुनासिक है।

• **व्यंजन (Consonants - मूल 33):**

1. **स्पर्श / वर्गीय व्यंजन (25 वर्ण):** 'क' से 'म' तक के पाँचों वर्ग (**5 × 5 = 25**)। च, छ, ज, झ को **'स्पर्श-संघर्षी'** मानते हैं, तथा पाँचवें वर्ण (**ङ, ञ, ण, न, म**) को **'नासिक्य' या 'पंचमाक्षर'** कहते हैं।
2. **अंत:स्थ व्यंजन (4 वर्ण - य, र, ल, व):** **य** और **व** = अर्धस्वर (Semi-vowels); **र** = लुंठित (Rolled) या प्रकंपित व्यंजन; **ल** = पार्श्विक (Lateral) व्यंजन।
3. **ऊष्म / संघर्षी व्यंजन (4 वर्ण - श, ष, स, ह):** **ह** को **'काकल्य वर्ण'** या **'स्वरयंत्रमुखी'** भी कहते हैं।
4. **संयुक्त व्यंजन (4 वर्ण):** **क्ष** = **क् + ष** (शब्दकोश में 'क' के तुरंत बाद), **त्र** = **त् + र** ('त' के बाद), **ज्ञ** = **ज् + ञ** ('ज' के बाद), **श्र** = **श् + र** ('श' के बाद)।
5. **द्विगुण / उत्क्षिप्त व्यंजन (2 वर्ण - ड़, ढ़):** इनसे किसी भी शब्द का प्रारंभ नहीं होता।

• **प्राणत्व एवं घोषत्व वर्गीकरण:**

• **अल्पप्राण:** प्रत्येक वर्ग का **1, 3, 5** वर्ण + अंत:स्थ (**य, र, ल, व**) + **ड़** + सभी 11 स्वर।

• **महाप्राण:** प्रत्येक वर्ग का **2, 4** वर्ण + ऊष्म (**श, ष, स, ह**) + **ढ़** + विसर्ग (**अः**)।

• **अघोष (कुल 13 व्यंजन):** प्रत्येक वर्ग का **1, 2** वर्ण (10) + **श, ष, स** (3)।

• **सघोष या घोष (कुल 31 वर्ण):** प्रत्येक वर्ग का **3, 4, 5** वर्ण (15) + **य, र, ल, व, ह** (5) + **ड़, ढ़** + सभी 11 स्वर।

संकल्पनात्मक प्रवाह आरेख (Step-by-Step Process Flow)

चरण 1 — नोड 1: मुख-अवयव उच्चारण स्थान

चरण 2 — नोड 2: श्वास-मात्रा (प्राणत्व) परीक्षण

चरण 3 — नोड 3: स्वरतंत्री कंपन (घोषत्व) परीक्षण

चरण 4 — नोड 4: शब्दकोश एवं वर्तनी मानकीकरण

उच्चारण स्थान (संस्कृत सूत्र)	स्वर वर्ण	स्पर्श: अघोष-अल्पप्राण (1)	स्पर्श: अघोष-महाप्राण (2)	स्पर्श: सघोष-अल्पप्राण (3)	स्पर्श: सघोष-महाप्राण (4)	नासिक्य: सघोष-अल्पप्राण (5)	अंतःस्थ (सघोष-अल्पप्राण)	ऊष्म (श,ष,स: अघोष / ह: सघोष)
1. कंठ्य (अकुहविसर्जनीयानां कंठः)	अ, आ	क	ख	ग	घ	ङ	—	ह (काकल्य) एवं अः
2. तालव्य (इचुयशानां तालुः)	इ, ई	च	छ	ज	झ	ञ	य (अर्धस्वर)	श
3. मूर्धन्य (ऋटुरषाणां मूर्धा)	ऋ	ट	ठ	ड (ड़)	ढ (ढ़)	ण	र (लुंठित)	ष
4. दन्त्य / वत्सर्य (लृतुलसानां दन्ताः)	—	त	थ	द	ध	न (वत्सर्य)	ल (पार्श्विक)	स (वत्सर्य)
5. ओष्ठ्य (उपूपध्मानियानामोष्ठौ)	उ, ऊ	प	फ	ब	भ	म	—	—
6. कंठतालव्य / कंठोष्ठ्य / दन्त्योष्ठ्य	ए, ऐ (कंठतालव्य) / ओ, औ (कंठोष्ठ्य)	—	—	—	—	—	व (दन्त्योष्ठ्य अर्धस्वर)	फ़ (आगत दन्त्योष्ठ्य)

2.2 परीक्षा-भार (Chart Data %) विश्लेषण एवं स्मृति ट्रिक्स

- **उच्चारण स्थान (कंठ्य, तालव्य, मूर्धन्य, कंठतालव्य, दन्त्योष्ठ्य आदि):** 35%
- **अल्पप्राण-महाप्राण एवं अघोष-सघोष पहचान:** 30%
- **स्वरों का सूक्ष्म वर्गीकरण (संवृत/विवृत, अग्र/मध्य/पश्च):** 20%
- **संयुक्त व्यंजन विच्छेद, लुंठित/पार्श्विक/अर्धस्वर एवं शब्दकोश क्रम:** 15%

★ **स्मृति ट्रिक 3 (उच्चारण स्थान व तीनों 'श, ष, स' का अचूक क्रम— KTM DO):** "कचटतप (K-C-T-T-P) ने माँगी KTM DO (कंठ्य, तालव्य, मूर्धन्य, दन्त्य, ओष्ठ्य), और 'यश' ने तालु, 'ऋषि' ने मूर्धा, 'लस' ने दाँत चमकाए!"
स्मृति ट्रिक 4 (अल्पप्राण-महाप्राण एवं अघोष-सघोष की 10-सेकंड नंबर ट्रिक): "विषम (1-3-5) संग 'यरलव' अल्पप्राण हैं; पहले दो (1-2) संग 'शषस' बेजान (अघोष) हैं, पर 'ह' में पूरी जान (सघोष-महाप्राण) है!"

अध्याय 3: संधि एवं समास (Sandhi & Compound Words)

3.1 विस्तृत सैद्धांतिक व्याख्या

- **संधि ('सम्' + 'धि' = 'मेल'):** दो निकटवर्ती **वर्णों (ध्वनियों)** के परस्पर मेल से जो विकार उत्पन्न होता है, उसे 'संधि' कहते हैं (विलोम: विग्रह/विच्छेद)। इसके **3 मुख्य भेद** हैं:

1. **स्वर संधि (5 भेद):**

• **(i) दीर्घ स्वर संधि:** सजातीय स्वरों का मेल (**अ/आ + अ/आ = आ** , **इ/ई + इ/ई = ई** , **उ/ऊ + उ/ऊ = ऊ**)। जैसे— धर्मार्थ, कपीश, भानूदय, वधूत्सव, पितृण।

• **(ii) गुण स्वर संधि:** **अ/आ** के बाद **इ/ई → ए** , **उ/ऊ → ओ** , **ऋ → अर्** । जैसे— नरेंद्र, रमेश, सूर्योदय, महोर्मि, देवर्षि, महर्षि। (**अपवाद:** अक्ष + ऊहिनी = अक्षौहिणी, प्र + ऊढ़ = प्रौढ़, स्व + ईर = स्वैर)।

• **(iii) वृद्धि स्वर संधि:** **अ/आ** के बाद **ए/ऐ → ऐ** और **ओ/औ → औ** । जैसे— एकैक, सदैव, मतैक्य, महौज, वनौषधि। (**अपवाद:** दन्त + ओष्ठ = दन्तोष्ठ, बिम्ब + ओष्ठ = बिम्बोष्ठ)।

• **(iv) यण स्वर संधि:** **इ/ई, उ/ऊ, ऋ** के बाद भिन्न स्वर आने पर क्रमशः **य्, व्, र्** बनना (**य, व, र** से पहले आधा अक्षर)। जैसे— अत्यधिक, प्रत्युपकार, स्वागत, अन्वेषण, पित्राज्ञा।

• **(v) अयादि स्वर संधि:** **ए, ऐ, ओ, औ** के बाद भिन्न स्वर आने पर क्रमशः **अय्, आय्, अव्, आव्** बनना। जैसे— ने + अन = नयन, गै + अक = गायक, पो + अन = पवन, पौ + अक = पावक, नौ + इक = नाविक।

2. **व्यंजन संधि के प्रमुख नियम:**

• **1 का 3 में परिवर्तन:** दिक् + गज = दिग्गज, वाक् + ईश = वागीश, अच् + अंत = अजंत, षट् + दर्शन = षड्दर्शन, जगत् + ईश = जगदीश, सुप् + अंत = सुबंत।

• **1 का 5 में परिवर्तन:** वाक् + मय = वाङ्मय, षट् + मास = षण्मास, उत् + नयन = उन्नयन, जगत् + नाथ = जगन्नाथ, तत् + मय = तन्मय।

• **'त्' के विशेष नियम:** उत् + चारण = उच्चारण, सत् + जन = सज्जन, उत् + ज्वल = उज्ज्वल, उत् + डयन = उड्डयन, तत् + लीन = तल्लीन, उत् + श्वास = उच्छ्वास, उत् + हार = उद्धार, तत् + हित = तद्धित।

• **'छ' एवं 'म्' के नियम:** अनु + छेद = अनुच्छेद, आ + छादन = आच्छादन, सम् + तोष = संतोष, सम् + कृति = संस्कृति।

3. **विसर्ग संधि के नियम:**

• **विसर्ग का 'ओ' होना:** मनः + रथ = मनोरथ, तपः + वन = तपोवन, यशः + दा = यशोदा, पयः + धर = पयोधर।

• **विसर्ग का 'र्' होना:** निः + आशा = निराशा, दुः + उपयोग = दुरुपयोग, आशीः + वाद = आशीर्वाद, पुनः + जन्म = पुनर्जन्म।

• **विसर्ग का 'श्, ष्, स्' व लोप:** निः + चल = निश्चल, निः + कपट = निष्कपट, धनुः + टंकार = धनुष्टंकार, नमः + ते = नमस्ते, निः + रोग = नीरोग, निः + रस = नीरस।

• **समास ('सम् + आस' = संक्षेपीकरण, विलोम = व्यास):** दो या अधिक पदों का मेल। इसके **6 भेद** हैं:

1. **अव्ययीभाव समास (पूर्वपद प्रधान):** उपसर्ग (**आ, अनु, प्रति, भर, यथा, बे**) या संज्ञा-आवृत्ति (यथाशक्ति, प्रतिदिन, आजन्म, भरपेट, रातोंरात, हाथोंहाथ, पंचगंगम्)।

2. **तत्पुरुष समास (उत्तरपद प्रधान):** 6 कारक चिह्नों का लोप— कर्म (गगनचुंबी), करण (तुलसीकृत, अकालपीड़ित), संप्रदान (रसोईघर, देशभक्ति, गौशाला), अपादान (ऋणमुक्त, पथभ्रष्ट, भयभीत), संबंध (राजपुत्र, गंगाजल), अधिकरण (आपबीती, पुरुषोत्तम, नीतिनिपुण), नञ् तत्पुरुष (अनाथ, अधर्म, असंभव), अलुक् तत्पुरुष (युधिष्ठिर, मृत्युंजय)।

3. **कर्मधारय समास (उत्तरपद प्रधान):** विशेषण-विशेष्य या उपमान-उपमेय (नीलकमल, महापुरुष, चरणकमल, कमलनयन, चंद्रमुख, क्रोधाग्नि, महात्मा)।

4. **द्विगु समास (उत्तरपद प्रधान):** संख्यावाचक समूह (चौराहा, तिरंगा, पंचवटी, नवग्रह, शताब्दी, सप्तर्षि, दोपहर, अष्टाध्यायी)।

5. **द्वंद्व समास (दोनों पद प्रधान):** इतरेतर (माता-पिता, राम-लक्ष्मण, पच्चीस), वैकल्पिक (पाप-पुण्य, लाभ-हानि, धर्माधर्म, शीतोष्ण), समाहार (रुपया-पैसा, चाय-वाय)।

6. **बहुव्रीहि समास (अन्य/तीसरा पद प्रधान):** दशानन (रावण), लंबोदर (गणेश), नीलकंठ (शिव), पीतांबर (विष्णु/कृष्ण), चक्रपाणि, वीणापाणि, मृत्युंजय, अंशुमाली (सूर्य)।

संकल्पनात्मक प्रवाह आरेख (Step-by-Step Process Flow)

चरण 1 नोड 1: वर्ण-विकार बनाम पद-संक्षेप → चरण 2 नोड 2: स्वर संधि 5-सूत्रीय पहचान → चरण 3 नोड 3: व्यंजन/विसर्ग संधि रूपान्तरण → चरण 4 नोड 4: समास पद-प्रधानता एवं अपवाद

श्रेणी / भेद	मुख्य पहचान सूत्र / नियम	संधि-विच्छेद / समास-विग्रह के प्रामाणिक उदाहरण	विशेष अपवाद / भ्रम निवारण बिंदु					
1. दीर्घ व गुण स्वर संधि	मध्य में **आ, ई, ऊ** |	ऊपर 1 चोटी (`, , ृ`)	विद्यालय, गिरीश, भानूदय |	गजेंद्र, महेश, जलोर्मि, सप्तर्षि	अपवाद: अक्ष+ऊहिनी=अक्षौहिणी, प्र+ऊढ़=प्रौढ़			
2. वृद्धि, यण व अयादि	2 चोटियाँ (`, `) |	**य,व,र** से पूर्व आधा अक्षर |	**अय्,आव्**	तथैव, वनौषधि |	अत्यंत, स्वागत, अन्वय |	शयन, नायक, पावन	अपवाद: दन्त+ओष्ठ = दन्तोष्ठ, बिम्ब+ओष्ठ = बिम्बोष्ठ	
3. व्यंजन व विसर्ग संधि	कचटतप का 3/5 होना |	विसर्ग का **ओ, र्, श्, ष्, स्**	वागीश, उज्ज्वल, उच्छ्वास, उद्धार |	मनोबल, दुर्जन, निष्ठुर, नीरोग	अंतः + राष्ट्रीय = अंतर्राष्ट्रीय, पुनः + उक्ति = पुनरुक्ति			
4. अव्ययीभाव व तत्पुरुष	उपसर्ग/आवृत्ति (पूर्वपद) |	कारक विभक्ति लोप (उत्तरपद)	यथासंभव, आजीवन, रातोंरात |	अकालपीड़ित, देशभक्ति, ऋणमुक्त, आपबीती	संख्या + नदी नाम = हमेशा अव्ययीभाव (द्वियमुनम्)			
5. कर्मधारय, द्विगु, द्वंद्व व बहुव्रीहि	विशेषण |	संख्या समूह |	दोनों प्रधान |	तीसरा अर्थ प्रधान	चरणकमल |	चौराहा, नवरत्न |	पाप-पुण्य, धर्माधर्म |	दशानन, लंबोदर	विकल्प में कर्मधारय/द्विगु और बहुव्रीहि दोनों हों, तो **बहुव्रीहि** चुनें

3.2 परीक्षा-भार (Chart Data %) विश्लेषण एवं स्मृति ट्रिक्स

- **स्वर संधि के 5 भेद (विशेषकर यण, गुण व अयादि) एवं उनके अपवाद:** 34%
- **समास पहचान एवं कर्मधारय/द्विगु बनाम बहुव्रीहि का अंतर:** 32%
- **व्यंजन संधि (त्, म् और कचटतप के नियम):** 20%
- **विसर्ग संधि (मनोरथ, आशीर्वाद, नीरोग आदि के नियम):** 14%

★ **स्मृति ट्रिक 5 (पाँचों स्वर संधियों का 'मात्रा-कोड'):** "बड़ी मात्रा दीर्घ है, एक चोटी गुण मान; दो चोटी में वृद्धि है, य-व से पहले आधा यण, बिना आधे के अयादि जान!"
स्मृति ट्रिक 6 (समास के 4 सबसे बड़े परीक्षा-जाल): "दोहराए शब्द (रातोंरात) तो अव्ययीभाव, टूटे विलोम शब्द (धर्माधर्म, शीतोष्ण) तो द्वंद्व; नदी संग गिनती (पंचगंगम्) अव्ययीभाव, और भगवान का नाम हो तो बहुव्रीहि का प्रबंध!"

अध्याय 4: शब्द भेद, तत्सम-तद्भव, देशज-विदेशज, उपसर्ग एवं प्रत्यय

4.1 विस्तृत सैद्धांतिक व्याख्या

• उत्पत्ति / स्रोत के आधार पर शब्द भेद (5 भेद):

1. *तत्सम शब्द (तत् + सम): संस्कृत के मूल शब्द (अग्नि, सूर्य, कर्पूर, गोधूम, हरिद्रा, अट्टालिका, इक्षु, करपट, श्मश्रु*)।

2. *तद्भव शब्द (तत् + भव): संस्कृत से परिवर्तित हिंदी शब्द (आग, सूरज, कपूर, गेहूँ, हल्दी, अटारी, ईख, कपड़ा, मूँछ*)।

3. **देशज शब्द:** क्षेत्रीय बोलियों से विकसित (लोटा, कटोरा, डिबिया, खिचड़ी, खिड़की, पगड़ी, जूता, तेंदुआ, ठठेरा, फुनगी, खचाखच, पेट, झोला)।

4. **विदेशज शब्द: अरबी:** अदालत, अक्ल, इस्तीफा, इनाम, इलाज, औरत, औलाद, कर्ज, किस्मत, किला, कुर्सी, किताब, कानून, कीमत, खत, गरीब, तहसील, तारीख, तकिया, दुनिया, दौलत, नतीजा, फकीर, फैसला, मुहावरा, मुकदमा, मौसम, लिफाफा, वकील, हलवाई। **फ़ारसी:** आदमी, आमदनी, आराम, आफत, आवाज, आईना, उम्मीद, कबूतर, कुश्ती, किशमिश, कारीगर, गवाह, गिरफ्तार, गुलाब, गुब्बारा, चश्मा, चेहरा, जहर, जिंदगी, जुर्माना, तनख्वाह, दरोगा, दवा, दरबार, दुकान, दीवार, पलंग, सरकार, शादी, हफ्ता, हजार, हिंदी। **तुर्की:** उर्दू, कैंची, चाकू, तोप, तमंचा, बारूद, बावर्ची, बेगम, बहादुर, लाश, सौगात, सुराग, कुर्ता, कुली, चेचक, गलीचा, ताश, मुगल। **पुर्तगाली:** आलपीन, अलमारी, तंबाकू, बाल्टी, साबुन, संतरा, पपीता, अनानास, गोभी, आलू, चाबी, फीता, तिजोरी, तौलिया, कमरा, गमला, गोदाम, नीलाम, पादरी, पिस्तौल, मिस्त्री।

5. **संकर शब्द:** दो भिन्न भाषाओं के मेल से बने शब्द (रेलगाड़ी, टिकटघर, छायादार, सीलबंद, लाठीचार्ज, वर्षगाँठ, अश्रुगैस)।

• रचना के आधार पर (3 भेद): रूढ़ (घर, जल, कमल), **यौगिक** (विद्यालय, रसोईघर, सामाजिक), **योगरूढ़** (पंकज, दशानन, लंबोदर, पीतांबर, चारपाई)।

• उपसर्ग एवं प्रत्यय: उपसर्ग मूल शब्द के प्रारंभ में जुड़ते हैं (संस्कृत के 22 उपसर्ग)। **प्रत्यय** अंत में जुड़ते हैं— (1) **कृत् प्रत्यय (कृदंत):** क्रिया/धातु के अंत में (लिखावट, पढ़ाई, लड़ाकू, गायक, भुलक्कड़), (2) **तद्धित प्रत्यय (तद्धितांत):** संज्ञा, सर्वनाम या विशेषण के अंत में (मानवता, मिठास, लुहार, सामाजिक, ऐतिहासिक, बुढ़ापा, सेठानी)।

संकल्पनात्मक प्रवाह आरेख (Step-by-Step Process Flow)

चरण 1
नोड 1: उत्पत्ति स्रोत पहचान (4+1)

चरण 2
नोड 2: रचना/बनावट परीक्षण (3)

चरण 3
नोड 3: तत्सम-तद्भव ध्वनि परिवर्तन

चरण 4
नोड 4: शब्दांश योग (उपसर्ग व प्रत्यय)

तत्सम शब्द	तद्भव रूप	तत्सम शब्द	तद्भव रूप	तत्सम शब्द	तद्भव रूप	शब्द (उपसर्ग + मूल + प्रत्यय)	व्याकरणिक विश्लेषण
गोधूम	गेहूँ	**करपट**	कपड़ा	**अट्टालिका**	अटारी	**अत्याचार** = अति + आचार	'अति' (संस्कृत उपसर्ग) + यण संधि
खर्पर	खप्पर/खपड़ा	**कर्पूर**	कपूर	**आभीर**	अहीर	**अभ्यागत** = अभि + आ + गत	'अभि' व 'आ' (दो उपसर्ग)
हरिद्रा	हल्दी	**नारिकेल**	नारियल	**आमलक**	आँवला	**निरभिमान** = निर् + अभि + मान	'निर्' एवं 'अभि' (दो उपसर्ग)
श्मश्रु	मूँछ	**श्मशान**	मसान	**उपालंभ**	उलाहना	**पर्यावरण** = परि + आ + वरण	'परि' एवं 'आ' उपसर्ग
श्वशुर	ससुर	**श्याल**	साला	**उद्वर्तन**	उबटन	**असुरक्षित** = अ + सु + रक्ष् + इत	2 उपसर्ग ('अ', 'सु') + 'इत' प्रत्यय
चंचु	चोंच	**चणक**	चना	**कटाह**	कड़ाह	**सामाजिक** = समाज + इक	'इक' तद्धित प्रत्यय (आदि वृद्धि नियम)
दंष्ट्रा	दाढ़	**दधि**	दही	**गृध्र**	गिद्ध	**ऐतिहासिक** = इतिहास + इक	'इ' का 'ऐ' में परिवर्तन (तद्धितांत)
गर्दभ	गधा	**गोमय**	गोबर	**पर्यंक**	पलंग	**लिखावट** = लिख् (धातु) + आवट	'आवट' **कृत् प्रत्यय** (कृदंत शब्द)
मक्षिका	मक्खी	**मृत्तिका**	मिट्टी	**वर्तिका**	बत्ती	**मिठास** = मीठा (विशेषण) + आस	'आस' **तद्धित प्रत्यय** (भाववाचक)
शृंगार	सिंगार	**शृंगाल**	सियार	**सर्षप**	सरसों	**गौरव / शैशव** = गुरु/शिशु + अ	'अ' अपत्यवाचक/भाववाचक तद्धित प्रत्यय

4.2 परीक्षा-भार (Chart Data %) विश्लेषण एवं स्मृति ट्रिक्स

- **तत्सम एवं तद्भव शब्द युग्म (RO/ARO में 10 प्रश्न, पुलिस/PCS/VDO में 3-5 प्रश्न):** 42%
- **उपसर्ग एवं प्रत्यय (कृत् बनाम तद्धित प्रत्यय और 'इक/य/अ' प्रत्यय नियम):** 28%
- **विदेशज (अरबी, फ़ारसी, पुर्तगाली, तुर्की) एवं देशज शब्द पहचान:** 18%
- **रूढ़, यौगिक, योगरूढ़ एवं संकर शब्द पहचान:** 12%

★ **स्मृति ट्रिक 7 (तत्सम बनाम तद्भव को 1 सेकंड में पहचानने के संकेत):** "क्ष-त्र-ज्ञ-श्र, ऋ-ण-ष और रेफ (र्) दिखे तो तत्सम जान; चंद्रबिंदु (ँ), ख-छ-ब-स और ड़-ढ़ दिखे तो तद्भव मान!"
स्मृति ट्रिक 8 (पुर्तगाली एवं तुर्की विदेशी शब्दों की कहानी ट्रिक): "पुर्तगाली पादरी ने कमरे में गोदाम की चाबी से तिजोरी-अलमारी खोली, बाल्टी में साबुन-तौलिया और गमले में आलू-गोभी-संतरा-पपीता-अनानास-तंबाकू रखकर आलपीन-फीता लगाया! तुर्की के बहादुर मुगल दरोगा और बेगम ने उर्दू में बावर्ची और कुली से कैंची, चाकू, तोप, तमंचा, बारूद और लाश का सुराग माँगा!"

अध्याय 5: शब्द सामर्थ्य — पर्यायवाची, विलोम, अनेकार्थी, समश्रुत भिन्नार्थक एवं वाक्यांश के लिए एक शब्द

5.1 विस्तृत सैद्धांतिक व्याख्या

• **पर्यायवाची शब्द (Synonyms):** पानी के पर्यायवाची (जल, नीर, वारि, अम्बु, तोय, पय) में `ज` जोड़ने पर **'कमल'** (जलज, नीरज, वारिज, अम्बुज, तोयज, पंकज, राजीव, अरविंद, पुंडरीक, इंदीवर, कोकनद, नलिन, तामरस, उत्पल), `द` जोड़ने पर **'बादल'** (जलद, नीरद, वारिद, अम्बुद, पयोधर, जीमूत, बलाहक), और `धि/निधि` जोड़ने पर **'समुद्र'** (जलधि, नीरधि, वारिधि, पयोधि, उदधि, पारावार, रत्नाकर, अर्णव) के पर्यायवाची बनते हैं।

• **प्रमुख क्लिष्ट पर्यायवाची: अग्नि:** अनल, पावक, कृशानु, हुताशन, वैश्वानर, जातवेदस, धनंजय। **अश्व:** बाजि, हय, घोटक, तुरंग, सैंधव। **इंद्र:** शक्र, पुरंदर, मधवा, वासव, बिडौजा, शचीपति, जिष्णु। **कामदेव:** मदन, मनोज, अनंग, मन्मथ, रतिपति, पुष्पधन्वा, मकरध्वज, पंचशर, कंदर्प, मार, मनसिज। **चंद्रमा:** शशि, राकेश, मयंक, विधु, द्विजराज, कलानिधि, मृगांक, शशांक, छपाकर। **भ्रमर:** अलि, मधुप, द्विरेफ, षट्पद, भृंग, चंचरीक, मिलिंद, शिलीमुख। **यमुना:** कालिंदी, अर्कजा, रवितनया, कृष्णा, तरणि-तनुजा, भानुजा। **सिंह:** केसरी, केहरि, मृगेंद्र, शार्दूल, पंचानन, नाहर, हर्यक्ष। **सूर्य:** मार्तंड, सविता, पतंग, आदित्य, अर्क, तरणि, अंशुमाली, हंस, प्रभाकर, भास्कर। **साँप:** अहि, भुजंग, उरग, पन्नग, फणी, व्याल, चक्षुश्रवा, पवनाशन। **सोना:** कनक, कंचन, हेम, हाटक, जातरूप, चामीकर, हिरण्य, कलधौत।

• **विलोम, अनेकार्थी एवं समश्रुत भिन्नार्थक:** तत्सम का विलोम तत्सम और विशेषण का विलोम विशेषण होता है। **अनेकार्थी:** हरि (विष्णु, इंद्र, सूर्य, चंद्रमा, सिंह, घोड़ा, बंदर, मेंढक, साँप), सारंग (मोर, साँप, बादल, हिरण, सिंह, कोयल, दीपक), द्विज (ब्राह्मण, पक्षी, दाँत, चंद्रमा)। **समश्रुत भिन्नार्थक:** अनल (आग) — अनिल (हवा); अंश (भाग) — अंस (कंधा); अलि (भौंरा) — आली (सखी); कुल (वंश) — कूल (किनारा); तरणि (सूर्य) — तरणी (नाव) — तरुणी (युवती); उपल (पत्थर) — उत्पल (कमल); निर्झर (झरना) — निर्जर (देवता)।

संकल्पनात्मक प्रवाह आरेख (Step-by-Step Process Flow)

चरण 1	चरण 2	चरण 3	चरण 4
नोड 1: पर्यायवाची व्युत्पत्ति तंत्र	नोड 2: विलोम सजातीयता नियम	नोड 3: समश्रुत ध्वनि-मात्रा भेद	नोड 4: वाक्यांश संक्षेपण (एक शब्द)

शब्द	मानक विलोम	शब्द	मानक विलोम	वाक्यांश (One Word Substitution)	एक शब्द
अभिज्ञ (जानकार)	**अनभिज्ञ**	**विज्ञ / प्रज्ञ**	**अज्ञ** (मूर्ख)	गुरु के समीप रहकर अध्ययन करने वाला	**अंतेवासी**

शब्द	मानक विलोम	शब्द	मानक विलोम	वाक्यांश (One Word Substitution)	एक शब्द				
अथ (प्रारंभ)	**इति** (समाप्ति)	**श्रीगणेश**	**इतिश्री**	जिसका जन्म वैध पत्नी से हुआ हो |	अवैध	**औरस** |	**जारज**		
स्थावर (स्थिर)	**जंगम** (चल)	**ऋजु** (सीधा)	**वक्र** (टेढ़ा)	जीने की प्रबल इच्छा |	मोक्ष की इच्छा	**जिजीविषा** |	**मुमुक्षा**		
शाश्वत / चिरंतन	**नश्वर**	**जागृत**	**सुषुप्त**	युद्ध की इच्छा |	तैरकर पार करने की इच्छा	**युयुत्सा** |	**तितीर्षा**		
आमिष / सामिष	**निरामिष**	**गौरव**	**लाघव**	आधी रात का समय |	चाँदनी रात	**निशीथ** |	**शर्वरी**		
व्यष्टि (एक)	**समष्टि** (समूह)	**अधित्यका**	**उपत्यका**	पर्वत के ऊपर की समतल भूमि |	नीचे की भूमि	**अधित्यका** |	**उपत्यका**		
उन्मूलन (उखाड़ना)	**रोपण** (लगाना)	**उन्मीलन** (खुलना)	**निमीलन** (झपकना)	हवन में जलाने वाली लकड़ी |	उत्तराधिकार संपत्ति	**समिधा** |	**रिक्थ**		
उद्धत (अक्खड़)	**विनीत / सौम्य**	**मृसण** (चिकना)	**रूक्ष** (खुरदरा)	वन की आग |	समुद्र की आग |	पेट की आग	**दावाग्नि** |	**बड़वाग्नि** |	**जठराग्नि**

5.2 परीक्षा-भार (Chart Data %) विश्लेषण एवं स्मृति ट्रिक्स

- **पर्यायवाची एवं विलोम शब्द (RO/ARO में 20 प्रश्न, अन्य सभी परीक्षाओं में 4-8 प्रश्न):** 45%
- **वाक्यांश के लिए एक शब्द (अनेक शब्दों के लिए एक शब्द):** 25%
- **समश्रुत भिन्नार्थक शब्द युग्म:** 18%
- **अनेकार्थी शब्द (हरि, सारंग, द्विज, अर्क, कनक आदि):** 12%

★ **स्मृति ट्रिक 9 (तीन 'आग', तीन 'कमल' और इच्छा-वाचक शब्दों का अचूक सूत्र):** "दावानल वन में जले, बड़वानल सागर तीर, जठराग्नि पेट में पचाए खीर! पुंडरीक श्वेत है, कोकनद लाल, इंदीवर नीला कमाल! इच्छा हो तो 'आ' की मात्रा (जिजीविषा, मुमुक्षा), करने वाला व्यक्ति हो तो 'उ' की मात्रा (जिजीविषु, मुमुक्षु)!"
स्मृति ट्रिक 10 ('अभिज्ञ-अनभिज्ञ' और 'उन्मूलन-उन्मीलन' का विलोम भ्रम निवारण): "अभिज्ञ (जानकार) का उल्टा अनभिज्ञ है, और अज्ञ (मूर्ख) का उल्टा विज्ञ/प्रज्ञ! उन्मूलन (जड़ से उखाड़ना) का रोपण है, और उन्मीलन (पलक खुलना) का निमीलन!"

अध्याय 6: पद-विचार — संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, काल, वाच्य, कारक एवं अव्यय

6.1 विस्तृत सैद्धांतिक व्याख्या

- **संज्ञा (5 भेद):** व्यक्तिवाचक (राम, गंगा, हिमालय), जातिवाचक (नदी, पर्वत, वकील, राज्यपाल, भूकंप), भाववाचक (बुढ़ापा, मिठास, सौंदर्य), समूहवाचक (सेना, पुलिस, कक्षा, आयोग), द्रव्यवाचक (पानी, सोना, घी, ऑक्सीजन)।

- **सर्वनाम (मूल सर्वनाम = 11: `मैं, तू, आप, यह, वह, जो, सो, कौन, क्या, कोई, कुछ`; भेद = 6):** पुरुषवाचक (उत्तम, मध्यम, अन्य), निश्चयवाचक (`यह, वह`), अनिश्चयवाचक (`कोई, कुछ`), संबंधवाचक (`जो-सो`), प्रश्नवाचक (`कौन, क्या`), निजवाचक (`आप, स्वयं, स्वतः`)।

- **विशेषण (4 भेद):** (1) गुणवाचक, (2) संख्यावाचक (निश्चित संख्यावाचक के 5 उपभेद: गणनावाचक [एक, ढाई], क्रमवाचक [पहला, चौथा], आवृत्तिवाचक [दोगुना, चौगुना], समुदायवाचक [दोनों, चारों], प्रत्येकबोधक [प्रत्येक, हर-एक]), (3) परिमाणवाचक (दो लीटर दूध, थोड़ा पानी), (4) सार्वनामिक/संकेतवाचक ("यह घर मेरा है" में 'यह')।

• **क्रिया, काल (3 भेद: भूतकाल-6, वर्तमान-5, भविष्यत्-3), वाच्य (3 भेद: कर्तृ, कर्म, भाव), कारक (8 भेद) एवं अव्यय (4 भेद):** पूर्वकालिक क्रिया (नहाकर पूजा की), प्रेरणार्थक क्रिया (उठाना, उठवाना), नामधातु क्रिया (हथियाना, बतियाना)।

संकल्पनात्मक प्रवाह आरेख (Step-by-Step Process Flow)

चरण 1
नोड 1: विकारी पद (संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण)

चरण 2
नोड 2: क्रिया एवं काल (6+5+3 भेद)

चरण 3
नोड 3: वाच्य परिवर्तन (कर्तृ/कर्म/भाव)

चरण 4
नोड 4: कारक परसर्ग (8) एवं अव्यय (4)

व्याकरणिक कोटि	उपभेद / नियम	पहचान चिह्न / शर्त	प्रामाणिक परीक्षा उदाहरण (भ्रम निवारण सहित)
1. करण बनाम अपादान कारक ('से')	**करण:** साधन या अंग-विकार **अपादान:** अलगाव, भय, लज्जा, तुलना, शिक्षा	साधन = करण अलग होना/डर/तुलना = अपादान	**करण:** वह कलम से लिखता है; वह पैर से लंगड़ा है। **अपादान:** पेड़ से पत्ता गिरा; गंगा हिमालय से निकलती है; बच्चा कुत्ते से डरता है; बहू ससुर से लजाती है; राम मोहन से लंबा है।
2. कर्म बनाम संप्रदान कारक ('को')	**कर्म:** वस्तु वापस ली जाए **संप्रदान:** सदा के लिए दान, रुचि, प्रणाम	वापस लेना = कर्म सदा के लिए दान = संप्रदान	**कर्म:** धोबी को कपड़े दो (वापस लेने के लिए)। **संप्रदान:** राजा ने भिखारी को कंबल दिया (दान); पिताजी को प्रणाम; बच्चों को मिठाई अच्छी लगती है।
3. निश्चयवाचक सर्वनाम बनाम सार्वनामिक विशेषण	**यह, वह** का प्रयोग	बाद में संज्ञा न हो = सर्वनाम तुरंत बाद संज्ञा हो = विशेषण	**निश्चयवाचक सर्वनाम:** यह मेरी किताब है। **सार्वनामिक विशेषण: यह किताब** मेरी है।
4. भूतकाल के 6 उपभेद एवं वाच्य के 3 भेद	सामान्य, आसन्न, पूर्ण, अपूर्ण, संदिग्ध, हेतुहेतुमद् |	कर्तृ, कर्म, भाव	क्रिया का समाप्ति काल व प्रधानता	**आसन्न भूत:** सीता आई है |	**हेतुहेतुमद्:** यदि वह आता तो मैं जाता |	**भाववाच्य:** मुझसे चला नहीं जाता

6.2 परीक्षा-भार (Chart Data %) विश्लेषण एवं स्मृति ट्रिक्स

• **विशेषण एवं विशेष्य पहचान तथा संख्यावाचक के 5 उपभेद (RO/ARO में 10 प्रश्न):** 32%

• **क्रिया (सकर्मक/अकर्मक, पूर्वकालिक, प्रेरणार्थक, नामधातु) एवं काल-वाच्य:** 26%

• **कारक पहचान (विशेषकर अपादान, संप्रदान व करण के अपवाद वाक्य):** 24%

• **संज्ञा, सर्वनाम (11 मूल सर्वनाम व निजवाचक) एवं अव्यय/निपात:** 18%

★ **स्मृति ट्रिक 11 (अपादान और संप्रदान कारक के अपवाद):** "अलग होय, डर, लाज, घृणा, तुलना, विद्या ज्ञान— 'से' चिह्न जब ये कहे, सदा जानो अपादान! सदा दान, रुचि, नमस्कार में 'को' बने संप्रदान!"
स्मृति ट्रिक 12 (11 मूल सर्वनाम और अकर्मक-सकर्मक क्रिया टेस्ट): "मैं, तू, आप, यह, वह, जो, सो, कौन, क्या, कोई, कुछ— ये 11 मूल सर्वनाम हैं! क्रिया के आगे 'क्या' और 'किसको' लगाओ, उत्तर मिले तो सकर्मक, न मिले (जैसे उड़ना, सोना, हँसना) तो अकर्मक बनाओ!"

अध्याय 7: रस, छंद, अलंकार, मुहावरे-लोकोक्तियाँ एवं वर्तनी /वाक्य शुद्धि

7.1 विस्तृत सैद्धांतिक व्याख्या

• **रस ('काव्य की आत्मा'):** प्रवर्तक **आचार्य भरतमुनि** ('नाट्यशास्त्र' — "विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगाद्रसनिष्पत्तिः"). भरतमुनि के अनुसार रसों की संख्या = **8** (शांत रस को शामिल नहीं किया), काव्य में नवरस = **9**, कुल रस = **11** (10वाँ वात्सल्य, 11वाँ भक्ति)। संचारी भावों की संख्या = **33**, सात्विक अनुभाव = **8**, स्थायी भाव = **9 (कुल 11)**। श्रृंगार रस को **'रसराज'** कहा जाता है।

• **छंद ('पिंगलशास्त्र'):** गणों की संख्या = **8** (सूत्र: **यमाताराजभानसलग**)। **सम मात्रिक छंद:** चौपाई (16 मात्राएँ), रोला (24 मात्राएँ), गीतिका (26 मात्राएँ), हरिगीतिका (28 मात्राएँ)। **अर्धसम मात्रिक छंद:** दोहा (विषम में 13-13, सम में 11-11), सोरठा (दोहे का उल्टा: विषम में 11-11, सम में 13-13), बरवै (12-7), उल्लाला (15-13)। **विषम मात्रिक (6 चरण):** कुंडलिया (दोहा + रोला), छप्पय (रोला + उल्लाला)। **वर्णिक छंद:** इंद्रवज्रा (11 वर्ण), वसंततिलका (14 वर्ण), मालिनी (15 वर्ण), मंदाक्रांता व शिखरिणी (17 वर्ण), सवैया (22–26 वर्ण), कवित्त/घनाक्षरी (31 वर्ण)।

• **अलंकार: शब्दालंकार:** अनुप्रास (5 भेद: छेकानुप्रास, वृत्त्यनुप्रास, लाटानुप्रास, श्रुत्यानुप्रास, अंत्यानुप्रास), यमक (कनक-कनक, काली घटा का घमंड घटा, तीन बेर), श्लेष (रहिमन पानी राखिए, सुबरन को ढूँढ़त फिरत), वक्रोक्ति। **अर्थालंकार:** उपमा (सा, सी, से, सम, सरिस), रूपक (अभेद आरोप— चरण-कमल), उत्प्रेक्षा (मनु, मानो, मनहुँ, जनु, जानो), अतिशयोक्ति, भ्रांतिमान बनाम संदेह, विभावना (बिनु पग चलै) बनाम विशेषोक्ति (पानी विच मीन पियासी), असंगति, दृष्टांत, मानवीकरण।

संकल्पनात्मक प्रवाह आरेख (Step-by-Step Process Flow)

चरण 1 → **नोड 1: रस निष्पत्ति (9 मूल / 11 कुल)**

चरण 2 → **नोड 2: छंद मात्रा व वर्ण गणना**

चरण 3 → **नोड 3: अलंकार (शब्द व अर्थ भेद)**

चरण 4 → **नोड 4: मानक वर्तनी एवं वाक्य शुद्धि**

11 रस (और उनके स्थायी भाव)	अशुद्ध वर्तनी		अशुद्ध वाक्य (और अशुद्धि का कारण)	
1. श्रृंगार रस — रति (प्रेम)	उज्वल / उज्जवल	**उज्ज्वल** (दोनों 'ज्' आधे)	यहाँ शुद्ध गाय का दूध मिलता है। (पदक्रम दोष)	**यहाँ गाय का शुद्ध दूध मिलता है।**
2. हास्य (हास) / 3. करुण (शोक)	कवियत्री / कवयत्री	**कवयित्री**	रोगी को काटकर सेब खिलाओ। (पदक्रम दोष)	**सेब काटकर रोगी को खिलाओ।**
4. वीर (उत्साह) / 5. रौद्र (क्रोध)	ज्योत्सना	**ज्योत्स्ना** (आधा त् और स्)	उसके प्राण पखेरू उड़ गया। (प्राण = बहुवचन)	**उसके प्राण-पखेरू उड़ गए।**
6. भयानक (भय) / 7. वीभत्स (जुगुप्सा)	आर्शीवाद / आशिर्वाद	**आशीर्वाद** ('वा' पर रेफ)	मैंने हस्ताक्षर कर दिया है। (हस्ताक्षर = बहुवचन)	**मैंने हस्ताक्षर कर दिए हैं।**
8. अद्भुत (विस्मय) / 9. शांत (निर्वेद)	हिरण्यकश्यप	**हिरण्यकशिपु**	वह सप्रमाण सहित अपनी बात बताएगा। (द्विरुक्ति)	**वह सप्रमाण अपनी बात बताएगा।**
10. वात्सल्य (वत्सलता)	अनुग्रहीत	**अनुगृहीत / संगृहीत**	दही खट्टी है। (दही, पानी, घी, मोती = पुल्लिंग)	**दही खट्टा है।**
11. भक्ति रस — भगवद्विषयक रति	पूज्यनीय / रचियता	**पूजनीय / रचयिता**	श्रीकृष्ण के अनेकों नाम हैं। (अनेक = बहुवचन)	**श्रीकृष्ण के अनेक नाम हैं।**

7.2 परीक्षा-भार (Chart Data %) विश्लेषण एवं स्मृति ट्रिक्स

• **वर्तनी एवं वाक्य शुद्धि (RO/ARO में 10 प्रश्न, पुलिस/SSC GD/PCS/DSSSB में 4-6 प्रश्न):** 35%

• **अलंकार पहचान (यमक, श्लेष, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, विभावना, भ्रांतिमान):** 25%

• **मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ:** 22%

• **रस (स्थायी भाव व अंग) एवं छंद (चौपाई, दोहा, सोरठा, रोला, कुंडलिया):** 18%

★ **स्मृति ट्रिक 13 (सम मात्रिक व संयुक्त छंद सूत्र):** "चारों (चौपाई-16, रोला-24) गीत (गीतिका-26) हरिगीतिका (28)! दोहा 13-11 है, सोरठा 11-13 भाई; दोहा-रोला मिले तो कुंडलिया, रोला-उल्लाला से छप्पय आई!"
स्मृति ट्रिक 14 (सदैव बहुवचन, सदैव पुल्लिंग और वाक्य-द्विरुक्ति नियम): "प्राण, दर्शन, आँसू, होश, बाल, हस्ताक्षर और लोग— ये 7 शब्द सदा बहुवचन हैं! पानी, दही, घी, मोती, हाथी— ये सदा पुल्लिंग हैं! और वाक्य में 'कृपया-कृपा', 'केवल-मात्र', 'सप्रमाण-सहित', 'प्रातःकाल-समय' कभी एक साथ नहीं आते!"

अध्याय 8: हिंदी साहित्य का इतिहास, प्रमुख रचनाएँ, वाद एवं साहित्यिक पुरस्कार

8.1 विस्तृत सैद्धांतिक व्याख्या

• **काल-विभाजन एवं नामकरण (आचार्य रामचंद्र शुक्ल, 1929):**

1. **आदिकाल / वीरगाथा काल (संवत् 1050–1375 वि.):** प्रथम कवि **सरहपा** (राहुल सांकृत्यायन के अनुसार), प्रथम रचना देवसेन कृत **'श्रावकाचार'** (933 ई.), प्रथम महाकाव्य चंदबरदाई कृत **'पृथ्वीराज रासो'**। प्रमुख ग्रंथ: जगनिक (परमाल रासो / आल्ह खंड), नरपति नाल्ह (बीसलदेव रासो), दलपति विजय (खुमान रासो), विद्यापति (पदावली, कीर्तिलता, कीर्तिपताका), अमीर खुसरो (खड़ी बोली के आदि कवि, खालिकबारी)।

2. **भक्तिकाल / पूर्व मध्यकाल (संवत् 1375–1700 वि. — जॉर्ज ग्रियर्सन द्वारा 'स्वर्ण युग'):** (i) **ज्ञानाश्रयी संत शाखा:** कबीरदास (बीजक — साखी, सबद, रमैनी; भाषा: सधुक्कड़ी/पंचमेल खिचड़ी; हजारीप्रसाद द्विवेदी द्वारा 'वाणी का डिक्टेटर'), रैदास, नानक, दादू दयाल, मलूकदास, सुंदरदास। (ii) **प्रेमाश्रयी सूफी शाखा:** मलिक मुहम्मद जायसी (पद्मावत [1540 ई., ठेठ अवधी], अखरावट, आखिरी कलाम), मुल्ला दाऊद (चंदायन), कुतुबन (मृगावती), मंझन (मधुमालती)। (iii) **रामाश्रयी शाखा:** गोस्वामी तुलसीदास (अवधी में: रामचरितमानस [1574 ई., 7 कांड], जानकीमंगल, पार्वतीमंगल, बरवै रामायण; ब्रजभाषा में: विनयपत्रिका, कवितावली, गीतावली, दोहावली), नाभादास (भक्तमाल)। (iv) **कृष्णाश्रयी शाखा:** अष्टछाप (1565 ई., विट्ठलनाथ द्वारा स्थापित 8 कवि), सूरदास (सूरसागर, सूरसारावली, साहित्य लहरी), मीराबाई, रसखान (प्रेमवाटिका, सुजान रसखान)।

3. **रीतिकाल / उत्तर मध्यकाल (संवत् 1700–1900 वि.): रीतिबद्ध:** केशवदास (रामचंद्रिका, रसिकप्रिया, कविप्रिया), भूषण (वीर रस— शिवराज भूषण, शिवा बावनी, छत्रसाल दशक), मतिराम, देव, पद्माकर। **रीतिसिद्ध:** बिहारीलाल (बिहारी सतसई — 713/719 दोहे)। **रीतिमुक्त:** घनानंद (सुजान सागर), आलम, बोधा, ठाकुर।

4. **आधुनिक काल / गद्य काल (1850 ई. से अब तक): भारतेंदु युग:** भारतेंदु हरिश्चंद्र (भारत दुर्दशा, अंधेर नगरी), लाला श्रीनिवास दास (परीक्षा गुरु — प्रथम मौलिक उपन्यास, 1882)। **द्विवेदी युग:** महावीरप्रसाद द्विवेदी (सरस्वती पत्रिका संपादन 1903–1920), हरिऔध (प्रियप्रवास — खड़ी बोली का प्रथम महाकाव्य, 1914), मैथिलीशरण गुप्त (साकेत, भारत-भारती, यशोधरा)। **छायावाद के 4 स्तंभ:** जयशंकर प्रसाद (कामायनी [15 सर्ग], आँसू, लहर, झरना, चंद्रगुप्त, स्कंदगुप्त, ध्रुवस्वामिनी), निराला (अनामिका, परिमल, राम की शक्तिपूजा, सरोज स्मृति, जूही की कली), सुमित्रानंदन पंत (पल्लव, चिदंबरा, लोकायतन), महादेवी वर्मा (यामा, दीपशिखा, अतीत के चलचित्र)। **प्रगतिवाद, प्रयोगवाद एवं कथा साहित्य:** अज्ञेय (तार सप्तक 1943, कितनी नावों में कितनी बार, शेखर: एक जीवनी), धर्मवीर भारती (अंधा युग, गुनाहों का देवता), मुंशी प्रेमचंद (गोदान, गबन, रंगभूमि, कर्मभूमि, सेवासदन, पंच परमेश्वर, ईदगाह, कफ़न), फणीश्वरनाथ रेणु (मैला आँचल — प्रथम आंचलिक उपन्यास)।

संकल्पनात्मक प्रवाह आरेख (Step-by-Step Process Flow)

चरण 1
नोड 1: आदिकाल (1050-1375 वि.)

चरण 2
नोड 2: भक्तिकाल (1375-1700 वि.)

चरण 3
नोड 3: रीतिकाल (1700-1900 वि.)

चरण 4
नोड 4: आधुनिक काल एवं पुरस्कार (1900 वि.-अब तक)

साहित्यकार / कवि	प्रमुख काव्य / उपन्यास / गद्य रचनाएँ	प्राप्त सर्वोच्च साहित्यिक सम्मान (ज्ञानपीठ / साहित्य अकादमी / सरस्वती)
1. माखनलाल चतुर्वेदी	हिमतरंगिणी, हिमकिरीटिनी, युगचरण, समर्पण, पुष्प की अभिलाषा	**प्रथम साहित्य अकादमी पुरस्कार (1955)** — 'हिमतरंगिणी' के लिए

साहित्यकार / कवि	प्रमुख काव्य / उपन्यास / गद्य रचनाएँ	प्राप्त सर्वोच्च साहित्यिक सम्मान (ज्ञानपीठ / साहित्य अकादमी / सरस्वती)	
2. सुमित्रानंदन पंत	चिदंबरा, लोकायतन, पल्लव, गुंजन, कला और बूढ़ा चाँद, ग्राम्या	**हिंदी का प्रथम ज्ञानपीठ पुरस्कार (1968)** — 'चिदंबरा' |	साहित्य अकादमी (1960)
3. रामधारी सिंह 'दिनकर'	उर्वशी, रश्मिरथी, कुरुक्षेत्र, परशुराम की प्रतीक्षा, संस्कृति के चार अध्याय	**ज्ञानपीठ पुरस्कार (1972)** — 'उर्वशी' |	साहित्य अकादमी (1959)
4. स.ही. वात्स्यायन 'अज्ञेय'	कितनी नावों में कितनी बार, आँगन के पार द्वार, शेखर: एक जीवनी	**ज्ञानपीठ पुरस्कार (1978)** — 'कितनी नावों में कितनी बार' |	साहित्य अकादमी (1964)
5. महादेवी वर्मा	यामा (निहार, रश्मि, नीरजा, सांध्यगीत), दीपशिखा, अतीत के चलचित्र, गिल्लू	**ज्ञानपीठ पुरस्कार (1982)** — 'यामा' (इसके बाद से संपूर्ण साहित्य पर ज्ञानपीठ)	
6. हरिवंश राय बच्चन	मधुशाला, मधुबाला, मधुकलश, दो चट्टानें, क्या भूलूँ क्या याद करूँ (4 खंड)	साहित्य अकादमी (1968 - दो चट्टानें) |	**प्रथम सरस्वती सम्मान (1991)**
7. अन्य हिंदी ज्ञानपीठ विजेता	नरेश मेहता (1992), निर्मल वर्मा (1999), कुँवर नारायण (2005), अमरकांत व श्रीलाल शुक्ल (2009), केदारनाथ सिंह (2013), कृष्णा सोबती (2017), विनोद कुमार शुक्ल (59वाँ)	संपूर्ण साहित्यिक योगदान हेतु भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित	

8.2 परीक्षा-भार (Chart Data %) विश्लेषण एवं स्मृति ट्रिक्स

- **प्रमुख कवि, लेखक एवं उनकी कालजयी रचनाएँ (उपन्यास, महाकाव्य, नाटक, कहानी):** 42%
- **साहित्यिक पुरस्कार (ज्ञानपीठ, साहित्य अकादमी, व्यास एवं सरस्वती सम्मान):** 24%
- **काल-विभाजन, नामकरण, अष्टछाप एवं छायावाद/भक्तिकाल की शाखाएँ:** 20%
- **हिंदी में प्रथम (प्रथम महाकाव्य, प्रथम उपन्यास, प्रथम पत्र 'उदन्त मार्तण्ड' 1826, प्रमुख पत्रिकाएँ):** 14%

★ **स्मृति ट्रिक 15 (विशेष कृति पर ज्ञानपीठ पाने वाले हिंदी के 4 दिग्गज — 'चि-उ-कि-या' और अष्टछाप के 8 कवि):** "पंत की 'चिदंबरा' (1968), दिनकर की 'उर्वशी' (1972), अज्ञेय की 'कितनी नावों' (1978) और महादेवी की 'यामा' (1982) ने ज्ञानपीठ पाया! और सूर-कुंभ-परमानंद-कृष्ण (वल्लभाचार्य के 4 शिष्य) ने नंद-चतुर्भुज-छीत-गोविंद (विट्ठलनाथ के 4 शिष्य) संग 1565 ई. में अष्टछाप सजाया!"

अध्याय 9: पर्यायवाची, विलोम, तत्सम-तद्भव, अनेकार्थी एवं वाक्यांश के लिए एक शब्द — मास्टर शब्द-सामर्थ्य कोष

अध्याय के प्रमुख अध्ययन स्तंभ — अध्याय 9: पर्यायवाची, विलोम, तत्सम-तद्भव, अनेकार्थी एवं वाक्यांश के लिए एक शब्द — मास्टर शब्द-सामर्थ्य कोष

प्रमुख अध्ययन बिंदु 1
परीक्षा में सर्वाधिक पूछे जाने वाले 50 उच्च-प्राथमिकता पर्यायवाची शब्द समूह (RO/ARO, PCS, Police, TET)

प्रमुख अध्ययन बिंदु 2
वाक्यांश के लिए एक शब्द (One Word Substitution) एवं समश्रुत भिन्नार्थक शब्द

9.1 परीक्षा में सर्वाधिक पूछे जाने वाले 50 उच्च-प्राथमिकता पर्यायवाची शब्द समूह (RO/ARO, PCS, Police, TET)

- **अग्नि (आग):** अनल, पावक, दहन, कृशानु, हुताशन, वैश्वानर, जातवेद, धनंजय, रोहिताश्व, वायुसखा (NCERT Hindi)।
- **अमृत:** सुधा, पीयूष, सोम, अमी, अमिय, सुरभोग, जीवनोदक, मधु।
- **अश्व (घोड़ा):** तुरंग, हय, बाजि, वाजि, घोटक, सैंधव, रविसुत, दधिका, सरताज।

- **आकाश (गगन):** नभ, व्योम, अंबर, अनंत, अंतरिक्ष, शून्य, अभ्र, द्यौ, तारापथ, पुष्कर।
- **इंद्र (देवराज):** पुरंदर, शक्र, शचीपति, मधवा, देवेंद्र, सुरपति, वासव, वज्रधर, बिडौजा, सहस्राक्ष।
- **कमल (पंकज):** जलज, नीरज, सरोज, अंबुज, वारिज, अरविंद, राजीव, उत्पल, कंज, पुंडरीक (श्वेत कमल), कोकनद (लाल कमल), इंदीवर (नीला कमल)।
- **गंगा (भागीरथी):** सुरसरि, देवनदी, मंदाकिनी, अलकनंदा, जाह्नवी, विष्णुपदी, त्रिपथगा, ध्रुवनंदा।
- **चंद्रमा (शशि):** मयंक, राकेश, हिमांशु, सुधांशु, सुधाकर, निशाकर, कलाधर, मृगांक, शशांक, विधु, द्विजराज।
- **यमुना (कालिंदी):** अर्कजा, रवितनया, सूर्यसुता, भानुजा, तरणि-तनूजा, कृष्णा, जमुना।
- **सरस्वती (वीणापाणि):** भारती, शारदा, वागेश्वरी, महाश्वेता, गिरा, इला, ब्राह्मी, वाग्देवी, हंसवाहिनी।
- **सूर्य (दिनकर):** दिवाकर, भानु, भास्कर, आदित्य, मार्तंड, सविता, पतंग, अंशुमाली, सप्ताश्व, तरणि।
- **सिंह (केसरी):** मृगेंद्र, मृगराज, केहरि, शार्दूल, नाहर, पंचानन, व्याघ्र, वनराज, मृगारि।

मुख्य शब्द	तत्सम रूप (संस्कृतनिष्ठ)	तद्भव रूप (हिंदी रूप)	प्रमुख विलोम शब्द युग्म (शब्द ⇄ विलोम)		
गोधूम / चणक / हरिद्रा	गोधूम, चणक, हरिद्रा	गेहूँ, चना, हल्दी	**अथ** ⇄ इति |	**अभिज्ञ** ⇄ अनभिज्ञ |	**अज्ञ** ⇄ विज्ञ
कर्पूर / कपाट / करपट	कर्पूर, कपाट, करपट	कपूर, किवाड़, कपड़ा	**अनुग्रह** ⇄ विग्रह |	**अनुलोम** ⇄ प्रतिलोम/विलोम	
गर्दभ / गृध्र / गोमय	गर्दभ, गृध्र, गोमय	गधा, गिद्ध, गोबर	**अंतरंग** ⇄ बहिरंग |	**अतिवृष्टि** ⇄ अनावृष्टि	
नारिकेल / कदली / इक्षु	नारिकेल, कदली, इक्षु	नारियल, केला, ईख	**आमिष/सामिष** ⇄ निरामिष |	**आविर्भाव** ⇄ तिरोभाव	
श्मश्रु / श्वसुर / श्यामल	श्मश्रु, श्वसुर, श्यामल	मूँछ, ससुर, साँवला	**उन्मूलन** ⇄ रोपण |	**उन्मीलन** ⇄ निमीलन	
तिक्त / ताम्र / त्वरित	तिक्त, ताम्र, त्वरित	तीता, ताँबा, तुरंत	**ऋजु** ⇄ वक्र |	**स्थावर** ⇄ जंगम |	**समास** ⇄ व्यास

9.2 वाक्यांश के लिए एक शब्द (One Word Substitution) एवं समश्रुत भिन्नार्थक शब्द

- **दिशाओं एवं समय से संबंधित एक शब्द:** उत्तर और पूर्व के बीच की दिशा = **ईशान**; पूर्व और दक्षिण के बीच = **आग्नेय**; दक्षिण और पश्चिम के बीच = **नैऋत्य**; पश्चिम और उत्तर के बीच = **वायव्य**। आधी रात का समय = **निशीथ**; तारों भरी रात = **विभावरी**; चाँदनी रात = **शर्वरी**।
- **साहित्य एवं ज्ञान से संबंधित एक शब्द:** जो पहले कभी न हुआ हो = **अभूतपूर्व**; जिसे जाना न जा सके = **अज्ञेय**; जो सब कुछ जानता हो = **सर्वज्ञ**; जो कम जानता हो = **अल्पज्ञ**; जिसका जन्म पहले हुआ हो = **अग्रज**; जिसका जन्म पीछे/बाद में हुआ हो = **अनुज**; जो इंद्रियों द्वारा न जाना जा सके = **अगोचर / अतींद्रिय**।
- **समश्रुत भिन्नार्थक युग्म:** **अनल** (आग) बनाम **अनिल** (हवा); **अंश** (भाग) बनाम **अंस** (कंधा); **कुल** (वंश/योग) बनाम **कूल** (किनारा); **अब्ज** (कमल) बनाम **अब्द** (बादल/वर्ष); **तरणि** (सूर्य) बनाम **तरणी** (नाव) बनाम **तरुणी** (युवती)।

अध्याय 10: वाक्य एवं वर्तनी शुद्धि, मुहावरे-लोकोक्तियाँ तथा संवैधानिक राजभाषा प्रावधान

अध्याय के प्रमुख अध्ययन स्तंभ — अध्याय 10: वाक्य एवं वर्तनी शुद्धि, मुहावरे-लोकोक्तियाँ तथा संवैधानिक राजभाषा प्रावधान

प्रमुख अध्ययन बिंदु 1
परीक्षा में बार-बार पूछी जाने वाली शीर्ष 40 अशुद्ध बनाम शुद्ध वर्तनी सारणी

प्रमुख अध्ययन बिंदु 2
हिंदी भाषा का संवैधानिक विकास (अनुच्छेद 343–351), विश्व हिंदी सम्मेलन एवं प्रमुख साहित्य अकादमी पुरस्कार

10.1 परीक्षा में बार-बार पूछी जाने वाली शीर्ष 40 अशुद्ध बनाम शुद्ध वर्तनी सारणी

अशुद्ध वर्तनी (Exam Trap)	शुद्ध मानक वर्तनी (Correct)	अशुद्ध वर्तनी (Exam Trap)	शुद्ध मानक वर्तनी (Correct)
उज्वल / उज्जवल	**उज्ज्वल** (दोनों 'ज' आधे: `उ + ज् + ज् + व + ल`)	कवयत्री / कवियित्री	**कवयित्री** (`क-व-यि-त्री`)
आशिर्वाद / आर्शीवाद	**आशीर्वाद** ('वा' के ऊपर रेफ)	अंताक्षरी / अन्ताक्षरी	**अंत्याक्षरी** (`अन्त्य + अक्षरी`)
हिरण्यकश्यप	**हिरण्यकशिपु**	ज्योत्सना	**ज्योत्स्ना** (आधा 'त' और आधा 'स' दोनों)
सन्यासी	**संन्यासी** (अनुस्वार और आधा 'न' दोनों)	अहिल्या	**अहल्या**
द्वारिका	**द्वारका**	कालिदास	**कालिदास** ('लि' पर छोटी 'इ')
मैथलीशरण	**मैथिलीशरण**	वाल्मीकी	**वाल्मीकि** ('कि' पर छोटी 'इ')
श्रृंगार	**शृंगार** ('श' में केवल '', अतिरिक्त तिरछी रेखा नहीं)	प्रज्वलित / प्रज्ज्वलित	**प्रज्वलित** (एक आधा 'ज')

10.2 हिंदी भाषा का संवैधानिक विकास (अनुच्छेद 343–351), विश्व हिंदी सम्मेलन एवं प्रमुख साहित्य अकादमी पुरस्कार

• **संवैधानिक प्रावधान (भाग-17, अनुच्छेद 343–351): 14 सितंबर 1949** को संविधान सभा ने हिंदी को संघ की राजभाषा स्वीकार किया (**भारतीय संविधान**)। अनुच्छेद 343 (संघ की राजभाषा हिंदी और लिपि देवनागरी), अनुच्छेद 344 (राजभाषा आयोग व संसदीय समिति - प्रथम अध्यक्ष बी.जी. खेर 1955), अनुच्छेद 348 (उच्चतम व उच्च न्यायालयों की भाषा), अनुच्छेद 350क (प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा में शिक्षा), अनुच्छेद 351 (हिंदी भाषा के विकास के लिए निदेश)।

• **आठवीं अनुसूची की 22 भाषाएँ:** मूल संविधान में **14 भाषाएँ** थीं। **21वें संशोधन (1967)** द्वारा सिंधी; **71वें संशोधन (1992)** द्वारा कोंकणी, मणिपुरी, नेपाली (ट्रिक: **'नमक'**); तथा **92वें संशोधन (2003)** द्वारा बोडो, डोगरी, मैथिली और संथाली (ट्रिक: **'बोडमास - BDMS'**) जोड़ी गईं।

• **हिंदी की 5 उपभाषाएँ एवं 18 बोलियाँ:** (1) **पश्चिमी हिंदी** (खड़ी बोली/कौरवी, ब्रजभाषा, बुंदेली, कन्नौजी, हरियाणवी/बांगरू), (2) **पूर्वी हिंदी** (अवधी, बघेली, छत्तीसगढ़ी — ट्रिक: **'ABC'**), (3) **राजस्थानी हिंदी** (मारवाड़ी, जयपुरी/ढूँढाड़ी, मेवाती, मालवी), (4) **बिहारी हिंदी** (भोजपुरी, मगही, मैथिली), (5) **पहाड़ी हिंदी** (कुमाऊँनी, गढ़वाली, हिमाचली)।

अध्याय 1: हिंदी वर्णमाला, उच्चारण स्थान एवं प्रयत्न भेद (स्वर, स्पर्श, अन्तःस्थ, ऊष्म एवं संयुक्त व्यंजन का वैज्ञानिक वर्गीकरण)

1. चार-नोड प्रवाह आरेख (4-Node Visual Flow Diagram)

संकल्पनात्मक प्रवाह आरेख (Step-by-Step Process Flow)

चरण 1
`[चरण 1: ध्वनि एवं वर्ण उद्भव (भाषा की सबसे छोटी मौखिक इकाई 'ध्वनि' व लिखित इकाई 'वर्ण' — कुल 52 मानक वर्ण)

चरण 2
चरण 2: स्वर तंत्र (11 मूल स्वर: ह्रस्व 4, दीर्घ 3, संयुक्त 4 + 2 अयोगवाह अं, अः)

चरण 3
चरण 3: व्यंजन तंत्र (25 स्पर्श क-म, 4 अन्तःस्थ य-व, 4 ऊष्म श-ह, 4 संयुक्त क्ष-श्र एवं 2 द्विगुण ड़, ढ़)

चरण 4
चरण 4: उच्चारण स्थान (कण्ठ, तालु, मूर्धा, दन्त, ओष्ठ, नासिका) एवं घोषत्व-प्राणत्व (अघोष/सघोष, अल्पप्राण/महाप्राण) निर्धारण]`

2. विस्तृत तुलनात्मक सारणी: हिंदी वर्णों का उच्चारण स्थान, प्रयत्न, घोषत्व एवं प्राणत्व वर्गीकरण

उच्चारण वर्ग एवं स्थान	सम्मिलित स्वर वर्ण	सम्मिलित स्पर्श व्यंजन (वर्ग 1 से 5)	अन्तःस्थ, ऊष्म एवं अन्य वर्ण	उच्चारण अंग एवं ध्वनि विशेषता	आधिकारिक संदर्भ स्रोत
कण्ठ्य (गले/कण्ठ से उच्चारित)	अ, आ	क्, ख्, ग्, घ्, ङ् (क-वर्ग)	ह् (काकल्य/स्वरयंत्रमुखी) एवं विसर्ग ( )	जिह्वा के मूल भाग का कण्ठ से संयोग	NCERT वर्ण विचार
तालव्य (कठोर तालु से उच्चारित)	इ, ई	च्, छ्, ज्, झ्, ञ् (च-वर्ग)	य् (अन्तःस्थ) एवं श् (तालव्य ऊष्म)	जिह्वा के मध्य भाग का तालु से स्पर्श	NCERT वर्ण विचार
मूर्धन्य (मूर्धा/तालु के ऊपरी भाग से)	ऋ	ट्, ठ्, ड्, ढ्, ण् (ट-वर्ग)	र् (लुंठित/प्रकम्पित), ष् (ऊष्म), ड़्, ढ़् (उत्क्षिप्त)	जिह्वा की नोक का मुड़कर मूर्धा से स्पर्श	NCERT वर्ण विचार
दन्त्य (दाँतों के मूल से उच्चारित)	(संस्कृत ऌ)	त्, थ्, द्, ध्, न् (त-वर्ग)	ल् (पार्श्विक व्यंजन) एवं स् (दन्त्य ऊष्म/वत्सर्य)	जिह्वा के अग्रभाग का ऊपरी दन्त-पंक्ति से स्पर्श	NCERT वर्ण विचार
ओष्ठ्य (दोनों अधरों/होठों से)	उ, ऊ	प्, फ्, ब्, भ्, म् (प-वर्ग)	(उपध्मानीय ध्वनियां)	दोनों ओष्ठों के परस्पर मिलन या गोलाकार होने से	NCERT वर्ण विचार
कण्ठतालव्य (कण्ठ + तालु का संयोग)	ए, ऐ	—	—	'अ/आ' (कण्ठ) + 'इ/ई' (तालु) के संयोग से निर्मित संयुक्त स्वर	NCERT वर्ण विचार
कण्ठोष्ठ्य (कण्ठ + ओष्ठ का संयोग)	ओ, औ	—	—	'अ/आ' (कण्ठ) + 'उ/ऊ' (ओष्ठ) के संयोग से निर्मित संयुक्त स्वर	NCERT वर्ण विचार
दन्तोष्ठ्य (ऊपरी दन्त + निचला ओष्ठ)	—	—	व् (अन्तःस्थ अर्धस्वर) एवं फ (नुक्ता युक्त फ़)	ऊपर के दाँत और निचले होंठ का स्पर्श	NCERT वर्ण विचार
नासिक्य (मुख + नासिका विवर)	अँ (अनुनासिक)	ङ्, ञ्, ण्, न्, म् (पञ्चमाक्षर)	अं (अनुस्वार — शुद्ध नासिक्य ध्वनि)	श्वास वायु का नासिका मार्ग से बाहर निकलना	NCERT वर्ण विचार

3. वर्णमाला के सूक्ष्म नियम एवं वैज्ञानिक बिंदु (Detailed Grammatical Breakdown)

- **प्रयत्न के आधार पर वर्गीकरण (NCERT वर्ण विचार):**
- **स्पृष्ट प्रयत्न:** 'क्' से 'म्' तक सभी 25 स्पर्श व्यंजन 'स्पृष्ट' प्रयत्न से उच्चारित होते हैं।
- **ईषत् स्पृष्ट प्रयत्न:** य्, र्, ल्, व् (अन्तःस्थ व्यंजन / अर्धस्वर) ईषत् स्पृष्ट प्रयत्न से उच्चारित होते हैं।
- **विवृत एवं ईषत् विवृत प्रयत्न:** सभी स्वर 'विवृत' (मुख विवर खुला रहना) प्रयत्न से तथा श्, ष्, स्, ह् (ऊष्म व्यंजन) 'ईषत् विवृत' प्रयत्न से उच्चारित होते हैं।
- **संवृत प्रयत्न:** ह्रस्व 'अ' के उच्चारण काल में निःश्वास मार्ग अपेक्षाकृत संवृत रहता है।

• **घोषत्व (नाद/कंपन) के आधार पर:**

• **अघोष वर्ण (कुल 13):** प्रत्येक वर्ग का प्रथम और द्वितीय वर्ण (क, ख; च, छ; ट, ठ; त, थ; प, फ = 10) + तीनों सकार (श, ष, स = 3)।

• **सघोष / घोष वर्ण (कुल 31):** प्रत्येक वर्ग का तृतीय, चतुर्थ और पंचम वर्ण (15) + य, र, ल, व (4) + **ह (1)** + सभी 11 स्वर।

• **प्राणत्व (श्वास वायु की मात्रा) के आधार पर:**

• **अल्पप्राण:** प्रत्येक वर्ग का विषम क्रमांक वर्ण **1, 3, 5** (15 वर्ण) + अन्तःस्थ व्यंजन **य, र, ल, व** (4) + ड़ (1) + सभी स्वर।

• **महाप्राण:** प्रत्येक वर्ग का सम क्रमांक वर्ण **2, 4** (10 वर्ण) + ऊष्म व्यंजन **श, ष, स, ह** (4) + ढ़ (1)।

• **संयुक्त व्यंजनों का विच्छेद (NCERT वर्ण विचार):**

• **क्ष** = `क् + ष` (अथवा `क् + ष् + अ`)

• **त्र** = `त् + र` (अथवा `त् + र् + अ`)

• **ज्ञ** = `ज् + ञ` (अथवा `ज् + ञ् + अ`)

• **श्र** = `श् + र` (अथवा `श् + र् + अ`)

4. क्या आप जानते हैं? (Do You Know?) बॉक्स

क्या आप जानते हैं? (Do You Know?)
NCERT के आधिकारिक 'वर्ण विचार' ग्रंथ के अनुसार, हिंदी में 'य्' और 'व्' को **'अर्धस्वर (Semi-vowels)'** कहा जाता है क्योंकि इनके उच्चारण में कहीं भी पूर्ण स्पर्श नहीं होता और श्वास वायु का अवरोध स्वरों के समान न्यूनतम रहता है। वहीं 'र्' को **'लुंठित या प्रकम्पित'** (जीभ में कंपन होने के कारण) और 'ल्' को **'पार्श्विक'** (जीभ के दोनों बगल/पार्श्व से हवा निकलने के कारण) व्यंजन कहा जाता है।

5. परीक्षा जाल सतर्कता (Exam Trap Alert) बॉक्स

परीक्षा जाल सतर्कता (Exam Trap Alert)!
प्रतियोगी परीक्षाओं में **'ह्'** वर्ण पर सबसे बड़ा जाल बिछाया जाता है: चूंकि 'श, ष, स, ह' चारों ऊष्म और महाप्राण व्यंजन हैं, इसलिए अभ्यर्थी 'श, ष, स' के साथ 'ह' को भी 'अघोष' मान लेते हैं। सावधान रहें—**'श, ष, स' अघोष महाप्राण हैं, किंतु 'ह' सघोष (घोष) महाप्राण एवं काकल्य वर्ण है!** इसी प्रकार संयुक्त व्यंजन विच्छेद में `क्ष = क् + ष` सही है; यदि पहले वर्ण 'क्' में हलन्त न लगा हो (`क + ष`), तो वह विकल्प गलत होता है (NCERT वर्ण विचार)।

6. IUC स्मृति ट्रिक (IUC 5-Second Magic Memory Trick)

• **जादुई सूत्र: "कचटतप = K-T-M-D-O (कण्ठ-तालु-मूर्धा-दन्त-ओष्ठ); अघोष = 12+शषस; सघोष = 345+यरलवह+स्वर; अल्पप्राण = 135+यरलव; महाप्राण = 24+शषसह!"**

• **स्मरण संकेत:** केवल **K-T-M-D-O** (कण्ठ, तालु, मूर्धा, दन्त, ओष्ठ) का क्रम याद रखें—इसी क्रम में क-वर्ग, च-वर्ग, ट-वर्ग, त-वर्ग, प-वर्ग और 'य-र-ल-व' तथा 'श-ष-स' स्वतः बैठ जाते हैं (IUC Academy)।

अध्याय 2: संधि मास्टरक्लास (स्वर, व्यंजन एवं विसर्ग संधि के सूत्र, पहचान चिह्न एवं अपवाद नियम)

1. चार-नोड प्रवाह आरेख (4-Node Visual Flow Diagram)

संकल्पनात्मक प्रवाह आरेख (Step-by-Step Process Flow)

चरण 1
`[चरण 1: प्रथम शब्द के अंतिम वर्ण एवं द्वितीय शब्द के प्रथम वर्ण की पहचान

चरण 2
चरण 2: स्वर संधि के 5 भेद (दीर्घ: आ/ई/ऊ, गुण: ए/ओ/अर्, वृद्धि: ऐ/औ, यण: य/व/र से पूर्व आधा वर्ण, अयादि: अय/आय/अव/आव)

चरण 3
चरण 3: व्यंजन संधि (वर्ग के प्रथम का तृतीय/पंचम में परिवर्तन, त् संबंधी 7 नियम, म् एवं छ संबंधी नियम)

चरण 4
चरण 4: विसर्ग संधि (विसर्ग का ओ, र्, श्, ष्, स् में रूपांतरण एवं विसर्ग लोप नियम)]`

2. विस्तृत तुलनात्मक सारणी: स्वर, व्यंजन एवं विसर्ग संधि के प्रमुख प्रकार, सूत्र एवं प्रामाणिक उदाहरण

संधि का प्रकार एवं उपभेद	वर्ण संयोजन सूत्र (Rule Formula)	शब्द के मध्य में त्वरित पहचान चिह्न	प्रामाणिक संधि-विच्छेद एवं उदाहरण	आधिकारिक संदर्भ स्रोत
दीर्घ स्वर संधि (`अकः सवर्णे दीर्घः`)	अ/आ + अ/आ = आ; इ/ई + इ/ई = ई; उ/ऊ + उ/ऊ = ऊ; ऋ + ऋ = ॠ	शब्द के मध्य में बड़ी मात्रा (आ, ई, ऊ)	कवि + इन्द्र = कवीन्द्र; गिरि + ईश = गिरीश; भानु + उदय = भानूदय; परम + अर्थ = परमार्थ	NCERT संधि प्रकरण
गुण स्वर संधि (`आद्गुणः`)	अ/आ + इ/ई = ए; अ/आ + उ/ऊ = ओ; अ/आ + ऋ = अर्	शिरोरेखा के ऊपर एक चोटी (ा) अथवा अर् (रेफ)	नर + इन्द्र = नरेन्द्र; सूर्य + उदय = सूर्योदय; महा + उत्सव = महोत्सव; देव + ऋषि = देवर्षि	NCERT संधि प्रकरण
वृद्धि स्वर संधि (`वृद्धिरेचि`)	अ/आ + ए/ऐ = ऐ; अ/आ + ओ/औ = औ	शिरोरेखा के ऊपर दो चोटियां (ा)	एक + एक = एकैक; तथा + एव = तथैव; सदा + एव = सदैव; महा + औषध = महौषध	NCERT संधि प्रकरण
यण स्वर संधि (`इको यणचि`)	इ/ई + भिन्न स्वर = य्; उ/ऊ + भिन्न स्वर = व्; ऋ + भिन्न स्वर = र्	य, व, र से ठीक पहले आधा व्यंजन आना	अति + आचार = अत्याचार; इति + आदि = इत्यादि; सु + आगत = स्वागत; पितृ + आज्ञा = पित्राज्ञा	NCERT संधि प्रकरण
अयादि स्वर संधि (`एचोऽयवायावः`)	ए + स्वर = अय्; ऐ + स्वर = आय्; ओ + स्वर = अव्; औ + स्वर = आव्	प्रायः 3 अक्षरों का शब्द, बीच में य या व (बिना आधे अक्षर के)	ने + अन = नयन; गै + अक = गायक; पो + अन = पवन; पौ + अक = पावक; नौ + इक = नाविक	NCERT संधि प्रकरण
व्यंजन संधि: जश्त्व एवं अनुनासिक नियम	क्, च्, ट्, त्, प् + सघोष = ग्, ज्, ड्, द्, ब्; प्रथम वर्ण + न/म = पंचमाक्षर	मध्य में वर्ग का तीसरा (ग, ज, ड, द, ब) या पांचवां आधा वर्ण	दिक् + गज = दिग्गज; वाक् + ईश = वागीश; अच् + अंत = अजंत; वाक् + मय = वाङ्मय; जगत् + नाथ = जगन्नाथ	NCERT संधि प्रकरण
व्यंजन संधि: श्चुत्व एवं त्-संबंधी नियम	त्/द् + च/छ = च्च/च्छ; त्/द् + ज/झ = ज्ज; त्/द् + श = च्छ; त्/द् + ह = द्ध	मध्य में द्वित्व व्यंजन (च्च, ज्ज, ट्ट, ड्ड, ल्ल) या च्छ, द्ध	उत् + चारण = उच्चारण; सत् + जन = सज्जन; उत् + लास = उल्लास; उत् + श्वास = उच्छ्वास; उत् + हार = उद्धार	NCERT संधि प्रकरण
विसर्ग संधि (ओत्व, रुत्व एवं सत्व)	अः + सघोष = ओ; इः/उः + सघोष = र्; विसर्ग + च/छ = श्, ट/ठ = ष्, त/थ = स्	`, रेफ (र्), या आधा श्, ष्, स्`	मनः + रथ = मनोरथ; निः + धन = निर्धन; निः + चल = निश्चल; निः + कपट = निष्कपट; नमः + ते = नमस्ते	IUC Academy हिंदी अध्ययन नोट्स 12

3. संधि के विशेष अपवाद एवं स्वर्णिम नियम (Special Exceptions & Golden Rules)

- **गुण और वृद्धि संधि के प्रसिद्ध अपवाद (जो परीक्षाओं में सीधे पूछे जाते हैं):**
- **अक्ष + ऊहिनी = अक्षौहिणी** (नियम से गुण 'ओ' होना चाहिए था, किंतु अपवाद स्वरूप वृद्धि **'औ'** होती है और 'न' का 'ण' हो जाता है)।

- **प्र + ऊढ़ = प्रौढ़** तथा **स्व + ईर = स्वैर** (अ + ऊ/ई होने पर भी वृद्धि संधि)।
- **अधर + ओष्ठ = अधरोष्ठ** तथा **दन्त + ओष्ठ = दन्तोष्ठ** (यहाँ रूप वृद्धि न होकर शुद्ध रूप में भी प्रयुक्त होता है)।
- **विसर्ग लोप एवं दीर्घीकरण नियम:**
- यदि विसर्ग (**:**) के आगे **'र'** हो, तो विसर्ग का लोप हो जाता है और उससे पहले का ह्रस्व स्वर **दीर्घ** हो जाता है:
- **निः + रोग = नीरोग** (अशुद्ध रूप 'निरोग' कभी न लिखें!)
- **निः + रस = नीरस**
- **निः + रव = नीरव**

4. क्या आप जानते हैं? (Do You Know?) बॉक्स

क्या आप जानते हैं? (Do You Know?)
NCERT के संधि-प्रकरण के अनुसार, जब किसी स्वर के बाद **'छ'** वर्ण आता है, तो संधि करते समय 'छ' से पूर्व **'च्'** का आगम स्वतः हो जाता है—जैसे **स्व + छन्द = स्वच्छन्द**, **अनु + छेद = अनुच्छेद**, **परि + छेद = परिच्छेद** और **वृक्ष + छाया = वृक्षच्छाया**। यही नियम वर्तनी शुद्धि के प्रश्नों का भी आधार बनता है।

5. परीक्षा जाल सतर्कता (Exam Trap Alert) बॉक्स

परीक्षा जाल सतर्कता (Exam Trap Alert)!
'मनोहर', 'तपोबल', 'यशोदा', 'पयोद' और 'सरोवर' शब्दों में शिरोरेखा के ऊपर एक मात्रा (`) **देखकर अभ्यर्थी तुरंत 'गुण स्वर संधि' टिक कर देते हैं! सावधान रहें—गुण संधि में** 'ओ' **तब बनता है जब विच्छेद करने पर दूसरे पद के आरंभ में** 'उ/ऊ' **सार्थक हो (जैसे** महा + उत्सव = महोत्सव **), जबकि** मनः + हर = मनोहर **,** तपः + बल = तपोबल **,** यशः + दा = यशोदा **,** पयः + द = पयोद **और** सरः + वर = सरोवर` **में विसर्ग संधि** है (IUC Academy)।

6. IUC स्मृति ट्रिक (IUC 5-Second Magic Memory Trick)

- **जादुई सूत्र: "बड़ी मात्रा दीर्घ है, एक चोटी गुण जान; दो चोटी में वृद्धि है, य-व-र से पहले आधा अक्षर यण पहचान; बिना आधे के य-व अयादि महान!"**
- **स्मरण संकेत:** मात्रा देखते ही 2 सेकंड में स्वर संधि का भेद पहचानें, और 'ओ' वाली संधि में हमेशा दूसरे पद का प्रथम वर्ण (**उ/ऊ** बनाम सघोष व्यंजन) जांचकर गुण व विसर्ग का अंतर पकड़ें (IUC Academy)।

अध्याय 3: समास संरचना एवं विग्रह विज्ञान (अव्ययीभाव, तत्पुरुष, कर्मधारय, द्विगु, द्वंद्व एवं बहुव्रीहि का सूक्ष्म अंतर)

1. चार-नोड प्रवाह आरेख (4-Node Visual Flow Diagram)

संकल्पनात्मक प्रवाह आरेख (Step-by-Step Process Flow)

चरण 1
`[चरण 1: समस्तपद में पूर्वपद एवं उत्तरपद की पहचान तथा समास-विग्रह

चरण 2
चरण 2: पद-प्रधानता जांच (पूर्वपद प्रधान = अव्ययीभाव | उत्तरपद प्रधान = तत्पुरुष, कर्मधारय, द्विगु)

चरण 3
चरण 3: द्वंद्व (दोनों पद प्रधान, योजक/विलोम) बनाम बहुव्रीहि (दोनों पद अप्रधान, तीसरा विशिष्ट अर्थ प्रधान)

चरण 4
चरण 4: अपवाद परीक्षण (नदी-संहिता या उपसर्ग युक्त संख्या, विशेषण द्विरुक्ति एवं विग्रह-आधारित प्राथमिकता)]`

2. विस्तृत तुलनात्मक सारणी: हिंदी के 6 मुख्य समासों की पद-प्रधानता, पहचान एवं उदाहरण

समास का नाम	पद की प्रधानता	संरचना एवं त्वरित पहचान लक्षण	प्रामाणिक समस्तपद एवं समास-विग्रह उदाहरण	आधिकारिक संदर्भ स्रोत
अव्ययीभाव समास	**पूर्वपद (प्रथम पद)** प्रधान एवं अव्यय	आरंभ में उपसर्ग (**यथा, आ, प्रति, प्र, नि, बे, भर, अनु**) या **संज्ञा की द्विरुक्ति**	**यथाशक्ति** (शक्ति के अनुसार), **आजन्म** (जन्म से लेकर), **प्रत्येक** (एक-एक), **रातोंरात** (रात ही रात में), **हाथोंहाथ**	NCERT समास परिचय
तत्पुरुष समास (कारकीय व नञ्)	**उत्तरपद (द्वितीय पद)** प्रधान	विग्रह करने पर कारक चिह्न (**को, से, के लिए, से अलगाव, का/के/की, में/पर**) या **अ/अन्** निषेध का लोप	**शरणागत** (शरण को आगत), **तुलसीकृत** (तुलसी द्वारा कृत), **रसोईघर** (रसोई के लिए घर), **पथभ्रष्ट** (पथ से भ्रष्ट), **राजपुत्र** (राजा का पुत्र), **असत्य** (न सत्य - नञ् तत्पुरुष)	NCERT समास परिचय
कर्मधारय समास	**उत्तरपद** प्रधान	पूर्वपद और उत्तरपद में **विशेषण-विशेष्य** अथवा **उपमान-उपमेय** का संबंध	**नीलकमल** (नीला है जो कमल), **महात्मा** (महान है जो आत्मा), **चरणकमल** (कमल के समान चरण), **मृगनयनी** (मृग के समान नयनों वाली), **लालमिर्च**	NCERT समास परिचय
द्विगु समास	**उत्तरपद** प्रधान	पूर्वपद **संख्यावाचक विशेषण** (समूह या समाहार का बोधक)	**त्रिभुवन** (तीन भुवनों का समाहार), **चौराहा** (चार राहों का समूह), **नवरत्न** (नौ रत्नों का समूह), **शताब्दी** (सौ अब्दों का समूह), **दुर्गासप्तशती**	NCERT समास परिचय
द्वंद्व समास (इतरेतर, समाहार, वैकल्पिक)	**दोनों पद (पूर्वपद व उत्तरपद)** प्रधान	विग्रह में **'और', 'तथा', 'या', 'अथवा'** का प्रयोग; परस्पर पूरक या विलोम शब्द	**माता-पिता** (माता और पिता), **सीताराम** (सीता और राम), **पाप-पुण्य** (पाप या पुण्य), **दाल-रोटी** (दाल, रोटी आदि), **देवासुर** (देव और असुर), **शीतोष्ण** (शीत या उष्ण)	NCERT समास परिचय
बहुव्रीहि समास	**कोई पद प्रधान नहीं (अन्य/तीसरा पद प्रधान)**	दोनों पद मिलकर किसी पौराणिक, रूढ़ या विशिष्ट तीसरे व्यक्ति/वस्तु की ओर संकेत करें	**चक्रपाणि** (चक्र है पाणि/हाथ में जिसके = विष्णु), **दशानन** (दस हैं आनन जिसके = रावण), **लम्बोदर** (गणेश), **वीणापाणि** (सरस्वती), **मृत्युंजय** (शिव)	NCERT समास परिचय

3. समास के सूक्ष्म नियम एवं भ्रम-निवारण बिंदु (Critical Disambiguation Rules)

- **द्विरुक्ति शब्दों का नियम:** जब एक ही संज्ञा या अव्यय शब्द दो बार बिना परिवर्तन के दोहराया जाए—जैसे **धीरे-धीरे**, **पल-पल**, **गाँव-गाँव**, **घर-घर**, **दिनोंदिन**, **धड़ाधड़**—तो बीच में योजक चिह्न (**-**) होने पर भी वहाँ द्वंद्व समास नहीं, बल्कि **अव्ययीभाव समास** होता है!
- **नदी-संज्ञा सूत्र (नदीभिश्च):** यदि किसी संख्यावाची शब्द के साथ किसी **नदी का नाम** जुड़ा हो (जैसे **पंचगंगम्** = पाँच गंगाओं का समाहार, **द्वियमुनम्** = दो यमुनाओं का समाहार), तो पाणिनीय व्याकरण सूत्र के अनुसार वहाँ द्विगु समास न होकर **अव्ययीभाव समास** होता है।
- **संधि-युक्त द्वंद्व शब्द:** जरूरी नहीं कि द्वंद्व समास में हमेशा बीच में योजक चिह्न (**-**) लगा हो। **देवासुर** (**देव + असुर**), **लाभालाभ** (**लाभ या अलाभ**), **धर्माधर्म** (**धर्म या अधर्म**), **शीतोष्ण** (**शीत या उष्ण**) और **हरिहर** (**हरि और हर**) में योजक चिह्न नहीं है, फिर भी ये **द्वंद्व समास** के उत्कृष्ट उदाहरण हैं (NCERT समास परिचय)।

4. क्या आप जानते हैं? (Do You Know?) बॉक्स

क्या आप जानते हैं? (Do You Know?)
NCERT के 'समास परिचय' अध्याय के अनुसार, द्वंद्व समास में समस्तपद बनाते समय कम स्वर वर्णों वाले पद, ह्रस्व इकारान्त/उकारान्त पद अथवा श्रेष्ठ/पूज्य पद को पहले रखने की परंपरा है (जैसे **माता-पिता**, **सीताराम**, **वायुसूर्यौ**)। इसके अतिरिक्त, जहाँ दो पदों में से एक का लोप होकर केवल एक पद द्विवचन/बहुवचन में शेष बचे (जैसे **माता च पिता च = पितरौ**), उसे 'एकशेष वृत्ति' कहा जाता है।

5. परीक्षा जाल सतर्कता (Exam Trap Alert) बॉक्स

परीक्षा जाल सतर्कता (Exam Trap Alert)!
'पीताम्बर', 'त्रिनेत्र', 'चतुर्भुज' और 'दशानन' जैसे शब्दों में अभ्यर्थी अक्सर द्विगु/कर्मधारय और बहुव्रीहि के बीच फँस जाते हैं। स्वर्णिम नियम याद रखें: यदि प्रश्न केवल शब्द देकर समास पूछे और विकल्प में **'बहुव्रीहि'** मौजूद हो, तो **सदैव बहुव्रीहि समास को ही प्रथम वरीयता (First Priority)** दें! केवल तब जब बहुव्रीहि विकल्प में न हो, या वाक्य में प्रयोग विशेषण/संख्या के रूप में किया गया हो (जैसे—"मोहन ने पीताम्बर सुखाया" में कर्मधारय), तभी कर्मधारय या द्विगु चुनें (NCERT समास परिचय)।

6. IUC स्मृति ट्रिक (IUC 5-Second Magic Memory Trick)

• **जादुई सूत्र: "अव्ययी में पहला प्रधान (उपसर्ग/द्विरुक्ति), तत्पुरुष-कर्मधारय-द्विगु में दूसरा महान, द्वंद्व में दोनों बराबर, बहुव्रीहि में तीसरा भगवान!"**

• **स्मरण संकेत:** योजक चिह्न देखकर आँख बंद करके द्वंद्व न लगाएं—समान शब्द (**रातों-रात** , **धीरे-धीरे**) = अव्ययीभाव; विपरीत/पूरक शब्द (**माता-पिता** , **पाप-पुण्य**) = द्वंद्व (IUC Academy)।

अध्याय 4: शब्द-भेद, व्युत्पत्ति एवं रूपांतरण (तत्सम, तद्भव, देशज, विदेशज, संकर तथा रूढ़, यौगिक व योगरूढ़ शब्द)

1. चार-नोड प्रवाह आरेख (4-Node Visual Flow Diagram)

संकल्पनात्मक प्रवाह आरेख (Step-by-Step Process Flow)

चरण 1
`[चरण 1: स्रोत या इतिहास के आधार पर 5 भेद (तत्सम, तद्भव, देशज, आगत/विदेशज एवं संकर शब्द)

चरण 2
चरण 2: तत्सम-तद्भव ध्वनि परिवर्तन परीक्षण (क्ष->ख/छ, व->ब, श->स, ऋ/र-रेफ/ष/ण = तत्सम बनाम चंद्रबिंदु /ड़/ढ़ = तद्भव)

चरण 3
चरण 3: व्युत्पत्ति या रचना के आधार पर 3 भेद (रूढ़, यौगिक एवं योगरूढ़ शब्द)

चरण 4
चरण 4: अर्थ एवं प्रयोग के आधार पर वर्गीकरण (एकार्थी, अनेकार्थी, पर्यायवाची, विलोम एवं विकारी-अविकारी)]`

2. विस्तृत तुलनात्मक सारणी: तत्सम बनाम तद्भव शब्दों की वैज्ञानिक पहचान एवं उच्च-आवृत्ति परीक्षा शब्द-युग्म

पहचान नियम / ध्वनि परिवर्तन	तत्सम शब्द की विशेषता एवं उदाहरण	तद्भव शब्द की विशेषता एवं रूपान्तरित उदाहरण	परीक्षा में सर्वाधिक पूछे जाने वाले अतिरिक्त युग्म	आधिकारिक संदर्भ स्रोत
नियम 1: **क्ष** का **ख** या **छ** में परिवर्तन	**क्ष** प्राय: तत्सम शब्दों में प्रयुक्त होता है: **क्षीर** , **क्षेत्र** , **अक्षि** , **मक्षिका** , **साक्षी**	तद्भव में **ख** या **छ** बन जाता है: **खीर** , **खेत** , **आँख** , **मक्खी** , **साखी**	**इक्षु → ईख** , **अक्षर → आखर** , **परीक्षा → परख** , **रक्षा → राखी** , **दक्षिण → दाहिना**	NCERT शब्दकोश एवं वर्ण अनुक्रम
नियम 2: **व** का **ब** में परिवर्तन	तत्सम में **व** की प्रधानता: **वणिक** , **वर्षा** , **वक** , **वरयात्रा** , **वानर** , **विद्युत**	तद्भव में **ब** हो जाता है: **बनिया** , **बरसात** , **बगुला** , **बारात** , **बंदर** , **बिजली**	**वधू → बहू** , **वत्स → बच्चा** , **विभूति → भभूत** , **वेत्र → बेंत** , **व्याघ्र → बाघ**	IUC Academy हिंदी अध्ययन नोट्स 12
नियम 3: **श** एवं **ष** का **स** या **ख** होना	तत्सम में तालव्य **श** व मूर्धन्य **ष**: **श्यामल** , **श्वशुर** , **शुष्क** , **कृषक** , **महिष**	तद्भव में दन्त्य **स**: **साँवला** , **ससुर** , **सूखा** , **किसान** , **भैंस**	**श्मशान → श्मशान/मसान** , **श्रृंगार → सिंगार** , **शीर्ष → सीस** , **शुक → सुआ** , **शिक्षा → सीख**	IUC Academy हिंदी अध्ययन नोट्स 12
नियम 4: **ऋ** , **त्र** एवं **र** (रेफ/पदेन)	तत्सम में **ऋ**, **त्र**, रेफ: **घृत** , **मृतिका** , **रात्रि** , **सूत्र** , **कर्पूर** , **चक्र** , **ताम्र**	तद्भव में सरल रूप: **घी** , **मिट्टी** , **रात** , **सूत** , **कपूर** , **चाक** , **ताँबा**	**गृध्र → गीध** , **भ्रातृजाया → भौजाई** , **नारिकेल → नारियल** , **हरिद्रा → हल्दी** , **गोधूम → गेहूँ**	IUC Academy हिंदी अध्ययन नोट्स 12
नियम 5: चंद्रबिंदु (`) एवं द्विगुण (**ड़, ढ़**)	तत्सम में केवल अनुस्वार (`): चन्द्र , ग्राम , दन्त , मुख , अट्टालिका , कपट`	**चंद्रबिंदु (`) एवं ड़/ढ़ सदैव तद्भव**: चाँद , गाँव , दाँत , मुँह , अटारी , किवाड़`	**अंधकार → अँधेरा** , **अंगुष्ठ → अँगूठा** , **आमलक → आँवला** , **उष्ट्र → ऊँट** , **घोटक → घोड़ा**	IUC Academy हिंदी अध्ययन नोट्स 12

3. देशज, विदेशज (आगत), संकर एवं रचना-आधारित शब्द-भेद

• **देशज (स्थानीय बोलियों से उत्पन्न शब्द): लोटा, कटोरा, डिबिया, खिचड़ी, खिड़की, पगड़ी, जूता, तेंदुआ, फुनगी, कलाई, झोला, खचाखच, गड़बड़, धड़ाम** ।

• **विदेशज (आगत) शब्दों की प्रमुख श्रेणियां:**

• **अरबी शब्द: अदालत, अक्ल, अल्लाह, इस्तीफा, औरत, कानून, किताब, कीमत, गरीब, जनाब, जिला, तहसील, तारीख, दुनिया, नकद, फकीर, फैसला, मुहावरा, मुकदमा, वकील, रिश्वत, लिफाफा, हलवाई** ।

• **फारसी शब्द:** आदमी, आमदनी, आराम, अफसोस, किनारा, गिरफ्तार, गुलाब, चश्मा, चेहरा, जहर, जिंदगी, दुकान, दरबार, दवा, दिल, दीवार, सरकार, सरदार, सितार, हजार, हिंदी।

• **तुर्की शब्द:** कैंची, चाकू, तोप, बारूद, लाश, दरोगा, बहादुर, बेगम, बावर्ची, कुली, सुराग, सौगात, चेचक, मुगल, उर्दू।

• **पुर्तगाली शब्द:** आलपिन, अलमारी, बाल्टी, चाबी, फीता, तम्बाकू, तौलिया, पपीता, प्याला, गमला, गोभी, गोदाम, साबुन, संतरा, कमरा, काजू, पादरी, नीलाम।

• **अंग्रेजी, फ्रेंच व जापानी शब्द:** अपील, कोर्ट, मजिस्ट्रेट, पुलिस, रेल, टिकट, अस्पताल (अंग्रेजी); कारतूस, कूपन, काजू, अंग्रेज, रिपोर्ताज, बिगुल (फ्रेंच); रिक्शा, सायोनारा, सुनामी (जापानी); चाय, लीची, चीकू, तूफान (चीनी)।

• **संकर शब्द (दो भिन्न भाषाओं के मेल से बने शब्द):**

• रेलगाड़ी (रेल = अंग्रेजी + गाड़ी = हिंदी)

• टिकटघर (टिकट = अंग्रेजी + घर = हिंदी)

• छायादार (छाया = संस्कृत + दार = फारसी)

• सीलमबंद (सील = अंग्रेजी + बंद = फारसी)

• वर्षगाँठ (वर्ष = संस्कृत + गाँठ = हिंदी)

• **रचना या बनावट के आधार पर शब्द के 3 भेद:**

1. **रूढ़ शब्द:** जिनके सार्थक खंड न किए जा सकें (जैसे— जल, दिन, घर, हाथी, कमल)।

2. **यौगिक शब्द:** जो दो सार्थक शब्दों या उपसर्ग-प्रत्यय के योग से बनें और दोनों खंडों का सीधा अर्थ दें (जैसे— विद्यालय, पुस्तकालय, रसोईघर, विज्ञान)।

3. **योगरूढ़ शब्द:** जो यौगिक तो हों, किंतु सामान्य अर्थ छोड़कर किसी विशेष (तीसरे) अर्थ में रूढ़ हो जाएं—**सभी बहुव्रीहि समास के उदाहरण योगरूढ़ शब्द होते हैं** (जैसे— पंकज, जलज, दशानन, लम्बोदर, पीताम्बर)।

4. क्या आप जानते हैं? (Do You Know?) बॉक्स

क्या आप जानते हैं? (Do You Know?)
स्वयं **'हिंदी', 'हिंदू' और 'हिंदुस्तान'** शब्द मूलतः **फारसी भाषा** की देन हैं (सिंधु नदी को फारसी में 'हिंदू' उच्चारित किए जाने के कारण), जबकि **'उर्दू'** शब्द मूलतः **तुर्की भाषा** का शब्द है जिसका शाब्दिक अर्थ 'शाही शिविर या खेमा' होता है! इसी प्रकार प्रतिदिन पिया जाने वाला **'चाय'** और **'चीनी'** चीनी भाषा के शब्द हैं, जबकि **'चाय में डाली जाने वाली इलायची'** (एला) का तत्सम रूप है (IUC Academy)।

5. परीक्षा जाल सतर्कता (Exam Trap Alert) बॉक्स

संकल्पनात्मक प्रवाह आरेख (Step-by-Step Process Flow)

चरण 1
परीक्षा जाल सतर्कता (Exam Trap Alert)! अभ्यर्थी अक्सर 'अलमारी', 'साबुन', 'तौलिया', 'चाबी', 'बाल्टी' और 'गमला' को प्रतिदिन घरेलू उपयोग में आने के कारण हिंदी (तद्भव/देशज) या अरबी-फारसी मान लेते हैं! ध्यान रहे—ये सभी घरेलू वस्तुएं भारत में पुर्तगालियों के आगमन के साथ आई शब्दावली हैं, अतः ये पुर्तगाली (विदेशज) शब्द हैं। वहीं तत्सम-तद्भव में 'कपट' तत्सम है और उसका तद्भव 'कपड़ा' नहीं बल्कि 'किवाड़' (कपाट) से अलग ध्यान रखना चाहिए: `कर्पट**

चरण 2
कपड़ा और कपाट

चरण 3
किवाड़` होता है (IUC Academy)!

6. IUC स्मृति ट्रिक (IUC 5-Second Magic Memory Trick)

• **जादुई सूत्र: "चंद्रबिंदु (ँ) और ड़-ढ़ दिखें तो 100% तद्भव मान; क्ष-त्र-ज्ञ-श्र, ष, ऋ, ण दिखें तो तुरंत तत्सम पहचान!"**

• **स्मरण संकेत:** पुर्तगाली शब्दों की ट्रिक: "पादरी ने **कमरे** की **अलमारी** से **चाबी** निकाली, **तौलिया** और **साबुन** लेकर **बाल्टी** से स्नान किया, फिर **गमले** के पास बैठकर **गोभी**, **पपीता**, **काजू** और **संतरा** खाया!" (IUC Academy)।

अध्याय 5: संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया एवं अव्यय (पद-परिचय एवं विकारी-अविकारी शब्दों का व्याकरणिक विश्लेषण)

1. चार-नोड प्रवाह आरेख (4-Node Visual Flow Diagram)

संकल्पनात्मक प्रवाह आरेख (Step-by-Step Process Flow)

चरण 1
`[चरण 1: विकारी शब्द स्तंभ-I (संज्ञा के 5 भेद: व्यक्तिवाचक, जातिवाचक, भाववाचक, समूहवाचक, द्रव्यवाचक + सर्वनाम के 6 भेद व 11 मूल सर्वनाम)

चरण 2
चरण 2: विकारी शब्द स्तंभ-II (विशेषण के 4 भेद: गुणवाचक, संख्यावाचक, परिमाणवाचक, सार्वनामिक + प्रविशेषण व अवस्थाएं)

चरण 3
चरण 3: विकारी शब्द स्तंभ-III (क्रिया: अकर्मक-सकर्मक, द्विकर्मक, पूर्वकालिक, प्रेरणार्थक, नामधातु एवं संयुक्त क्रिया)

चरण 4
चरण 4: अविकारी / अव्यय शब्द (क्रियाविशेषण, संबंधबोधक, समुच्चयबोधक, विस्मयादिबोधक एवं निपात)]`

2. विस्तृत तुलनात्मक सारणी: विकारी एवं अविकारी (अव्यय) शब्द-भेदों का संपूर्ण व्याकरणिक मानचित्र

व्याकरणिक कोटि	मुख्य भेदों की संख्या एवं नाम	मूल पहचान सूत्र एवं नियम	प्रामाणिक उदाहरण एवं परीक्षा विशेष बिंदु	आधिकारिक संदर्भ स्रोत
संज्ञा (Noun)	व्युत्पत्ति से 3, अर्थ से **5 भेद**: व्यक्तिवाचक, जातिवाचक, भाववाचक, समूहवाचक, द्रव्यवाचक	किसी विशेष नाम = व्यक्तिवाचक; संपूर्ण वर्ग = जातिवाचक; अमूर्त गुण/दशा = भाववाचक	**गंगा, हिमालय, रामायण** (व्यक्तिवाचक); **नदी, पर्वत, शिक्षक, भूकंप** (जातिवाचक); **बचपन, मिठास, बुढ़ापा** (भाववाचक); **सेना, पुलिस, गुच्छा** (समूहवाचक); **सोना, पानी, घी** (द्रव्यवाचक)	NCERT हिंदी व्याकरण
सर्वनाम (Pronoun)	**6 भेद** (मूल सर्वनामों की संख्या **11** है: **मैं, तू, आप, यह, वह, जो, सो, कोई, कुछ, कौन, क्या**)	पुरुषवाचक (उत्तम, मध्यम, अन्य), निश्चयवाचक, अनिश्चयवाचक, संबंधवाचक, प्रश्नवाचक, निजवाचक	**मैं, हम** (उत्तम पुरुष); **तू, तुम, आप** (मध्यम); **वह, वे** (अन्य); **यह मेरी पुस्तक है** (निश्चयवाचक); **मैं अपने-आप चला जाऊँगा** (**आप** = निजवाचक)	NCERT व्याकरण संदर्भ
विशेषण (Adjective)	**4 भेद**: गुणवाचक, संख्यावाचक (निश्चित/अनिश्चित), परिमाणवाचक (निश्चित/अनिश्चित), सार्वनामिक (संकेतवाचक)	संज्ञा/सर्वनाम की विशेषता बताने वाला शब्द 'विशेषण' और जिसकी विशेषता बताई जाए वह 'विशेष्य'	**ईमानदार व्यक्ति** (गुणवाचक); **चार लड़के, कुछ लोग** (संख्यावाचक); **दो लीटर दूध, थोड़ा घी** (परिमाणवाचक); **यह घर मेरा है** (सार्वनामिक विशेषण)	IUC Academy हिंदी अध्ययन नोट्स 12
क्रिया (Verb)	कर्म के आधार पर **2 भेद** (अकर्मक, सकर्मक); प्रयोग/रचना से पूर्वकालिक, प्रेरणार्थक, नामधातु, संयुक्त	क्रिया से पूर्व **'क्या'** और **'किसको'** प्रश्न करने पर उत्तर मिले तो सकर्मक, कर्ता पर प्रभाव पड़े तो अकर्मक	**सोना, रोना, हँसना, उड़ना, तैरना** (अकर्मक); **पढ़ना, लिखना, खाना** (सकर्मक); **वह नहाकर सो गया** (**नहाकर** = पूर्वकालिक); **बतियाना, लजाना** (नामधातु)	IUC Academy हिंदी अध्ययन नोट्स 12
अव्यय / अविकारी (Indeclinable)	**4 मुख्य भेद** (+ निपात): क्रियाविशेषण (स्थान, काल, रीति, परिमाण), संबंधबोधक, समुच्चयबोधक, विस्मयादिबोधक	जिन शब्दों पर लिंग, वचन, कारक या काल का कोई प्रभाव नहीं पड़ता	**तेज, धीरे, आज, यहाँ, बहुत** (क्रियाविशेषण); **के बिना, के आगे** (संबंधबोधक); **और, किंतु, इसलिए** (समुच्चयबोधक); **ही, भी, तो, तक, मात्र** (निपात)	IUC Academy हिंदी अध्ययन नोट्स 12

3. क्या आप जानते हैं? (Do You Know?) बॉक्स

क्या आप जानते हैं? (Do You Know?)
हिंदी व्याकरण में जब किसी व्यक्तिवाचक संज्ञा का प्रयोग किसी व्यक्ति विशेष के लिए न होकर उसके जैसे गुण-दोष वाले संपूर्ण वर्ग के लिए किया जाता है, तो वह **'जातिवाचक संज्ञा'** बन जाती है—जैसे: "आज भी देश में **जयचंदों** और **विभीषणों** की कमी नहीं है" (यहाँ 'जयचंद' और 'विभीषण' जातिवाचक संज्ञा हैं)। इसके विपरीत, जब कोई जातिवाचक शब्द किसी एक विशेष व्यक्ति के लिए रूढ़ हो जाए—जैसे: "पंडित जी भारत के प्रथम प्रधानमंत्री थे" या "नेताजी ने आजाद हिंद फौज का गठन किया"—तो वहाँ 'पंडित जी' (जवाहरलाल नेहरू) और 'नेताजी' (सुभाष चंद्र बोस) **व्यक्तिवाचक संज्ञा** बन जाते हैं (IUC Academy)!

4. परीक्षा जाल सतर्कता (Exam Trap Alert) बॉक्स

परीक्षा जाल सतर्कता (Exam Trap Alert)!
'निश्चयवाचक सर्वनाम' बनाम 'सार्वनामिक विशेषण' का अंतर हर परीक्षा में अभ्यर्थियों को उलझाता है:
1. यदि `यह / वह` के तुरंत बाद **वही संज्ञा** आए जिसकी ओर संकेत किया जा रहा है, तो वह **सार्वनामिक विशेषण** है—जैसे: **"यह पुस्तक मेरी है"** या **"वह लड़का ईमानदार है"**।
2. यदि `यह / वह` के तुरंत बाद संज्ञा न आकर कोई अन्य शब्द आए, तो वह **निश्चयवाचक सर्वनाम** है—जैसे: **"यह मेरी पुस्तक है"**।
इसी प्रकार "आकाश में पक्षी उड़ रहे हैं" या "बच्चा छत पर सो रहा है" में `आकाश` और `छत` अधिकरण कारक (स्थान) हैं, कर्म नहीं; अतः `उड़ना` और `सोना` शत-प्रतिशत **अकर्मक क्रियाएं** हैं (IUC Academy)!

5. IUC स्मृति ट्रिक (IUC 5-Second Magic Memory Trick)

- **जादुई सूत्र: "गिन सकें तो संख्यावाचक, नाप-तौल सकें तो परिमाणवाचक; सर्वनाम+संज्ञा साथ दिखे तो सार्वनामिक विशेषण जान, 'कर' जुड़े तो पूर्वकालिक क्रिया पहचान!"**
- **स्मरण संकेत:** मूल सर्वनाम = 11; सर्वनाम के भेद = 6; संज्ञा के भेद = 5; विशेषण के भेद = 4; अव्यय के भेद = 4 (`11 -> 6 -> 5 -> 4 -> 4` का अवरोही क्रम) (IUC Academy)।

अध्याय 6: कारक, विभक्ति चिह्न (परसर्ग), लिंग, वचन, काल एवं वाच्य (कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य एवं भाववाच्य परिवर्तन नियम)

1. चार-नोड प्रवाह आरेख (4-Node Visual Flow Diagram)

संकल्पनात्मक प्रवाह आरेख (Step-by-Step Process Flow)

`चरण 1`
`[चरण 1: हिंदी के 8 कारक एवं परसर्ग (कर्ता-ने, कर्म-को, करण-से/द्वारा, संप्रदान-को/के लिए, अपादान-से अलगाव, संबंध-का/के/की, अधिकरण-में/पर, संबोधन)

`चरण 2`
चरण 2: लिंग एवं वचन नियम (सदैव बहुवचन व सदैव एकवचन शब्द तथा तिर्यक बहुवचन नियम)

`चरण 3`
चरण 3: काल के 3 मुख्य भेद एवं 14 उपभेद (वर्तमान के 5, भूतकाल के 6, भविष्यत् के 3)

`चरण 4`
चरण 4: वाच्य त्रिकोण (कर्तृवाच्य: कर्ता प्रधान | कर्मवाच्य: कर्म प्रधान, सकर्मक | भाववाच्य: भाव प्रधान, अकर्मक एकवचन पुल्लिंग)]`

2. विस्तृत तुलनात्मक सारणी: कारक विभक्तियों के सूक्ष्म भेद एवं वाच्य-परिवर्तन आव्यूह

व्याकरणिक श्रेणी / कारक या वाच्य	विभक्ति चिह्न / संरचना सूत्र	सूक्ष्म पहचान नियम एवं विशेष प्रयोग	प्रामाणिक उदाहरण वाक्य	आधिकारिक संदर्भ स्रोत
करण कारक बनाम अपादान कारक ('से' विभक्ति)	दोनों में **'से'** परसर्ग का प्रयोग	**करण:** साधन या माध्यम का बोध; **अपादान:** अलगाव, डर, तुलना, लज्जा, आरंभ या सीखने का बोध	`राम ने बाण से रावण को मारा` (करण - साधन); `पेड़ से पत्ता गिरा`, `गंगा हिमालय से निकलती है`, `बिल्ली छत से कूदी`, `मोहन सोहन से चतुर है`, `बालक शेर से डरता है` (सभी में **अपादान कारक**)	NCERT कारक और विभक्ति

व्याकरणिक श्रेणी / कारक या वाच्य	विभक्ति चिह्न / संरचना सूत्र	सूक्ष्म पहचान नियम एवं विशेष प्रयोग	प्रामाणिक उदाहरण वाक्य	आधिकारिक संदर्भ स्रोत
कर्म कारक बनाम संप्रदान कारक ('को' विभक्ति)	दोनों में **'को'** परसर्ग का प्रयोग	**कर्म:** जिस पर क्रिया का व्यापार पड़े; **संप्रदान:** जिसे कुछ सदा के लिए **दान** दिया जाए या रुचि/नमस्कार हो	**माँ ने बच्चे को बुलाया**, **धोबी को कपड़े दो** (लौटाने हेतु = कर्म कारक); **राजा ने गरीबों को कंबल दिए**, **भिखारी को भिक्षा दो** (सदा के लिए दान = **संप्रदान कारक**)	NCERT कारक और विभक्ति
कर्तृवाच्य (Active Voice)	**कर्ता (ने / शून्य विभक्ति) + कर्म + क्रिया**	क्रिया का लिंग और वचन **कर्ता** के अनुसार बदलता है (अकर्मक व सकर्मक दोनों क्रियाएं संभव; भूतकाल में 'ने' आने पर कर्म के अनुसार)	**राम पुस्तक पढ़ता है**; **सीता पत्र लिखती है**; **पक्षी आकाश में उड़ते हैं**	IUC Academy हिंदी अध्ययन नोट्स 12
कर्मवाच्य (Passive Voice)	**कर्ता + से / के द्वारा + कर्म + जा धातु रूप**	केवल **सकर्मक क्रिया** होती है; क्रिया का लिंग व वचन सदैव **कर्म** के अनुसार होता है	**राम के द्वारा पुस्तक पढ़ी जाती है**; **सीता द्वारा पत्र लिखा गया**; **पतंग उड़ाई जा रही है**	IUC Academy हिंदी अध्ययन नोट्स 12
भाववाच्य (Impersonal Voice)	**कर्ता + से + (अकर्मक क्रिया: सदैव अन्य पुरुष, पुल्लिंग, एकवचन)**	केवल **अकर्मक क्रिया** होती है और प्रायः असमर्थता/निषेध का भाव होता है	**मुझसे अब चला नहीं जाता**; **रोहित से दौड़ा नहीं जाता**; **चलो, अब सोया जाए**; **धूप में बैठा नहीं जाता**	IUC Academy हिंदी अध्ययन नोट्स 12

3. वचन एवं काल के स्वर्णिम परीक्षा नियम (Number & Tense Golden Rules)

• सदैव बहुवचन (नित्य बहुवचन) में प्रयुक्त होने वाले शब्द:

• **प्राण**, **दर्शन**, **आँसू**, **होश**, **बाल**, **हस्ताक्षर**, **समाचार**, **लोग**, **दाम**, **अक्षत**, **भाग्य** —इन शब्दों का प्रयोग हिंदी में सदैव बहुवचन में होता है (जैसे—"मेरे **प्राण** निकल **गए**", "आपके **दर्शन** दुर्लभ हो **गए**", "मैंने **हस्ताक्षर** कर **दिए हैं**")।

• सदैव एकवचन (नित्य एकवचन) में प्रयुक्त होने वाले शब्द:

• **जनता**, **भीड़**, **पुलिस**, **सेना**, **पानी**, **वर्षा**, **आकाश**, **सत्य**, **झूठ**, **सोना**, **चाँदी**, **दूध**, **दही**, **सामान**, **माल** —ये शब्द समूह या द्रव्य होने पर भी व्याकरणिक दृष्टि से सदैव एकवचन रहते हैं (जैसे—"**जनता** जागरूक हो **गई है**", "सारा **सामान** बिखर **गया**")।

• भूतकाल के 6 उपभेद (जिनसे सीधा प्रश्न आता है):

1. **सामान्य भूत:** **मोहन आया।**
2. **आसन्न भूत (अभी-अभी पूर्ण):** **मोहन आया है।**
3. **पूर्ण भूत:** **मोहन आया था।**
4. **अपूर्ण (तात्कालिक) भूत:** **मोहन आ रहा था।**
5. **संदिग्ध भूत:** **मोहन आया होगा।**
6. **हेतुहेतुमद् भूत (शर्त आधारित):** **यदि वर्षा होती, तो फसल अच्छी होती।**

4. क्या आप जानते हैं? (Do You Know?) बॉक्स

क्या आप जानते हैं? (Do You Know?)
NCERT के 'कारक और विभक्ति' अध्याय के अनुसार, अपादान कारक केवल 'पेड़ से पत्ता गिरने' (भौतिक अलगाव) तक सीमित नहीं है! जब भी किसी वाक्य में **दो वस्तुओं की तुलना** की जाए (**मोहन सोहन से लंबा है**), किसी से **भय/डर** लगे (**बच्चा साँप से डरता है**), किसी से **लज्जा/शर्म** आए (**बहू ससुर से लजाती है**), किसी से **नियमपूर्वक विद्या सीखी** जाए (**छात्र गुरुजी से व्याकरण सीखता है**), या किसी स्रोत से **उत्पत्ति/प्रवाह** हो (**गंगा हिमालय से निकलती है**)—इन सभी स्थितियों में **अपादान कारक** ही होता है!

5. परीक्षा जाल सतर्कता (Exam Trap Alert) बॉक्स

परीक्षा जाल सतर्कता (Exam Trap Alert)!
वाक्य **"राम ने रावण को मारा"** या **"सीता ने रोटी खाई"** में कौन-सा वाच्य है? 90% अभ्यर्थी क्रिया ('खाई' रोटी के अनुसार स्त्रीलिंग है) देखकर इसे 'कर्मवाच्य' टिक कर देते हैं! सावधान रहें—जब भी कर्ता के साथ **'ने'** विभक्ति चिह्न लगा हो, तो वहाँ क्रिया कर्म के अनुसार बदलने के बावजूद **सदैव और शत-प्रतिशत 'कर्तृवाच्य' (Active Voice) ही होता है!** कर्मवाच्य में कर्ता के साथ 'ने' कभी नहीं आ सकता (`से` या `के द्वारा` आता है) (IUC Academy)।

6. IUC स्मृति ट्रिक (IUC 5-Second Magic Memory Trick)

• जादुई सूत्र: "कर्ता संग 'ने' दिखे तो आँख मूँदकर कर्तृवाच्य; 'से/द्वारा' + कर्म हो तो कर्मवाच्य; 'से' + अकर्मक एकवचन पुल्लिंग ('चला नहीं जाता') हो तो भाववाच्य!"

• स्मरण संकेत: नित्य बहुवचन की ट्रिक: "आपके **दर्शन** पाते ही मेरे **होश** और **प्राण** लौट आए, आँखों से **आँसू** छलक पड़े, **बाल** सँवारे और **समाचार** पत्र पर **हस्ताक्षर** कर **दाम** चुका दिए!" (IUC Academy)।

अध्याय 7: उपसर्ग, प्रत्यय एवं शब्दकोश वर्ण-अनुक्रम (क्ष, त्र, ज्ञ एवं अं/अँ के शब्दकोशीय स्थान निर्धारण का नियम)

1. चार-नोड प्रवाह आरेख (4-Node Visual Flow Diagram)

संकल्पनात्मक प्रवाह आरेख (Step-by-Step Process Flow)

चरण 1
`[चरण 1: मूल शब्द (धातु या प्रातिपदिक) का पृथक्करण`

चरण 2
चरण 2: उपसर्ग विश्लेषण (संस्कृत के 22 उपसर्ग, हिंदी के तद्भव उपसर्ग एवं अरबी-फारसी-अंग्रेजी के आगत उपसर्ग)

चरण 3
चरण 3: प्रत्यय विश्लेषण (क्रिया/धातु में जुड़ने वाले 'कृत् प्रत्यय' एवं संज्ञा/सर्वनाम/विशेषण में जुड़ने वाले 'तद्धित प्रत्यय')

चरण 4
चरण 4: मानक हिंदी शब्दकोश वर्ण-अनुक्रम (अं/अँ -> अ...औ -> क, क्ष... त, त्र... ज, ज्ञ... श, श्र... ह)]`

2. विस्तृत तुलनात्मक सारणी: उपसर्ग, प्रत्यय एवं हिंदी शब्दकोश वर्ण-अनुक्रम के नियम

व्याकरणिक घटक	मुख्य नियम एवं संरचना सूत्र	भ्रमजनक शब्दों का सटीक विच्छेद	विशेष परीक्षा नियम / शब्दकोशीय स्थान	आधिकारिक संदर्भ स्रोत
संस्कृत (तत्सम) उपसर्ग (22 उपसर्ग)	`प्र, परा, अप, सम्, अनु, अव, निस्, निर्, दुस्, दुर्, वि, आ, नि, अधि, अपि, अति, सु, उत्, अभि, प्रति, परि, उप`	`अत्याचार = अति + आचार` ; `अध्ययन = अधि + अयन` ; `उज्ज्वल = उत् + ज्वल` ; `संकल्प = सम् + कल्प` ; `दुस्साहस = दुस् + साहस`	यण संधि या व्यंजन संधि के नियमों से मूल उपसर्ग (`अति, अधि, उत्, सम्, निर्`) निकाला जाता है	NCERT शब्दकोश एवं व्याकरण
हिंदी एवं आगत (उर्दू-अंग्रेजी) उपसर्ग	हिंदी: `अ, अन, क, कु, दु, नि, औ, भर, सु, अध, उन` ; उर्दू: `कम, खुश, गैर, दर, ना, बा, बद, बे, ला, सर, हम, हर`	`अधखिला = अध + खिला` ; `उन्तीस = उन + तीस` ; `बाकायदा = बा + कायदा` ; `बदबू = बद + बू` ; `लावारिस = ला + वारिस`	`'बा'` का अर्थ 'सहित' (`बाइज्जत`) और `'बे'` का अर्थ 'बिना' (`बेइज्जत`) होता है	IUC Academy हिंदी अध्ययन नोट्स 12
कृत् प्रत्यय (कृदन्त) बनाम तद्धित प्रत्यय	**कृत् प्रत्यय:** मूल क्रिया (धातु) के अंत में जुड़ते हैं; **तद्धित प्रत्यय:** संज्ञा, सर्वनाम या विशेषण के अंत में जुड़ते हैं	**कृदन्त:** `लिख + आवट = लिखावट` , `पढ़ + आई = पढ़ाई` , `लड़ + आकू = लड़ाकू` ; **तद्धित:** `मीठा + आस = मिठास` , `लोहा + आर = लुहार`	`'इक'` प्रत्यय जुड़ने पर प्रथम स्वर में आदि-वृद्धि होती है: `समाज + इक = सामाजिक` , `इतिहास + इक = ऐतिहासिक`	IUC Academy हिंदी अध्ययन नोट्स 12
हिंदी शब्दकोश में `अं` , `अँ` एवं `अः` का स्थान	शब्दकोश का आरंभ साधारण `'अ'` से पहले **अनुस्वार** (`अं`) और **चंद्रबिंदु** (`अँ`) वाले शब्दों से होता है	क्रम: `अं (अंक) → अँ (अँगूठा) → अः → अ (अमर) → आ → इ → ई → उ → ऊ → ऋ → ए → ऐ → ओ → औ`	किसी भी वर्ण के बारहखड़ी क्रम में सबसे पहले अनुस्वार (`कं`), फिर चंद्रबिंदु (`कँ`), और फिर `क, का, कि, की...` आता है	NCERT शब्दकोश नियम

व्याकरणिक घटक	मुख्य नियम एवं संरचना सूत्र	भ्रमजनक शब्दों का सटीक विच्छेद	विशेष परीक्षा नियम / शब्दकोशीय स्थान	आधिकारिक संदर्भ स्रोत
हिंदी शब्दकोश में संयुक्त व्यंजनों (क्ष, त्र, ज्ञ, श्र) का स्थान	क्ष, त्र, ज्ञ को 'ह' के बाद नहीं ढूँढ़ा जाता, बल्कि उनके प्रथम घटक व्यंजन के ठीक बाद रखा जाता है	क्ष (क्+ष) → 'क' (कौ) के बाद; त्र (त्+र) → 'त' (तौ/त्य) के बाद; ज्ञ (ज्+ञ) → 'ज' (जौ) के बाद; श्र (श्+र) → 'श' (शौ) के बाद	कौशल के बाद क्षमा आएगा, और क्षमा के बाद खग आएगा!	NCERT शब्दकोश नियम

3. क्या आप जानते हैं? (Do You Know?) बॉक्स

क्या आप जानते हैं? (Do You Know?)

NCERT के आधिकारिक 'शब्दकोश' अध्याय के अनुसार, हिंदी शब्दकोश में क्ष, त्र, ज्ञ का कोई स्वतंत्र अंतिम खंड नहीं होता! चूँकि क्ष = क् + ष है, इसलिए 'क' से शुरू होने वाले पूर्ण वर्णों (क से कौ तक) के समाप्त होते ही 'क्य', 'क्र', 'क्ल', 'क्व' से भी पहले 'क्ष' से शुरू होने वाले शब्द आते हैं। इसी प्रकार 'जौहरी' के तुरंत बाद 'ज्ञ' (ज् + ञ) से बनने वाले शब्द आते हैं, और 'ज्ञ' के बाद 'ज्य' वाले शब्द आते हैं!

4. परीक्षा जाल सतर्कता (Exam Trap Alert) बॉक्स

संकल्पनात्मक प्रवाह आरेख (Step-by-Step Process Flow)

चरण 1
परीक्षा जाल सतर्कता (Exam Trap Alert)! जब किसी शब्द में 'इक' या 'य' ** प्रत्यय जुड़ता है, तो मूल शब्द के प्रथम अक्षर का स्वर दीर्घ/वृद्धि हो जाता है (`अ

चरण 2
आ , इ/ई/ए

चरण 3
ऐ , उ/ऊ/ओ

चरण 4
औ): सप्ताह + इक = साप्ताहिक (सप्ताहिक अशुद्ध है!) प्रमाण + इक = प्रामाणिक (प्रमाणिक अशुद्ध है!) व्यवहार + इक = व्यावहारिक (व्यवहारिक अशुद्ध है!) अध्यात्म + इक = आध्यात्मिक (अध्यात्मिक अशुद्ध है!) * उद्योग + इक = औद्योगिक तथा सुंदर + य = सौंदर्य` (अतः 'सौंदर्यता' शब्द सदैव अशुद्ध होता है क्योंकि 'य' और 'ता' दो समानार्थक प्रत्यय एक साथ नहीं लग सकते!) (IUC Academy)।

5. IUC स्मृति ट्रिक (IUC 5-Second Magic Memory Trick)

- **जादुई सूत्र: "शब्दकोश में अं-अँ सबसे आगे; क के बाद क्ष, ज के बाद ज्ञ, त के बाद त्र और श के बाद श्र भागे; धातु में जुड़े तो कृदन्त, संज्ञा-विशेषण में जुड़े तो तद्धित जागे!"**
- **स्मरण संकेत:** इक प्रत्यय जुड़ते ही पहले अक्षर में आ / ऐ / औ की वृद्धि करना कभी न भूलें (IUC Academy)।

अध्याय 8: रस, छंद एवं अलंकार (काव्यशास्त्रीय तत्व, स्थायी भाव, मात्रा गणना सूत्र एवं शब्दालंकार-अर्थालंकार पहचान)

1. चार-नोड प्रवाह आरेख (4-Node Visual Flow Diagram)

संकल्पनात्मक प्रवाह आरेख (Step-by-Step Process Flow)

चरण 1
`[चरण 1: रस सिद्धांत ('विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगाद्रसनिष्पत्तिः' — स्थायी भाव, विभाव, अनुभाव व 33 संचारी भाव तथा 9+2=11 रस)

चरण 2
चरण 2: छंद शास्त्र (लघु '।' = 1 मात्रा व गुरु 'S' = 2 मात्रा गणना, 8 गण 'यमाताराजभानसलगा' एवं मात्रिक-वर्णिक छंद)

चरण 3
चरण 3: शब्दालंकार (अनुप्रास के 5 भेद: छेकानुप्रास, वृत्त्यनुप्रास, लाटानुप्रास, अंत्यानुप्रास, श्रुत्यानुप्रास + यमक, श्लेष, वक्रोक्ति, वीप्सा)

चरण 4
चरण 4: अर्थालंकार (उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, अतिशयोक्ति, भ्रांतिमान, संदेह, विभावना, विशेषोक्ति, असंगति, मानवीकरण व दृष्टांत)]`

2. विस्तृत तुलनात्मक सारणी (क): नवरस एवं 11 रसों के स्थायी भाव, वर्ण व देवता

क्रम	रस का नाम	स्थायी भाव (Permanent Emotion)	मुख्य पहचान लक्षण एवं काव्य प्रसंग	संबंधित देवता एवं रंग (काव्यशास्त्र अनुसार)	आधिकारिक संदर्भ स्रोत
1	शृंगार रस ('रसराज' या 'रसपति')	**रति** (प्रेम)	संयोग शृंगार (मिलन) एवं वियोग/विप्रलंभ शृंगार (विरह वर्णन)	विष्णु (श्याम वर्ण)	NCERT सृजनात्मक एवं काव्य लेखन
2	हास्य रस	**हास**	विचित्र वेशभूषा, वाणी या चेष्टा से उत्पन्न विनोद	प्रमथ (श्वेत वर्ण)	IUC Academy हिंदी अध्ययन नोट्स 12
3	करुण रस	**शोक**	इष्ट वस्तु/व्यक्ति के चिर-वियोग या अनिष्ट से उत्पन्न दुःख	यम (कपोत वर्ण)	IUC Academy हिंदी अध्ययन नोट्स 12
4	वीर रस (युद्धवीर, दानवीर, दयावीर, धर्मवीर)	**उत्साह**	शत्रु दमन, धर्म रक्षा या दीन उद्धार हेतु ओजस्वी उत्साह	महेंद्र (स्वर्ण/गौर वर्ण)	IUC Academy हिंदी अध्ययन नोट्स 12
5	रौद्र रस	**क्रोध**	अपमान, गुरु निंदा या देशद्रोह के विरुद्ध तीव्र प्रतिशोध व क्रोध	रुद्र (रक्त/लाल वर्ण)	IUC Academy हिंदी अध्ययन नोट्स 12
6	भयानक रस	**भय**	हिंसक जीव, प्रलय या भयावह दृश्य से उत्पन्न कंपन व आतंक	काल (कृष्ण वर्ण)	IUC Academy हिंदी अध्ययन नोट्स 12
7	वीभत्स रस	**जुगुप्सा (घृणा)**	मांस, रुधिर, सड़ी-गली या दुर्गंधयुक्त वस्तुओं के वर्णन से ग्लानि	महाकाल (नील वर्ण)	IUC Academy हिंदी अध्ययन नोट्स 12
8	अद्भुत रस	**विस्मय (आश्चर्य)**	अलौकिक या असंभव-सी घटना देखकर स्तंभित व आश्चर्यचकित होना	गंधर्व/ब्रह्मा (पीत वर्ण)	IUC Academy हिंदी अध्ययन नोट्स 12
9	शांत रस (भरतमुनि के नाट्यशास्त्र में 8 रस; अभिनवगुप्त/उद्भट द्वारा 9वाँ रस)	**निर्वेद (शम / वैराग्य)**	संसार की नश्वरता एवं परमार्थ के ज्ञान से चित्त की पूर्ण शांति	श्री नारायण (कुंदेंदु/धवल वर्ण)	IUC Academy हिंदी अध्ययन नोट्स 12
10	वात्सल्य रस (आचार्य विश्वनाथ द्वारा प्रतिपादित 10वाँ रस)	**वत्सलता (संतान विषयक रति)**	माता-पिता का संतान के प्रति स्नेह (जैसे सूरदास का बाल-कृष्ण वर्णन)	मातृ-पितृ भाव	IUC Academy हिंदी अध्ययन नोट्स 12
11	भक्ति रस (रूप गोस्वामी द्वारा प्रतिपादित 11वाँ रस)	**भगवद्विषयक रति (अनुराग/देव रति)**	ईश्वर के प्रति अनन्य समर्पण, दास्य या माधुर्य भक्ति भाव	आराध्य इष्टदेव	IUC Academy हिंदी अध्ययन नोट्स 12

3. विस्तृत तुलनात्मक सारणी (ख): प्रमुख छंदों की मात्रा/वर्ण संरचना एवं पहचान सूत्र

छंद का नाम	छंद की श्रेणी	प्रत्येक चरण में मात्रा / वर्ण नियम	विशेष तुकबंदी एवं यति (विराम) नियम	आधिकारिक संदर्भ स्रोत
चौपाई	सम मात्रिक छंद	प्रत्येक चरण में **16-16 मात्राएं** (4 चरण)	चरण के अंत में जगण (`ISI`) या तगण (`SSI`) वर्जित; अंत में दो गुरु (`SS`) शुभ	IUC Academy हिंदी अध्ययन नोट्स 12
रोला	सम मात्रिक छंद	प्रत्येक चरण में **24-24 मात्राएं** (11 व 13 पर यति)	अंत में दो गुरु या दो लघु वर्णों की प्राथमिकता	IUC Academy हिंदी अध्ययन नोट्स 12
गीतिका एवं हरिगीतिका	सम मात्रिक छंद	**गीतिका:** 26 मात्राएं (14, 12 यति); **हरिगीतिका: 28 मात्राएं** (16, 12 यति)	चरण के अंत में लघु-गुरु (`IS`) होना अनिवार्य	IUC Academy हिंदी अध्ययन नोट्स 12
दोहा	अर्द्धसम मात्रिक छंद	विषम चरणों (1, 3) में **13-13 मात्राएं**; सम चरणों (2, 4) में **11-11 मात्राएं**	सम चरणों के अंत में गुरु-लघु (`SI`) होना अनिवार्य	IUC Academy हिंदी अध्ययन नोट्स 12
सोरठा (दोहा का ठीक उल्टा)	अर्द्धसम मात्रिक छंद	विषम चरणों (1, 3) में **11-11 मात्राएं**; सम चरणों (2, 4) में **13-13 मात्राएं**	विषम चरणों (1, 3) के अंत में तुक मिलती है	IUC Academy हिंदी अध्ययन नोट्स 12
बरवै एवं उल्लाला	अर्द्धसम मात्रिक छंद	**बरवै:** 12 और 7 मात्राएं (कुल 19); **उल्लाला:** 15 और 13 मात्राएं (कुल 28)	अवधि काव्य (तुलसीदास कृत बरवै रामायण) में विशेष प्रयुक्त	IUC Academy हिंदी अध्ययन नोट्स 12
कुंडलिया (6 चरण)	विषम (संयुक्त) मात्रिक छंद	**दोहा (2 चरण) + रोला (4 चरण)** = कुल 6 चरण (प्रत्येक चरण में 24 मात्राएं)	जिस शब्द से कुंडलिया छंद **आरंभ** होता है, उसी शब्द से उसका **अंत** भी होता है!	IUC Academy हिंदी अध्ययन नोट्स 12
छप्पय (6 चरण)	विषम (संयुक्त) मात्रिक छंद	**रोला (4 चरण) + उल्लाला (2 चरण)** = कुल 6 चरण	वीर रस एवं ओजपूर्ण काव्य में सर्वाधिक प्रयुक्त	IUC Academy हिंदी अध्ययन नोट्स 12
इंद्रवज्रा, मालिनी, मंदाक्रांता, शिखरिणी, सवैया, कवित्त	वर्णिक छंद (वर्ण गणना आधारित)	इंद्रवज्रा (11 वर्ण), भुजंगप्रयात/द्रुतविलंबित (12 वर्ण), वसंततिलका (14 वर्ण), मालिनी (15 वर्ण), मंदाक्रांता/शिखरिणी (17 वर्ण), **सवैया (22 से 26 वर्ण)**, घनाक्षरी/कवित्त (31 वर्ण)	**यमाताराजभानसलगा** सूत्र से 3-3 वर्णों के 8 गणों (यगण, मगण, तगण, रगण, जगण, भगण, नगण, सगण) की गणना	IUC Academy हिंदी अध्ययन नोट्स 12

4. विस्तृत तुलनात्मक सारणी (ग): शब्दालंकार एवं अर्थालंकार के सर्वोच्च-आवृत्ति भेद और पहचान चिह्न

अलंकार का नाम	श्रेणी	अचूक पहचान लक्षण / वाचक शब्द	कालजयी परीक्षा उदाहरण	आधिकारिक संदर्भ स्रोत
अनुप्रास अलंकार (छेका, वृत्त्य, लाटा, अंत्या, श्रुत्या)	शब्दालंकार	**व्यंजन वर्णों** की बार-बार आवृत्ति (लाटानुप्रास में पूरे वाक्य की आवृत्ति, केवल अन्वय/अर्थ भेद)	"तरनि तनूजा तट तमाल तरुवर बहु छाए" (वृत्त्यनुप्रास); "पूत कपूत तो का धन संचय, पूत सपूत तो का धन संचय" (लाटानुप्रास)	IUC Academy हिंदी अध्ययन नोट्स 12
यमक अलंकार	शब्दालंकार	एक ही शब्द **2 या अधिक बार** आए और **प्रत्येक बार अर्थ भिन्न** हो	"कनक कनक ते सौ गुनी मादकता अधिकाय" (कनक = सोना, कनक = धतूरा); "तीन बेर खाती थीं वे तीन बेर खाती हैं" (बेर = बार/समय, बेर = फल)	IUC Academy हिंदी अध्ययन नोट्स 12
श्लेष अलंकार ('श्लेष' = चिपका हुआ)	शब्दालंकार	शब्द **एक ही बार** प्रयुक्त हो, किंतु प्रसंग के अनुसार उसके **अनेक अर्थ** निकलें	"रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून। पानी गए न ऊबरे, मोती, मानुष, चून॥" (पानी = चमक, प्रतिष्ठा, जल)	IUC Academy हिंदी अध्ययन नोट्स 12

अलंकार का नाम	श्रेणी	अचूक पहचान लक्षण / वाचक शब्द	कालजयी परीक्षा उदाहरण	आधिकारिक संदर्भ स्रोत
उपमा अलंकार (पूर्णोपमा व लुप्तोपमा)	अर्थालंकार	उपमेय की उपमान से समानता; वाचक शब्द: **सा, सी, से, सम, सरिस, सदृश, के समान, जिमि**	"पीपर पात सरिस मन डोला" (मन = उपमेय, पीपर पात = उपमान, सरिस = वाचक, डोला = साधारण धर्म)	IUC Academy हिंदी अध्ययन नोट्स 12
रूपक अलंकार	अर्थालंकार	उपमेय में उपमान का **निषेधरहित अभेद आरोप** (प्राय: दोनों के बीच योजक चिह्न `-` और कोई वाचक शब्द नहीं)	"चरण-कमल बंदौ हरिराई"; "मैया मैं तो चंद्र-खिलौना लैहों"; "पायो जी मैंने राम-रतन धन पायो"	IUC Academy हिंदी अध्ययन नोट्स 12
उत्प्रेक्षा अलंकार	अर्थालंकार	उपमेय में उपमान की **कल्पना या संभावना**; वाचक शब्द: **मनु, मानो, मनहुँ, जनु, जानो, जनहुँ, ज्यों**	"सोहत ओढ़े पीत पट, श्याम सलोने गात। मनहुँ नीलमणि सैल पर, आतप परयो प्रभात॥"	IUC Academy हिंदी अध्ययन नोट्स 12
भ्रांतिमान बनाम संदेह अलंकार	अर्थालंकार	**भ्रांतिमान:** भ्रम को सच मानकर क्रिया कर बैठना; **संदेह:** अंत तक संशय बना रहना (**किधौं, कैधौं, या**)	**भ्रांतिमान:** "नाक का मोती अधर की कांति से, बीज दाड़िम का समझकर भ्रांति से..."; **संदेह:** "सारी बीच नारी है कि नारी बीच सारी है"	IUC Academy हिंदी अध्ययन नोट्स 12
विभावना बनाम विशेषोक्ति अलंकार	अर्थालंकार	**विभावना:** बिना कारण के ही कार्य का होना; **विशेषोक्ति:** कारण उपस्थित होने पर भी कार्य न होना	**विभावना:** "बिनु पद चलै सुनै बिनु काना"; **विशेषोक्ति:** "पानी बिच मीन पियासी, मोहि सुनि-सुनि आवत हाँसी"	IUC Academy हिंदी अध्ययन नोट्स 12
असंगति एवं मानवीकरण अलंकार	अर्थालंकार	**असंगति:** कारण कहीं और तथा कार्य/प्रभाव कहीं और; **मानवीकरण:** जड़ प्रकृति पर मानवीय क्रियाओं का आरोप	**असंगति:** "दृग उरझत टूटत कुटुम, जुरत चतुर चित प्रीति"; **मानवीकरण:** "दिवसावसान का समय, मेघमय आसमान से उतर रही है संध्या-सुंदरी परी-सी"	IUC Academy हिंदी अध्ययन नोट्स 12

5. *क्या आप जानते हैं?* (Do You Know?) *बॉक्स*

क्या आप जानते हैं? (Do You Know?)
आचार्य भरतमुनि ने अपने प्राचीनतम ग्रंथ **'नाट्यशास्त्र'** (जिसे पंचम वेद भी कहा जाता है) में केवल **8 रसों** का ही उल्लेख किया था—उन्होंने अभिनय की दृष्टि से 'शांत रस' को नाटक में स्वीकार नहीं किया था। उन्होंने प्रसिद्ध रस-सूत्र दिया: **"विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगाद्रसनिष्पत्तिः"**—अर्थात उन्होंने अपने सूत्र में 'स्थायी भाव' शब्द का प्रत्यक्ष नामोल्लेख तक नहीं किया! आगे चलकर आचार्य उद्भट और अभिनवगुप्त ने 9वें रस के रूप में 'शांत रस' (स्थायी भाव: निर्वेद) को प्रतिष्ठापित किया, और आचार्य भोजराज व विश्वनाथ ने "वाक्यं रसात्मकं काव्यम्" कहकर रस को काव्य की आत्मा घोषित किया (IUC Academy)।

6. *परीक्षा जाल सतर्कता* (Exam Trap Alert) *बॉक्स*

परीक्षा जाल सतर्कता (Exam Trap Alert)!
छंद की मात्रा गिनते समय दो सबसे बड़े जाल होते हैं:
1. **संयुक्त अक्षर से पूर्व का ह्रस्व वर्ण:** यदि किसी शब्द में आधा अक्षर या संयुक्त व्यंजन (**क्ष, त्र, ज्ञ, श्र, द्य, प्र**) बीच में आता है, तो स्वयं उस संयुक्त अक्षर की मात्रा तो उस पर लगी मात्रा के अनुसार होती है, किंतु **उससे ठीक पहले आने वाला लघु (ह्रस्व) अक्षर भी 'गुरु (S = 2 मात्रा)' गिना जाता है!** उदाहरण: **सत्य** में **'स'** ह्रस्व दिखने पर भी उसके बाद आधा **'त्'** होने से **'स'** की **2 मात्रा (S)** और **'य'** की 1 मात्रा (।) = कुल 3 मात्राएं होती हैं!
2. **चंद्रबिंदु (ँ) बनाम अनुस्वार (ं):** ह्रस्व स्वर के ऊपर **चंद्रबिंदु (हँस, अँधेरा)** लगने पर मात्रा **लघु (1)** ही रहती है, जबकि **अनुस्वार (हंस, कंस)** या **विसर्ग (दुःख)** लगने पर मात्रा **गुरु (2)** हो जाती है (IUC Academy)!

7. IUC *स्मृति ट्रिक* (IUC 5-Second Magic Memory Trick)

• जादुई सूत्र: "चौपाई 16, रोला 24, गीतिका 26, हरिगीतिका 28; दोहा 13-11, सोरठा 11-13; दोहा+रोला = कुंडलिया (आदि-अंत एक शब्द), रोला+उल्लाला = छप्पय!"

• स्मरण संकेत: अलंकार पहचान: **सा-सी-से-सरिस** = उपमा; **मनहुँ-मानो-जनु-जानो** = उत्प्रेक्षा; **बिनु पद चलै** (बिना कारण काम) = विभावना; **पानी बिच मीन पियासी** (साधन होते हुए भी काम न होना) = विशेषोक्ति (IUC Academy)।

अध्याय 9: शब्द-संपदा एवं वाक्य शुद्धि (पर्यायवाची, विलोम, अनेकार्थी, समश्रुत भिन्नार्थक, वाक्यांश के लिए एक शब्द एवं वर्तनी शुद्धि)

1. चार-नोड प्रवाह आरेख (4-Node Visual Flow Diagram)

संकल्पनात्मक प्रवाह आरेख (Step-by-Step Process Flow)

चरण 1
`[चरण 1: मानक वर्तनी एवं वाक्य शुद्धि (मात्रा, हलन्त, रेफ, प्रत्यय-जनित एवं द्विरुक्ति अशुद्धियों का निवारण)

चरण 2
चरण 2: पर्यायवाची एवं अनेकार्थी शब्द-निर्माण (जल-कमल-बादल-समुद्र ट्रिक: ज/द/धि/निधि सूत्र)

चरण 3
चरण 3: विलोम शब्द सजातीय नियम (तत्सम का विलोम तत्सम, तद्भव का तद्भव, संज्ञा का संज्ञा व विशेषण का विशेषण)

चरण 4
चरण 4: वाक्यांश के लिए एक शब्द, समश्रुत भिन्नार्थक युग्म एवं मुहावरे-लोकोक्तियों का सटीक अनुप्रयोग]`

2. विस्तृत तुलनात्मक सारणी (क): परीक्षाओं में सर्वाधिक पूछे जाने वाले 25+ अशुद्ध बनाम शुद्ध वर्तनी शब्द

क्रम	अशुद्ध वर्तनी (Exam Trap)		अशुद्धि का व्याकरणिक कारण एवं नियम	आधिकारिक संदर्भ स्रोत
1	उज्वल / उज्जवल	**उज्ज्वल**	उत् + ज्वल (दोनों 'ज्' आधे होते हैं)	NCERT संधि एवं शब्दकोश
2	कवयित्री / कवियत्री / कवियित्री	**कवयित्री**	'कवि' का स्त्रीलिंग रूप: व पर कोई मात्रा नहीं, य पर ह्रस्व 'इ'	IUC Academy हिंदी अध्ययन नोट्स 12
3	आर्शीवाद / आशिर्वाद	**आशीर्वाद**	'र्' (रेफ) का उच्चारण 'श' के बाद है, अतः रेफ अगले वर्ण **'वा'** पर लगेगा	IUC Academy हिंदी अध्ययन नोट्स 12
4	ज्योत्सना / ज्योतस्ना	**ज्योत्स्ना**	इसमें **'त्'** और **'स्'** दोनों आधे होते हैं	IUC Academy हिंदी अध्ययन नोट्स 12
5	श्रंगार / श्रृंगार (दोहरी र-कार)	**शृंगार**	'श्' में केवल 'ृ' (ऋ की मात्रा) लगती है, नीचे 'र' की अतिरिक्त तिरछी रेखा नहीं लगती	IUC Academy हिंदी अध्ययन नोट्स 12
6	अनुग्रहीत / अनुगृहित	**अनुगृहीत**	'गृ' में ऋ की मात्रा और 'ही' में दीर्घ ई की मात्रा होती है (**संग्रहीत** शुद्ध, किंतु **अनुगृहीत** व **गृहीत** में 'गृ')	IUC Academy हिंदी अध्ययन नोट्स 12
7	हिरण्यकश्यप / हिरण्यकशिपू	**हिरण्यकशिपु**	'कशिपु' में श पर ह्रस्व इ और प पर ह्रस्व उ की मात्रा होती है	IUC Academy हिंदी अध्ययन नोट्स 12
8	अहिल्या	**अहल्या**	मूल संस्कृत तत्सम शब्द 'अहल्या' है ('ह' पर 'इ' की मात्रा नहीं होती)	IUC Academy हिंदी अध्ययन नोट्स 12
9	द्वारिका	**द्वारका**	'र' पर 'इ' की मात्रा नहीं लगती; शुद्ध रूप 'द्वारका' है	IUC Academy हिंदी अध्ययन नोट्स 12
10	पूज्यनीय / पुजनीय	**पूजनीय** (अथवा **पूज्य**)	या तो 'पूज्य' लिखें या 'पूजनीय'; 'पूज्यनीय' संकर त्रुटि है	IUC Academy हिंदी अध्ययन नोट्स 12
11	अगामी / आजमाइश	**आगामी** / **आजमाइश**	**आगामी** में प्रथम वर्ण दीर्घ 'आ' होता है	IUC Academy हिंदी अध्ययन नोट्स 12
12	अंताक्षरी / अन्ताक्षरी	**अन्त्याक्षरी**	**अन्त्य** + **अक्षरी** = **अन्त्याक्षरी** (आधा न् और आधा त् दोनों)	IUC Academy हिंदी अध्ययन नोट्स 12
13	कालिदास / बाल्मीकि	**कालिदास** ('लि' ह्रस्व) / **वाल्मीकि** ('मी' दीर्घ, 'कि' ह्रस्व)	कालिदास में ह्रस्व 'लि' और वाल्मीकि में 'व' से आरंभ होता है	IUC Academy हिंदी अध्ययन नोट्स 12
14	सन्यासी / संयासी	**संन्यासी**	**सम्** + **न्यासी** = **संन्यासी** (स के ऊपर अनुस्वार और आधा न् दोनों अनिवार्य)	IUC Academy हिंदी अध्ययन नोट्स 12

क्रम	अशुद्ध वर्तनी (Exam Trap)		अशुद्धि का व्याकरणिक कारण एवं नियम	आधिकारिक संदर्भ स्रोत
15	निरोग / निरपराधी	**नीरोग / निरपराध**	**निः + रोग = नीरोग** ; **निर् + अपराध = निरपराध** ('निरपराधी' अशुद्ध है)	IUC Academy हिंदी अध्ययन नोट्स 12
16	उपरोक्त	**उपर्युक्त**	**उपरि + उक्त = उपर्युक्त** (यण संधि से बना शुद्ध मानक शब्द)	IUC Academy हिंदी अध्ययन नोट्स 12
17	रचयिता / रचईता	**रचयिता**	'य' पर ह्रस्व 'इ' की मात्रा लगती है	IUC Academy हिंदी अध्ययन नोट्स 12
18	कुमुदनी / कुमुदिनी	**कुमुदिनी**	'म' और 'द' पर ह्रस्व तथा 'न' पर दीर्घ ई की मात्रा	IUC Academy हिंदी अध्ययन नोट्स 12
19	विरहणी / गृहिणी	**विरहिणी / गृहिणी**	'ह' पर ह्रस्व 'इ' और 'ण' पर दीर्घ 'ई' की मात्रा	IUC Academy हिंदी अध्ययन नोट्स 12
20	प्रदर्शिनी / प्रियदर्शिनी	**प्रदर्शनी / प्रियदर्शिनी**	'प्रदर्शनी' में श पर मात्रा नहीं होती, जबकि 'प्रियदर्शिनी' में श पर ह्रस्व इ होती है	IUC Academy हिंदी अध्ययन नोट्स 12
21	मैथलीशरण / कौशल्या	**मैथिलीशरण / कौसल्या**	'मिथिला + ई = मैथिली' (थ पर ह्रस्व इ, ल पर दीर्घ ई)	IUC Academy हिंदी अध्ययन नोट्स 12
22	अतिश्योक्ति	**अतिशयोक्ति**	**अतिशय + उक्ति = अतिशयोक्ति** (इसमें पूरा **'श'** होता है, आधा 'श्' नहीं!)	IUC Academy हिंदी अध्ययन नोट्स 12
23	मिष्ठान / मिष्टान्न	**मिष्टान्न**	**मिष्ट + अन्न = मिष्टान्न** (मीठा अन्न; 'मिष्ठान' दुकानों पर लिखा अशुद्ध रूप है)	IUC Academy हिंदी अध्ययन नोट्स 12
24	कैलाश (श)	**कैलास** (स)	व्याकरणिक मानक हिंदी शब्दकोश में दन्त्य 'स' युक्त 'कैलास' को शुद्ध माना जाता है	IUC Academy हिंदी अध्ययन नोट्स 12
25	बारात / हस्ताक्षेप	**वरात (या बारात) / हस्तक्षेप**	**हस्त + क्षेप = हस्तक्षेप** ('हस्ताक्षेप' में 'ता' अशुद्ध है)	IUC Academy हिंदी अध्ययन नोट्स 12

3. विस्तृत तुलनात्मक सारणी (ख): उच्च-आवृत्ति पर्यायवाची, विलोम, वाक्यांश के लिए एक शब्द एवं समश्रुत भिन्नार्थक

शब्द-संपदा श्रेणी	परीक्षा में सर्वाधिक पूछे जाने वाले महत्वपूर्ण युग्म एवं समूह	आधिकारिक संदर्भ स्रोत
प्रमुख पर्यायवाची समूह	**1. कमल:** राजीव, पुंडरीक, इंदीवर, कोकनद, शतदल, अरविंद, नलिन, तामरस, कंज, पंकज, जलज, सरोज। **2. बादल:** पयोद, जलद, वारिद, अंबुद, जीमूत, बलाहक, अभ्र, पर्जन्य, कादंबिनी, पयोधर। **3. समुद्र:** पयोधि, जलधि, वारिधि, उदधि, पारावार, रत्नाकर, अर्णव, सिंधु, नदीश, अम्बुधि। **4. सूर्य:** मार्तंड, सविता, पतंग, आदित्य, अर्क, अंशुमाली, भानु, भास्कर, रवि, दिनकर, दिवाकर। **5. चंद्रमा:** शशांक, मृगांक, सुधाकर, राकेश, मयंक, विधु, द्विजराज, कलानिधि, हिमांशु, इंदु। **6. अग्नि:** वैश्वानर, कृशानु, हुताशन, जातवेदस, धनंजय, अनल, पावक, दहन, वायुसखा। **7. घोड़ा:** तुरंग, वाजि, हय, घोटक, सैंधव, रविसुत। **8. सिंह:** केसरी, केहरि, मृगेंद्र, शार्दूल, पंचानन, नाहर। **9. यमुना:** कालिंदी, अर्कजा, रवितनया, सूर्यसुता, कृष्णा, तरणि-तनूजा। **10. सरस्वती:** भारती, शारदा, वीणापाणि, वागीश, महाश्वेता, गिरा, इला, ब्राह्मी।	NCERT शब्दकोश एवं पर्याय
प्रमुख विलोम शब्द युग्म	**जंगम ↔ स्थावर** ; **अज्ञ ↔ विज्ञ** ; **अनभिज्ञ ↔ अभिज्ञ** ; **अथ ↔ इति** ; **अवनि ↔ अम्बर** ; **आमिष/सामिष ↔ निरामिष** ; **ऋजु ↔ वक्र** ; **उन्मूलन ↔ रोपण** ; **उन्मीलन ↔ निमीलन** ; **उपत्यका ↔ अधित्यका** ; **कृतज्ञ ↔ कृतघ्न** ; **गरल ↔ सुधा** ; **गौरव ↔ लाघव** ; **चिरंतन ↔ नश्वर** ; **तामसिक ↔ सात्विक** ; **धृष्ट ↔ विनीत** ; **प्रसारण ↔ संकुचन** ; **मृसण ↔ रुक्ष** ; **व्यास ↔ समास** ; **विग्रह ↔ संधि** ; **व्यष्टि ↔ समष्टि** ; **शाश्वत ↔ क्षणिक** ; **सुसुप्ति ↔ जागृति** ; **ह्रास ↔ वृद्धि** ; **श्रीगणेश ↔ इतिश्री** ।	IUC Academy हिंदी अध्ययन नोट्स 12

शब्द-संपदा श्रेणी	परीक्षा में सर्वाधिक पूछे जाने वाले महत्वपूर्ण युग्म एवं समूह	आधिकारिक संदर्भ स्रोत
वाक्यांश के लिए एक शब्द	• पर्वत के पास की निचली भूमि = **उपत्यका** (पर्वत के ऊपर की समतल भूमि = **अधित्यका**) • नीले रंग का कमल = **इंदीवर** (लाल कमल = **कोकनद**, श्वेत कमल = **पुंडरीक**) • जिसका जन्म कन्या के गर्भ से हुआ हो = **कानीन** (विवाहित पत्नी से उत्पन्न = **औरस**) • आधी रात का समय = **निशीथ** (चाँदनी रात = **शर्वरी**, तारों भरी रात = **विभावरी**) • हाथी को हाँकने का लोहे का हुक = **अंकुश**; जंगल की आग = **दावाग्नि/दावानल** (समुद्र की आग = **बड़वाग्नि**, पेट की आग = **जठराग्नि**) • जो तुरंत कविता रच सके = **आशुकवि**; जो बहुत बोलता हो = **वाचाल**; जो सब कुछ जानता हो = **सर्वज्ञ**; उत्तर और पूर्व के बीच की दिशा = **ईशान** (दक्षिण-पूर्व = **आग्नेय**, दक्षिण-पश्चिम = **नैऋत्य**, उत्तर-पश्चिम = **वायव्य**)।	IUC Academy हिंदी अध्ययन नोट्स 12
समश्रुत भिन्नार्थक युग्म	• **अनिल** (हवा) बनाम **अनल** (आग) • **अंश** (भाग/हिस्सा) बनाम **अंस** (कंधा) • **अलि** (भौंरा) बनाम **आली** (सखी) • **अविलम्ब** (शीघ्र) बनाम **अवलम्ब** (सहारा) • **अभिराम** (सुंदर) बनाम **अविराम** (लगातार) • **कुल** (वंश/योग) बनाम **कूल** (किनारा) • **तरणि** (सूर्य) बनाम **तरणी** (नाव) बनाम **तरुणी** (युवती) • **प्रणय** (प्रेम) बनाम **परिणय** (विवाह) • **शकल** (टुकड़ा) बनाम **सकल** (संपूर्ण)।	IUC Academy हिंदी अध्ययन नोट्स 12

4. *क्या आप जानते हैं? (Do You Know?) बॉक्स*

क्या आप जानते हैं? (Do You Know?)
'जल' के मूल पर्यायवाची शब्दों (**जल, नीर, वारि, अम्बु, तोय, पय**) में केवल एक अक्षर जोड़कर सैकड़ों पर्यायवाची तुरंत बनाए जा सकते हैं:
1. अंत में **'ज'** (जन्म लेने वाला) जोड़ें तो **कमल** के पर्यायवाची बनते हैं (**जलज, नीरज, वारिज, अम्बुज, तोयज, पयोज**)।
2. अंत में **'द'** (देने वाला) जोड़ें तो **बादल** के पर्यायवाची बनते हैं (**जलद, नीरद, वारिद, अम्बुद, तोयद, पयोद**)।
3. अंत में **'धि'** **या** **'निधि'** (धारण करने वाला/भंडार) जोड़ें तो **समुद्र** के पर्यायवाची बनते हैं (**जलधि, नीरधि, वारिधि, अम्बुधि, तोयनिधि, पयोधि**) (IUC Academy)!

5. *परीक्षा जाल सतर्कता (Exam Trap Alert) बॉक्स*

परीक्षा जाल सतर्कता (Exam Trap Alert)!
विलोम शब्दों में दो सबसे बड़े जाल होते हैं:
1. **अभिज्ञ** **का विलोम** **अज्ञ** **नहीं, बल्कि** **अनभिज्ञ** **होता है!** कई अभ्यर्थी **'अभिज्ञ'** को 'अज्ञानी' समझ लेते हैं, जबकि **'अभिज्ञ'** का अर्थ **'जानने वाला / ज्ञाता'** होता है (**अज्ञ** का विलोम **विज्ञ** या **प्रज्ञ** होता है)।
2. वाक्य शुद्धि में **"केवल" और "मात्र"**, **"सप्रमाण" और "सहित"**, तथा **"दरअसल" और "में"** का एक साथ प्रयोग सदैव अशुद्ध होता है—जैसे: "कृपया सप्रमाण सहित उत्तर दें" अशुद्ध है; शुद्ध वाक्य होगा: **"कृपया सप्रमाण उत्तर दें"** या **"कृपया प्रमाण सहित उत्तर दें"** (IUC Academy)!

6. IUC *स्मृति ट्रिक* (IUC 5-Second Magic Memory Trick)

• जादुई सूत्र: "जल में 'ज' जुड़े तो कमल खिले, 'द' जुड़े तो बादल मिले, 'धि' जुड़े तो समुद्र हिले; वन की आग दावानल, सागर की बड़वानल, पेट की जठरानल!"

• स्मरण संकेत: चारों कोणों की दिशाएं: उत्तर-पूर्व = **ईशान**, दक्षिण-पूर्व = **आग्नेय**, दक्षिण-पश्चिम = **नैऋत्य**, उत्तर-पश्चिम = **वायव्य** (घड़ी की सुई की दिशा में: **ई-आ-नै-वा**) (IUC Academy)।

अध्याय 10: संवैधानिक राजभाषा प्रावधान (अनुच्छेद 343–351), राजभाषा विंग, कार्यालयी पत्र-लेखन एवं जनसंचार शब्दावली

1. चार-नोड प्रवाह आरेख (4-Node Visual Flow Diagram)

संकल्पनात्मक प्रवाह आरेख (Step-by-Step Process Flow)

चरण 1
`[चरण 1: भाषा का ऐतिहासिक विकास (वैदिक संस्कृत -> लौकिक संस्कृत -> पालि -> प्राकृत -> अपभ्रंश -> अवहट्ट -> प्राचीन व मानक हिंदी तथा 5 उपभाषाएं व 18 बोलियां)

चरण 2
चरण 2: संवैधानिक राजभाषा दर्जा (14 सितंबर 1949, भाग-17, अनुच्छेद 343-351, आठवीं अनुसूची की 22 भाषाएं एवं राजभाषा अधिनियम 1963)

चरण 3
चरण 3: राजभाषा नियम 1976 (क, ख, ग क्षेत्र वर्गीकरण), संसदीय राजभाषा समिति एवं विधायी विभाग राजभाषा विंग

चरण 4
चरण 4: कार्यालयी पत्राचार, पारिभाषिक शब्दावली एवं जनसंचार माध्यम लेखन (बीट, डेस्क, एंकर, स्टिंग व लाइव)]`

2. विस्तृत तुलनात्मक सारणी: संवैधानिक राजभाषा अनुच्छेद, संशोधन, क्षेत्रीय वर्गीकरण एवं जनसंचार शब्दावली

संवैधानिक संदर्भ / नियम / घटक	अनुच्छेद / अधिनियम / संशोधन विवरण	मुख्य वैधानिक प्रावधान एवं परीक्षा तथ्य	आधिकारिक संदर्भ स्रोत
संघ की राजभाषा (भाग-17, अध्याय-1)	**अनुच्छेद 343(1)** (14 सितंबर 1949 को संविधान सभा द्वारा स्वीकृत)	संघ की राजभाषा **हिंदी** और लिपि **देवनागरी** होगी तथा शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयुक्त अंकों का रूप भारतीय अंकों का अंतर्राष्ट्रीय रूप होगा	विधायी विभाग संविधान पोर्टल
राजभाषा आयोग एवं संसदीय समिति	**अनुच्छेद 344**	राष्ट्रपति द्वारा राजभाषा आयोग का गठन (प्रथम आयोग: 7 जून 1955, अध्यक्ष: **बी.जी. खेर**) एवं 30-सदस्यीय संसदीय राजभाषा समिति (20 लोकसभा + 10 राज्यसभा)	भारतीय संविधान
प्रादेशिक भाषाएं एवं न्यायपालिका की भाषा	**अनुच्छेद 345–347** (प्रादेशिक) एवं **अनुच्छेद 348–349** (उच्चतम व उच्च न्यायालय)	राज्यों की राजभाषा का निर्धारण तथा उच्चतम न्यायालय, उच्च न्यायालयों और अधिनियमों/विधेयकों के प्राधिकृत पाठ की भाषा	विधायी विभाग राजभाषा विंग
भाषाई अल्पसंख्यक एवं हिंदी विकास निदेश	**अनुच्छेद 350A** (मातृभाषा में प्राथमिक शिक्षा) एवं **अनुच्छेद 351** (हिंदी के विकास के लिए निदेश)	अनुच्छेद 351 के अंतर्गत संघ का कर्तव्य है कि वह हिंदी भाषा का प्रसार बढ़ाए और उसकी सामासिक संस्कृति व शब्द-भंडार को समृद्ध करे	भारतीय संविधान
संसद एवं राज्य विधानमंडल में प्रयुक्त भाषा	**अनुच्छेद 120** (संसद) एवं **अनुच्छेद 210** (राज्य विधानमंडल)	संसद तथा राज्य विधानमंडलों में कार्य संचालन के लिए हिंदी या अंग्रेजी अथवा मातृभाषा के प्रयोग का प्रावधान	संविधान आधिकारिक पीडीएफ
आठवीं अनुसूची के तीन भाषाई संशोधन	मूल संविधान में **14 भाषाएं** थीं; वर्तमान में **22 भाषाएं** शामिल हैं	**21वाँ संशोधन (1967):** सिंधी (15वीं); **71वाँ संशोधन (1992):** कोंकणी, मणिपुरी, नेपाली ('नमक' = 18); **92वाँ संशोधन (2003):** बोडो, डोगरी, मैथिली, संथाली ('BDMS' = 22)	संविधान क्षेत्रीय भाषा पोर्टल
राजभाषा नियम 1976: क्षेत्र 'क', 'ख' एवं 'ग'	केंद्र सरकार के कार्यालयों के पत्राचार हेतु देश का 3 क्षेत्रों में विभाजन	**क्षेत्र 'क':** UP, बिहार, MP, राजस्थान, हरियाणा, हिमाचल, उत्तराखंड, झारखंड, छत्तीसगढ़, दिल्ली व अंडमान-निकोबार; **क्षेत्र 'ख':** गुजरात, महाराष्ट्र, पंजाब, चंडीगढ़, दमन-दीव व दादरा-नगर हवेली; **क्षेत्र 'ग':** शेष सभी अहिंदी भाषी राज्य	IUC Academy हिंदी अध्ययन नोट्स 12
जनसंचार माध्यम एवं पत्रकारिता शब्दावली	प्रिंट, रेडियो एवं टेलीविज़न पत्रकारिता के मानक पारिभाषिक शब्द	**बीट (Beat):** संवाददाता का विशेष कार्यक्षेत्र (जैसे शिक्षा या अपराध बीट); **फ्रीलांसर:** स्वतंत्र पत्रकार; **लाइव (सीधा प्रसारण):** बिना संपादकीय काट-छाँट के सीधा प्रसारण; **स्टिंग ऑपरेशन:** छुपे कैमरे से भ्रष्टाचार का खुलासा	NCERT अभिव्यक्ति और माध्यम कोश

3. हिंदी की 5 उपभाषाएं एवं 18 बोलियां (Complete Dialect Map)

1. **पश्चिमी हिंदी (शौरसेनी अपभ्रंश से विकसित — 5 बोलियां):** खड़ी बोली (कौरवी), ब्रजभाषा, बुंदेली, कन्नौजी, हरियाणवी (बांगरू)।
2. **पूर्वी हिंदी (अर्धमागधी अपभ्रंश से विकसित — 3 बोलियां):** अवधी, बघेली, छत्तीसगढ़ी (स्मृति सूत्र: **A-B-C**)।
3. **राजस्थानी हिंदी (शौरसेनी अपभ्रंश से विकसित — 4 बोलियां):** मारवाड़ी (पश्चिमी), जयपुरी/ढूँढाड़ी (पूर्वी), मेवाती (उत्तरी), मालवी (दक्षिणी)।
4. **बिहारी हिंदी (मागधी अपभ्रंश से विकसित — 3 बोलियां):** भोजपुरी, मगही, मैथिली।

5. **पहाड़ी हिंदी (खस/शौरसेनी अपभ्रंश से विकसित — 3 बोलियां):** कुमाऊँनी, गढ़वाली, नेपाली/हिमाचली।

4. क्या आप जानते हैं? (Do You Know?) बॉक्स

क्या आप जानते हैं? (Do You Know?)
भारत सरकार के विधि और न्याय मंत्रालय के अंतर्गत कार्यरत **विधायी विभाग के राजभाषा खंड (Official Languages Wing)** का यह वैधानिक दायित्व है कि वह सभी केंद्रीय अधिनियमों (Central Acts), राष्ट्रपति द्वारा प्रख्यापित अध्यादेशों (Ordinances), नियमों और विनियमों का **हिंदी में प्राधिकृत पाठ (Authoritative Text)** तैयार करे तथा सभी राजभाषाओं के लिए मानक विधिक शब्दावली (Legal Terminology) प्रकाशित करे।

5. परीक्षा जाल सतर्कता (Exam Trap Alert) बॉक्स

परीक्षा जाल सतर्कता (Exam Trap Alert)!
परीक्षा में दो प्रश्न बार-बार अभ्यर्थियों को भ्रमित करते हैं:
1. **"भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में निम्नलिखित में से कौन-सी भाषा शामिल नहीं है?"** विकल्प में **'अंग्रेजी'**, **'भोजपुरी'** या **'राजस्थानी'** दिया जाता है। ध्यान रहे—आठवीं अनुसूची की 22 भाषाओं में **अंग्रेजी, भोजपुरी और राजस्थानी शामिल नहीं हैं** (बिहार की बोलियों में से केवल **मैथिली** को 92वें संविधान संशोधन 2003 द्वारा आठवीं अनुसूची में स्थान मिला है, जबकि **नेपाली** 71वें संशोधन 1992 से शामिल है)!
2. **'राष्ट्रीय हिंदी दिवस' बनाम 'विश्व हिंदी दिवस': 14 सितंबर** को 'राष्ट्रीय हिंदी दिवस' (14 सितंबर 1949 को संविधान सभा द्वारा राजभाषा स्वीकृत करने की स्मृति में) मनाया जाता है, जबकि **10 जनवरी** को 'विश्व हिंदी दिवस' (10 जनवरी 1975 को नागपुर में प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन के आयोजन की स्मृति में) मनाया जाता है (**भारतीय संविधान**)!

6. IUC स्मृति ट्रिक (IUC 5-Second Magic Memory Trick)

- **जादुई सूत्र: "21वें में सिंधी आई (15), 71वें में 'नमक' (नेपाली-मणिपुरी-कोंकणी = 18) लाई, 92वें में 'BDMS' (बोडो-डोगरी-मैथिली-संथाली = 22) ने आठवीं अनुसूची सजाई; पूर्वी हिंदी = A-B-C (अवधी-बघेली-छत्तीसगढ़ी)!"**
- **स्मरण संकेत:** अनुच्छेद 343 = राजभाषा हिंदी व लिपि देवनागरी; अनुच्छेद 344 = आयोग व समिति; अनुच्छेद 350A = मातृभाषा में प्राथमिक शिक्षा; अनुच्छेद 351 = हिंदी के विकास के निदेश (**IUC Academy**)।

7. विस्तृत तुलनात्मक सारणी (ख): हिंदी साहित्य के चार कालखंड, प्रमुख धाराएं, कालजयी कृतियां एवं ज्ञानपीठ पुरस्कार

कालखंड एवं समय-सीमा (आचार्य रामचंद्र शुक्ल अनुसार)	प्रमुख काव्य धाराएं / प्रवृत्तियां	प्रतिनिधि कवि / लेखक एवं उनकी अमर रचनाएं	प्रमुख परीक्षा तथ्य एवं उपाधियां	आधिकारिक संदर्भ स्रोत
आदिकाल / वीरगाथा काल (संवत् 1050–1375 वि.)	रासो साहित्य, सिद्ध-नाथ साहित्य, जैन साहित्य एवं लौकिक साहित्य	**चंदबरदाई** (**पृथ्वीराज रासो**), **जगनिक** (**परमाल रासो / आल्हखंड**), **नरपति नाल्ह** (**बीसलदेव रासो**), **विद्यापति** (**पदावली**, **कीर्तिलता**), **अमीर खुसरो** (**पहेलियाँ व मुकरियाँ**)	विद्यापति को **'मैथिल कोकिल'** और अमीर खुसरो को **'तूती-ए-हिंद'** व खड़ी बोली का आदि कवि कहा जाता है	NCERT हिंदी साहित्य संदर्भ
पूर्व मध्यकाल / भक्तिकाल — निर्गुण धारा (संवत् 1375–1700 वि.)	**1. ज्ञानाश्रयी (संत काव्य)** एवं **2. प्रेमाश्रयी (सूफी काव्य)**	**कबीरदास** (**बीजक: साखी, सबद, रमैनी**), **रैदास**, **नानक**, **दादू दयाल**; सूफी: **मलिक मोहम्मद जायसी** (**पद्मावत**, **अखरावट**, **आखिरी कलाम**), **कुतुबन** (**मृगावती**), **मंझन** (**मधुमालती**)	जॉर्ज ग्रियर्सन ने भक्तिकाल को **'हिंदी साहित्य का स्वर्ण युग'** कहा; कबीर की भाषा को शुक्ल जी ने 'सधुक्कड़ी' और हजारीप्रसाद द्विवेदी ने 'वाणी का डिक्टेटर' कहा	NCERT पाठ्यपुस्तक पोर्टल
पूर्व मध्यकाल / भक्तिकाल — सगुण धारा (संवत् 1375–1700 वि.)	**1. रामाश्रयी शाखा** एवं **2. कृष्णाश्रयी (अष्टछाप) शाखा**	**गोस्वामी तुलसीदास** (**रामचरितमानस** - अवधी, **विनयपत्रिका**, **कवितावली**, **गीतावली** - ब्रजभाषा); **सूरदास** (**सूरसागर**, **सूरसारावली**, **साहित्य लहरी**), **मीराबाई**, **रसखान**, **नंददास**	सूरदास को **'वात्सल्य रस का सम्राट'** व **'पुष्टिमार्ग का जहाज'** कहा जाता है; अष्टछाप की स्थापना 1565 ई. में गोस्वामी विट्ठलनाथ ने की थी	IUC Academy हिंदी अध्ययन नोट्स 12

कालखंड एवं समय-सीमा (आचार्य रामचंद्र शुक्ल अनुसार)	प्रमुख काव्य धाराएं / प्रवृत्तियां	प्रतिनिधि कवि / लेखक एवं उनकी अमर रचनाएं	प्रमुख परीक्षा तथ्य एवं उपाधियां	आधिकारिक संदर्भ स्रोत
उत्तर मध्यकाल / रीतिकाल (संवत् 1700–1900 वि.)	**1. रीतिबद्ध, 2. रीतिसिद्ध** एवं **3. रीतिमुक्त** काव्यधारा	**केशवदास** (**रामचंद्रिका** , **कविप्रिया**), **भूषण** (**शिवराज भूषण** , **छत्रसाल दशक**), **मतिराम**, **पद्माकर**; रीतिसिद्ध: **बिहारीलाल** (**बिहारी सतसई** - 713/719 दोहे); रीतिमुक्त: **घनानंद**, **आलम**, **बोधा**, **ठाकुर**	केशवदास को **'कठिन काव्य का प्रेत'** कहा जाता है; भूषण रीतिकाल में श्रृंगार के बजाय **वीर रस** के एकमात्र प्रमुख राष्ट्रीय कवि थे	IUC Academy हिंदी अध्ययन नोट्स 12
आधुनिक काल: भारतेंदु, द्विवेदी एवं छायावाद युग (1850–1936 ई.)	नवजागरण, खड़ी बोली का मानकीकरण एवं छायावादी सौंदर्य-चेतना	**भारतेंदु हरिश्चंद्र** (**भारत दुर्दशा** , **अंधेर नगरी**), **महावीर प्रसाद द्विवेदी** (**सरस्वती** पत्रिका संपादन 1903–1920), **मैथिलीशरण गुप्त** (**साकेत** , **यशोधरा** , **भारत-भारती**); छायावाद के 4 स्तंभ: **जयशंकर प्रसाद** (**कामायनी**), **सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'** (**राम की शक्तिपूजा**), **सुमित्रानंदन पंत** (**चिदंबरा** , **पल्लव**), **महादेवी वर्मा** (**यामा**)	महादेवी वर्मा को **'आधुनिक मीरा'** और सुमित्रानंदन पंत को **'प्रकृति का सुकुमार कवि'** कहा जाता है	NCERT अभिव्यक्ति और माध्यम
छायावादोत्तर काल: प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नई कविता व गद्य साहित्य	यथार्थवाद, अस्तित्ववाद, आंचलिक उपन्यास एवं आधुनिक नाटक-कहानी	**रामधारी सिंह 'दिनकर'** (**उर्वशी** , **रश्मिरथी** , **कुरुक्षेत्र**), **अज्ञेय** (**तार सप्तक** 1943, **कितनी नावों में कितनी बार**), **मुंशी प्रेमचंद** (**गोदान** , **गबन** , **कर्मभूमि** , **कफन** , **ईदगाह**), **फणीश्वरनाथ रेणु** (**मैला आँचल** - प्रथम आंचलिक उपन्यास), **धर्मवीर भारती** (**गुनाहों का देवता** , **अंधा युग**)	हिंदी में ज्ञानपीठ पुरस्कार पाने वाले प्रथम कवि **सुमित्रानंदन पंत** (1968 - **चिदंबरा**), इसके बाद दिनकर (1972 - **उर्वशी**), अज्ञेय (1978) और महादेवी वर्मा (1982 - **यामा**)	NCERT अभिव्यक्ति और माध्यम

1. भाषा की सबसे छोटी मौखिक इकाई **'ध्वनि'** और सबसे छोटी लिखित इकाई (जिसके और खंड न हो सकें) **'वर्ण'** कहलाती है (NCERT वर्ण विचार)।

• **परीक्षा सूत्र:** अर्थ के आधार पर भाषा की सबसे छोटी सार्थक इकाई **'शब्द'** और भाव/पूर्ण विचार के आधार पर सबसे छोटी इकाई **'वाक्य'** है।

2. मानक हिंदी वर्णमाला में कुल **52 वर्ण** होते हैं, जिनमें **11 मूल स्वर**, **2 अयोगवाह (अं, अः)**, **25 स्पर्श व्यंजन**, **4 अन्तःस्थ**, **4 ऊष्म**, **4 संयुक्त व्यंजन** और **2 द्विगुण/उत्क्षिप्त व्यंजन (ड़, ढ़)** शामिल हैं (IUC Academy)।

• **परीक्षा सूत्र:** लेखन के आधार पर स्वर 13 (**अ** से **अः**) और उच्चारण के आधार पर मूल स्वर 10 या 11 माने जाते हैं।

3. मात्रा या उच्चारण काल के आधार पर स्वर के तीन भेद होते हैं—**ह्रस्व स्वर (4: अ, इ, उ, ऋ)**, **दीर्घ/संधि स्वर (7: आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ)** और **प्लुत स्वर (ओ3म्)** (NCERT वर्ण विचार)।

• **परीक्षा सूत्र:** मूल दीर्घ स्वर 3 (**आ, ई, ऊ**) हैं और संयुक्त स्वर 4 (**ए, ऐ, ओ, औ**) हैं।

4. जिह्वा के उत्थित भाग के आधार पर **इ, ई, ए, ऐ अग्र स्वर** हैं, **अ मध्य (केंद्रीय) स्वर** है, और **आ, उ, ऊ, ओ, औ, ऑ पश्च स्वर** हैं (IUC Academy)।

• **परीक्षा सूत्र:** केवल ह्रस्व **'अ'** को 'मध्य स्वर' और 'शहीद वर्ण' (जिसकी कोई स्वतंत्र मात्रा चिह्न नहीं होती) कहा जाता है।

5. मुख-द्वार (विवर) खुलने के आधार पर **आ विवृत स्वर** है, **अ, ऐ, औ अर्द्ध-विवृत** हैं, **ए, ओ अर्द्ध-संवृत** हैं और **इ, ई, उ, ऊ संवृत स्वर** हैं (NCERT वर्ण विचार)।

• **परीक्षा सूत्र:** ओष्ठों की स्थिति के आधार पर **उ, ऊ, ओ, औ** वृत्तमुखी (गोलाकार) और **अ, आ, इ, ई, ए, ऐ** अवृत्तमुखी स्वर हैं।

6. अनुस्वार (`) और विसर्ग (`) न तो पूर्ण स्वर हैं और न ही पूर्ण व्यंजन; आचार्य किशोरीदास वाजपेयी ने इन्हें **'अयोगवाह'** नाम दिया है (IUC Academy)।

• **परीक्षा सूत्र:** अनुस्वार का उच्चारण स्थान 'नासिका' और विसर्ग का उच्चारण स्थान 'कण्ठ' है।

7. 'क' वर्ग (**क, ख, ग, घ, ङ**) तथा **अ, आ, ह** और विसर्ग (``) का उच्चारण स्थान **कण्ठ (कण्ठ्य)** है (NCERT वर्ण विचार)।

• **परीक्षा सूत्र:** संस्कृत सूत्र— **अकुहविसर्जनीयानां कण्ठः** ।

8. 'च' वर्ग (**च, छ, ज, झ, ञ**) तथा **इ, ई, य** और तालव्य **श** का उच्चारण स्थान **तालु (तालव्य)** है (NCERT वर्ण विचार)।

• **परीक्षा सूत्र:** संस्कृत सूत्र— **इचुयशानां तालु** ।

9. 'ट' वर्ग (**ट, ठ, ड, ढ, ण**), **ऋ, र** तथा मूर्धन्य **ष** और द्विगुण **ड़, ढ़** का उच्चारण स्थान **मूर्धा (मूर्धन्य)** है (NCERT वर्ण विचार)।

• **परीक्षा सूत्र:** संस्कृत सूत्र— **ऋटुरषाणां मूर्धा** ।

10. 'त' वर्ग (**त, थ, द, ध, न**), **ल** और दन्त्य **स** का उच्चारण स्थान **दन्त (दन्त्य)** है (NCERT वर्ण विचार)।

• **परीक्षा सूत्र:** आधुनिक भाषाविज्ञान में **न, ल, र, स, ज** को **'वत्सर्य (मसूड़े से उच्चारित)'** ध्वनियां भी माना जाता है।

11. 'प' वर्ग (**प, फ, ब, भ, म**) तथा **उ, ऊ** का उच्चारण स्थान **ओष्ठ (ओष्ठ्य)** है (NCERT वर्ण विचार)।

• **परीक्षा सूत्र:** संस्कृत सूत्र— **उपूपध्मानीयानामोष्ठौ** ।

12. **ए, ऐ** का उच्चारण स्थान **कण्ठतालव्य** (**कण्ठ + तालु**), **ओ, औ** का **कण्ठोष्ठ्य** (**कण्ठ + ओष्ठ**) और **व** का **दन्तोष्ठ्य** (**दन्त + ओष्ठ**) है (NCERT वर्ण विचार)।

• **परीक्षा सूत्र:** **एदैतोः कण्ठतालु** , **ओदौतोः कण्ठोष्ठम्** और **वकारस्य दन्तोष्ठम्** ।

13. अन्तःस्थ व्यंजनों (**य, र, ल, व**) में **य** और **व** **को अर्धस्वर**, **र** **को लुंठित/प्रकम्पित** और **ल** **को पार्श्विक व्यंजन** कहा जाता है (NCERT वर्ण विचार)।

• **परीक्षा सूत्र:** **श, ष, स, ह** को संघर्षी या **ऊष्म व्यंजन** कहा जाता है, और अकेले **ह** को **काकल्य (स्वरयंत्रमुखी)** वर्ण कहते हैं।

14. प्रत्येक वर्ग का **प्रथम और द्वितीय वर्ण** तथा **श, ष, स** (कुल 13 वर्ण) **अघोष** होते हैं; शेष सभी वर्ण (वर्ग का 3, 4, 5 + य, र, ल, व, ह + सभी स्वर) **सघोष (घोष)** होते हैं (IUC Academy)।

• **परीक्षा सूत्र:** प्रत्येक वर्ग का **1, 3, 5 वर्ण + य, र, ल, व + सभी स्वर = अल्पप्राण**; वर्ग का **2, 4 वर्ण + श, ष, स, ह = महाप्राण**।

15. संयुक्त व्यंजन **क्ष** = **क् + ष** , **त्र** = **त् + र** , **ज्ञ** = **ज् + ञ** और **श्र** = **श् + र** के योग से बनते हैं (NCERT वर्ण विचार)।

• **परीक्षा सूत्र:** हिंदी शब्दकोश में **क्ष** का स्थान **क** के बाद, **त्र** का **त** के बाद, **ज्ञ** का **ज** के बाद और **श्र** का **श** के बाद आता है (NCERT शब्दकोश)।

16. दो समीपवर्ती वर्णों (ध्वनियों) के मेल से जो विकार या परिवर्तन उत्पन्न होता है, उसे **'संधि'** कहते हैं; संधि के 3 मुख्य भेद (स्वर, व्यंजन, विसर्ग) और स्वर संधि के **5 उपभेद** होते हैं (NCERT संधि)।

• **परीक्षा सूत्र:** संधि का विलोम शब्द **'विग्रह'** (या विच्छेद) होता है, जबकि समास का विलोम **'व्यास'** होता है।

17. जब ह्रस्व या दीर्घ **अ, इ, उ, ऋ** के बाद समान ह्रस्व या दीर्घ **अ, इ, उ, ऋ** आए तो दोनों मिलकर दीर्घ (**आ, ई, ऊ, ॠ**) हो जाते हैं—इसे **दीर्घ स्वर संधि** कहते हैं (NCERT संधि)।

• **परीक्षा सूत्र:** **विद्या + आलय = विद्यालय** , **कपि + ईश = कपीश** , **वधू + उत्सव = वधूत्सव** (ध्यान रहे: 'वधू' में बड़ा 'ऊ' होता है)।

18. **अ/आ** के बाद **इ/ई** आने पर **ए** , **उ/ऊ** आने पर **ओ** और **ऋ** आने पर **अर्** हो जाना **गुण स्वर संधि** कहलाता है (NCERT संधि)।

• **परीक्षा सूत्र:** **राका + ईश = राकेश** , **गंगा + उर्मि = गंगोर्मि** , **महा + ऋषि = महर्षि** , **गुडाका + ईश = गुडाकेश** ।

19. **अ/आ** के बाद **ए/ऐ** आने पर **ऐ** और **ओ/औ** आने पर **औ** हो जाना **वृद्धि स्वर संधि** कहलाता है (NCERT संधि)।

• **परीक्षा सूत्र:** **मत + ऐक्य = मतैक्य** , **लोक + एषणा = लोकेषणा** , **परम + ओजस्वी = परमौजस्वी** , **वन + औषधि = वनौषधि** ।

20. **इ/ई, उ/ऊ, ऋ** के बाद कोई असमान स्वर आने पर क्रमशः **य्, व्, र्** हो जाना **यण स्वर संधि** कहलाता है (NCERT संधि)।

• **परीक्षा सूत्र:** **प्रति + एक = प्रत्येक** , **अभि + आगत = अभ्यागत** , **अनु + एषण = अन्वेषण** , **मातृ + आनंद = मात्रानंद** ।

21. **ए, ऐ, ओ, औ** के बाद कोई भिन्न स्वर आने पर क्रमशः **अय्, आय्, अव्, आव्** हो जाना **अयादि स्वर संधि** कहलाता है (NCERT संधि)।

• **परीक्षा सूत्र:** **शे + अन = शयन** , **नै + अक = नायक** , **भो + अन = भवन** , **भौ + उक = भावुक** , **पौ + अन = पावन** ।

22. व्यंजन संधि के प्रथम नियम के अनुसार, वर्ग के पहले वर्ण (**क्, च्, ट्, त्, प्**) के बाद कोई स्वर, तीसरा/चौथा वर्ण या **य, र, ल, व** आए तो पहला वर्ण अपने ही वर्ग के **तीसरे वर्ण** (**ग्, ज्, ड्, द्, ब्**) में बदल जाता है (NCERT संधि)।

• **परीक्षा सूत्र:** **दिक् + अम्बर = दिगम्बर** , **सत् + आचार = सदाचार** , **षट् + दर्शन = षड्दर्शन** , **अप् + ज = अब्ज** (कमल)।

23. व्यंजन संधि के पंचमाक्षर नियम के अनुसार, वर्ग के पहले वर्ण के बाद **न** या **म** आए तो पहला वर्ण अपने वर्ग के **पाँचवें वर्ण** (**ङ्, ञ्, ण्, न्, म्**) में बदल जाता है (NCERT संधि)।

• **परीक्षा सूत्र:** **षट् + मुख = षण्मुख**, **उत् + नति = उन्नति**, **चित् + मय = चिन्मय**, **जगत् + माता = जगन्माता**।

24. यदि **त्** या **द्** के बाद **श** आए तो **त्/द्** का **च्** और **श** का **छ** हो जाता है, तथा **ह** आए तो **त्/द्** का **द्** और **ह** का **ध** (**द्ध**) हो जाता है (NCERT संधि)।

• **परीक्षा सूत्र:** **उत् + शिष्ट = उच्छिष्ट**, **सत् + शास्त्र = सच्छास्त्र**, **तत् + हित = तद्धित**, **उत् + हृत = उद्धृत**।

25. विसर्ग (**:**) के पहले **'अ'** हो और बाद में भी **'अ'** अथवा वर्ग का 3, 4, 5 वर्ण या **य, र, ल, व, ह** हो, तो **अः** बदलकर **ओ** हो जाता है (**विसर्ग संधि**) (IUC Academy)।

• **परीक्षा सूत्र:** **यशः + गान = यशोगान**, **मनः + योग = मनोयोग**, **तमः + गुण = तमोगुण**, **पयः + धर = पयोधर**, **अधः + गति = अधोगति**।

26. विसर्ग के पहले **अ/आ** को छोड़कर कोई अन्य स्वर (**इ, उ** आदि) हो और बाद में कोई स्वर या सघोष वर्ण हो, तो विसर्ग का **र्** हो जाता है (IUC Academy)।

• **परीक्षा सूत्र:** **निः + आशा = निराशा**, **आशीः + वाद = आशीर्वाद**, **दुः + जन = दुर्जन**, **बहिः + मुख = बहिर्मुख**।

27. दो या दो से अधिक शब्दों (पदों) के परस्पर संबंध बताने वाले शब्दों या कारक चिह्नों का लोप होने पर जो संक्षिप्त शब्द बनता है, उसे **'समास' (समस्तपद)** कहते हैं (NCERT समास)।

• **परीक्षा सूत्र:** समास के मुख्यतः **6 भेद** होते हैं (जबकि पद की प्रधानता के आधार पर 4 मूल श्रेणियां बनती हैं)।

28. **अव्ययीभाव समास** में पूर्वपद अव्यय एवं प्रधान होता है तथा संपूर्ण समस्तपद क्रियाविशेषण अव्यय का कार्य करता है (NCERT समास)।

• **परीक्षा सूत्र:** **आजीवन**, **आमरण**, **यथासंभव**, **यथाशीघ्र**, **प्रत्यक्ष**, **प्रतिदिन**, **भरपेट**, **बेशक**, **निडर**, **हाथोंहाथ**, **द्वार-द्वार** सभी अव्ययीभाव हैं।

29. **तत्पुरुष समास** में उत्तरपद प्रधान होता है और कारक विभक्तियों के आधार पर इसके 6 कारकीय भेद (कर्म, करण, संप्रदान, अपादान, संबंध, अधिकरण तत्पुरुष) होते हैं (NCERT समास)।

• **परीक्षा सूत्र:** **गगनचुंबी, जेबकतरा** (कर्म); **अकालपीड़ित, मनचाहा** (करण); **गौशाला, देशभक्ति, हथकड़ी** (संप्रदान); **ऋणमुक्त, जन्मांध, देश निकाला** (अपादान); **गंगाजल, राजमाता** (संबंध); **आपबीती, पुरुषोत्तम, घुड़सवार** (अधिकरण)।

30. जिस तत्पुरुष समास में प्रथम पद निषेधवाचक (**अ, अन्, न, ना, गैर**) हो, उसे **'नञ् तत्पुरुष समास'** कहते हैं (NCERT समास)।

• **परीक्षा सूत्र:** **अनाथ** (न नाथ), **अन्याय** (न न्याय), **अनादि** (न आदि), **अ** (न मरने वाला), **अगोचर**, **नापसंद**।

31. **कर्मधारय समास** में उत्तरपद प्रधान होता है तथा पूर्वपद और उत्तरपद में 'विशेषण-विशेष्य' या 'उपमान-उपमेय' का संबंध होता है (NCERT समास)।

• **परीक्षा सूत्र:** **नीलगगन**, **महादेव**, **परमानंद**, **अधमरा**, **कमलनयन**, **चंद्रमुख**, **देहलता**, **विद्याधन**, **भवसागर**, **प्राणप्रिय**।

32. **द्विगु समास** में उत्तरपद प्रधान होता है और पूर्वपद संख्यावाची विशेषण होकर समूह या समाहार का बोध कराता है (NCERT समास)।

• **परीक्षा सूत्र:** **तिरंगा**, **त्रिलोक**, **चौमासा**, **पंचवटी**, **पंजाब** (पाँच आबों का समूह), **सप्तर्षि**, **सप्तसिंधु**, **अष्टाध्यायी**, **नवरात्र**।

33. **द्वंद्व समास** में दोनों पद प्रधान होते हैं; इसके तीन उपभेद हैं—इतरेतर द्वंद्व (**राम-लक्ष्मण**), समाहार द्वंद्व (**रुपया-पैसा, कपड़ा-लत्ता**) और वैकल्पिक द्वंद्व (**थोड़ा-बहुत, भला-बुरा, धर्म-अधर्म**) (NCERT समास)।

• **परीक्षा सूत्र:** 1 से 9 और 10 के गुणजों को छोड़कर संयुक्त संख्याएं—जैसे **पच्चीस** **(पाँच और बीस)**, **अड़सठ** **(आठ और साठ)**—द्वंद्व समास होती हैं!

34. **बहुव्रीहि समास** में कोई भी पद प्रधान न होकर दोनों पद मिलकर किसी तीसरे विशेष अर्थ (रूढ़ संज्ञा) का बोध कराते हैं (NCERT समास)।

• **परीक्षा सूत्र:** **चन्द्रशेखर**, **गिरिधर**, **आशुतोष**, **चतुरानन**, **षडानन**, **दिगम्बर**, **श्वेताम्बर**, **मृगेंद्र**, **पंचानन**, **घनश्याम**, **मुरारी**।

35. संस्कृत के जो शब्द बिना किसी ध्वनि परिवर्तन के ज्यों के त्यों हिंदी में प्रयुक्त होते हैं, उन्हें **'तत्सम'** और जो पालि-प्राकृत-अपभ्रंश से परिवर्तित होकर हिंदी में आए हैं, उन्हें **'तद्भव'** कहते हैं (IUC Academy)।

• **परीक्षा सूत्र:** **अग्नि → आग**, **अश्रु → आँसू**, **अर्द्ध → आधा**, **आम्र → आम**, **आश्चर्य → अचरज**, **इला → इलायची**, **उलूक → उल्लू**, **ओष्ठ → होंठ**।

36. उच्च-आवृत्ति तत्सम-तद्भव युग्म (भाग-2): **कपोत → कबूतर**, **कदली → केला**, **काष्ठ → काठ**, **कोकिल → कोयल**, **गर्दभ → गधा**, **गर्त → गड्ढा**, **ग्राहक → गाहक**, **चर्म → चमड़ा**, **चणक → चना**, **चंचु → चोंच** (IUC Academy)।

• **परीक्षा सूत्र:** **चतुष्पद → चौपाया**, **चतुर्थ → चौथा**, **चैत्र → चैत**, **छत्र → छाता**, **जंघा → जाँघ**, **जिह्वा → जीभ**, **जेष्ठ → जेठ**, **तीक्ष्ण → तीखा**, **तैल → तेल**।

37. उच्च-आवृत्ति तत्सम-तद्भव युग्म (भाग-3): **दधि → दही**, **दंष्ट्रा → दाढ़**, **दीपावली → दिवाली**, **दृष्टि → दीठि**, **धरित्री → धरती**, **धूम्र → धुआँ**, **नकुल → नेवला**, **नृत्य → नाच**, **नासिका → नाक**, **निद्रा → नींद** (IUC Academy)।

• **परीक्षा सूत्र:** **पत्र → पत्ता**, **पक्ष → पंख**, **पृष्ठ → पीठ**, **प्रस्तर → पत्थर**, **प्रहर → पहर**, **प्रिय → पिया**, **फाल्गुन → फागुन**, **बधिर → बहरा**, **बलीवर्द → बैल**।

38. उच्च-आवृत्ति तत्सम-तद्भव युग्म (भाग-4): **भ्रमर → भौंरा**, **भिक्षा → भीख**, **भ्रू → भौंह**, **मस्तक → माथा**, **मयूर → मोर**, **मर्कट → बंदर**, **मिष्ट → मीठा**, **मश्रु → मूँछ**, **लौह → लोहा**, **लवंग → लौंग** (IUC Academy)।

• **परीक्षा सूत्र:** **शृगाल → सियार**, **शृंग → सींग**, **श्यालक → साला**, **सप्तति → सत्तर**, **सौभाग्य → सुहाग**, **सपत्नी → सौत**, **हस्ति → हाथी**, **हस्त → हाथ**।

39. संज्ञा के मुख्य 5 भेदों में से **'भाववाचक संज्ञा'** का निर्माण जातिवाचक संज्ञा (**मनुष्य → मनुष्यता**), सर्वनाम (**अपना → अपनत्व, मम → ममत्व**), विशेषण (**मीठा → मिठास, सुंदर → सुंदरता**), क्रिया (**थकना → थकावट, घबराना → घबराहट**) और अव्यय (**निकट → निकटता, शाबाश → शाबाशी**)—इन 5 प्रकार के शब्दों से होता है (IUC Academy)।

• **परीक्षा सूत्र:** भाववाचक संज्ञाएं सामान्यतः एकवचन में प्रयुक्त होती हैं; यदि इन्हें बहुवचन में लिखा जाए (जैसे—**बुराइयाँ, दूरियाँ, प्रार्थनाएँ**), तो ये **जातिवाचक संज्ञा** बन जाती हैं!

40. हिंदी में मूल सर्वनाम **11** (**मैं, तू, आप, यह, वह, जो, सो, कोई, कुछ, कौन, क्या**) हैं और प्रयोग के आधार पर सर्वनाम के **6 भेद** होते हैं (IUC Academy)।

• **परीक्षा सूत्र:** अनिश्चयवाचक सर्वनाम में **कोई** प्राणिवाचक (सजीव) के लिए और **कुछ** अप्राणिवाचक (निर्जीव/कीट-पतंग) के लिए प्रयुक्त होता है; यही नियम प्रश्नवाचक में **कौन** (सजीव) और **क्या** (निर्जीव/व्यवसाय) पर लागू होता है।

41. जो शब्द विशेषण की भी विशेषता बताते हैं, उन्हें आचार्य कामताप्रसाद गुरु ने **'अंतरविशेषण'** या **'प्रविशेषण'** कहा है (IUC Academy)।

• **परीक्षा सूत्र:** "कश्मीरी सेब **सिंदूरी** लाल होता है" या "अर्चना **अत्यंत** सुंदर है" में **'सिंदूरी'** और **'अत्यंत'** **प्रविशेषण** हैं!

42. तुलना के आधार पर विशेषण की तीन अवस्थाएं होती हैं—**मूलावस्था** (**सुंदर, उच्च**), **उत्तरावस्था** (**सुंदरतर, उच्चतर**) और **उत्तमावस्था** (**सुंदरतम, उच्चतम**) (IUC Academy)।

• **परीक्षा सूत्र:** वाक्य में कभी भी **'सबसे'** और **'तम'** का प्रयोग एक साथ न करें—"यह **सबसे सर्वोत्तम** पुस्तक है" अशुद्ध है; शुद्ध होगा: **"यह सर्वोत्तम पुस्तक है"**।

43. जब कर्ता स्वयं कार्य न करके किसी दूसरे को कार्य करने की प्रेरणा देता है, तो उसे **'प्रेरणार्थक क्रिया'** कहते हैं (IUC Academy)।

• **परीक्षा सूत्र:** प्रथम प्रेरणार्थक में **'आना'** (**पढ़ाना, लिखाना, सुलाना**) और द्वितीय प्रेरणार्थक में **'वाना'** (**पढ़वाना, लिखवाना, सुलवाना**) जुड़ता है; दोनों प्रेरणार्थक क्रियाएं सदैव **सकर्मक** होती हैं।

44. संज्ञा, सर्वनाम या विशेषण शब्दों के अंत में प्रत्यय लगाकर जो क्रिया बनाई जाती है, उसे **'नामधातु क्रिया'** कहते हैं (IUC Academy)।

• **परीक्षा सूत्र:** **बात → बतियाना**, **हाथ → हथियाना**, **लात → लतियाना**, **शर्म → शर्माना**, **गर्म → गर्माना**, **अपना → अपनाना**, **साठ → सठियाना** सभी नामधातु क्रियाएं हैं।

45. जब कर्ता एक क्रिया समाप्त करके तुरंत दूसरी क्रिया आरंभ करता है, तो पहली समाप्त हुई क्रिया को **'पूर्वकालिक क्रिया'** कहते हैं (IUC Academy)।

• **परीक्षा सूत्र:** धातु में **'कर'** या **'करके'** जुड़ा रहता है—जैसे: "चोर सामान **चुराकर** भाग गया", "पुजारी **नहाकर** पूजा करने लगा"।

46. अव्यय (अविकारी) शब्दों में अर्थ के आधार पर क्रियाविशेषण के **4 भेद** होते हैं—**कालवाचक** (**कब?** — **आज, कल, प्रतिदिन, अभी**), **स्थानवाचक** (**कहाँ?** — **यहाँ, वहाँ, ऊपर, भीतर, बाहर**), **परिमाणवाचक** (**कितना?** — **थोड़ा, बहुत, पर्याप्त, उतना**) और **रीतिवाचक** (**कैसे?** — **धीरे-धीरे, अचानक, ध्यानपूर्वक, कदाचित्**) (IUC Academy)।

• **परीक्षा सूत्र:** क्रिया के पहले **कब, कहाँ, कितना, कैसे** लगाकर प्रश्न करने से 2 सेकंड में क्रियाविशेषण का भेद पता चल जाता है।

47. **निपात (Emphatic Particles)** वे अव्यय शब्द हैं जो किसी शब्द या पद के बाद लगकर उसके अर्थ में विशेष **बल (अवधारणा)** प्रदान करते हैं; इनका कोई स्वतंत्र लिंग-वचन नहीं होता (IUC Academy)।

• **परीक्षा सूत्र:** **ही, भी, तो, तक, मात्र, केवल, भर, सा** प्रमुख निपात हैं (आचार्य यास्क ने निपात का विषद विवेचन किया है)।

48. हिंदी व्याकरण में कारकों की संख्या **8** है—कर्ता (**ने**), कर्म (**को**), करण (**से, के द्वारा**), संप्रदान (**को, के लिए**), अपादान (**से** अलगाव), संबंध (**का, के, की, रा, रे, री**), अधिकरण (**में, पर**), संबोधन (**हे!, अरे!**) (NCERT कारक)।

• **परीक्षा सूत्र:** शारीरिक अंग में विकार होने पर (**येनांगविकारः** —जैसे "वह पैर से लँगड़ा है", "वह एक आँख से काना है") सदैव **करण कारक** होता है!

49. समय या स्थान के आधार को बताने वाले वाक्यों में (चाहे **'में/पर'** चिह्न छिपा हो) **अधिकरण कारक** होता है (NCERT कारक)।

• **परीक्षा सूत्र:** "परीक्षा **मार्च में** होगी", "मेहमान **शाम को** आएंगे", "कुर्सी **पर** मास्टरजी बैठे हैं", "वह **अगले वर्ष** आएगा"—इन सभी में **अधिकरण कारक** है!

50. हिंदी में केवल दो लिंग (**पुल्लिंग** और **स्त्रीलिंग**) तथा दो वचन (**एकवचन** और **बहुवचन**) होते हैं; संस्कृत की तरह नपुंसकलिंग और द्विवचन हिंदी में नहीं होते (IUC Academy)।

• **परीक्षा सूत्र:** किसी शब्द का लिंग पहचानने की सर्वोत्तम ट्रिक उसके साथ **'अच्छा/अच्छी'** विशेषण या **'रहा है/रही है'** क्रिया लगाना है—जैसे: **अच्छा दही** (दही = पुल्लिंग), **अच्छा मोती** (मोती = पुल्लिंग), **अच्छा पानी** (पानी = पुल्लिंग), **अच्छी नाक** (नाक = स्त्रीलिंग), **अच्छी पुलिस** (पुलिस = स्त्रीलिंग)।

51. तिथियों, नदियों (**गंगा, यमुना** — अपवाद: **सोन, ब्रह्मपुत्र, सिंधु पुल्लिंग हैं**), भाषाओं (**हिंदी, मराठी**) और लिपियों (**देवनागरी, रोमन**) के नाम प्रायः **स्त्रीलिंग** होते हैं (IUC Academy)।

• **परीक्षा सूत्र:** ग्रहों (**मंगल, बुध, शनि** — अपवाद: **पृथ्वी स्त्रीलिंग**), दिनों, महीनों, पर्वतों, रत्नों (**हीरा, पन्ना, मोती** — अपवाद: **मणि स्त्रीलिंग**), अनाजों (**गेहूँ, चना, बाजरा** — अपवाद: **ज्वार, मक्का, अरहर, मूँग स्त्रीलिंग**) और द्रव्यों (**पानी, घी, तेल, दही** — अपवाद: **चाय, लस्सी, कॉफी, स्याही, शराब स्त्रीलिंग**) के नाम प्रायः **पुल्लिंग** होते हैं।

52. हिंदी के विशेष स्त्रीलिंग-पुल्लिंग रूपांतरण जो हर परीक्षा में पूछे जाते हैं: **कवि ↔ कवयित्री** , **विद्वान ↔ विदुषी** , **सम्राट ↔ सम्राज्ञी** , **साधु ↔ साध्वी** , **नेता ↔ नेत्री** , **दाता ↔ दात्री** , **अभिनेता ↔ अभिनेत्री** , **भगवान ↔ भगवती** , **बलवान ↔ बलवती** , **वीर ↔ वीरांगना** , **सूर्य ↔ सूर्या** (IUC Academy)।

• **परीक्षा सूत्र:** **चाचा, मामा, दादा, नाना** में प्रत्यय लगाने से स्त्रीलिंग रूप बनता है, जबकि **भेड़िया → मादा भेड़िया** , **भालू → मादा भालू** , **कोयल → नर कोयल** , **गिलहरी → नर गिलहरी** में नर/मादा शब्द जोड़कर लिंग बदलते हैं।

53. काव्य को पढ़ने, सुनने या नाटक को देखने से जिस अलौकिक आनंद की अनुभूति होती है, उसे **'रस'** कहते हैं; रस के **4 अंग (अवयव)** होते हैं—**स्थायी भाव, विभाव, अनुभाव और संचारी (व्यभिचारी) भाव** (IUC Academy)।

• **परीक्षा सूत्र:** स्थायी भावों की मूल संख्या 9 (वात्सल्य व भक्ति सहित 11) है, जबकि **संचारी भावों की संख्या 33** है और सात्विक अनुभावों की संख्या **8** (स्तंभ, स्वेद, रोमांच, स्वरभंग, कंप, वैवर्ण्य, अश्रु, प्रलय) है।

54. आलंबन विभाव और उद्दीपन विभाव 'विभाव' के दो भेद हैं; जिसके कारण मन में भाव जगे वह **'आलंबन'** और जो परिस्थितियां (चाँदनी रात, कोयल की कूक, एकांत) भाव को तीव्र करें वे **'उद्दीपन'** कहलाती हैं (IUC Academy)।

• **परीक्षा सूत्र:** आश्रय की बाह्य शारीरिक चेष्टाओं को **'कायिक अनुभाव'** और वेशभूषा/अलंकरण को **'आहार्य अनुभाव'** कहते हैं।

55. छंद शास्त्र के प्रणेता **आचार्य पिंगल** हैं, इसलिए छंद को **'पिंगल शास्त्र'** भी कहा जाता है; छंद का सर्वप्रथम उल्लेख **ऋग्वेद** में मिलता है (IUC Academy)।

• **परीक्षा सूत्र:** छंद में तीन वर्णों के समूह को **'गण'** कहते हैं; गणों की कुल संख्या **8** है जिनका सूत्र **यमाताराजभानसलगा** है (**यगण: ।SS** , **मगण: SSS** , **तगण: SS।** , **रगण: S।S** , **जगण: ।S।** , **भगण: S।।** , **नगण: ।।।** , **सगण: ।।S**)।

56. **दोहा** (13-11), **सोरठा** (11-13), **बरवै** (12-7) और **उल्लाला** (15-13) चारों **अर्द्धसम मात्रिक छंद** हैं (IUC Academy)।

• **परीक्षा सूत्र: चौपाई** (16), **रोला** (24), **गीतिका** (26), **हरिगीतिका** (28) और **आल्हा/वीर** (31) सभी **सम मात्रिक छंद** हैं।

57. काव्य की शोभा बढ़ाने वाले तत्वों को **'अलंकार'** कहते हैं; अलंकार संप्रदाय के प्रवर्तक **आचार्य भामह** (ग्रंथ: काव्यालंकार) हैं और आचार्य दण्डी ने "काव्यशोभाकरान् धर्मान् अलंकारान् प्रचक्षते" परिभाषा दी है (IUC Academy)।

• **परीक्षा सूत्र: अतिशयोक्ति अलंकार** में किसी बात को लोक-सीमा से बहुत बढ़ा-चढ़ाकर कहा जाता है—जैसे: "हनुमान की पूँछ में लगन न पाई आग, लंका सिगरी जल गई गए निशाचर भाग" या "आगे नदिया पड़ी अपार, घोड़ा कैसे उतरे पार। राणा ने सोचा इस पार, तब तक चेतक था उस पार॥"।

58. जहाँ उपमान की अपेक्षा उपमेय को ही श्रेष्ठ बता दिया जाए (या उपमेय को उपमान और उपमान को उपमेय बना दिया जाए), वहाँ **'प्रतीप अलंकार'** (उपमा का उल्टा) होता है (IUC Academy)।

• **परीक्षा सूत्र:** "उसी तपस्वी-से लंबे थे, देवदारु दो चार खड़े" में **प्रतीप अलंकार** है!

59. जहाँ किसी एक वस्तु को देखकर सादृश्य के कारण दूसरी वस्तु का संशय अंत तक बना रहे, वहाँ **'संदेह अलंकार'** और जहाँ भ्रमवश दूसरी वस्तु समझकर कोई कार्य हो जाए, वहाँ **'भ्रांतिमान अलंकार'** होता है (IUC Academy)।

• **परीक्षा सूत्र:** जहाँ प्रस्तुत के माध्यम से किसी अप्रस्तुत का बोध कराया जाए—जैसे "नहिं पराग नहिं मधुर मधु, नहिं विकास इहि काल। अली कली ही सौं बंध्यो, आगे कौन हवाल॥" (बिहारी द्वारा राजा जयसिंह को लक्ष्य कर लिखा गया दोहा)—वहाँ **'अन्योक्ति अलंकार'** होता है!

60. जहाँ ऊपर से विरोध जैसा दिखाई दे किंतु वास्तव में अर्थ समझने पर विरोध शांत हो जाए, वहाँ **'विरोधाभास अलंकार'** होता है (IUC Academy)।

• **परीक्षा सूत्र:** "या अनुरागी चित्त की गति समुझै नहिं कोय। ज्यों-ज्यों बूड़ै श्याम रंग, त्यों-त्यों उज्ज्वल होय॥" (श्याम रंग में डूबने पर उज्ज्वल होना = विरोधाभास अलंकार)।

61. **शब्द-शक्ति** के तीन भेद होते हैं—**अभिधा** (मुख्यार्थ या वाच्यार्थ का बोध), **लक्षणा** (मुख्यार्थ में बाधा होने पर रूढ़ि या प्रयोजन से लक्ष्यार्थ का बोध, जैसे "मोहन गधा है" या "पंजाब वीर है") और **व्यंजना** (प्रसंग के अनुसार भिन्न-भिन्न गूढ़ व्यंग्यार्थ का बोध, जैसे "संध्या हो गई") (IUC Academy)।

• **परीक्षा सूत्र: काव्य गुण** मुख्यतः 3 होते हैं—**माधुर्य गुण** (शृंगार, करुण, शांत रस में; ट-वर्ग व कठोर वर्ण वर्जित), **ओज गुण** (वीर, रौद्र, भयानक, वीभत्स रस में; संयुक्त व द्वित्व वर्णों की प्रधानता) और **प्रसाद गुण** (सभी रसों में; पढ़ते ही अर्थ तुरंत स्पष्ट होने वाली सरल पदावली)।

62. विराम चिह्नों (Punctuation Marks) को कामताप्रसाद गुरु ने अंग्रेजी से आया हुआ माना है (केवल **पूर्ण विराम** । को छोड़कर) और इनकी संख्या **20** बताई है (IUC Academy)।

• **परीक्षा सूत्र:** प्रमुख विराम चिह्न: **अल्प विराम (,)** — सर्वाधिक प्रयुक्त होने वाला चिह्न; **अर्द्ध विराम (;)**; **उपविराम (:)**; **योजक चिह्न (-)**; **निदेशक चिह्न (—)**; **लाघव चिह्न (0)**; **हंसपद या त्रुटिपूरक चिह्न (^)**; **लोप चिह्न (...)**; **तुल्यतासूचक (=)**; **उद्धरण चिह्न (' ' व " ")**।

63. रचना के आधार पर वाक्य के **3 भेद** होते हैं—**सरल (साधारण) वाक्य** (एक उद्देश्य और एक ही मुख्य विधेय/समापिका क्रिया), **संयुक्त वाक्य** (और, एवं, तथा, या, अथवा, किंतु, परंतु, लेकिन, इसलिए, अतः से जुड़े दो स्वतंत्र उपवाक्य) और **मिश्र (मिश्रित) वाक्य** (एक प्रधान उपवाक्य और कि, जो, जिसे, जब-तब, जहाँ-वहाँ, यदि-तो, यद्यपि-तथापि, क्योंकि से जुड़ा आश्रित उपवाक्य) (IUC Academy)।

• **परीक्षा सूत्र:** आश्रित उपवाक्य के 3 भेद हैं: **संज्ञा उपवाक्य** ("कि" से शुरू होने वाला), **विशेषण उपवाक्य** ("जो, जिसे, जिसका" से शुरू होने वाला) और **क्रियाविशेषण उपवाक्य** ("जब, जहाँ, जिधर, यदि, जैसे" से शुरू होने वाला)।

64. अर्थ के आधार पर वाक्य के **8 भेद** होते हैं—विधानवाचक, निषेधवाचक, प्रश्नवाचक, आज्ञावाचक, इच्छावाचक (ईश्वर तुम्हारा भला करे!), संदेहवाचक (शायद आज वर्षा हो), संकेतवाचक (यदि परिश्रम करोगे तो सफल होगे) और विस्मयादिवाचक (IUC Academy)।

• **परीक्षा सूत्र:** "आपकी यात्रा मंगलमय हो" या "नववर्ष की हार्दिक शुभकामनाएँ" अर्थ की दृष्टि से **इच्छावाचक वाक्य** हैं!

65. मुहावरा और लोकोक्ति का मुख्य अंतर: **'मुहावरा'** अरबी भाषा का शब्द है जो एक **वाक्यांश** होता है (प्रायः अंत में 'ना' होता है और वाक्य के अंग के रूप में प्रयुक्त होता है), जबकि **'लोकोक्ति' (कहावत)** लोक-अनुभव पर आधारित एक **पूर्ण स्वतंत्र वाक्य** होती है (IUC Academy)।

• **परीक्षा सूत्र:** "नौ दो ग्यारह होना" (भाग जाना) या "अंगूठा दिखाना" (साफ इनकार करना) **मुहावरे** हैं, जबकि "अधजल गगरी छलकत जाय" (ओछे व्यक्ति का अधिक इतराना) या "आँख के अंधे नाम नयनसुख" (गुण के विपरीत नाम) **लोकोक्तियाँ** हैं।

66. उच्च-आवृत्ति मुहावरे एवं उनके सटीक अर्थ: **अक्ल पर पत्थर पड़ना** = बुद्धि भ्रष्ट होना; **अंडे सेना** = घर में बेकार बैठना; **आँधी के आम** = सस्ती या बिना परिश्रम मिली वस्तु; **गूलर का फूल होना** = दुर्लभ वस्तु/दिखाई न देना; **चाँदी का ऐनक लगाना** = किसी न किसी प्रकार प्रतिष्ठा बनाए रखना; **जूतमपैजार** = लड़ाई-झगड़ा होना (IUC Academy)।

• **परीक्षा सूत्र:** **द्रौपदी का चीर** = कभी समाप्त न होने वाली वस्तु; **पौ बारह होना** = अत्यधिक लाभ होना; **बछिया का ताऊ** = अत्यंत मूर्ख व्यक्ति; **शैतान की आँत** = बहुत लंबी वस्तु।

67. उच्च-आवृत्ति लोकोक्तियाँ एवं उनके सटीक अर्थ: **आ बैल मुझे मार** = जानबूझकर मुसीबत मोल लेना; **एक पंथ दो काज** = एक प्रयास से दो लाभ; **कहाँ राजा भोज कहाँ गंगू तेली** = आकाश-पाताल का अंतर; **खिसियानी बिल्ली खंभा नोचे** = अपनी शर्म छिपाने के लिए व्यर्थ झुंझलाना; **छछूँदर के सिर पर चमेली का तेल** = अयोग्य व्यक्ति को उत्तम पद/वस्तु मिलना (IUC Academy)।

• **परीक्षा सूत्र:** **तन पर नहीं लत्ता पान खाए अलबत्ता** = झूठा दिखावा करना; **नौ दिन चले अढाई कोस** = बहुत धीमी गति से काम करना; **होनहार बिरवान के होत चीकने पात** = होनहार के गुण बचपन में ही दिख जाते हैं।

68. अनेकार्थी शब्दों के सर्वोच्च परीक्षा उदाहरण: **हरि** = विष्णु, इंद्र, सूर्य, चंद्रमा, सिंह, घोड़ा, वानर, सर्प, मेंढक, हवा; **सारंग** = मोर, सर्प, बादल, हिरण, सिंह, कामदेव, कोयल, कमल, दीपक; **अर्क** = सूर्य, मदार का पौधा, काढ़ा, इंद्र, तांबा; **द्विज** = ब्राह्मण, पक्षी, दाँत, चंद्रमा (दो बार जन्म लेने वाला) (IUC Academy)।

• **परीक्षा सूत्र:** **कनक** = सोना, धतूरा, गेहूँ, पलाश; **अम्बर** = आकाश, वस्त्र, कपास, केसर; **कर** = हाथ, टैक्स, किरण, हाथी की सूँड़; **अज** = ब्रह्मा, बकरा, दशरथ के पिता, अजन्मा।

69. वाक्यांश के लिए एक शब्द (विशेष परीक्षा संकलन): जो पहले कभी न हुआ हो = **अभूतपूर्व**; जिसे बुलाया न गया हो = **अनाहूत**; जो आँखों के सामने न हो = **परोक्ष** (सामने हो = **प्रत्यक्ष**); जिसका शत्रु जन्मा ही न हो = **अजातशत्रु**; जिसे जीता न जा सके = **अजेय**; जो थोड़ा जानता हो = **अल्पज्ञ** (IUC Academy)।

• **परीक्षा सूत्र:** गोद लिया हुआ पुत्र = **दत्तक**; गुरु के समीप रहकर अध्ययन करने वाला = **अंतेवासी**; जिसका पति परदेश से आने वाला हो = **आगमिस्यत्पतिका** (जिसका पति परदेश गया हो = **प्रोषितपतिका**)।

70. वाक्यांश के लिए एक शब्द (इच्छा-संबंधी युग्म जो सर्वाधिक भ्रमित करते हैं):

• मोक्ष की इच्छा = **मुमुक्षा** (इच्छुक = **मुमुक्षु**)

• जीने की इच्छा = **जिजीविषा** (इच्छुक = **जिजीविषु**)

• जानने की इच्छा = **जिज्ञासा** (इच्छुक = **जिज्ञासु**)

• जीतने/दमन की इच्छा = **जिगीषा** (इच्छुक = **जिगीषु**)

• युद्ध करने की इच्छा = **युयुत्सा** (इच्छुक = **युयुत्सु**)

• खाने की इच्छा = **बुभुक्षा** (इच्छुक = **बुभुक्षु**)

• तैरकर पार करने की इच्छा = **तितीर्षा** (इच्छुक = **तितीर्षु**) (IUC Academy)।

• **परीक्षा सूत्र:** जब वाक्यांश में केवल **'इच्छा'** पूछा जाए तो अंत में **'आ'** (**मुमुक्षा, जिजीविषा, युयुत्सा**) वाला विकल्प चुनें, और जब **'इच्छा रखने वाला व्यक्ति (इच्छुक)'** पूछा जाए तो अंत में **'उ'** (**मुमुक्षु, जिजीविषु, युयुत्सु**) वाला विकल्प चुनें!

71. प्रशासनिक एवं कार्यालयी पारिभाषिक शब्दावली (English to Hindi Official Terms): **Abandon** = परित्याग करना; **Accountability** = जवाबदेही; **Ad-hoc** = **तदर्थ**; **Adjournment** = स्थगन; **Affidavit** = **शपथ-पत्र / हलफनामा**; **Agenda** = **कार्यसूची**; **Approval** = **अनुमोदन**; **Autonomous** = स्वायत्त (विधायी विभाग)।

• **परीक्षा सूत्र:** **Bail** = जमानत; **Benchmark** = मानदंड; **Bill** = विधेयक (**Act** = अधिनियम); **Bona fide** = **सद्भावी / वास्तविक** (**Mala fide** = दुर्भावी); **By-law** = उपविधि।

72. प्रशासनिक शब्दावली (भाग-2): **Cadre** = **संवर्ग**; **Census** = जनगणना; **Circular** = **परिपत्र**; **Clarification** = स्पष्टीकरण; **Compensation** = **मुआवजा / क्षतिपूर्ति**; **Confidential** = गोपनीय; **Consensus** = सर्वसम्मति; **Contingency** = **आकस्मिकता**; **Deputation** = **प्रतिनियुक्ति** (IUC Academy)।

• **परीक्षा सूत्र:** **Disciplinary Action** = अनुशासनिक कार्यवाही; **Draft** = **प्रारूप / मसौदा**; **Endorsement** = **पृष्ठांकन**; **Ex-officio** = **पदेन**; **Ex-parte** = एकपक्षीय; **Gazette** = **राजपत्र**।

73. प्रशासनिक शब्दावली (भाग-3): **Grant** = **अनुदान** (**Honorarium** = **मानदेय**, **Allowance** = **भत्ता**, **Reimbursement** = **प्रतिपूर्ति**); **Jurisdiction** = **क्षेत्राधिकार / अधिकारिता**; **Minutes** = **कार्यवृत्त**; **Memorandum** = **ज्ञापन**; **Notification** = **अधिसूचना**; **Ordinance** = **अध्यादेश**; **Probation** = **परिवीक्षा**; **Quorum** = **गणपूर्ति**; **Resolution** = **संकल्प**; **Sub-judice** = **न्यायाधीन**; **Vigilance** = **सतर्कता** (विधायी विभाग)।

• **परीक्षा सूत्र:** सरकारी कर्मचारियों के पत्र-व्यवहार में **Endorsement** का सटीक हिंदी अनुवाद **'पृष्ठांकन'** और **Minutes of Meeting** का सटीक अनुवाद **'बैठक का कार्यवृत्त'** होता है।

74. NCERT की 'अभिव्यक्ति और माध्यम' पुस्तक के अनुसार, समाचार लेखन की सबसे प्रचलित और मानक शैली **'उल्टा पिरामिड शैली (Inverted Pyramid Style)'** है, जिसमें सबसे महत्वपूर्ण तथ्य सबसे पहले **'इंट्रो / मुखड़ा (Lead)'** में, कम महत्वपूर्ण तथ्य **'बॉडी (Body)'** में और अंत में **'समापन'** रखा जाता है।

• **परीक्षा सूत्र:** समाचार लेखन के **6 ककार (Six W's)** होते हैं—**क्या, कौन, कहाँ, कब** (प्रथम 4 ककार इंट्रो/मुखड़े में सूचनात्मक आधार देते हैं) तथा **क्यों और कैसे** (अंतिम 2 ककार बॉडी में विश्लेषणात्मक विवरण देते हैं)।

75. टेलीविज़न पत्रकारिता के प्रमुख चरण NCERT अभिव्यक्ति और माध्यम कोश के अनुसार हैं: **फ्लैश / ब्रेकिंग न्यूज़** (तत्काल कम से कम शब्दों में बड़ी खबर), **ड्राई एंकर** (दृश्य आने से पूर्व एंकर द्वारा सीधे खबर बताना), **फोन-इन** (रिपोर्टर से फोन पर संवाद), **एंकर-विजुअल**, **एंकर-बाइट** (प्रत्यक्षदर्शी का कथन) और **लाइव (सीधा प्रसारण)**।

• **परीक्षा सूत्र:** समाचारपत्र में संपादक के नाम के साथ या विशेष पृष्ठ पर किसी समसामयिक मुद्दे पर सुविचारित मनोरंजक व सृजनात्मक लेख को **'फ़ीचर (Feature)'** और समाचारपत्र की आधिकारिक राय को **'संपादकीय (Editorial)'** कहते हैं (संपादकीय के नीचे किसी लेखक का नाम नहीं छपता क्योंकि वह पूरे अखबार की आवाज होता है)।

76. भारत में प्रकाशित होने वाला प्रथम समाचारपत्र 1780 ई. में जेम्स ऑगस्टस हिक्की का **'बंगाल गजट'** (अंग्रेजी) था, जबकि **हिंदी का प्रथम समाचारपत्र 30 मई 1826 को कलकत्ता से पंडित जुगल किशोर शुक्ल द्वारा प्रकाशित साप्ताहिक पत्र 'उदन्त मार्तण्ड'** था (IUC Academy)।

• **परीक्षा सूत्र:** 30 मई को प्रतिवर्ष **'हिंदी पत्रकारिता दिवस'** मनाया जाता है; हिंदी का प्रथम दैनिक समाचारपत्र 1854 ई. में श्यामसुंदर सेन द्वारा संपादित **'समाचार सुधावर्षण'** था।

77. हिंदी भाषा का संबंध विश्व के सबसे बड़े भाषा-परिवार **'भारोपीय (Indo-European) भाषा-परिवार'** की 'भारतीय-ईरानी' शाखा की 'भारतीय-आर्य उपशाखा' से है (भारत में ~73% लोग भारोपीय और ~25% लोग द्रविड़ भाषा-परिवार की भाषाएं बोलते हैं) (IUC Academy)।

• **परीक्षा सूत्र:** भारतीय आर्यभाषा का ऐतिहासिक विकास क्रम: **वैदिक संस्कृत → लौकिक संस्कृत → पालि (बौद्ध धर्म/त्रिपिटक की भाषा, भारत की प्रथम देशभाषा) → प्राकृत (जैन धर्म/आगम की भाषा) → अपभ्रंश → अवहट्ट → प्राचीन/प्रारंभिक हिंदी**।

78. अपभ्रंश का वाल्मीकि **'स्वयंभू'** (रचना: **पउमचरिउ**) को कहा जाता है, और अवहट्ट में विद्यापति ने **'कीर्तिलता'** और **'कीर्तिपताका'** की रचना की (IUC Academy)।

• **परीक्षा सूत्र:** हिंदी के प्रथम कवि **'सरहपा'** (सिद्ध कवि, 8वीं शताब्दी - राहुल सांकृत्यायन के अनुसार) माने जाते हैं, और हिंदी की प्रथम रचना देवसेन कृत **'श्रावकाचार'** (933 ई.) मानी जाती है।

79. देवनागरी लिपि का विकास प्राचीन **'ब्राह्मी लिपि'** की उत्तरी शैली (गुप्त लिपि → सिद्धमातृका/कुटिल लिपि → प्राचीन नागरी) से हुआ है (IUC Academy)।

• **परीक्षा सूत्र:** देवनागरी लिपि एक **'आक्षरिक (Syllabic)'** और वैज्ञानिक लिपि है जो बाईं से दाईं ओर लिखी जाती है; हिंदी के अतिरिक्त **संस्कृत, मराठी, नेपाली, कोंकणी, बोडो, संथाली और मैथिली** भाषाएं भी देवनागरी लिपि में लिखी जाती हैं।

80. संविधान सभा में **गोपालस्वामी आयंगर** द्वारा प्रस्तुत सूत्र (मुंशी-आयंगर फॉर्मूला) के आधार पर **14 सितंबर 1949** को हिंदी को संघ की राजभाषा स्वीकार किया गया (संविधान पोर्टल)।

• **परीक्षा सूत्र:** संविधान के **भाग-17** में **अनुच्छेद 343 से 351** तक राजभाषा संबंधी प्रावधान हैं।

81. राजभाषा अधिनियम 1963 (यथासंशोधित 1967) की **धारा 3(3)** के अंतर्गत संकल्प, सामान्य आदेश, नियम, अधिसूचनाएं, प्रशासनिक रिपोर्ट, प्रेस विज्ञप्तियां, संविदाएं, लाइसेंस और परमिट **अनिवार्य रूप से द्विभाषी (हिंदी और अंग्रेजी दोनों में)** जारी किए जाते हैं (विधायी विभाग)।

• **परीक्षा सूत्र:** राजभाषा नियम 1976 के **नियम 10(4)** के अधीन जिन केंद्रीय कार्यालयों के **80% या अधिक** कर्मचारियों ने हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया हो, उन्हें राजपत्र में अधिसूचित किया जाता है।

82. केंद्रीय हिंदी समिति का अध्यक्ष **भारत का प्रधानमंत्री** होता है, जबकि गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग द्वारा राजभाषा नीति का समन्वय किया जाता है (IUC Academy)।

• **परीक्षा सूत्र:** संसदीय राजभाषा समिति में कुल **30 सदस्य** (20 लोकसभा से + 10 राज्यसभा से) होते हैं।

83. प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन **10 से 14 जनवरी 1975** को **नागपुर (भारत)** में आयोजित हुआ था; विश्व हिंदी सचिवालय का स्थायी मुख्यालय **पोर्ट लुईस (मॉरीशस)** में स्थित है (IUC Academy)।

• **परीक्षा सूत्र:** 12वाँ विश्व हिंदी सम्मेलन फरवरी 2023 में **नाडी (फिजी)** में आयोजित किया गया था।

84. भारत सरकार द्वारा अब तक घोषित **शास्त्रीय भाषाओं (Classical Languages)** में मूल 6 भाषाओं—**तमिल (2004), संस्कृत (2005), कन्नड़ (2008), तेलुगु (2008), मलयालम (2013), ओडिया (2014)**—के साथ **मराठी, पालि, प्राकृत, असमिया और बंगाली** को भी शास्त्रीय भाषा का दर्जा प्रदान किया गया है (IUC Academy)।

• **परीक्षा सूत्र:** सबसे पहली शास्त्रीय भाषा **तमिल (2004)** थी।

85. हिंदी साहित्य के इतिहास-लेखन का सर्वप्रथम प्रयास फ्रेंच विद्वान **गार्सा द तासी** ने फ्रेंच भाषा में रचित ग्रंथ **'इस्त्वार द ला लितेरात्यूर ऐंदुई ऐंदुस्तानी'** (1839 ई.) में किया था (IUC Academy)।

• **परीक्षा सूत्र:** काल-विभाजन का प्रथम प्रयास जॉर्ज ग्रियर्सन (**द मॉडर्न वर्नाक्यूलर लिटरेचर ऑफ हिंदुस्तान** - 1888) ने किया, जबकि सर्वाधिक प्रामाणिक व वैज्ञानिक इतिहास **आचार्य रामचंद्र शुक्ल** कृत **'हिंदी साहित्य का इतिहास'** (1929 ई., मूलतः नागरी प्रचारिणी सभा के 'हिंदी शब्दसागर' की भूमिका के रूप में) है।

86. हिंदी साहित्य में 'प्रथम' से संबंधित सर्वोच्च परीक्षा तथ्य:

• हिंदी का प्रथम महाकाव्य: **पृथ्वीराज रासो** (चंदबरदाई) तथा खड़ी बोली का प्रथम महाकाव्य: **प्रियप्रवास** (अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' - 1914 ई.)।

• हिंदी का प्रथम मौलिक नाटक: **नहुष** (गोपालचंद्र 'गिरिधरदास' - भारतेंदु हरिश्चंद्र के पिता)।

• हिंदी का प्रथम मौलिक उपन्यास: **परीक्षा गुरु** (लाला श्रीनिवास दास - 1882 ई.)।

• हिंदी की प्रथम मौलिक कहानी: **इंदुमती** (किशोरीलाल गोस्वामी - 1900 ई.) अथवा **एक टोकरी भर मिट्टी** (माधवराव सप्रे - 1901 ई.) (IUC Academy)।

• **परीक्षा सूत्र:** हिंदी की प्रथम आत्मकथा बनारसीदास जैन कृत **अर्द्धकथानक** (1641 ई. - ब्रजभाषा पद्य) है, और हिंदी में सर्वप्रथम मुकरियों व पहेलियों की शुरुआत **अमीर खुसरो** ने की।

87. गोस्वामी तुलसीदास ने **रामचरितमानस** की रचना संवत् 1631 (1574 ई.) में **अवधी भाषा** में (दोहा-चौपाई छंद शैली में) की, जिसमें कुल 7 **कांड** हैं (IUC Academy)।

• **परीक्षा सूत्र:** रामचरितमानस के 7 कांडों का सही क्रम (जो परीक्षा में क्रम मिलाने के लिए आता है): **1. बालकांड (सबसे बड़ा कांड) → 2. अयोध्याकांड (हृदय-स्थल) → 3. अरण्यकांड → 4. किष्किंधाकांड (सबसे छोटा कांड) → 5. सुंदरकांड → 6. लंकाकांड → 7. उत्तरकांड।**

88. मलिक मोहम्मद जायसी ने ठेठ अवधी भाषा में (दोहा-चौपाई शैली में) **पद्मावत** (1540 ई. - शेरशाह सूरी के काल में) महाकाव्य की रचना की, जिसमें कुल 57 **खंड** हैं (IUC Academy)।

• **परीक्षा सूत्र:** तुलसीदास की जिन रचनाओं के नाम में **'वली'** या **'पत्रिका'** आता है—**कवितावली**, **गीतावली**, **दोहावली**, **कृष्णगीतावली** और **विनयपत्रिका**—उन सभी की भाषा **ब्रजभाषा** है, जबकि **रामचरितमानस**, **जानकीमंगल**, **पार्वतीमंगल**, **बरवै रामायण** और **रामाज्ञाप्रश्न** की भाषा **अवधी** है!

89. जयशंकर प्रसाद कृत महाकाव्य **कामायनी** (1935/1936 ई.) में कुल **15 सर्ग** हैं (प्रथम सर्ग: **चिंता**, तृतीय सर्ग: **श्रद्धा**, अंतिम 15वाँ सर्ग: **आनंद**), जिसमें मनु (मन का प्रतीक), श्रद्धा (हृदय का प्रतीक) और इड़ा (बुद्धि का प्रतीक) की कथा के माध्यम से समरसता व आनंदवाद की स्थापना की गई है (IUC Academy)।

• **परीक्षा सूत्र:** मैथिलीशरण गुप्त कृत महाकाव्य **साकेत** (1931 ई.) में **12 सर्ग** हैं, जिसका **9वाँ सर्ग** लक्ष्मण की पत्नी **उर्मिला** के विरह वर्णन के लिए विश्वप्रसिद्ध है।

90. मुंशी प्रेमचंद (मूल नाम: **धनपतराय**, उर्दू उपनाम: **नवाबराय**) को 'उपन्यास सम्राट' कहा जाता है; उनके प्रमुख उपन्यास **सेवासदन, प्रेमाश्रम, रंगभूमि, कायाकल्प, निर्मला, गबन, कर्मभूमि, गोदान** (1936) हैं और उनका अधूरा उपन्यास **मंगलसूत्र** है (NCERT अभिव्यक्ति और माध्यम)।

• **परीक्षा सूत्र:** प्रेमचंद की प्रमुख कहानियाँ: **पंच परमेश्वर, नमक का दरोगा, शतरंज के खिलाड़ी, पूस की रात, ईदगाह, बूढ़ी काकी, बड़े भाई साहब, ठाकुर का कुआँ, सद्गति** और अंतिम कहानी **कफन** (1936)।

91. हिंदी साहित्य में प्रमुख कवियों व लेखकों के उपनाम:

• **वैद्यनाथ मिश्र** = **नागार्जुन** (मैथिली में 'यात्री' नाम से लेखन)

• **सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन** = **अज्ञेय**

• **सूर्यकांत त्रिपाठी** = **निराला** (महाप्राण)

• **रामधारी सिंह** = **दिनकर** (अनल कवि / अधैर्य का कवि)

• **माखनलाल चतुर्वेदी** = **एक भारतीय आत्मा**

• **पांडेय बेचन शर्मा** = **उग्र**

• **उपेंद्रनाथ** = **अश्क**

• **सुदामा पांडेय** = **धूमिल** (संसद से सड़क तक) (IUC Academy)।

• **परीक्षा सूत्र: शिवप्रसाद सितारे-हिंद** (राजा भोज का सपना) और **राजा लक्ष्मण सिंह** भारतेंदु-पूर्व युग के दो प्रमुख गद्य शैलीकार थे।

92. **साहित्य अकादमी पुरस्कार** (स्थापना 1954; प्रथम पुरस्कार **1955** ई.) प्राप्त करने वाले प्रथम हिंदी साहित्यकार **माखनलाल चतुर्वेदी** थे, जिन्हें उनकी काव्य कृति **'हिमतरंगिणी'** के लिए यह पुरस्कार मिला (IUC Academy)।

• **परीक्षा सूत्र:** प्रमुख साहित्य अकादमी पुरस्कृत कृतियां: राहुल सांकृत्यायन (**मध्य एशिया का इतिहास** - 1958), दिनकर (**संस्कृति के चार अध्याय** - 1959), सुमित्रानंदन पंत (**कला और बूढ़ा चाँद** - 1960), अमृतराय (**कलम का सिपाही** - प्रेमचंद की जीवनी, 1963), अज्ञेय (**आँगन के पार द्वार** - 1964), हरिवंशराय बच्चन (**दो चट्टानें** - 1968), श्रीलाल शुक्ल (**राग दरबारी** - 1969)।

93. **भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार** प्राप्त करने वाले सभी हिंदी साहित्यकारों की कालानुक्रमिक सूची:

1. **1968:** सुमित्रानंदन पंत (**चिदंबरा** — हिंदी का प्रथम ज्ञानपीठ पुरस्कार)
2. **1972:** रामधारी सिंह 'दिनकर' (**उर्वशी**)
3. **1978:** सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' (**कितनी नावों में कितनी बार**)
4. **1982:** महादेवी वर्मा (**यामा** — इसके बाद से संपूर्ण साहित्यिक योगदान पर पुरस्कार दिया जाने लगा)
5. **1992:** नरेश मेहता; **1999:** निर्मल वर्मा; **2005:** कुँवर नारायण; **2009:** अमरकांत व श्रीलाल शुक्ल (संयुक्त); **2013:** केदारनाथ सिंह; **2017:** कृष्णा सोबती (IUC Academy)।

• **परीक्षा सूत्र:** पंत, दिनकर, अज्ञेय और महादेवी की चारों कृतियाँ (**चिदंबरा - 1968**, **उर्वशी - 1972**, **कितनी नावों में कितनी बार - 1978**, **यामा - 1982**) हर प्रतियोगी परीक्षा में पूछी जाती हैं!

94. के.के. बिड़ला फाउंडेशन द्वारा 1991 में स्थापित **'व्यास सम्मान'** सर्वप्रथम **डॉ. रामविलास शर्मा** को उनकी कृति **'भारत के प्राचीन भाषा परिवार और हिंदी'** के लिए दिया गया था, तथा **'सरस्वती सम्मान'** (1991) सर्वप्रथम **हरिवंशराय बच्चन** को उनकी चार खंडों की आत्मकथा (**क्या भूलूँ क्या याद करूँ, नीड़ का निर्माण फिर, बसेरे से दूर, दशद्वार से सोपान तक**) के लिए दिया गया (IUC Academy)।

• **परीक्षा सूत्र:** उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान का सर्वोच्च साहित्यिक सम्मान **'भारत भारती सम्मान'** है, जिसकी प्रथम प्राप्तकर्ता महादेवी वर्मा थीं।

95. कालजयी हिंदी काव्य पंक्तियाँ और उनके रचयिता (जिनसे सीधा मिलान प्रश्न आता है):

• "पराधीन सपनेहुँ सुख नाहीं" — **गोस्वामी तुलसीदास**

• "मसि कागद छूयो नहीं, कलम गही नहिं हाथ" — **कबीरदास**

• "अजगर करै न चाकरी, पंछी करै न काम" — **मलूकदास**

• "बसो मेरे नैनन में नंदलाल" — **मीराबाई**

• "मानुष हौं तो वही रसखानि बसौं ब्रज गोकुल गाँव के ग्वारन" — **रसखान**

• "सतसैया के दोहरे, ज्यों नावक के तीर। देखन में छोटे लगैं, घाव करैं गंभीर॥" — **बिहारी सतसई** के संदर्भ में प्रसिद्ध उक्ति (IUC Academy)।

• **परीक्षा सूत्र:** आधुनिक काल की प्रसिद्ध पंक्तियाँ: "अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी, आँचल में है दूध और आँखों में पानी" — **मैथिलीशरण गुप्त** (**यशोधरा**); "मैं नीर भरी दु:ख की बदली" — **महादेवी वर्मा**; "वह तोड़ती पत्थर, देखा मैंने उसे इलाहाबाद के पथ पर" — **सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'**; "पुष्प की अभिलाषा (चाह नहीं मैं सुरबाला के गहनों में गूँथा जाऊँ)" — **माखनलाल चतुर्वेदी**; "बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी, खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी" — **सुभद्रा कुमारी चौहान**।

96. अपठित गद्यांश और बोधगम्यता (Unseen Passage Comprehension) हल करते समय गद्यांश का **'शीर्षक (Title)'** सदैव प्रथम और अंतिम दो पंक्तियों में निहित केंद्रीय विषयवस्तु से 3 से 5 शब्दों में चुनना चाहिए, तथा किसी भी प्रश्न का उत्तर अपनी पूर्व-मान्यता से न देकर केवल गद्यांश में दिए गए तर्कों के आधार पर ही चुनना चाहिए (IUC Academy)।

• **परीक्षा सूत्र:** गद्यांश में प्रयुक्त शब्दों में से जब किसी शब्द में उपसर्ग, प्रत्यय, संधि या विलोम पूछा जाए, तो गद्यांश के प्रसंग के साथ व्याकरणिक मूल नियम का समन्वय करें।

97. वाक्य में पदक्रम (Word Order) का मानक हिंदी नियम **कर्ता + कर्म (अप्रत्यक्ष कर्म + प्रत्यक्ष कर्म) + पूरक / क्रियाविशेषण + क्रिया** होता है (IUC Academy)।

• **परीक्षा सूत्र:** उदाहरण—"अध्यापक ने **छात्रों को** (अप्रत्यक्ष/गौण कर्म - सजीव) **हिंदी** (प्रत्यक्ष/मुख्य कर्म - निर्जीव) पढ़ाई" में पहले सजीव कर्म ('को' सहित) और बाद में निर्जीव कर्म ('को' रहित) आता है।

98. विशेषण-विशेष्य और क्रिया के अन्वय (Agreement) का नियम: यदि वाक्य में दो या अधिक भिन्न लिंग के कर्ता **'और'** से जुड़े हों और उनके साथ विभक्ति चिह्न न हो, तो क्रिया **बहुवचन पुल्लिंग** में होती है (जैसे—"राजा और रानी वन को **गए**"), किंतु यदि विभिन्न लिंग की निर्जीव संज्ञाएं हों तो क्रिया **अंतिम कर्ता** के लिंग-वचन के अनुसार होती है (जैसे—"उसने दो आम, चार संतरे और एक **लीची खरीदी**") (IUC Academy)।

• **परीक्षा सूत्र:** यदि सभी कर्ताओं के बाद विभक्ति चिह्न (**ने, को, से**) आ जाए और कर्म भी विभक्ति-युक्त (**को**) हो, तो क्रिया सदैव **एकवचन, पुल्लिंग, अन्य पुरुष** में रहती है (जैसे—"राम ने और सीता ने रावण को **मारा**")।

99. वर्तनी एवं वाक्य शुद्धि का अंतिम स्वर्णिम परीक्षण नियम: कभी भी **"के कारण" के साथ "अतः"**, **"यद्यपि" के साथ "तथापि" के स्थान पर "परंतु"**, **"जब तक" के साथ "तब तक" के बिना**, अथवा **"तेरे को / मेरे को"** (अशुद्ध सर्वनाम रूप; शुद्ध: **तुझे / मुझे**) का प्रयोग न करें (IUC Academy)।

• **परीक्षा सूत्र:** "रोगी को काटकर सेब खिलाओ" अशुद्ध पदक्रम है; शुद्ध वाक्य होगा: **"सेब काटकर रोगी को खिलाओ"**; इसी प्रकार "यहाँ शुद्ध गाय का दूध मिलता है" अशुद्ध है; शुद्ध वाक्य होगा: **"यहाँ गाय का शुद्ध दूध मिलता है"**।

100. IUC Academy (Inclusive Universal Careers Academy) की पुस्तक 11 (**ऑल-इंडिया मास्टर सिलेबस गाइड**) और पुस्तक 12 (**संपूर्ण सामान्य हिंदी एवं व्याकरण अध्ययन नोट्स**) के इन 20 सचित्र प्रमुख अध्ययन इकाई और 200 वन-लाइनर रिवीजन कैप्सूल का नियमित अभ्यास अभ्यर्थियों को भारत की समस्त केंद्रीय, राज्य, प्रवेश एवं विभागीय परीक्षाओं में सर्वोच्च अंक दिलाने के लिए 100% कॉपीराइट-मुक्त और पूर्णतः प्रामाणिक आधार प्रदान करता है।

• **अंतिम विजय मंत्र:** आधिकारिक पाठ्यक्रम (UPSC, SSC, NCERT, विधायी विभाग) + IUC Academy 36-बुक मास्टर लाइब्रेरी = निश्चित सफलता!

परिशिष्ट 1: कार्यालयी पत्राचार के 10 प्रमुख प्रारूपों की तुलनात्मक पहचान सारणी (बुक 11 LDCE/PCS एवं बुक 12 हिंदी पत्राचार हेतु)

क्रम	पत्र का प्रकार (Letter Format)	प्रेषक एवं प्रेषिती (Sender & Receiver)	पुरुष शैली एवं संबोधन नियम	मुख्य पहचान लक्षण एवं प्रयोग क्षेत्र	आधिकारिक संदर्भ स्रोत
1	शासकीय पत्र (Official Letter)	एक सरकारी अधिकारी (पदनाम) से दूसरे सरकारी अधिकारी/विभाग को	**अन्य पुरुष**, पूर्णतः औपचारिक; संबोधन: **'महोदय'**	संख्या, दिनांक, विषय, "मुझे यह कहने का निदेश हुआ है कि..."; अंत में **'भवदीय'**	विधायी विभाग राजभाषा विंग
2	अर्द्ध-शासकीय पत्र (Demi-Official / D.O. Letter)	समकक्ष या अधीनस्थ अधिकारी को व्यक्तिगत ध्यान आकृष्ट करने हेतु	**उत्तम पुरुष ('मैं')**, आत्मीय एवं मित्रवत शैली; संबोधन: **'प्रिय श्री...'**	बाईं ओर शीर्ष पर प्रेषक का नाम व पदनाम; अंत में **'आपका सद्भावी'** या **'आपका'** तथा नीचे बाईं ओर प्राप्तकर्ता का नाम-पता	IUC Academy पत्राचार अध्ययन नोट्स 33
3	कार्यालय आदेश (Office Order)	कार्यालय प्रमुख द्वारा अपने ही कार्यालय के कर्मचारियों के लिए	**अन्य पुरुष**, आदेशात्मक एवं संक्षिप्त; कोई संबोधन या **'भवदीय'** नहीं	आंतरिक प्रशासन, अवकाश स्वीकृति, पदोन्नति या कार्य-विभाजन की सूचना	IUC Academy पत्राचार अध्ययन नोट्स 33
4	कार्यालय ज्ञापन (Office Memorandum)	मंत्रालयों/विभागों के बीच आपसी सूचना के आदान-प्रदान या याचनापत्र के उत्तर हेतु	**अन्य पुरुष**, कोई संबोधन (**महोदय**) या स्वनिर्देश (**भवदीय**) नहीं होता	प्रेषिती का नाम/पदनाम पत्र के अंत में बाईं ओर लिखा जाता है	IUC Academy पत्राचार अध्ययन नोट्स 33
5	अधिसूचना (Notification)	राष्ट्रपति या राज्यपाल के नाम से भारत/राज्य के **राजपत्र (Gazette)** में प्रकाशन हेतु	**अन्य पुरुष**, वैधानिक भाषा; न संबोधन होता है और न **'भवदीय'**	नियमों के प्रवर्तन, राजपत्रित अधिकारियों की नियुक्ति/स्थानांतरण एवं वैधानिक आदेशों की घोषणा	विधायी विभाग पोर्टल
6	परिपत्र (Circular)	एक मुख्यालय/मंत्रालय से अनेक अधीनस्थ कार्यालयों या अधिकारियों को एक साथ	**अन्य पुरुष**, शासकीय पत्र या कार्यालय ज्ञापन के प्रारूप में	जब एक ही नीतिगत निर्देश, नियम या सूचना बहुत से कार्यालयों को एक साथ भेजनी हो	IUC Academy पत्राचार अध्ययन नोट्स 33
7	अनुस्मारक / स्मरण-पत्र (Reminder)	पूर्व प्रेषित पत्र के प्रेषक द्वारा उसी प्राप्तकर्ता को	पूर्व पत्र के समान शैली	पूर्व में भेजे गए पत्र की पत्र-संख्या एवं दिनांक का उल्लेख करते हुए त्वरित उत्तर की अपेक्षा	IUC Academy पत्राचार अध्ययन नोट्स 33
8	पृष्ठांकन (Endorsement)	मूल पत्र की प्रतिलिपि को सूचना या आवश्यक कार्यवाही हेतु अन्य संबंधित अधिकारियों को भेजना	पत्र के अंत में **'प्रतिलिपि सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित'**	जब किसी आदेश या पत्र की जानकारी तीसरे पक्ष या संबद्ध अनुभागों को भी देनी आवश्यक हो	IUC Academy पत्राचार अध्ययन नोट्स 33
9	प्रेस विज्ञप्ति / प्रेस नोट (Press Communique / Note)	सरकार या विभाग द्वारा जनसाधारण की सूचना हेतु समाचारपत्रों को जारी विज्ञप्ति	**अन्य पुरुष**, स्पष्ट एवं वस्तुनिष्ठ सूचना शैली	शीर्ष पर प्रकाशन/प्रसारण की तिथि व समय का उल्लेख ("दिनांक ... से पूर्व प्रकाशित न किया जाए")	NCERT अभिव्यक्ति और माध्यम
10	निविदा सूचना (Tender Notice)	सरकारी विभाग द्वारा निर्माण कार्य, आपूर्ति या सेवा क्रय हेतु सार्वजनिक आमंत्रण	तालिकाबद्ध विवरण (अनुमानित लागत, धरोहर राशि EMD, अंतिम तिथि)	प्रतिस्पर्धात्मक दरों पर पारदर्शी सरकारी खरीद सुनिश्चित करने हेतु	IUC Academy विभागीय अध्ययन नोट्स 23

परिशिष्ट 2: संधि, समास, रस, छंद एवं अलंकार की 50-बिंदु त्वरित पहचान चेकलिस्ट (बुक 12 प्रैक्टिकल ड्रिल)

1. **शब्द:** **महर्षि** (**महा + ऋषि**)
   - **संधि पहचान:** गुण स्वर संधि (**आ + ऋ = अर्**) — NCERT संधि प्रकरण
2. **शब्द:** **पित्रादेश** (**पितृ + आदेश**)
   - **संधि पहचान:** यण स्वर संधि (**ऋ + आ = रा / त्र**) — NCERT संधि प्रकरण
3. **शब्द:** **नायक** (**नै + अक**) एवं **नाविक** (**नौ + इक**)
   - **संधि पहचान:** अयादि स्वर संधि (**ऐ + अ = आय**, **औ + इ = आवि**) — NCERT संधि प्रकरण
4. **शब्द:** **सच्चिदानंद** (**सत् + चित् + आनंद**)

• **संधि पहचान:** व्यंजन संधि (**त् + च = च्च** तथा **त् + आ = दा**) — NCERT संधि प्रकरण

5. **शब्द:** **अभिषेक** (**अभि + सेक**) एवं **विषम** (**वि + सम**)

• **संधि पहचान:** व्यंजन संधि (**इ/उ** के बाद दन्त्य **'स'** आने पर मूर्धन्य **'ष'** में परिवर्तन) — IUC Academy

6. **शब्द:** **रामायण** (**राम + अयन**) एवं **परिणाम** (**परि + नाम**)

• **संधि पहचान:** व्यंजन संधि (**ऋ, र, ष** के बाद **'न'** आने पर **'ण'** में परिवर्तन) — IUC Academy

7. **शब्द:** **दुष्कर** (**दुः + कर**) एवं **निष्फल** (**निः + फल**)

• **संधि पहचान:** विसर्ग संधि (**इः/उः** के बाद **क, ख, ट, ठ, प, फ** आने पर मूर्धन्य **'ष्'** का आगम) — IUC Academy

8. **शब्द:** **अतएव** (**अतः + एव**)

• **संधि पहचान:** विसर्ग लोप संधि (विसर्ग के पूर्व **'अ'** और बाद में **'अ'** से भिन्न स्वर होने पर विसर्ग का लोप) — IUC Academy

9. **शब्द:** **अंतेवासी** (**अंत में/गुरु के समीप वास करने वाला**)

• **समास पहचान:** अलुक् तत्पुरुष समास (जिसमें पूर्वपद की विभक्ति का लोप नहीं होता, जैसे **युधिष्ठिर, खेचर, मनसिज, धनंजय, मृत्युंजय**) — IUC Academy

10. **शब्द:** **दहीबड़ा** (**दही में डूबा हुआ बड़ा**) एवं **रेलगाड़ी** (**पटरी पर चलने वाली गाड़ी**)

• **समास पहचान:** मध्यमपदलोपी तत्पुरुष समास (जिसमें दोनों पदों के बीच का पूरा पद-समूह लुप्त हो जाता है, जैसे **पर्णकुटी, बैलगाड़ी, पवनचक्की**) — IUC Academy

11. **शब्द:** **लाल-पीला** (**लाल और पीला**) एवं **शीतोष्ण** (**शीत या उष्ण**)

• **समास पहचान:** द्वंद्व समास (किंतु यदि "वह क्रोध से लाल-पीला हो गया" वाक्य में क्रियाविशेषण हो तो अलग प्रसंग, सामान्य शब्द रूप में द्वंद्व/कर्मधारय) — NCERT समास

12. **शब्द:** **सपरिवार** (**परिवार के साथ**) एवं **सचेत** (**चेतना के साथ**)

• **समास पहचान:** यदि विकल्प में 'बहुव्रीहि' (तुल्ययोग बहुव्रीहि) और 'अव्ययीभाव' दोनों हों, तो उपसर्ग प्रधानता में अव्ययीभाव व विशेषण रूप में बहुव्रीहि माना जाता है — IUC Academy

13. *काव्य पंक्ति: "बतरस लालच लाल की, मुरली धरी लुकाय। सौंह करै भौंहनि हँसै, दैन कहै नटि जाय॥"***

• **रस पहचान:** संयोग श्रृंगार रस (राधा-कृष्ण की प्रेममयी नोकझोंक; स्थायी भाव: रति) — IUC Academy

14. *काव्य पंक्ति: "हे खग मृग हे मधुकर श्रेनी, तुम देखी सीता मृगनैनी॥"***

• **रस पहचान:** वियोग (विप्रलंभ) श्रृंगार रस (सीता हरण के पश्चात श्रीराम का विरह विलाप) — IUC Academy

15. *काव्य पंक्ति: "शोक विकल सब रोवहिं रानी, रूप सीलु बलु तेजु बखानी। करहिं विलाप अनेक प्रकारा, परहिं भूमितल बारहिं बारा॥"***

• **रस पहचान:** करुण रस (राजा दशरथ के निधन पर रानियों का शोक; स्थायी भाव: शोक) — IUC Academy

16. *काव्य पंक्ति: "वीर तुम बढ़े चलो, धीर तुम बढ़े चलो। सामने पहाड़ हो, सिंह की दहाड़ हो॥"***

• **रस पहचान:** वीर रस (स्थायी भाव: उत्साह; काव्य गुण: ओज) — IUC Academy

17. *काव्य पंक्ति: "श्रीकृष्ण के सुन वचन अर्जुन क्रोध से जलने लगे। सब शोक अपना भूलकर करतल युगल मलने लगे॥"***

• **रस पहचान:** रौद्र रस (स्थायी भाव: क्रोध) — IUC Academy

18. *काव्य पंक्ति: "एक ओर अजगरहि लखि, एक ओर मृगराय। विकल बटोही बीच ही, परयो मूरछा खाय॥"***

• **रस पहचान:** भयानक रस (एक तरफ अजगर और दूसरी तरफ सिंह देखकर यात्री का मूर्छित होना; स्थायी भाव: भय) — IUC Academy

19. *काव्य पंक्ति: "सिर पर बैठ्यो काग आँख दोउ खात निकारत। खींचत जीभहिं स्यार अतिहि आनंद उर धारत॥"***

• **रस पहचान:** वीभत्स रस (श्मशान/युद्धभूमि के शव का वर्णन; स्थायी भाव: जुगुप्सा/घृणा) — IUC Academy

20. *काव्य पंक्ति: "अखिल भुवन चर-अचर सब, हरि मुख में लखि मातु। चकित भई गदगद वचन, विकसित दृग पुलकातु॥"***

• **रस पहचान:** अद्भुत रस (बाल-कृष्ण के मुख में संपूर्ण ब्रह्मांड देखकर यशोदा का विस्मय; स्थायी भाव: विस्मय) — IUC Academy

21. *काव्य पंक्ति: "मन रे तन कागद का पुतला। लागै बूँद बिनसि जाय छिन में, गरब करै क्या इतना॥"***

• **रस पहचान:** शांत रस (संसार की क्षणभंगुरता से वैराग्य; स्थायी भाव: निर्वेद) — IUC Academy

22. *काव्य पंक्ति: "किलकत कान्ह घुटरुवनि आवत। मनिमय कनक नंद के आँगन, बिम्ब पकरिबे धावत॥"***

• **रस पहचान:** वात्सल्य रस (बाल-कृष्ण की क्रीड़ा; स्थायी भाव: वत्सलता) — IUC Academy

23. *काव्य पंक्ति: "पायो जी मैंने राम रतन धन पायो। वस्तु अमोलिक दी मेरे सतगुरु, करि कृपा अपनायो॥"***

• **रस एवं अलंकार पहचान:** भक्ति रस (स्थायी भाव: भगवद्विषयक रति) तथा `'राम-रतन'` में **रूपक अलंकार** — IUC Academy

24. *काव्य पंक्ति: "मंगल भवन अमंगल हारी। द्रवउ सो दसरथ अजिर बिहारी॥"***

• **छंद पहचान:** चौपाई छंद (प्रत्येक चरण में **16-16 मात्राएं**, अंत में दो गुरु `SS`) — IUC Academy

25. *काव्य पंक्ति: "श्री गुरु चरन सरोज रज, निज मनु मुकुरु सुधारि। बरनउँ रघुबर बिमल जसु, जो दायक फल चारि॥"***

• **छंद पहचान:** दोहा छंद (विषम चरणों में 13-13 मात्राएं और सम चरणों में 11-11 मात्राएं) — IUC Academy

26. *काव्य पंक्ति: "मुक होइ बाचाल पंगु चढ़इ गिरिबर गहन। जासु कृपाँ सो दयाल द्रवउ सकल कलि मल दहन॥"***

• **छंद पहचान:** सोरठा छंद (दोहा का उल्टा: विषम चरणों में 11-11 और सम चरणों में 13-13 मात्राएं, बीच में तुक) — IUC Academy

27. *काव्य पंक्ति: "काली घटा का घमंड घटा। नभ मंडल तारक वृंद खिले॥"***

• **अलंकार पहचान:** यमक अलंकार (प्रथम `'घटा'` = बादलों की घटा, द्वितीय `'घटा'` = कम होना) — IUC Academy

28. *काव्य पंक्ति: "सजना है मुझे सजना के लिए।"***

• **अलंकार पहचान:** यमक अलंकार (प्रथम `'सजना'` = श्रृंगार करना, द्वितीय `'सजना'` = पति/प्रियतम) — IUC Academy

29. *काव्य पंक्ति: "चरण धरत चिंता करत, चितवत चारिहु ओर। सुबरन को ढूँढ़त फिरत, कवि, व्यभिचारी, चोर॥"***

• **अलंकार पहचान:** श्लेष अलंकार (`'सुबरन'` शब्द एक बार आया है, किंतु इसके तीन अर्थ हैं—कवि के लिए 'सुंदर अक्षर/वर्ण', व्यभिचारी के लिए 'सुंदर रूप-रंग', और चोर के लिए 'सोना/स्वर्ण') — IUC Academy

30. *काव्य पंक्ति: "मंगन को देखि पट देत बार-बार है।"***

• **अलंकार पहचान:** श्लेष अलंकार (`'पट'` के दो अर्थ: पहला 'वस्त्र' देती है, दूसरा 'किवाड़/दरवाजा' बंद कर लेती है) — IUC Academy

परिशिष्ट 3: अखिल भारतीय परीक्षाओं के लिए आधिकारिक सरकारी पोर्टल निर्देशिका (100% सत्यापित स्रोत)

• **संघ लोक सेवा आयोग (UPSC — CSE, CAPF, ESE, NDA, CDS, EPFO, SO/Steno LDCE):**

• सिविल सेवा प्रारंभिक परीक्षा पोर्टल: UPSC Civil Services (Preliminary) Examination

• सिविल सेवा मुख्य परीक्षा पोर्टल: UPSC Civil Services (Main) Examination

• केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बल (सहायक कमांडेंट) पोर्टल: UPSC CAPF (ACs) Examination

• इंजीनियरिंग सेवा (मुख्य) परीक्षा पोर्टल: UPSC Engineering Services Examination

• संयुक्त अनुभाग अधिकारी एवं आशुलिपिक विभागीय परीक्षा (LDCE): UPSC Combined SO/Steno LDCE Notification

• **कर्मचारी चयन आयोग (SSC — CGL, CHSL, MTS, JE, CPO, JHT, Steno, Selection Post, DoPT LDCE):**

• मुख्य आधिकारिक वेबसाइट: Staff Selection Commission (ssc.gov.in)

• वार्षिक परीक्षा कैलेंडर एवं कार्यक्रम: SSC Examination Calendar

• **राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (NCERT — मूल पाठ्यपुस्तक एवं व्याकरण ग्रंथ):**

• हिंदी माध्यम पाठ्यपुस्तक पोर्टल: NCERT Official Hindi Textbooks

- वर्ण विचार (उच्चारण स्थान एवं प्रयत्न): NCERT वर्ण विचार PDF
- संधि प्रकरण (स्वर, व्यंजन व विसर्ग नियम): NCERT संधि प्रकरण PDF
- समास परिचय (विग्रह एवं भेद): NCERT समास परिचय PDF
- कारक और विभक्ति प्रकरण: NCERT कारक और विभक्ति PDF
- शब्दकोश वर्ण-अनुक्रम नियम: NCERT शब्दकोश परिचय PDF
- अभिव्यक्ति और माध्यम (सृजनात्मक लेखन व जनसंचार कोश): NCERT अभिव्यक्ति और माध्यम कोश PDF
- **विधायी विभाग, विधि और न्याय मंत्रालय, भारत सरकार (भारतीय संविधान एवं राजभाषा विंग):**
- मुख्य आधिकारिक पोर्टल: Legislative Department, Ministry of Law and Justice
- भारत का संविधान (द्विभाषी एवं क्षेत्रीय भाषा संस्करण): Constitution of India Official Portal
- राजभाषा खंड (Official Languages Wing): Official Languages Wing - Legislative Department
- **IUC Academy (Inclusive Universal Careers Academy — 100% निःशुल्क ऑल-इंडिया सरकारी नौकरी मास्टर प्लेटफॉर्म):**
- आधिकारिक वेबसाइट एवं 36-बुक लाइब्रेरी: IUC Academy (www.iucacademy.com)

परिशिष्ट 4: उच्च-स्तरीय व्याकरण एवं परीक्षा-प्रणाली निदानात्मक प्रश्नोत्तर बैंक (बुक 11 व बुक 12 संयुक्त अभ्यास)

अभ्यास प्रश्न #1 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

31. **प्रश्न:** UPSC सिविल सेवा प्रारंभिक परीक्षा में यदि किसी अभ्यर्थी के GS Paper-I में 135 अंक हैं और CSAT (Paper-II) में 64 अंक हैं, तो क्या वह मुख्य परीक्षा में बैठेगा?

- **उत्तर एवं विश्लेषण:** नहीं; क्योंकि CSAT में अर्हता के लिए 200 का **33% अर्थात न्यूनतम 66.67 अंक** प्राप्त करना अनिवार्य है (UPSC अधिसूचना)।

अभ्यास प्रश्न #2 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

32. **प्रश्न:** SSC CGL टियर-II परीक्षा में एक सही उत्तर पर कितने अंक मिलते हैं और एक गलत उत्तर पर कितने अंक कटते हैं?

- **उत्तर एवं विश्लेषण:** प्रत्येक सही उत्तर पर **+3 अंक** मिलते हैं और प्रत्येक गलत उत्तर पर **-1 अंक (एक-तिहाई नकारात्मक अंकन)** काटा जाता है (SSC पोर्टल)।

अभ्यास प्रश्न #3 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

33. **प्रश्न:** रेलवे सहायक लोको पायलट (ALP) और स्टेशन मास्टर के साइको टेस्ट (CBAT) में उत्तीर्ण होने की न्यूनतम शर्त क्या है?

- **उत्तर एवं विश्लेषण:** अभ्यर्थी को प्रत्येक परीक्षण बैटरी (Test Battery) में अलग-अलग न्यूनतम **T-Score 42** प्राप्त करना अनिवार्य होता है (IUC Academy)।

अभ्यास प्रश्न #4 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

34. **प्रश्न:** केंद्रीय विभागीय परीक्षाओं (LDCE) में सरकारी खरीद के लिए किस नियम-पुस्तिका और पोर्टल का संदर्भ सर्वाधिक पूछा जाता है?

- **उत्तर एवं विश्लेषण: सामान्य वित्तीय नियम (GFR) 2017** (विशेषकर नियम 149 — GeM पोर्टल से अनिवार्य खरीद) (IUC Academy)।

अभ्यास प्रश्न #5 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

35. **प्रश्न:** UPPSC समीक्षा अधिकारी (RO/ARO) की मुख्य परीक्षा में सामान्य हिंदी और आलेखन का पूर्णांक कितना होता है?

- **उत्तर एवं विश्लेषण:** परंपरागत (वर्णनात्मक) सामान्य हिंदी व आलेखन 100 अंक + सामान्य शब्द ज्ञान एवं व्याकरण (वस्तुनिष्ठ) 60 अंक + हिंदी निबंध 120 अंक (कुल 400 में से 280 अंक केवल हिंदी व निबंध के होते हैं) (IUC Academy)।

अभ्यास प्रश्न #6 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

36. **प्रश्न:** NCERT वर्ण विचार के अनुसार **'ज्ञ'** वर्ण किन दो वर्णों के योग से बना है और इसका शब्दकोशीय स्थान कहाँ है?

• **उत्तर एवं विश्लेषण:** **ज् + ञ** (हलन्त युक्त ज् और ञ); शब्दकोश में इसका स्थान **'ज'** वर्ण के अंतिम शब्द (**जौ**) के ठीक बाद आता है (NCERT शब्दकोश)।

अभ्यास प्रश्न #7 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

37. **प्रश्न:** **'उच्छ्वास'** और **'तद्धित'** का शुद्ध संधि-विच्छेद क्या है?

• **उत्तर एवं विश्लेषण:** **उत् + श्वास = उच्छ्वास** तथा **तत् + हित = तद्धित** (व्यंजन संधि) (NCERT संधि प्रकरण)।

अभ्यास प्रश्न #8 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

38. **प्रश्न:** **'दही में डूबा हुआ बड़ा = दहीबड़ा'** और **'युद्ध में स्थिर रहने वाला = युधिष्ठिर'** में कौन-सा समास है?

• **उत्तर एवं विश्लेषण:** **दहीबड़ा** में **मध्यमपदलोपी तत्पुरुष समास** है, जबकि **युधिष्ठिर** में **अलुक् तत्पुरुष समास** (अथवा बहुव्रीहि) है (IUC Academy)।

अभ्यास प्रश्न #9 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

39. **प्रश्न:** "राजा ने ब्राह्मण को गाय दी" और "राजा ने धोबी को कपड़े दिए"—इन दोनों वाक्यों में रेखांकित पद में कौन-सा कारक है?

• **उत्तर एवं विश्लेषण:** ब्राह्मण को गाय सदा के लिए दान दी गई है अतः वहाँ **संप्रदान कारक** है; धोबी को कपड़े धुलकर वापस लेने के लिए दिए गए हैं अतः वहाँ **कर्म कारक** है (NCERT कारक)।

अभ्यास प्रश्न #10 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

40. **प्रश्न:** "मोहिनी से अब गाया नहीं जाता" और "मोहिनी के द्वारा गीत गाया गया" में वाच्य का कौन-सा भेद है?

• **उत्तर एवं विश्लेषण:** प्रथम वाक्य में अकर्मक क्रिया व असमर्थता होने से **भाववाच्य** है; द्वितीय वाक्य में सकर्मक क्रिया (**गीत** कर्म) होने से **कर्मवाच्य** है (IUC Academy)।

अभ्यास प्रश्न #11 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

41. **प्रश्न:** **'गोधूम'**, **'हरिद्रा'**, **'नारिकेल'** और **'अट्टालिका'** के तद्भव रूप क्या हैं?

• **उत्तर एवं विश्लेषण:** क्रमशः **गेहूँ, हल्दी, नारियल** और **अटारी** (IUC Academy)।

अभ्यास प्रश्न #12 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

42. **प्रश्न:** **'अभिज्ञ'**, **'जंगम'**, **'उपत्यका'** और **'ऋजु'** के सटीक विलोम शब्द क्या हैं?

• **उत्तर एवं विश्लेषण:** क्रमशः **अनभिज्ञ, स्थावर, अधित्यका** और **वक्र** (IUC Academy)।

अभ्यास प्रश्न #13 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

43. **प्रश्न:** "बिनु पद चलै सुनै बिनु काना, कर बिनु कर्म करै विधि नाना" में कौन-सा अलंकार है?

• **उत्तर एवं विश्लेषण:** **विभावना अलंकार** (जहाँ कारण के अभाव में भी कार्य की उत्पत्ति का वर्णन हो) (IUC Academy)।

अभ्यास प्रश्न #14 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

44. **प्रश्न:** कुंडलिया छंद किन दो छंदों के योग से बनता है और इसकी सबसे बड़ी पहचान क्या है?

• **उत्तर एवं विश्लेषण:** **दोहा + रोला** (कुल 6 चरण); यह जिस शब्द से शुरू होता है, उसी शब्द पर समाप्त होता है (IUC Academy)।

अभ्यास प्रश्न #15 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

45. **प्रश्न:** भारतीय संविधान के किस अनुच्छेद में प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा में शिक्षा की सुविधाओं का प्रावधान किया गया है?

• **उत्तर एवं विश्लेषण: अनुच्छेद 350क (350A)** (7वें संविधान संशोधन अधिनियम, 1956 द्वारा अंत:स्थापित) (विधायी विभाग)।

अभ्यास प्रश्न #16 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

46. **प्रश्न:** संविधान की आठवीं अनुसूची में 92वें संविधान संशोधन अधिनियम, 2003 द्वारा कौन-सी चार भाषाएं जोड़ी गईं?

• **उत्तर एवं विश्लेषण: बोडो, डोगरी, मैथिली और संथाली** (स्मृति सूत्र: **B-D-M-S**), जिनसे कुल संख्या 22 हो गई (संविधान पोर्टल)।

अभ्यास प्रश्न #17 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

47. **प्रश्न:** NCERT अभिव्यक्ति और माध्यम कोश के अनुसार पत्रकारिता में **'बीट (Beat)'** और **'स्टिंग ऑपरेशन'** किसे कहते हैं?

• **उत्तर एवं विश्लेषण:** समाचार माध्यमों द्वारा अपने संवाददाता को रिपोर्टिंग हेतु आवंटित विशेष क्षेत्र (जैसे अपराध, खेल, शिक्षा या आर्थिक क्षेत्र) को **'बीट'** कहते हैं, तथा छुपे कैमरे के माध्यम से गैर-कानूनी गतिविधियों व भ्रष्टाचार को फिल्माकर उजागर करने को **'स्टिंग ऑपरेशन'** कहते हैं (NCERT कोश)।

अभ्यास प्रश्न #18 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

48. **प्रश्न:** हिंदी साहित्य में सर्वप्रथम ज्ञानपीठ पुरस्कार किस वर्ष, किस कवि को और किस कृति के लिए प्रदान किया गया?

• **उत्तर एवं विश्लेषण:** वर्ष **1968** में प्रकृति के सुकुमार कवि **सुमित्रानंदन पंत** को उनकी कालजयी कृति **'चिदंबरा'** के लिए प्रदान किया गया (IUC Academy)।

अभ्यास प्रश्न #19 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

49. **प्रश्न:** पश्चिमी हिंदी की 5 बोलियां और पूर्वी हिंदी की 3 बोलियां कौन-सी हैं?

• **उत्तर एवं विश्लेषण: पश्चिमी हिंदी (5):** खड़ी बोली (कौरवी), ब्रजभाषा, बुंदेली, कन्नौजी, हरियाणवी (बांगरू); **पूर्वी हिंदी (3):** अवधी, बघेली, छत्तीसगढ़ी (IUC Academy)।

अभ्यास प्रश्न #20 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

50. **प्रश्न:** IUC Academy (Inclusive Universal Careers Academy) की पुस्तक 11 और पुस्तक 12 का मुख्य शैक्षणिक उद्देश्य क्या है?

• **उत्तर एवं विश्लेषण:** भारत के प्रत्येक विद्यार्थी और विभागीय कर्मचारी को बिना किसी शुल्क के, 100% कॉपीराइट-मुक्त, आधिकारिक सरकारी पाठ्यक्रम (UPSC, SSC, NCERT, विधायी विभाग) पर आधारित सर्वोच्च गुणवत्ता की अध्ययन सामग्री प्रदान करना।

अध्याय 1: हिंदी वर्णमाला का वैज्ञानिक एवं ध्वनि-शास्त्रीय विश्लेषण (Scientific Analysis of Hindi Alphabet)

अध्याय के प्रमुख अध्ययन स्तंभ — अध्याय 1: हिंदी वर्णमाला का वैज्ञानिक एवं ध्वनि-शास्त्रीय विश्लेषण (Scientific Analysis of Hindi Alphabet)

प्रमुख अध्ययन बिंदु 1	प्रमुख अध्ययन बिंदु 2	प्रमुख अध्ययन बिंदु 3
हिंदी वर्णमाला के 52 वर्णों का मानक वर्गीकरण	स्वरों का बहु-आयामी वर्गीकरण (Multi-Dimensional Classification of Vowels)	व्यंजनों का उच्चारण स्थान, घोषत्व एवं प्राणत्व मैट्रिक्स (Complete Consonant Matrix)

भाषा की सबसे छोटी मौखिक इकाई **'ध्वनि'** है और ध्वनि की सबसे छोटी लिखित इकाई (जिसके सार्थक खंड न किए जा सकें) **'वर्ण'** या **'अक्षर'** कहलाती है। वर्णों के व्यवस्थित एवं क्रमबद्ध समूह को **'वर्णमाला'** कहते हैं। मानक देवनागरी हिंदी वर्णमाला में कुल **52 वर्ण** निर्धारित हैं।

1.1 हिंदी वर्णमाला के 52 वर्णों का मानक वर्गीकरण

- **मूल स्वर (11):** अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ।
- **अयोगवाह (2):** अं (अनुस्वार), अः (विसर्ग) — आचार्य किशोरीदास वाजपेयी ने इन्हें 'अयोगवाह' (जो योग न होने पर भी साथ चलें; न पूर्ण स्वर, न पूर्ण व्यंजन) नाम दिया।
- **स्पर्श / वर्गीय व्यंजन (25):** 'क' से 'म' तक (5 वर्ग × 5 वर्ण = 25 वर्ण)।
- **अंतःस्थ व्यंजन (4):** य, र, ल, व (अर्द्धस्वर: **य, व**; लुंठित/प्रकंपित: **र**; पार्श्विक: **ल**)।
- **ऊष्म / संघर्षी व्यंजन (4):** श, ष, स, ह (ह = काकल्य / स्वरयंत्रमुखी वर्ण)।
- **संयुक्त व्यंजन (4):**
- **क्ष** = क् + ष
- **त्र** = त् + र
- **ज्ञ** = ज् + ञ
- **श्र** = श् + र
- **द्विगुण / उत्क्षिप्त / ताड़नजात व्यंजन (2):** ड़, ढ़ (इनसे किसी भी हिंदी शब्द का प्रारंभ नहीं होता)।
- **कुल वर्ण गणना:** 11 (स्वर) + 2 (अयोगवाह) + 25 (स्पर्श) + 4 (अंतःस्थ) + 4 (ऊष्म) + 4 (संयुक्त) + 2 (उत्क्षिप्त) = 52 वर्ण।

1.2 स्वरों का बहु-आयामी वर्गीकरण (Multi-Dimensional Classification of Vowels)

वर्गीकरण का आधार	उप-भेद	सम्मिलित स्वर	मुख्य पहचान एवं परीक्षा-उपयोगी नियम
1. मात्रा / उच्चारण काल के आधार पर	(क) ह्रस्व / मूल / एकमात्रिक स्वर (4)	**अ, इ, उ, ऋ**	इनके उच्चारण में सबसे कम (1 मात्रा) समय लगता है; ये मूल स्वर हैं।
	(ख) दीर्घ / द्विमात्रिक स्वर (7)	**आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ**	**मूल दीर्घ/सजातीय (3):** आ, ई, ऊ; **संयुक्त/विजातीय स्वर (4):** ए (अ+इ), ऐ (अ+ए), ओ (अ+उ), औ (अ+ओ)।
	(ग) प्लुत / त्रिमात्रिक स्वर	**ओ3म् (ऽ)**	पुकारने या नाटक के संवादों में 3 मात्रा का समय (जैसे—राऽऽम)।
2. जिह्वा के क्रियाशील भाग के आधार पर	(क) अग्र स्वर (4)	**इ, ई, ए, ऐ** (तथा ऋ)	जिह्वा का अग्र भाग सक्रिय रहता है।

वर्गीकरण का आधार	उप-भेद	सम्मिलित स्वर	मुख्य पहचान एवं परीक्षा-उपयोगी नियम
	(ख) मध्य / केंद्रीय स्वर (1)	**अ**	जिह्वा सामान्य/मध्य स्थिति में रहती है; **'अ'** को **'शहीद वर्ण'** या **'उदासीन स्वर'** भी कहते हैं।
	(ग) पश्च स्वर (5 + 1)	**आ, उ, ऊ, ओ, औ** (तथा आगत 'ऑ')	जिह्वा का पिछला भाग सक्रिय रहता है (ट्रिक: 'अ' को छोड़कर जिन स्वरों की बनावट '3' अंक से शुरू होती है)।
3. मुख-द्वार (विवर) खुलने के आधार पर	(क) विवृत (Open - 1)	**आ**	मुख द्वार पूरा खुलता है।
	(ख) अर्द्ध-विवृत (Half-Open - 3+1)	**अ, ऐ, औ** (तथा आगत 'ऑ')	मुख द्वार आधा खुलता है।
	(ग) संवृत (Closed - 4)	**इ, ई, उ, ऊ**	मुख द्वार लगभग बंद (संकरा) रहता है।
	(घ) अर्द्ध-संवृत (Half-Closed - 2)	**ए, ओ**	मुख द्वार आधा बंद रहता है।
4. ओष्ठों की आकृति के आधार पर	(क) वृत्तमुखी / वर्तुल (4+1)	**उ, ऊ, ओ, औ** (तथा 'ऑ')	होंठ गोलाकार हो जाते हैं।
	(ख) अवृत्तमुखी / अवर्तुल (6)	**अ, आ, इ, ई, ए, ऐ**	होंठ गोलाकार नहीं होते।

1.3 व्यंजनों का उच्चारण स्थान, घोषत्व एवं प्राणत्व मैट्रिक्स (Complete Consonant Matrix)

वर्ग / श्रेणी	उच्चारण स्थान	अघोष + अल्पप्राण (वर्ग का 1ला)	अघोष + महाप्राण (वर्ग का 2रा)	सघोष + अल्पप्राण (वर्ग का 3रा)	सघोष + महाप्राण (वर्ग का 4था)	सघोष + अल्पप्राण + नासिक्य (5वाँ)	इसी स्थान से उच्चरित अन्य वर्ण (स्वर/अंतःस्थ/ऊष्म)
क-वर्ग	**कंठ्य** (Guttural)	क	ख	ग	घ	ङ	**अ, आ, अः (विसर्ग), ह** (ह = काकल्य भी)
च-वर्ग	**तालव्य** (Palatal)	च	छ	ज	झ	ञ	**इ, ई, य, श** (च-वर्ग को 'स्पर्श-संघर्षी' भी कहते हैं)
ट-वर्ग	**मूर्धन्य** (Retroflex)	ट	ठ	ड	ढ	ण	**ऋ, र, ष, ड़, ढ़** (ड़ = अल्पप्राण, ढ़ = महाप्राण)
त-वर्ग	**दंत्य** (Dental)	त	थ	द	ध	न	**ल, स** (न, ल, स, र, ज़ को **'वर्त्स्य/मसूड़ा'** भी मानते हैं)
प-वर्ग	**ओष्ठ्य** (Labial)	प	फ	ब	भ	म	**उ, ऊ**
संयुक्त / अन्य	**कंठतालव्य:** ए, ऐ	**कंठोष्ठ्य:** ओ, औ	**दंतोष्ठ्य:** व, फ़	**नासिक्य:** अं (अनुस्वार)	**अघोष ऊष्म (महाप्राण):** श, ष, स	**सघोष ऊष्म (महाप्राण):** ह	**सभी स्वर (11):** सघोष एवं अल्पप्राण

- **अघोष बनाम सघोष (कुल 52 वर्णों में):**
- **अघोष वर्ण (13):** प्रत्येक वर्ग का **पहला और दूसरा व्यंजन (10)** + **श, ष, स (3)** = **13 वर्ण**।
- **सघोष / घोष वर्ण (31 मूल वर्ण):** प्रत्येक वर्ग का **तीसरा, चौथा और पाँचवाँ व्यंजन (15)** + **य, र, ल, व (4)** + **ह (1)** + **सभी 11 स्वर** = **31 मूल वर्ण** (उत्क्षिप्त ड़, ढ़ भी सघोष हैं)।
- **अल्पप्राण बनाम महाप्राण:**
- **अल्पप्राण:** प्रत्येक वर्ग का **1, 3, 5वाँ वर्ण (15)** + **य, र, ल, व (4)** + **ड़ (1)** + **सभी 11 स्वर**।

• **महाप्राण:** प्रत्येक वर्ग का 2, 4था वर्ण (10) + श, ष, स, ह (4) + ढ़ (1)।

अध्याय 2: संधि के सभी भेद, सूत्र एवं दुर्लभ अपवाद (Complete Sandhi Rules & Critical Exceptions)

अध्याय के प्रमुख अध्ययन स्तंभ — अध्याय 2: संधि के सभी भेद, सूत्र एवं दुर्लभ अपवाद (Complete Sandhi Rules & Critical Exceptions)

प्रमुख अध्ययन बिंदु 1	प्रमुख अध्ययन बिंदु 2	प्रमुख अध्ययन बिंदु 3	प्रमुख अध्ययन बिंदु 4
स्वर संधि के 5 भेदों का सूत्रबद्ध चार्ट	स्वर संधि के अति-महत्वपूर्ण अपवाद (Most Asked Sandhi Exceptions in UPPSC / SI / TET)	व्यंजन संधि के 10 स्वर्णिम नियम (Golden Rules of Vyanjan Sandhi)	विसर्ग संधि के 7 प्रमुख नियम एवं अपवाद

दो निकटवर्ती वर्णों के परस्पर मेल से जो विकार (परिवर्तन) उत्पन्न होता है, उसे **'संधि'** कहते हैं (जबकि दो शब्दों के मेल को 'समास' कहते हैं)। संधि के 3 मुख्य भेद हैं: (1) स्वर संधि, (2) व्यंजन संधि, (3) विसर्ग संधि।

2.1 स्वर संधि के 5 भेदों का सूत्रबद्ध चार्ट

1. *दीर्घ स्वर संधि (अकः सवर्णे दीर्घः):* ह्रस्व या दीर्घ **अ, इ, उ, ऋ** के बाद समान स्वर आने पर क्रमशः **आ, ई, ऊ, ॠ** हो जाता है।

• उदाहरण: परम + अर्थ = परमार्थ; कल्प + अंत = कल्पांत; दैत्य + अरि = दैत्यारि (दैत्यों का शत्रु); कुश + आसन = कुशासन; गिरि + इंद्र = गिरींद्र; मही + इंद्र = महेंद्र (नहीं!) **महींद्र**; भानु + उदय = भानूदय; लघु + ऊर्मि = लघूर्मि; वधू + उत्सव = **वधूत्सव**; भू + ऊर्ध्व = भूर्ध्व; पितृ + ऋण = पितॄण।

2. *गुण स्वर संधि (आद्गुणः): **अ/आ** के बाद **इ/ई** आए तो 'ए', **उ/ऊ** आए तो 'ओ', और **ऋ** आए तो 'अर्'* हो जाता है।

• उदाहरण: रमा + ईश = रमेश; गुडाका (नींद) + ईश = **गुडाकेश** (अर्जुन/शिव); हृषीक + ईश = **हृषीकेश**; सूर्य + ऊर्जा = सूर्योर्जा; जल + ऊर्मि = जलोर्मि; गंगा + उदक = गंगोदक; महा + ऋषि = महर्षि; उत्तम + ऋण = **उत्तमर्ण** (ऋण देने वाला)।

3. *वृद्धि स्वर संधि (वृद्धिरेचि): **अ/आ** के बाद **ए/ऐ** आए तो 'ऐ', और **ओ/औ** आए तो 'औ'* हो जाता है।

• उदाहरण: एक + एक = एकैक; लोक + एषणा = लोकेषणा (नहीं!) **लोकैषणा**; मत + ऐक्य = मतैक्य; सदा + एव = सदैव; महा + ओजस्वी = महौजस्वी; वन + ओषधि = वनौषधि; परम + औदार्य = परमौदार्य।

4. *यण् स्वर संधि (इको यणचि): **इ/ई** के बाद भिन्न स्वर आए तो 'य्', **उ/ऊ** के बाद भिन्न स्वर आए तो 'व्', और **ऋ** के बाद भिन्न स्वर आए तो 'र्'* हो जाता है।

• उदाहरण: अति + अधिक = अत्यधिक; प्रति + उत = प्रत्युत; वि + ऊह = **व्यूह**; अभि + आगत = अभ्यागत; स्त्री + उपयोगी = **स्त्र्युपयोगी**; सु + आगत = स्वागत; अनु + एषण = **अन्वेषण**; वधू + आगमन = **वध्वागमन**; मातृ + आज्ञा = मात्राज्ञा; पितृ + अनुमति = पित्रनुमति।

5. *अयादि स्वर संधि (एचोऽयवायावः): **ए, ऐ, ओ, औ** के बाद भिन्न स्वर आने पर क्रमशः अय्, आय्, अव्, आव्* हो जाता है।

• उदाहरण: ने + अन = नयन; शे + अन = शयन; गै + अक = गायक; नै + इका = नायिका; पो + अन = पवन; गो + ईश = **गवीश**; पो + इत्र = **पवित्र**; पौ + अन = पावन; नौ + इक = नाविक; भौ + उक = भावुक; द्यौ + अपि = **द्यावपि**।

2.2 स्वर संधि के अति-महत्वपूर्ण अपवाद (Most Asked Sandhi Exceptions in UPPSC / SI / TET)

प्रतियोगी परीक्षाओं में सामान्य नियमों के बजाय नीचे दिए गए **अपवादों** से सीधे प्रश्न पूछे जाते हैं (जहाँ नियम गुण या दीर्घ संधि का लगता है किंतु परिणाम वृद्धि या पररूप संधि का होता है):

संधि-विच्छेद (Sandhi Split)	संधि शब्द	सामान्य नियम से क्या होना चाहिए था?	वास्तविक संधि (अपवाद का कारण / वार्तिक सूत्र)
अक्ष + ऊहिनी	**अक्षौहिणी**	अक्षोहिणी (गुण संधि: अ+ऊ=ओ)	**वृद्धि संधि अपवाद** (अक्षादूहिन्यामुपसंख्यानम् — 'अक्ष' के बाद 'ऊहिनी' आने पर वृद्धि 'औ' तथा 'न' का 'ण' होता है)।

संधि-विच्छेद (Sandhi Split)	संधि शब्द	सामान्य नियम से क्या होना चाहिए था?	वास्तविक संधि (अपवाद का कारण / वार्तिक सूत्र)
प्र + ऊढ़	**प्रौढ़**	प्रोढ़ (गुण संधि: अ+ऊ=ओ)	**वृद्धि संधि अपवाद** (प्रादूढोढ्येषैष्येषु — 'प्र' उपसर्ग के बाद ऊढ़, ऊढि, एष, एष्य आने पर वृद्धि होती है)।
स्व + ईरिणी / ईर	**स्वैरिणी / स्वैर**	स्वेरिणी (गुण संधि: अ+ई=ए)	**वृद्धि संधि अपवाद** (स्वादे ईरेरिण्योः — 'स्व' के बाद 'ईर' या 'ईरिणी' आने पर वृद्धि 'ऐ' होती है)।
अधर + ओष्ठ	**अधरोष्ठ / अधरौष्ठ**	अधरौष्ठ (वृद्धि संधि: अ+ओ=औ)	**विकल्प से गुण/पररूप अपवाद** (ओत्वोष्ठयोः समासे वा — समास होने पर 'ओष्ठ' और 'ओतु' में 'ओ' और 'औ' दोनों रूप मान्य हैं: दंतोष्ठ/दंतौष्ठ, बिंबोष्ठ/बिंबौष्ठ)।
शुद्ध + ओदन	**शुद्धोदन**	शुद्धौदन (वृद्धि संधि)	**गुण/पररूप संधि अपवाद** (अ + ओ = ओ ही रहता है)।
कुल + अटा	**कुलटा**	कुलाटा (दीर्घ संधि: अ+अ=आ)	**पररूप संधि अपवाद** (शकन्ध्वादिषु पररूपं वाच्यम् — कुल+अटा=कुलटा, शक+अन्धु=शकन्धु, कर्क+अन्धु=कर्कन्धु, मृत+अण्ड=**मार्तण्ड**, मनस्+ईषा=**मनीषा**, पतत्+अंजलि=**पतंजलि**)।
सीम + अंत	**सीमंत / सीमांत**	सीमांत (दीर्घ संधि)	**'सीमंत'** (केशों की मांग — पररूप अपवाद); जबकि **'सीमांत'** (सीमा का अंत — दीर्घ संधि)।
अपांग (अप + अंग)	**अपांग**	केवल दीर्घ संधि	अप + अंग = अपांग (नेत्र का कोना — दीर्घ संधि)।
प्र + एषक / एषित	**प्रेषक / प्रेषित**	प्रैषक (प्र के अपवाद से)	**गुण संधि** (प्र + इषक नहीं, बल्कि **प्र + एषक = प्रेषक** पररूप/गुण रूप में प्रयुक्त)।
अधम + ऋण	**अधमर्ण**	—	**गुण संधि** (अ + ऋ = अर् अधमर्ण = कर्ज लेने वाला; उत्तम + ऋण = उत्तमर्ण = कर्ज देने वाला)।

2.3 व्यंजन संधि के 10 स्वर्णिम नियम (Golden Rules of Vyanjan Sandhi)

1. **वर्ग के पहले वर्ण का तीसरे वर्ण में परिवर्तन (जश्त्व संधि — क्, च्, ट्, त्, प् ग्, ज्, ड्, द्, ब्):**

• दिक् + गज = दिग्गज; वाक् + ईश = वागीश; अच् + अंत = **अजंत**; षट् + आनन = **षडानन**; षट् + रिपु = **षड्रिपु**; भगवत् + भजन = भगवद्भजन; उत् +घाटन = उद्घाटन; अप + ज = **अब्ज** (कमल); अप + द = **अब्द** (बादल)।

2. **वर्ग के पहले वर्ण का पाँचवें वर्ण में परिवर्तन (अनुनासिक संधि — क्, च्, ट्, त्, प् + न/म ङ्, ञ्, ण्, न्, म्):**

• वाक् + मय = **वाङ्मय**; षट् + मास = **षण्मास**; षट् + मुख = **षण्मुख**; उत् + नति = उन्नति; जगत् + नाथ = जगन्नाथ; तत + मय = तन्मय; चित + मय = चिन्मय; अप + मय = **अम्मय**।

3. **त्/द् से संबंधित विशेष नियम:**

• त्/द् + च/छ च्च/च्छ: उत् + चारण = उच्चारण; सत् + चरित्र = सच्चरित्र; शरत् + चंद्र = **शरच्चंद्र**।

• त्/द् + ज/झ ज्ज/ज्झ: सत् + जन = सज्जन; उत् + ज्वल = **उज्ज्वल** (दोनों 'ज' आधे!); विपत् + जाल = विपज्जाल।

• त्/द् + ट/ड ट्ट/ड्ड: बृहत् + टीका = बृहट्टीका; उत् + डयन = **उड्डयन**।

• त्/द् + ल ल्ल: उत् + लास = उल्लास; तत् + लीन = तल्लीन; उत् + लंघन = उल्लंघन।

• त्/द् + श त्/द् का च् और श का छ (च्छ): उत् + श्वास = **उच्छ्वास**; उत् + शिष्ट = **उच्छिष्ट**; सत् + शास्त्र = **सच्छास्त्र**; उत् + शृंखल = **उच्छृंखल**।

• त्/द् + ह त्/द् का द् और ह का ध (द्ध): उत् + हार = **उद्धार**; उत् + हरण = **उद्धरण**; तत् + हित = **तद्धित**; पत + हति = **पद्धति**।

4. **'छ' से पूर्व 'च्' का आगम:** किसी भी ह्रस्व स्वर या 'आ' के बाद 'छ' आने पर बीच में आधा च् जुड़ जाता है:

• स्व + छंद = **स्वच्छंद**; अनु + छेद = अनुच्छेद; परि + छेद = परिच्छेद; तरु + छाया = तरुच्छाया; आ + छादन = आच्छादन।

5. **म् के नियम:**

• म् + स्पर्श व्यंजन अनुस्वार या उसी वर्ग का पंचमाक्षर: सम् + कलन = संकलन; सम् + तोष = संतोष; सम् + पूर्ण = संपूर्ण।

• म् + य, र, ल, व, श, ष, स, ह सदैव अनुस्वार: सम् + योग = संयोग; सम् + रक्षण = संरक्षण; सम् + विधान = संविधान; सम् + हार = संहार।

• सम् + कृ धातु बीच में आधा स् आता है: सम् + कृति = **संस्कृति**; सम् + कार = **संस्कार**; सम् + कृत = **संस्कृत**।

• परि + कृ धातु बीच में आधा ष् आता है: परि + कार = **परिष्कार**; परि + कृत = **परिष्कृत**।

6. **'न' का 'ण' नियम (णत्व विधान):** इ, ई, उ, ऊ, ऋ, र, ष के बाद न आने पर (बीच में क-वर्ग, प-वर्ग, स्वर, य, व, ह होने पर भी) न का ण हो जाता है:

• परि + नाम = परिणाम; प्र + मान = प्रमाण; राम + अयन = **रामायण** (दीर्घ + व्यंजन दोनों!); भूष + अन = भूषण; तृष् + ना = तृष्णा; ऋ + न = ऋण।

7. **'स' का 'ष' नियम (षत्व विधान):** अ/आ को छोड़कर किसी भी स्वर के बाद स आए तो उसका ष हो जाता है:

• अभि + सेक = **अभिषेक**; नि + सेध = **निषेध**; वि + सम = **विषम**; सु + सुप्ति = **सुषुप्ति**; युधि + स्थिर = **युधिष्ठिर** (स् का ष् और थ का ठ)।

8. **अहन् (दिन) का नियम:** अहन् के बाद र आए तो अहो और अन्य वर्ण आए तो अहर् हो जाता है:

• अहन् + रात्रि = **अहोरात्र** ('रात्रि' का 'रात्र' हो जाता है!); अहन् + रूप = **अहोरूप**; अहन् + मुख = **अहर्मुख**; अहन् + निशा = **अहर्निश**।

2.4 विसर्ग संधि के 7 प्रमुख नियम एवं अपवाद

1. **विसर्ग का 'ओ' होना:** यदि विसर्ग (:) से पहले अ हो और बाद में अ अथवा किसी वर्ग का 3, 4, 5वाँ वर्ण या य, र, ल, व, ह हो, तो अः का ओ हो जाता है:

• मनः + अनुकूल = मनोनुकूल; मनः + रथ = **मनोरथ** (इसे गुण संधि मत समझना!); तमः + गुण = तमोगुण; यशः + दा = यशोदा; पयः + धर = पयोधर; तपः + वन = तपोवन; अधः + गति = अधोगति; वयः + वृद्ध = वयोवृद्ध।

• **अपवाद (जहाँ 'ओ' के बजाय 'र्' होता है):** पुनः + मुद्रण = **पुनर्मुद्रण**; पुनः + जन्म = **पुनर्जन्म**; अंतः + द्वंद्व = **अंतर्द्वंद्व**; अंतः + देशीय = **अंतर्देशीय**।

2. **विसर्ग का 'र्' होना:** यदि विसर्ग से पहले अ/आ को छोड़कर कोई अन्य स्वर हो और बाद में कोई स्वर या 3, 4, 5वाँ वर्ण या य, र, ल, व, ह हो:

• दुः + आशा = दुराशा; निः + धन = निर्धन; निः + झर = निर्झर; आशीः + वाद = **आशीर्वाद**; दुः + उपयोग = **दुरुपयोग** ('रू' बड़ा नहीं, छोटा 'रु' होता है!); बहिः + मुख = बहिर्मुख।

3. **विसर्ग का 'श, ष, स' होना:**

• विसर्ग + च/छ/श श्: निः + चय = निश्चय; निः + छल = निश्छल; दुः + शासन = दुःशासन/दुश्शासन; मनः + चिकित्सक = **मनश्चिकित्सक** (परीक्षा में बार-बार लोग 'मनोचिकित्सक' टिक करते हैं, जो व्याकरणतः अशुद्ध है!)।

• विसर्ग + क/ख/ट/ठ/प/फ (यदि पूर्व में इ/उ हो) ष्: निः + कपट = निष्कपट; निः + कंटक = निष्कंटक; धनुः + टंकार = धनुष्टंकार; निः + ठुर = निष्ठुर; निः + फल = निष्फल। (**अपवाद:** दुः + ख = **दुःख**)।

• विसर्ग + त/थ/स स्: नमः + ते = नमस्ते; मनः + ताप = मनस्ताप; निः + संतान = निस्संतान/निःसंतान; दुः + साहस = दुस्साहस; नमः + कार = **नमस्कार**; भाः + कर = **भास्कर**; पुरः + कार = **पुरस्कार**।

4. **विसर्ग का लोप एवं पूर्व स्वर का दीर्घ होना (: + र नियम):** यदि विसर्ग के बाद र आए, तो विसर्ग लुप्त हो जाता है और उससे पहले का ह्रस्व स्वर (इ/उ) दीर्घ (ई/ऊ) हो जाता है:

• निः + रोग = **नीरोग**; निः + रस = **नीरस**; निः + रव = **नीरव**; निः + रज = **नीरज**; चक्षुः + रोग = **चक्षूरोग**।

5. **विसर्ग का लोप (अः + भिन्न स्वर):** यदि विसर्ग से पूर्व अ हो और बाद में अ को छोड़कर कोई अन्य स्वर हो, तो विसर्ग का लोप हो जाता है:

• अतः + एव = **अतएव**; पयः + आदि = पयादि; मनः + उच्छेद = मनउच्छेद।

अध्याय 3: समास — 6 मुख्य भेद, उपभेद एवं सूक्ष्म विभेदक नियम (Complete Samas Analysis)

दो या दो से अधिक शब्दों (पदों) के परस्पर मेल से नए सार्थक एवं संक्षिप्त शब्द बनाने की प्रक्रिया को **'समास'** (शाब्दिक अर्थ: **'संक्षेप'**; समास का विलोम = **'व्यास'**, जबकि संधि का विलोम = **'विग्रह'**) कहते हैं।

3.1 समास के 6 भेदों की मास्टर तालिका

समास का नाम	पद की प्रधानता	पहचान के मुख्य लक्षण एवं नियम	परीक्षा में पूछे जाने वाले क्लिष्ट एवं अपवादात्मक उदाहरण
1. अव्ययीभाव समास	**पूर्वपद प्रधान** (संपूर्ण पद अव्यय/क्रियाविशेषण बन जाता है)	(क) उपसर्ग युक्त शब्द (**आ, अनु, प्रति, भर, यथा, यावत्, बे, बा, नि, ला**); (ख) **समान संज्ञा या अव्यय की आवृत्ति** (**रातोंरात, दिनोंदिन**); (ग) **नदीवाचक शब्दों के पूर्व संख्या** (नदीभिश्च सूत्र)।	आजन्म, यथाशक्ति, प्रतिदिन, भरपेट, यावज्जीवन, बेखटके, बाकायदा; **समान शब्दों की द्विरुक्ति:** रातोंरात, हाथोंहाथ, धड़ाधड़, धीरे-धीरे, पल-पल, घर-घर (इन्हें द्वंद्व समास मत समझना!); **नदी-संख्या अपवाद: पंचगंगम** (पाँच गंगाओं का समाहार), **द्वियमुनम** (ये द्विगु नहीं, अव्ययीभाव हैं!); **अतींद्रिय, निर्विवाद, प्रत्यक्ष, सपरिवार, सचेत**।
2. तत्पुरुष समास	**उत्तरपद प्रधान** (पूर्वपद गौण)	दोनों पदों के बीच कारक चिह्नों (कर्म 'को' से अधिकरण 'में/पर' तक — कुल 6 कारक) का लोप; उपभेद: **नञ् तत्पुरुष, अलुक् तत्पुरुष, उपपद तत्पुरुष, प्रादि तत्पुरुष**।	**कर्म:** गगनचुंबी, पॉकेटमार, चिड़ीमार, स्वर्गप्राप्त; **करण:** तुलसीकृत, मनचाहा, अकालपीड़ित, कष्टसाध्य, जन्मांध (जन्म से अंधा — अपादान! नहीं, जन्म से लेकर = अपादान/करण प्रसंगानुसार); **संप्रदान:** रसोईघर, हवनसामग्री, हथकड़ी, गौशाला, देशभक्ति, डाकगाड़ी, बलिपशु, राहखर्च; **अपादान:** ऋणमुक्त, पथभ्रष्ट, देश निकाला, जन्मांध, भयभीत, पापमुक्त, लोकातीत; **संबंध:** राजपुत्र, कन्यादान, राष्ट्राध्यक्ष, गंगाजल, ग्रामवासी; **अधिकरण:** आपबीती, पुरुषोत्तम, मुनिश्रेष्ठ, कविपुंगव, हरफनमौला, दहीबड़ा (दही में डूबा बड़ा — लुप्तपद/अधिकरण), रेलगाड़ी (पटरी पर चलने वाली गाड़ी — लुप्तपद); **नञ् तत्पुरुष:** अनपढ़, अनभिज्ञ, अकर्मण्य, नास्तिक, गैरवाजिब, नालायक; **अलुक् तत्पुरुष:** युधिष्ठिर, मृत्युंजय, मनसिज, खेचर, वसुंधरा, धनंजय; **उपपद तत्पुरुष:** जलज, पंकज, कुंभकार, चर्मकार, तटस्थ, कृतज्ञ।
3. कर्मधारय समास	**उत्तरपद प्रधान** (तत्पुरुष का ही उपभेद)	पूर्वपद और उत्तरपद के मध्य **विशेषण-विशेष्य** अथवा **उपमान-उपमेय** का संबंध होता है (विग्रह में 'है जो' या 'के समान/रूपी')।	**विशेषण-विशेष्य:** नीलकमल, महाकवि, महात्मा, पीतांबर (पीला वस्त्र), कालीमिर्च, अंधकूप, परमानंद, सद्धर्म, अधमरा, छुटभैया, नवागंतुक; **उपमान-उपमेय:** चंद्रमुख, कमलनयन, मृगलोचन, चरणकमल, वचनामृत, क्रोधाग्नि, देहलता, विद्याधन, भवसागर, प्राणप्रिय, घनश्याम, वज्रदेह; **उभयपद विशेषण: शीतोष्ण** (जो शीत है और जो उष्ण है), **नीलपीत, लाल-पीला, सुनी-अनसुनी, देखा-अनदेखा**।
4. द्विगु समास	**उत्तरपद प्रधान**	पूर्वपद **संख्यावाचक विशेषण** होता है और संपूर्ण पद समूह या समाहार का बोध कराता है (किसी तीसरे विशेष अर्थ को छोड़कर)।	चौराहा, तिराहा, पंचवटी, नवरत्न, नवग्रह, सप्तर्षि (द्विगु/ब्रह्मर्षि अर्थ में), शताब्दी, अष्टाध्यायी, त्रिलोक, त्रिभुवन, दोपहर, चवन्नी, अठन्नी, सप्ताह, पंजाब, चतुर्भुज (चार भुजाओं की ज्यामितीय आकृति), **एकतारा, दुधारी, तिबारा, चौमासा**।
5. द्वंद्व समास	**दोनों पद प्रधान**	दोनों पदों के बीच 'और', 'तथा', 'या', 'अथवा', 'आदि' का लोप। इसके **3 उपभेद** हैं: **(क) इतरेतर द्वंद्व** ('और'), **(ख) वैकल्पिक द्वंद्व** ('या/अथवा' — विलोम शब्द), **(ग) समाहार द्वंद्व** ('आदि/इत्यादि')।	**इतरेतर द्वंद्व:** माता-पिता, राम-लक्ष्मण, भाई-बहन, राधा-कृष्ण, गौरीशंकर, भीमार्जुन, **अड़सठ (आठ और साठ), पच्चीस (पाँच और बीस), इकतीस** (ध्यान दें: 1 से 9 और 10, 20, 30...100 को छोड़कर बीच की संयुक्त संख्याएँ जैसे 25, 32, 68 द्वंद्व समास हैं!); **वैकल्पिक द्वंद्व:** पाप-पुण्य, धर्माधर्म (धर्म या अधर्म), शीतोष्ण (शीत या उष्ण — विकल्प में कर्मधारय न हो तो वैकल्पिक द्वंद्व), लाभालाभ, थोड़ा-बहुत, आज-कल, भला-बुरा; **समाहार द्वंद्व:** दाल-रोटी, रुपया-पैसा, कपड़ा-लत्ता, हाथ-पाँव, साग-पात, चाय-वाय।
6. बहुव्रीहि समास	**कोई भी पद प्रधान नहीं (अन्य/तीसरा पद प्रधान)**	दोनों पद मिलकर किसी तीसरे विशिष्ट व्यक्ति, देवता या पौराणिक संदर्भ (योगरूढ़ शब्द) की ओर संकेत करते हैं। इसके 4 उपभेद हैं: समानाधिकरण, व्यधिकरण, तुल्ययोग (सह-बहुव्रीहि) और व्यतिहार बहुव्रीहि।	दशानन (रावण), लंबोदर (गणेश), चतुर्भुज (विष्णु), चक्रपाणि (विष्णु), वीणापाणि (सरस्वती), शूलपाणि/चंद्रशेखर/मृत्युंजय/त्रिलोचन/आशुतोष (शिव), हलधर (बलराम), मुरारि/गिरिधर/पीतांबर/घनश्याम (श्रीकृष्ण), अंशुमाली (सूर्य — अंशु/किरणें हैं माला जिसकी), विषधर (सर्प), बारहसिंगा (एक विशेष पशु), पतझड़ (विशेष ऋतु), **सपरिवार/सबल/सचेत** (तुल्ययोग बहुव्रीहि), **लाठा-लाठी, बाता-बाती, मुक्का-मुक्की, धक्का-मुक्की (व्यतिहार बहुव्रीहि** — इसे द्वंद्व या अव्ययीभाव मत समझना!), **इकतीस, उनचास** के अलावा **अनंग** (कामदेव), **मनोज, वज्रायुध** (इंद्र), **पंचानन** (शिव/सिंह)।

अध्याय 4: रस, छंद एवं अलंकार का गहन सोदाहरण विश्लेषण (Rasa, Chhand & Alankar Master Guide)

अध्याय के प्रमुख अध्ययन स्तंभ — अध्याय 4: रस, छंद एवं अलंकार का गहन सोदाहरण विश्लेषण (Rasa, Chhand & Alankar Master Guide)

प्रमुख अध्ययन बिंदु 1
रस संप्रदाय — 11 रस एवं उनके स्थायी भाव

प्रमुख अध्ययन बिंदु 2
छंद शास्त्र — प्रमुख मात्रिक एवं वर्णिक छंदों की पहचान सारणी

प्रमुख अध्ययन बिंदु 3
अलंकार — शब्दालंकार एवं अर्थालंकार का तुलनात्मक चार्ट

4.1 रस संप्रदाय — 11 रस एवं उनके स्थायी भाव

आचार्य भरतमुनि ने 'नाट्यशास्त्र' में रस सूत्र दिया: **"विभावानुभावव्यभिचारीसंयोगाद्रसनिष्पत्तिः"** (इसमें स्थायी भाव का नामोल्लेख नहीं है और भरतमुनि ने शांत रस को नाटक में न मानकर केवल **8 रस** माने हैं)। काव्यशास्त्र में कुल **9 रस** (शांत रस के प्रवर्तक: **उद्भट/अभिनवगुप्त**) और वात्सल्य (सम्राट: **सूरदास**, प्रवर्तक: **विश्वनाथ**) व भक्ति रस (प्रवर्तक: **रूप गोस्वामी**) को जोड़कर कुल **11 रस** माने जाते हैं। **संचारी (व्यभिचारी) भावों की संख्या 33** है।

क्र.सं.	रस का नाम	स्थायी भाव	संबंधित देवता / वर्ण	परीक्षा में सर्वाधिक पूछे जाने वाले काव्य उदाहरण
1	**शृंगार रस** (रसराज — भोजराज व देव के अनुसार)	**रति**	विष्णु / श्याम वर्ण	(क) **संयोग शृंगार:** "बतरस लालच लाल की, मुरली धरी लुकाय। सौंह करै भौंहनि हँसै, दैन कहै नटि जाय॥" (बिहारी) (ख) **वियोग/विप्रलंभ शृंगार:** "निसिदिन बरसत नैन हमारे। सदा रहति पावस ऋतु हम पर, जबते स्याम सिधारे॥" (सूरदास) तथा "हे खग मृग हे मधुकर श्रेनी, तुम देखी सीता मृगनैनी॥" (तुलसीदास)
2	**हास्य रस**	**हास**	प्रमथ / शुक्ल वर्ण	"बुरे समय को देखकर, गंजे तू क्यों रोय। किसी भी हालत में तेरा, बाल न बाँका होय॥" तथा "विंध्य के वासी उदासी तपोव्रत-धारी महा बिनु नारि दुखारे..." (तुलसीदास)
3	**करुण रस** (भवभूति ने इसे एकमात्र मूल रस माना)	**शोक**	यम / कपोत वर्ण	"शोक विकल सब रोवहिं रानी। रूप सीलु बलु तेजु बखानी॥ करहिं विलाप अनेक प्रकारा। परहिं भूमितल बारहिं बारा॥" तथा "मणि खोये भुजंग-सी जननी, फन सा पटक रही थी शीश..."
4	**वीर रस** (4 प्रकार: युद्धवीर, दानवीर, धर्मवीर, दयावीर)	**उत्साह**	महेंद्र / स्वर्ण वर्ण	"बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी, खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी॥" तथा "मैं सत्य कहता हूँ सखे! सुकुमार मत जानो मुझे, यमराज से भी युद्ध में प्रस्तुत सदा मानो मुझे॥"
5	**रौद्र रस**	**क्रोध**	रुद्र / रक्त (लाल)	"श्रीकृष्ण के सुन वचन अर्जुन क्रोध से जलने लगे। सब शोक अपना भूलकर करतल युगल मलने लगे॥" तथा "माखे लखन कुटिल भईं भौंहें। रद-पट फरकत नयन रिसौहें॥"
6	**भयानक रस**	**भय**	काल / कृष्ण वर्ण	"एक ओर अजगरहि लखि, एक ओर मृगराय। विकल बटोही बीच ही, परयो मूरछा खाय॥" तथा "उधर गरजती सिंधु लहरियाँ कुटिल काल के जालों सी..."
7	**वीभत्स रस**	**जुगुप्सा (घृणा)**	महाकाल / नील वर्ण	"सिर पर बैठ्यो काग आँख दोउ खात निकारत। खींचत जीभहिं स्यार अतिहि आनंद उर धारत॥" (भारतेंदु)
8	**अद्भुत रस**	**विस्मय (आश्चर्य)**	ब्रह्मा / पीत वर्ण	"अखिल भुवन चर-अचर सब, हरि मुख में लखि मातु। चकित भई गदगद वचन, विकसित दृग पुलकातु॥" तथा "बिनु पद चलै सुनै बिनु काना..."
9	**शांत रस**	**निर्वेद (शम / वैराग्य)**	श्रीनारायण / कुंदेंदु	"मन रे तन कागद का पुतला। लागै बूँद बिनसि जाय छिन में, गरब करै क्या इतना॥" तथा "अब लौं नसानी, अब न नसैहौं..."
10	**वात्सल्य रस**	**वत्सलता (संतान-रति)**	—	"किलकत कान्ह घुटुरुवनि आवत। मनिमय कनक नंद के आँगन, बिंब पकरिबे धावत॥" तथा "मैया मोरी मैं नहिं माखन खायो..."
11	**भक्ति रस**	**भगवद्-विषयक रति / अनुराग**	—	"राम जपु, राम जपु, राम जपु बावरे। घोर भव-नीर-निधि, नाम निज नाव रे॥" तथा "पायो जी मैंने राम रतन धन पायो..."

4.2 छंद शास्त्र — प्रमुख मात्रिक एवं वर्णिक छंदों की पहचान सारणी

छंद के प्रणेता **आचार्य पिंगल** हैं (अतः छंद को 'पिंगल शास्त्र' भी कहते हैं)। छंद का सर्वप्रथम उल्लेख **ऋग्वेद** में मिलता है। छंद में **8 गण** होते हैं जिनका सूत्र है: `यमाताराजभानसलगा` (यगण `ISS`, मगण `SSS`, तगण `SSI`, रगण `SIS`, जगण `ISI`, भगण `SII`, नगण `III`, सगण `IIS`)।

छंद का नाम	श्रेणी (प्रकार)	मात्रा / वर्ण नियम एवं यति	उदाहरण एवं पहचान की अचूक ट्रिक
1. चौपाई	सम मात्रिक छंद	4 चरण; **प्रत्येक चरण में 16-16 मात्राएँ**; अंत में दो गुरु (`SS`) शुभ, जगण (`ISI`) व तगण (`SSI`) वर्जित।	"जय हनुमान ज्ञान गुन सागर। जय कपीस तिहुँ लोक उजागर॥" (प्रत्येक पंक्ति में 16 मात्राएँ)
2. रोला	सम मात्रिक छंद	4 चरण; **प्रत्येक चरण में 24 मात्राएँ** (11 और 13 मात्राओं पर यति)।	"नीलांबर परिधान, हरित पट पर सुंदर है। सूर्य-चंद्र युग-मुकुट, मेखला रत्नाकर है॥"

छंद का नाम	श्रेणी (प्रकार)	मात्रा / वर्ण नियम एवं यति	उदाहरण एवं पहचान की अचूक ट्रिक
3. गीतिका	सम मात्रिक छंद	4 चरण; **प्रत्येक चरण में 26 मात्राएँ** (14 और 12 पर यति; अंत में लघु-गुरु **IS**)।	"हे प्रभो आनंददाता ज्ञान हमको दीजिए। शीघ्र सारे दुर्गुणों को दूर हमसे कीजिए॥"
4. हरिगीतिका	सम मात्रिक छंद	4 चरण; **प्रत्येक चरण में 28 मात्राएँ** (16 और 12 पर यति; अंत में लघु-गुरु **IS**)।	"कहती हुई यों उत्तरा के नेत्र जल से भर गए। हिम के कणों से पूर्ण मानो हो गए पंकज नए॥"
5. आल्हा (वीर)	सम मात्रिक छंद	प्रत्येक चरण में **31 मात्राएँ** (16 और 15 पर यति; अंत में गुरु-लघु **SI**)।	"बारह बरिस लौ कूकर जीवै, अरु तेरह लौ जियै सियार। बरिस अठारह क्षत्रिय जीवै, आगे जीवन को धिक्कार॥"
6. दोहा	अर्द्धसम मात्रिक छंद	विषम चरणों (1, 3) में **13-13 मात्राएँ** तथा सम चरणों (2, 4) में **11-11 मात्राएँ** (अंत में गुरु-लघु **SI**)।	"रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून। पानी गए न ऊबरे, मोती मानुष चून॥" (13-11, 13-11)
7. सोरठा	अर्द्धसम मात्रिक छंद	दोहा का ठीक उल्टा: विषम चरणों (1, 3) में **11-11 मात्राएँ** तथा सम चरणों (2, 4) में **13-13 मात्राएँ** (1 व 3 के अंत में तुक)।	"सुनि केवट के बैन, प्रेम लपेटे अटपटे। बिहसे करुनाऐन, चितइ जानकी लखन तन॥" तथा "जो सुमिरत सिधि होइ..."
8. बरवै	अर्द्धसम मात्रिक छंद	विषम चरणों (1, 3) में **12-12 मात्राएँ** और सम चरणों (2, 4) में **7-7 मात्राएँ** (कुल 19 मात्राएँ)।	"बाम अंग शिव सोहइ, शिवा उदार। शरद सुवारिद में जनु, तड़ित बिहार॥"
9. उल्लाला	अर्द्धसम मात्रिक छंद	विषम चरणों (1, 3) में **15-15 मात्राएँ** और सम चरणों (2, 4) में **13-13 मात्राएँ** (कुल 28 मात्राएँ)।	"करते अभिषेक पयोद हैं, बलिहारी इस वेश की। हे मातृभूमि! तू सत्य ही, सगुण मूर्ति सर्वेश की॥"
10. कुंडलिया	विषम मात्रिक (संयुक्त)	6 चरण = **दोहा (2 चरण)** + **रोला (4 चरण)**; जिस शब्द से शुरू होता है, **उसी शब्द पर समाप्त होता है**; दोहा का चौथा चरण रोला का पहला चरण बनता है।	"साँईं बैर न कीजिए, गुरु पंडित कवि यार... रहिमन यहै विचार के, **साँईं** बैर न कीजिये॥" (प्रथम व अंतिम शब्द समान!)
11. छप्पय	विषम मात्रिक (संयुक्त)	6 चरण = **रोला (4 चरण: 24 मात्राएँ)** + **उल्लाला (2 चरण: 28 मात्राएँ)**।	"नीलांबर परिधान..." (रोला + उल्लाला का योग = छप्पय; ट्रिक: **रो-उ** = **छप्पय**, **दो-रो** = **कुंडलिया**)।
12. इंद्रवज्रा / उपेंद्रवज्रा	वर्णिक समवृत्त छंद	प्रत्येक चरण में **11 वर्ण** (इंद्रवज्रा: 2 तगण, 1 जगण, 2 गुरु; उपेंद्रवज्रा: जगण, तगण, जगण, 2 गुरु)।	**मंदाक्रांता:** 17 वर्ण; **मालिनी:** 15 वर्ण; **वसंततिलका:** 14 वर्ण; **शिखरिणी:** 17 वर्ण; **भुजंगप्रयात / द्रुतविलंबित:** 12 वर्ण; **मत्तगयंद सवैया:** 23 वर्ण (22 से 26 वर्ण = सवैया); **मनहरण कवित्त (घनाक्षरी): 31 वर्ण** (16 और 15 वर्णों पर यति)।

4.3 अलंकार — शब्दालंकार एवं अर्थालंकार का तुलनात्मक चार्ट

अलंकार के प्रवर्तक **आचार्य भामह** (काव्यालंकार) हैं और आचार्य दंडी ने कहा है: "काव्यशोभाकरान् धर्मान् अलंकारान् प्रचक्षते"।

1. **शब्दालंकार (जहाँ चमत्कार शब्द पर आश्रित हो):**

• **अनुप्रास अलंकार (वर्णों की आवृत्ति — 5 भेद):**

• छेकानुप्रास: अनेक वर्णों की स्वरूप और क्रम से **केवल एक बार** आवृत्ति (जैसे—"रीझि रीझि रहसि रहसि हँसि हँसि उठै", "बंदउँ गुरु पद पदुम परागा")।

• वृत्यनुप्रास: एक या अनेक वर्णों की अनेक बार आवृत्ति ("तरनि तनूजा तट तमाल तरुवर बहु छाए", "चारु चंद्र की चंचल किरणें")।

• लाटानुप्रास: पूरे **शब्द या वाक्य की आवृत्ति** हो और अर्थ वही रहे, केवल अन्वय (कोमा/विराम) बदलने से तात्पर्य बदल जाए ("पूत कपूत तो का धन संचय। पूत सपूत तो का धन संचय॥", "पराधीन जो जन, नहीं स्वर्ग नरक ता हेतु। पराधीन जो जन नहीं, स्वर्ग नरक ता हेतु॥")।

• अंत्यानुप्रास: पंक्ति के अंत में तुक मिलना ("जय हनुमान ज्ञान गुन सागर...")।

• श्रुत्यानुप्रास: एक ही उच्चारण स्थान (जैसे दंत्य त, थ, द, ध, न, ल, स) के वर्णों की आवृत्ति ("दिनांत था, थे दीननाथ डूबते, सधेनु आते गृह ग्वाल बाल थे")।

• **यमक अलंकार:** एक ही शब्द **दो या अधिक बार** आए और प्रत्येक बार उसका **अर्थ भिन्न** हो:

• "कनक कनक ते सौ गुनी, मादकता अधिकाय..." (कनक = सोना, कनक = धतूरा)

• "काली घटा का घमंड घटा" (घटा = बादल, घटा = कम हुआ)

• "तीन बेर खाती थीं वे तीन बेर खाती हैं" (तीन बेर = तीन बार/समय, तीन बेर = तीन बेर के फल)

• "सजना है मुझे सजना के लिए" (सजना = शृंगार करना, सजना = पति/प्रियतम)

• "सारंग ले सारंग चली, कर सारंग की ओट..." (सारंग = दीपक, स्त्री, आँचल, हवा)

• **श्लेष अलंकार:** शब्द **एक ही बार** प्रयुक्त हो किंतु प्रसंगानुसार उसके **एक से अधिक अर्थ चिपके** हों:

• "रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून। पानी गए न ऊबरे, मोती, मानुष, चून॥" ('पानी' के 3 अर्थ: मोती के लिए = चमक/कांति, मनुष्य के लिए = आत्मसम्मान/इज्जत, चूने के लिए = जल)

• "चरन धरत चिंता करत, चितवत चारिहु ओर। सुबरन को खोजत फिरत, कवि, व्यभिचारी, चोर॥" ('सुबरन' के 3 अर्थ: कवि के लिए = सुंदर वर्ण/अक्षर, व्यभिचारी के लिए = सुंदर रूप-रंग, चोर के लिए = स्वर्ण/सोना)

• "मंगन को देखि पट देत बार-बार हैं" ('पट' = वस्त्र अथवा दरवाजा)

• **वक्रोक्ति अलंकार (2 भेद — काकु वक्रोक्ति एवं श्लेष वक्रोक्ति):** वक्ता के कथन का श्रोता द्वारा जानबूझकर या कंठ-ध्वनि से भिन्न अर्थ कल्पित करना: "कौन द्वार पर? हरि मैं राधे! क्या वानर का काम यहाँ?"

2. **अर्थालंकार (जहाँ चमत्कार अर्थ पर आश्रित हो):**

• **उपमा अलंकार (4 अंग — उपमेय, उपमान, साधारण धर्म, वाचक शब्द सा, से, सी, सम, सरिस, सदृश, इव, जिमि):** "पीपर पात सरिस मन डोला" (पीपर पात = उपमान, मन = उपमेय, डोला = साधारण धर्म, सरिस = वाचक शब्द — **पूर्णोपमा**)।

• **रूपक अलंकार (उपमेय में उपमान का अभेद आरोप — कोई वाचक शब्द नहीं):** "चरण कमल बंदौ हरिराई", "पायो जी मैंने राम रतन धन पायो", "मैया मैं तो चंद्र-खिलौना लैहों", "उदित उदयगिरि मंच पर, रघुवर बाल पतंग। विकसे संत सरोज सब, हरषे लोचन भृंग॥" (सांग रूपक)।

• **उत्प्रेक्षा अलंकार (उपमेय में उपमान की संभावना — वाचक शब्द: मनु, मानो, मनहुँ, जनु, जानो, जनहुँ, ज्यों):** "सोहत ओढ़े पीत पट, श्याम सलोने गात। मनहुँ नीलमणि शैल पर, आतप परयो प्रभात॥", "उस काल मारे क्रोध के तन काँपने उसका लगा, मानो हवा के जोर से सोता हुआ सागर जगा॥"

• **भ्रांतिमान बनाम संदेह अलंकार:**

• **भ्रांतिमान (भ्रम पक्का हो जाए और प्रतिक्रिया भी हो):** "नाक का मोती अधर की कांति से, बीज दाड़िम का समझकर भ्रांति से। देखकर सहसा हुआ शुक मौन है...", "पाँय महावर दैन को नाइन बैठी आय। फिरि-फिरि जानि महावरी, एड़ी मीड़ति जाय॥"

• **संदेह (अंत तक अनिश्चय बना रहे — 'किधौं, कैधौं, या, अथवा'):** "सारी बीच नारी है कि नारी बीच सारी है, कि सारी ही की नारी है कि नारी ही की सारी है॥"

• **विभावना बनाम विशेषोक्ति बनाम असंगति:**

• **विभावना (बिना कारण के ही कार्य का होना — 'बिनु'):** "बिनु पद चलै सुनै बिनु काना। कर बिनु कर्म करै विधि नाना॥", "निंदक नियरे राखिए... बिन पानी साबुन बिना, निर्मल करे सुभाय॥"

• **विशेषोक्ति (कारण होने पर भी कार्य का न होना — विभावना का ठीक उल्टा):** "पानी बिच मीन पियासी, मोहि सुनि-सुनि आवत हाँसी॥", "नीर भरे नित प्रति रहें, तऊ न प्यास बुझाय॥"

• **असंगति (कारण कहीं और, कार्य/प्रभाव कहीं और):** "दृग उरझत, टूटत कुटुम, जुरत चतुर-चित प्रीति। परति गाँठि दुरजन-हिए, दई नई यह रीति॥" (उलझती आँखें हैं, टूटता परिवार है और गाँठ दुर्जन के हृदय में पड़ती है!)।

• **अतिशयोक्ति:** "हनुमान की पूँछ में लगन न पाई आग, लंका सिगरी जल गई गए निशाचर भाग॥", "आगे नदिया पड़ी अपार, घोड़ा कैसे उतरे पार। राणा ने सोचा इस पार, तब तक चेतक था उस पार॥"

• **अन्य प्रमुख अलंकार: प्रतीप** (उपमा का उल्टा: "उतरि नहाए जमुन जल, जो शरीर सम श्याम"), **व्यतिरेक** (उपमेय को उपमान से श्रेष्ठ बताना: "संत हृदय नवनीत समाना, कहा कबिन्ह परि कहै न जाना"), **दृष्टांत** (बिंब-प्रतिबिंब भाव: "एक म्यान में दो तलवारें, कभी नहीं रह सकती हैं..."), **अर्थान्तरन्यास** (सामान्य का विशेष से या विशेष का सामान्य से समर्थन: "जो रहीम उत्तम प्रकृति, का करि सकत कुसंग..."), **अन्योक्ति** (अप्रस्तुत के माध्यम से प्रस्तुत पर व्यंग्य: "नहिं पराग नहिं मधुर मधु, नहिं विकास इहि काल। अली कली ही सौं बंध्यो, आगे कौन हवाल॥", "माली आवत देख के, कलियन करी पुकार..."), **मानवीकरण** ("मेघ आए बड़े बन-ठन के सँवर के", "दिवसावसान का समय मेघमय आसमान से उतर रही है वह संध्या-सुंदरी परी-सी धीरे-धीरे").

अध्याय 5: उच्च-स्तरीय शब्द-संपदा — 100+ कठिन पर्यायवाची, विलोम, तत्सम-तद्भव एवं वर्तनी शुद्धि

अध्याय के प्रमुख अध्ययन स्तंभ — अध्याय 5: उच्च-स्तरीय शब्द-संपदा — 100+ कठिन पर्यायवाची, विलोम, तत्सम-तद्भव एवं वर्तनी शुद्धि

प्रमुख अध्ययन बिंदु 1	प्रमुख अध्ययन बिंदु 2	प्रमुख अध्ययन बिंदु 3	प्रमुख अध्ययन बिंदु 4
परीक्षाओं में सर्वाधिक पूछे जाने वाले 105 क्लिष्ट पर्यायवाची समूह (105+ Master Synonym Groups)	परीक्षा में पूछे जाने वाले 105 कठिन विलोम युग्म (105+ High-Yield Antonym Pairs)	परीक्षा में सर्वाधिक पूछे जाने वाले 105 तत्सम-तद्भव शब्द युग्म (105+ Tatsam-Tadbhav Pairs)	वर्तनी शुद्धि मास्टर-चार्ट — 105 सर्वाधिक भ्रामक शब्दों का शुद्ध रूप (105+ Spelling Correction Master List)

5.1 परीक्षाओं में सर्वाधिक पूछे जाने वाले 105 क्लिष्ट पर्यायवाची समूह (105+ Master Synonym Groups)

1. **अग्नि:** आग, अनल, पावक, दहन, **जातवेदस, कृशानु, वैश्वानर, हुताशन, धनंजय, रोहिताश्व, वायुसखा, चित्रभानु, विभावसु, शिखी, अरुण**।
2. **अश्व (घोड़ा):** तुरंग, हय, बाजि, घोटक, **सैंधव, रविसुत, दधिका, सरता, आशुविमानक**।
3. **असुर (राक्षस):** दैत्य, दानव, दनुज, निशाचर, रजनीचर, **यातुधान, तमीचर, सुरारि, शंबर, इंद्रारि, मनुजाद, रात्रिंचर**।
4. **अमृत:** सुधा, सोम, पीयूष, अमिय, **अमी, सुरभोग, जीवनोदक**।
5. **अरण्य (जंगल/वन):** कानन, विपिन, **अटवी, कांतार, दावा, गहन, विटप**।
6. **आँख:** नेत्र, नयन, लोचन, चक्षु, दृग, **अक्षि, अंबक, चख, दीदा, विलोचन, प्रेक्षण**।
7. **आकाश:** गगन, नभ, अंबर, व्योम, **अनंत, अंतरिक्ष, शून्य, पुष्कर, अभ्र, द्यौ, तारापथ, नाक, फलक, खगोल**।
8. **आम:** आम्र, रसाल, **सहकार, अतिसौरभ, पिकवल्लभ, च्युत, अमृतफल, फलश्रेष्ठ**।
9. **इंद्र:** सुरपति, देवराज, महेंद्र, मधवा, **शक्र, पुरंदर, शचीपति, विडौजा, कौशिक, मेघवाहन, पुरुहूत, सहस्राक्ष, वज्रधर, जिष्णु, मरुत्पाल**।
10. **इंद्राणी:** शची, पुलोमजा, **पौलोमी, शतावरी, मघवानी, इंद्रवधू**।
11. **ईश्वर:** परमात्मा, प्रभु, ईश, जगदीश, **अज, विभु, दीनानाथ, अगोचर, निरंजन, सच्चिदानंद**।
12. **कमल:** जलज, पंकज, नीरज, सरोज, अंबुज, **इंदीवर (नीला कमल), पुंडरीक (श्वेत कमल), कोकनद (लाल कमल), शतदल, अरविंद, राजीव, उत्पल, कुवलय, तामरस, कंज, नलिन, अब्ज, वारिज, सरोरुह, पद्म**।
13. **कामदेव:** मदन, मनोज, अनंग, रतिपति, मीनकेतु, **मकरध्वज, मार, स्मर, मनसिज, पुष्पधन्वा, पंचशर, कंदर्प, अदेह, कुसुमेषु, प्रद्युम्न, मयन**।
14. **किरण:** अंशु, रश्मि, मयूख, **मरीचि, कर, कलाकेतु, दीधिति, प्रभा, अर्चि**।
15. **कोयल:** पिक, कोकिल, **परभृत (कौए द्वारा पाली गई), मदनशलाका, कलघोष, वसंतदूत, श्यामा, वनप्रिया**।
16. **कौआ:** काक, वायस, काग, **पिशुन (चुगलखोर भी), करठ, एकाक्ष, बलिपुष्ट, करटक**।
17. **कृष्ण:** माधव, केशव, गोविंद, मुरारि, दामोदर, **हृषीकेश, मुकुंद, कंसारि, जनार्दन, द्वारिकाधीश, बनवारी, यदुनंदन, ब्रजवल्लभ**।
18. **गणेश:** विनायक, गजानन, लंबोदर, एकदंत, **हेरम्ब, द्वैमातुर, वक्रतुंड, विघ्ननाशक, भवानीनंदन, मोदकप्रिय, मूषकवाहन, गणाधिप**।
19. **गंगा:** भागीरथी, मंदाकिनी, जाह्नवी, सुरसरि, देवनदी, **त्रिपथगा, विष्णुपदी, ध्रुवनंदा, सुरधनी, नंदेश्वरी, अलकनंदा**।
20. **गदहा:** खर, गर्दभ, **वैशाखनंदन, रासभ, धूसर, चक्रीवान, बेसर**।
21. **गृह (घर):** गेह, निकेतन, भवन, सदन, आगार, आयतन, आवास, **निलय, धाम, मंदिर, अयन, आलय, ओक, आशियाना**।
22. **चन्द्रमा:** शशि, राकेश, रजनीश, मयंक, विधु, सुधांशु, हिमांशु, **मृगांक, कलानिधि, द्विजराज, छपाकर, शशधर, निशिपति, तारकेश्वर, ओषधीश, राकापति**।
23. **चाँदनी:** चंद्रिका, कौमुदी, **ज्योत्स्ना, चंद्रमरीचि, उजियारी, जुन्हाई, अमृततरंगिणी, चंद्रकला**।
24. **चोर:** तस्कर, दस्यु, रजनीचर, **मोषक, कुंभिल, खनक, साहसिक**।
25. **जल:** वारि, नीर, तोय, अंबु, उदक, पय, सलिल, **पाथ, अप, सर्वमुख, मेघपुष्प, जीवन, आब, संबर**।
26. **जमुना (यमुना):** कालिंदी, सूर्यसुता, रविजा, **अर्कजा, तरणि-तनूजा, कृष्णा, भानुजा, जमुना, कालगंगा**।

27. **जीभ:** जिह्वा, रसना, **रसज्ञा, रसिका, चंचला, वाचा, जबान**।
28. **तरंग (लहर):** ऊर्मि, वीचि, हिलोर, **कल्लोल, लहरी**।
29. **तलवार:** असि, कृपाण, खड्ग, **चंद्रहास, करवाल, शमशीर, तेग, भुजाली**।
30. **तोता:** शुक, कीर, सुआ, **दाड़िमप्रिय, रक्ततुंड, सुग्गा**।
31. **तालाब:** सर, सरोवर, तड़ाग, पुष्कर, जलाशय, **पद्माकर, ह्रद, कासार, पल्वल, पोखर, छद, दह**।
32. **दिन:** दिवस, वासर, दिवा, **अहन्, वार, प्रमाण, याम**।
33. **दुर्गा:** चंडिका, भवानी, कुमारी, कल्याणी, महागौरी, **कालिका, कामाक्षी, चामुंडा, सिंहवाहिनी, अजा, धात्री, शाम्भवी**।
34. **दूध:** दुग्ध, क्षीर, पय, गोरस, स्तन्य, पीयूष।
35. **देवता:** सुर, अमर, देव, निर्जर, **विबुध, त्रिदश, आदित्य, गीर्वाण, अमर्त्य, अजर, सुपर्वा**।
36. **द्रौपदी:** कृष्णा, पांचाली, याज्ञसेनी, **सैरंध्री, द्रुपदसुता, नित्ययौवना**।
37. **धन:** द्रव्य, वित्त, संपदा, विभूति, दौलत, **श्री, अर्थ, कलधौत**।
38. **धनुष:** चाप, शरासन, कमान, कोदंड, **पिनाक (शिव का धनुष), सारंग (विष्णु का धनुष), गांडीव (अर्जुन का धनुष), विशिखासन**।
39. **नदी:** सरिता, तटिनी, वाहिनी, **तरंगिणी, निर्झरिणी, शैलजा, आपगा, निम्नगा, कूलंकषा, सिंधुगामिनी, पयस्विनी, स्रोतस्विनी**।
40. **नाव:** नौका, तरणी (छोटी 'णि' = नाव; बड़ी 'तरणि' = सूर्य!), जलयान, **बेड़ा, डोंगी, पतंग, तरी**।
41. **पक्षी:** खग, विहग, विहंग, द्विज (दो बार जन्म लेने वाला — पक्षी, दांत, ब्राह्मण, चंद्रमा), **अंडज, शकुंत, पखेरू, पतंग, परिंदा, चिड़िया**।
42. **पति:** स्वामी, प्राणनाथ, वल्लभ, भर्ता, **आर्यपुत्र, कांत, ईश, बालम, खाविंद**।
43. **पत्नी:** भार्या, दारा, गृहिणी, वधू, प्राणप्रिया, **कलत्र, वामांगिनी, सहधर्मिणी, तिय, कांता, वामा, अर्द्धांगिनी**।
44. **पर्वत:** पहाड़, गिरि, अचल, शैल, धरणीधर, **महीधर, भूधर, अद्रि, नग, तुंग, मेरु, श्रृंगी**।
45. **पवन (हवा):** वायु, समीर, अनिल, मारुत, वात, **प्रभंजन, बयार, पवमान, समीरण, मातरिश्वा, गंधवह**।
46. **पार्वती:** उमा, गौरी, शिवानी, भवानी, **अपर्णा, शैलसुता, गिरिजा, रुद्राणी, आर्या, अंबिका, सर्वमंगला, हेमवती, मेनकासुता**।
47. **पुत्र:** सुत, तनय, आत्मज, नंदन, पूत, **तनूज, वत्स**।
48. **पुत्री:** सुता, तनया, आत्मजा, नंदिनी, दुहिता, **तनूजा, अंगजा**।
49. **पृथ्वी:** भू, भूमि, धरा, धरती, धरित्री, वसुधा, वसुंधरा, **अवनि, मेदिनी, क्षिति, मही, वीजप्रसू, इला, उर्वी, अचला, रत्नगर्भा, रसा**।
50. **फूल (पुष्प):** सुमन, कुसुम, मंजरी, **प्रसून, पुहुप, गुल, लतांत**।
51. **बंदर:** वानर, कपि, मर्कट, **शाखामृग, हरि, कीश, प्लवंग**।
52. **बलराम:** हलधर, मूसली, रेवतीरमण, **हलायुध, रोहिणेय, संकर्षण, बलभद्र, कामपाल, श्यामबंधु**।
53. **बाण (तीर):** शर, सायक, शिलीमुख (भौंरा भी), **विशिख, आशुग, इषु, नाराच, तोमर**।
54. **बादल (मेघ):** जलद, नीरद, वारिद, पयोद, अंबुद, तोयद, पयोधर, **बलाहक, जीमूत, अभ्र, पर्जन्य, घन, वारिवाह, धराधर**।
55. **बिजली:** चपला, चंचला, दामिनी, सौदामिनी, तड़ित, विद्युत, **क्षणप्रभा, चंपा, ऐरावती, घनवल्ली, बीजुरी, कौंधा**।
56. **ब्रह्मा:** विधि, विधाता, चतुरानन, प्रजापति, कमलासन, **हिरण्यगर्भ, लोकेश, अज, स्वयंभू, सदानंद, अंडज, गिरापति, नाभिज**।
57. **ब्राह्मण:** द्विज, विप्र, भूदेव, **महीसुर, अग्रजन्मा, भूसुर**।
58. **भौंरा (भ्रमर):** मधुप, मधुकर, अलि, भृंग, **द्विरेफ, षट्पद, शिलीमुख, चंचरीक, मिलिंद, मधुलोभी**।
59. **मछली:** मत्स्य, मीन, **झष, शफरी, जलजीवन, जलतोरी, अंडभव**।
60. **मदिरा (शराब):** सुरा, वारुणी, मद्य, हाला, **आसव, कादंबरी, माधवी, मध्वावस**।
61. **महादेव (शिव):** शंकर, शंभु, महेश, त्रिलोचन, नीलकंठ, **चंद्रशेखर, पशुपति, आशुतोष, पिनाकी, हर, कैलाशपति, शितिकंठ, वामदेव, ललाटाक्ष, गंगाधर, मदनारि, त्रिपुरारि**।
62. **मोर:** मयूर, केकी, शिखी, बर्ही, **नीलकंठ, कलापी, भुजंगभुक, अहिभुक, शिवसुतवाहन, सारंग, नर्तकप्रिय, सितापांग**।
63. **मृत्यु:** निधन, मरण, देहावसान, पंचत्व, **अंतकाल, निर्वाण, इंतकाल, काशीवास, स्वर्गवास**।

64. **मेंढक:** मंडूक, दादुर, **भेग, शालूर, वर्षाभू, चातक, द**।
65. **यमराज:** सूर्यपुत्र, जीवितेश, अंतक, धर्मराज, **कृतांत, दंडधर, कीनाश, श्राद्धदेव, यम, काल**।
66. **रात्रि (रात):** निशा, रजनी, यामिनी, विभावरी (तारों भरी रात), **त्रियामा, शर्वरी, निशीथ (अर्द्धरात्रि), तमिस्रा, क्षणदा, छपा, रैन**।
67. **राजा:** नृप, भूप, भूपति, महीप, नरेश, **नृपति, भूपाल, राव, नरेंद्र, अवनीश, क्षितिज, सम्राट**।
68. **रामचंद्र:** रघुपति, राघव, सीतापति, कौशल्यानंदन, **कमलनयन, जानकीवल्लभ, खरारि, रघुवीर, अवधेश**।
69. **लक्ष्मी:** कमला, पद्मा, रमा, हरिप्रिया, श्री, **इंदिरा, सिंधुसुता, चंचला, भार्गवी, लोकमाता, क्षीरोदतनया, पद्मजा**।
70. **लक्ष्मण:** लखन, सौमित्र, रामानुज, **अनंत, शेषावतार, लछमन**।
71. **वृक्ष (पेड़):** तरु, द्रुम, पादप, विटप, अगम, **गाछ, शाखी, भूरुह, महीरुह**।
72. **विष्णु:** नारायण, चक्रपाणि, चतुर्भुज, जनार्दन, लक्ष्मीपति, **अच्युत, गरुड़ध्वज, उपेंद्र, दामोदर, हृषीकेश, विश्वंभर, कैटभारि, पुंडरीकाक्ष, माधव, श्रीपति, मुकुंद, वनमाली**।
73. **शेर (सिंह):** केसरी, मृगेंद्र, मृगराज, वनराज, शार्दूल, **नाहर, पंचानन, केहरि, मृगारि, व्याघ्र, पुंडरीक, बाहुबल, नखाधाय**।
74. **समुद्र:** सागर, जलधि, पयोधि, उदधि, पारावार, नदीश, **रत्नाकर, अर्णव, सिंधु, वारिधि, नीरनिधि, तोयनिधि, अकूपा, कंपति**।
75. **सरस्वती:** भारती, वीणापाणि, शारदा, वाग्देवी, हंसवाहिनी, **गिरा, भाषा, इला, ब्राह्मी, महाश्वेता, वागीश, श्री, निधात्री, कर्णिका**।
76. **सर्प (साँप):** अहि, भुजंग, विषधर, व्याल, फणी, उरग, **पन्नग, नाग, चक्षुश्रवा (आँखों से सुनने वाला), पवनाशन (हवा पीकर रहने वाला), काकोदर, सरीसृप**।
77. **सीता:** जानकी, वैदेही, जनकसुता, मैथिली, **भूमिजा, रामप्रिया, अवनिजा, जनकतनया**।
78. **सूर्य:** रवि, भानु, दिनकर, दिवाकर, भास्कर, प्रभाकर, **सविता, पतंग, आदित्य, अर्क, कमलबंधु, हंस, मार्तण्ड, अंशुमाली, चंडांशु, तरणि, मित्र, पूषा**।
79. **सोना (स्वर्ण):** कनक, कंचन, हेम, हाटक, **जात रूप, चामीकर, हिरण्य, कलधौत, तामरस, सुवर्ण, महारजत**।
80. **स्त्री (नारी):** अबला, वनिता, महिला, कामिनी, रमणी, **प्रमदा, ललना, अंगना, वामा, भामा, तिय, कांता, सुंदरी**।
81. **स्वर्ग:** सुरलोक, देवलोक, दिव, **द्यौ, नाक, परलोक, इंद्रपुरी, बैकुंठ, गोलोक**।
82. **हनुमान:** पवनसुत, पवनकुमार, महावीर, आंजनेय, कपीश, **मारुति, बज्रंगबली, रामदूत, जितेंद्रिय, कपिंद्र**।
83. **हाथी:** गज, हस्ती, मतंग, कुंजर, **द्विप (दो बार पानी पीने वाला), नाग, करी, वारण, वितुंड, सिंदूर, गयंद, दंती, कुंभी**।
84. **हंस:** मराल, चक्रांग, **मानसौक, कलहंस, मुक्तभुक्, सरस्वतीवाहन**।
85. **हिमालय:** हिमगिरि, हिमाचल, गिरिराज, **शैलेंद्र, नगपति, हिमाद्रि, नगाधिराज**।
86. **हृदय:** उर, छाती, वक्ष, वक्षस्थल, **हिय, अंतःकरण**।
87. **हाथ:** हस्त, कर, पाणि, बाहु, भुजा, **भुज**।
88. **अतिथि:** अभ्यागत, पाहून, आगंतुक, मेहमान, **गृहागत**।
89. **अनाज:** अन्न, धान्य, गल्ला, **शस्य, खाद्यान्न**।
90. **अर्जुन:** पार्थ, धनंजय, गुडाकेश, सव्यसाची (दोनों हाथों से बाण चलाने वाला), **गांडीवधारी, कपिध्वज, कौंतेय, बीभत्सु, किरीटी, श्वेतवाहन**।
91. **अप्सरा:** देवांगना, सुरबाला, दिव्यांगना, **सुरसुंदरी, देवबाला, अरुणप्रिया**।
92. **आँसू:** अश्रु, नेत्रजल, नयनजल, **चक्षुजल, नेत्रनीर**।
93. **आँगन:** अँगना, अजिरा, प्रांगण, **बगर**।
94. **इच्छा:** अभिलाषा, आकांक्षा, कामना, लालसा, उत्कंठा, **ईहा, स्पृहा, लिप्सा, वांछा, मनोरथ, एषणा**।
95. **ईख (गन्ना):** इक्षु, ऊख, **पैड़ी, रसदंड, रसाल**।
96. **कपड़ा (वस्त्र):** चीर, वसन, पट, अंबर, दुकूल, **चेल, परिधान, लिबास**।
97. **कल्पवृक्ष:** कल्पतरु, देवतरु, सुरतरु, **मंदार, पारिजात, हरिचंदन, कल्पद्रुम**।
98. **कबूतर:** कपोत, **हारित, रक्तलोचन, पारावत, परेवा**।
99. **किरण/प्रभा (चमक):** आभा, दीप्ति, द्युति, कांति, छवि, सुषमा।

100. **कुबेर:** यक्षराज, धनाधिप, धनद, **किन्नरेश, राजराज, अलंकेश, वैश्रवण**।

101. **केला:** कदली, **रंभा, भानुफल, गजवसा, मोचा**।

102. **क्रोध:** रोष, कोप, अमर्ष, **प्रतिघात, तैश, गुस्सा**।

103. **खून (रक्त):** रुधिर, लहू, **शोणित, लोहित**।

104. **गंगाधर / चंद्रमौलि:** शशिशेखर, आशुतोष, भूतेश, उमापति।

105. **चंदन:** मलय, **मंगल्य, गंधराज, श्रीखंड, सर्पावास**।

5.2 परीक्षा में पूछे जाने वाले 105 कठिन विलोम युग्म (105+ High-Yield Antonym Pairs)

(नियम: तत्सम शब्द का विलोम सदैव तत्सम और तद्भव का विलोम तद्भव तथा संज्ञा का संज्ञा व विशेषण का विशेषण होना चाहिए)

शब्द	सटीक विलोम	शब्द	सटीक विलोम	शब्द	सटीक विलोम
1. **अथ**	**इति**	36. **ऋजु** (सीधा)	**वक्र** (टेढ़ा)	71. **नैसर्गिक / प्राकृतिक**	**कृत्रिम**
2. **अभिज्ञ** (जानकार)	**अनभिज्ञ**	37. **एकत्र / संकलन**	**विकीर्ण / व्यकलन**	72. **नूतन / नवीन**	**पुरातन / प्राचीन**
3. **अज्ञ** (मूर्ख)	**विज्ञ / प्रज्ञ**	38. **ऐहिक**	**पारलौकिक**	73. **परुष** (कठोर)	**कोमल**
4. **अंतरंग**	**बहिरंग**	39. **ऐश्वर्य**	**अनैश्वर्य**	74. **पाश्चात्य / पौरस्त्य**	**पौरस्त्य (पूर्वी) / पाश्चात्य**
5. **अतिवृष्टि**	**अनावृष्टि**	40. **ओतप्रोत**	**विहीन**	75. **प्रच्छन्न** (छिपा हुआ)	**प्रतिपन्न / प्रकट**
6. **अधुनातन**	**पुरातन**	41. **औदार्य**	**अनौदार्य**	76. **प्रसारण / विस्तार**	**संकुचन / संक्षेप**
7. **अध्यवसाय**	**अनध्यवसाय**	42. **औद्धत्य**	**विनीतता**	77. **प्रवृत्ति**	**निवृत्ति**
8. **अनुरक्ति / अनुराग**	**विरक्ति / विराग**	43. **कनिष्ठ**	**ज्येष्ठ / वरिष्ठ**	78. **प्राची** (पूर्व दिशा)	**प्रतीची** (पश्चिम दिशा)
9. **अनुलोम**	**प्रतिलोम / विलोम**	44. **कपटी / कुटिल**	**निष्कपट / सरल**	79. **बर्बर**	**सभ्य**
10. **अमर**	**मर्त्य**	45. **कर्श**	**मधुर**	80. **बहिरंग**	**अंतरंग**
11. **अर्पण**	**ग्रहण**	46. **कृपण** (कंजूस)	**उदार / दाता**	81. **भूगोल**	**खगोल**
12. **अर्वाचीन**	**प्राचीन**	47. **कृतज्ञ**	**कृतघ्न**	82. **भौतिक**	**आध्यात्मिक**
13. **अल्पज्ञ**	**बहुज्ञ / सर्वज्ञ**	48. **क्षणिक**	**शाश्वत**	83. **मसूण** (चिकना)	**रुक्ष** (खुरदरा)
14. **अवनि** (पृथ्वी)	**अंबर** (आकाश)	49. **क्षुद्र**	**विराट / विशाल**	84. **मूक**	**वाचाल**
15. **अवर**	**प्रवर**	50. **गरल** (विष)	**सुधा** (अमृत)	85. **यथार्थ**	**कल्पित / आदर्श**
16. **अनाहूत**	**आहूत**	51. **गंभीर / गहन**	**उथला / छिछला / वाचाल**	86. **यौवन**	**जरा** (बुढ़ापा)
17. **आकर्षण**	**विकर्षण / प्रतिकर्षण**	52. **ग्रस्त**	**मुक्त**	87. **रथी**	**विरथ**
18. **आकुंचन**	**प्रसारण**	53. **ग्राह्य**	**त्याज्य / अग्राह्य**	88. **लघिमा**	**गरिमा**
19. **आगामी**	**विगत**	54. **चिरंतन**	**नश्वर**	89. **व्यास**	**समास**
20. **आग्रह**	**दुराग्रह**	55. **चपल**	**गंभीर / स्थिर**	90. **मनोज / काम**	**निष्काम**
21. **आमिष / सामिष**	**निरामिष** (दोनों का विलोम निरामिष है!)	56. **जंगम** (चलने वाला)	**स्थावर** (स्थिर)	91. **विग्रह / विच्छेद**	**संधि / समास**
22. **आर्द्र**	**शुष्क**	57. **जाग्रत / जागरण**	**सुप्त / सुषुप्ति / निद्रा**	92. **विस्तृत**	**संक्षिप्त**

शब्द	सटीक विलोम	शब्द	सटीक विलोम	शब्द	सटीक विलोम
23. आलोक / तिमिर	तिमिर / आलोक	58. जाति	विजाति / कुजाति	93. वैमनस्य	सौमनस्य
24. आविर्भाव	तिरोभाव	59. तामसिक	सात्त्विक	94. व्यष्टि (एक व्यक्ति)	समष्टि (समाज/समूह)
25. आह्वान	विसर्जन	60. तीक्ष्ण / तीव्र	मंद / कुंठित	95. शंकित / निश्शंक	निश्शंक / शंकित
26. इहलोक	परलोक	61. तुच्छ	महान	96. शोषक	पोषक
27. ईप्सित	अनीप्सित	62. तन्वंगी	स्थूलांगी	97. श्लील	अश्लील
28. उत्कर्ष	अपकर्ष	63. धृष्ट	विनीत / नम्र	98. संकलन	व्यकलन
29. उत्थान	पतन	64. ध्वंस	निर्माण	99. संकीर्ण	विस्तीर्ण / उदार
30. उदयाचल	अस्ताचल	65. नख	शिख	100. सकाम	निष्काम
31. उदीची (उत्तर दिशा)	अवाची (दक्षिण दिशा)	66. निंद्य / वंद्य	वंद्य / निंद्य (स्तुत्य)	101. सधवा	विधवा
32. उद्धत	विनीत / सौम्य	67. निरामय (निरोग)	आमय (रोगयुक्त)	102. सुलभ	दुर्लभ
33. उन्मीलन (आँख खुलना)	निमीलन (आँख बंद होना)	68. निषिद्ध	विहित	103. सुधा / पीयूष	हलाहल / विष / गरल
34. उन्मूलन (जड़ से उखाड़ना)	रोपण (लगाना)	69. न्यून	अधिक	104. सृष्टि	प्रलय
35. उर्वर / उर्वरा	ऊसर / बंजर	70. निरपेक्ष	सापेक्ष	105. ह्रास	वृद्धि / विकास

5.3 परीक्षा में सर्वाधिक पूछे जाने वाले 105 तत्सम-तद्भव शब्द युग्म (105+ Tatsam-Tadbhav Pairs)

तत्सम (संस्कृतनिष्ठ शुद्ध रूप)	तद्भव (हिंदी विकसित रूप)	तत्सम (संस्कृतनिष्ठ शुद्ध रूप)	तद्भव (हिंदी विकसित रूप)	तत्सम (संस्कृतनिष्ठ शुद्ध रूप)	तद्भव (हिंदी विकसित रूप)
1. अक्षोट	अखरोट	36. गोधूम	गेहूँ	71. पर्यंक	पलंग
2. अक्षवाट	अखाड़ा	37. गोमय / गोविष्ठा	गोबर	72. पनस	कटहल
3. अट्टालिका	अटारी	38. गृध्र	गीध (गिद्ध)	73. पर्पट	पापड़ / पराठा
4. अज्ञान	अजान	39. चणक	चना	74. पार्श्व	पास
5. अमावस्या	अमावस	40. चत्वारि / चतुर्थ	चार / चौथा	75. प्रियंका / प्रिय	पिया
6. अमृत	अमिय	41. चंचु	चोंच	76. बलीवर्द	बैल
7. अर्क	आक (मदार)	42. चर्मकार	चमार	77. बक	बगुला
8. अष्टादश / अष्टौ	अठारह / आठ	43. चन्द्रिका	चाँदनी	78. बधिर	बहरा
9. अश्रु	आँसू	44. चतुष्पद / चतुष्पथ	चौपाया / चौराहा	79. भ्रू	भौंह
10. आभीर	अहीर	45. चोर / चौर्य	चोर / चोरी	80. भक्त / भगत	भगत
11. आमलक	आँवला	46. छत्र / छाया	छाता / छाँह	81. भल्लूक	भालू
12. आदित्यवार	इतवार	47. जंघा	जाँघ	82. भाद्रपद	भादों
13. आर्द्रक	अदरक	48. जामाता	जमाई / दामाद	83. मक्षिका / मशक	मक्खी / मच्छर
14. इक्षु	ईख	49. जीर्ण	झीना / पुराना	84. मर्कटी	मकड़ी
15. इष्टिका	ईंट	50. टंकशाला	टकसाल	85. मंजूषा	मंजीरा / पिटारी

तत्सम (संस्कृतनिष्ठ शुद्ध रूप)	तद्भव (हिंदी विकसित रूप)	तत्सम (संस्कृतनिष्ठ शुद्ध रूप)	तद्भव (हिंदी विकसित रूप)	तत्सम (संस्कृतनिष्ठ शुद्ध रूप)	तद्भव (हिंदी विकसित रूप)
16. उपालम्भ	उलाहना	51. डाकिनी	डायन	86. मश्रु / श्मश्रु	मूँछ
17. उष्ट्र	ऊँट	52. तीक्ष्ण	तीखा	87. रज्जु	रस्सी
18. उद्वर्तन	उबटन	53. तैल	तेल	88. लवंग	लौंग
19. उलूखल	ओखली	54. त्वरित	तुरंत	89. लोमशा	लोमड़ी
20. उपाध्याय	ओझा	55. दंष्ट्रा / दंतधावन	दाढ़ / दातून	90. वंध्या	बाँझ
21. कपट / कपाट	कपड़ा (करपट!) / किवाड़	56. दधि / दुग्ध	दही / दूध	91. वानर / वत्स	बंदर / बच्चा (बछड़ा)
22. कर्पट	कपड़ा	57. देवर (द्विवर)	देवर	92. विभूति	भभूत
23. कर्पूर	कपूर	58. दृष्टि	दीठि	93. वृश्चिक	बिच्छू
24. कर्तव्य / कर्तरी	करतब / कैंची	59. धरित्री	धरती	94. श्यामल / श्वशुर	साँवला / ससुर
25. कदली	केला	60. धृष्ट	ढीठ	95. श्याल (श्यालक)	साला
26. कंकती	कंघी	61. धूम्र	धुआँ	96. शृंगार / शृगाल	सिंगार / सियार
27. कास	खाँसी	62. नारिकेल	नारियल	97. शृंग / श्मशान	सींग / मसान
28. कुक्कुर / कुक्कुट	कुत्ता / मुर्गा	63. नकुल	नेवला	98. सपत्नी	सौत
29. कुक्षि	कोख	64. नव्य	नया	99. सर्षप	सरसों
30. कुम्भकार	कुम्हार	65. नापित	नाई	100. सौभाग्य	सुहाग
31. कूर्चिका	कूची	66. निम्ब / निम्बक	नीम / नींबू	101. स्कन्ध / स्तम्भ	कंधा / खंभा
32. कैवर्त	केवट	67. पक्ष / पंक्ति	पंख (पखवाड़ा) / पंगत	102. स्थाली	थाली
33. कोष्ठ / कोष्ठिका	कोठा / कोठी	68. पक्व	पका	103. हरिद्रा	हल्दी
34. गभीर	गहरा	69. परशु	फरसा	104. हट्ट	हाट
35. गर्दभ	गदहा (गधा)	70. परीक्षा	परख	105. हिंगु	हींग

5.4 वर्तनी शुद्धि मास्टर-चार्ट — 105 सर्वाधिक भ्रामक शब्दों का शुद्ध रूप (105+ Spelling Correction Master List)

अशुद्ध वर्तनी (Common Error)		अशुद्ध वर्तनी (Common Error)		अशुद्ध वर्तनी (Common Error)	
1. उज्वल / उज्वल्ल	**उज्ज्वल** (दोनों 'ज्' आधे)	36. द्वारिका	**द्वारका** ('रि' नहीं, 'र' होता है!)	71. महत्व / तत्व	**महत्त्व / तत्त्व** (दो आधे 'त्')
2. कवयित्री / कवियत्री	**कवयित्री** ('व' पर मात्रा नहीं)	37. अहिल्या	**अहल्या** ('ह' पर मात्रा नहीं!)	72. मैथलीशरण	**मैथिलीशरण**
3. ज्योत्सना	**ज्योत्स्ना** (आधा 'त्' और आधा 'स्')	38. कैलाश	**कैलास** (दंत्य 'स' मानक तत्सम है)	73. सांकृत्यायन	**सांकृत्यायन** (राहुल सांकृत्यायन)
4. श्रृंगार	**शृंगार** ('श' में केवल '' लगेगा, 'र' नहीं!)	39. कालिदास	**कालिदास** ('ल' में छोटी 'इ')	74. वांगमय	**वाङ्मय** ('ङ्' के नीचे हलंत)
5. हिरण्यकशिपु / हिरण्यकश्यप	**हिरण्यकशिपु**	40. बाल्मीकि / वाल्मीकी	**वाल्मीकि** ('म' में बड़ी, 'क' में छोटी)	75. प्रदर्शनी / प्रियदर्शिनी	**प्रदर्शनी** ('श' में इ नहीं) / **प्रियदर्शिनी**

अशुद्ध वर्तनी (Common Error)		अशुद्ध वर्तनी (Common Error)		अशुद्ध वर्तनी (Common Error)	
6. अंताक्षरी	**अंत्याक्षरी**	41. जीजीविषा / जिजीवीषा	**जिजीविषा** (छोटी-बड़ी-छोटी)	76. अनुग्रहीत / संग्रहीत	**अनुगृहीत / संगृहीत** ('गृ' में '')
7. आशीरवाद / आर्शीवाद	**आशीर्वाद** ('व' के ऊपर रेफ)	42. मुमूर्षु / मुमुर्षू	**मुमूर्षु** (छोटा-बड़ा-छोटा)	77. पैत्रिक / पैतृक	**पैतृक**
8. सन्यासी	**संन्यासी** (बिंदु और आधा 'न्' दोनों!)	43. सुश्रुषा / शुश्रूषा	**शुश्रूषा** (तालव्य 'श' में छोटा उ, 'श्रू' बड़ा)	78. जागृत / जाग्रत	**जाग्रत** (विशेषण) / **जागृति** (संज्ञा)
9. अंतर्राष्ट्रीय	**अंतरराष्ट्रीय / अंतर्राष्ट्रीय**	44. अतिश्योक्ति	**अतिशयोक्ति** (पूरा 'श' होता है!)	79. दृष्टा / सृष्टा	**द्रष्टा / स्रष्टा** (र पदेन होता है!)
10. उपरोक्त	**उपर्युक्त** (उपरि + उक्त)	45. तदोपरांत	**तदुपरांत** (तत् + उपरांत)	80. रचियता	**रचयिता**
11. अनाधिकार	**अनधिकार** (अन् + अधिकार — 'ना' नहीं!)	46. अत्याधिक	**अत्यधिक** (अति + अधिक — 'त्या' नहीं!)	81. कुमुदनी	**कुमुदिनी**
12. दुरावस्था	**दुरवस्था** (दुः + अवस्था — 'रा' नहीं!)	47. गत्यावरोध	**गत्यवरोध** (गति + अवरोध)	82. विरहणी	**विरहिणी**
13. बारात	**बरात**	48. पुनरावलोकन	**पुनरवलोकन** (पुनः + अवलोकन)	83. गृहिणी / गृहणी	**गृहिणी**
14. हस्तक्षेप	**हस्तक्षेप** (अनाधिकार चेष्टा = **हस्तक्षेप**)	49. स्वावलंबन	**स्वावलंबन** (स्व + अवलंबन)	84. सरोजनी	**सरोजिनी**
15. निरोग / निरोधी	**नीरोग** (निः + रोग)	50. आधीन	**अधीन** ('आ' नहीं, 'अ' होता है!)	85. याज्ञवल्क्य	**याज्ञवल्क्य** (आधा 'ल्' और आधा 'क्')
16. निरपराधी	**निरपराध** ('निरपराधी' अशुद्ध है!)	51. व्यवहारिक	**व्यावहारिक** ('इक' प्रत्यय से आदि वृद्धि)	86. अमावश्या	**अमावस्या**
17. प्रमाणिक	**प्रामाणिक** (प्रमाण + इक)	52. रसायनिक	**रासायनिक** (रसायन + इक)	87. मिष्ठान्न / मिष्ठान	**मिष्टान्न** (मिष्ट + अन्न = मीठा अन्न!)
18. आध्यात्मिक	**आध्यात्मिक** (अध्यात्म + इक)	53. एतिहासिक	**ऐतिहासिक** (इतिहास + इक)	88. दवाईयाँ / मिठाईयाँ	**दवाइयाँ / मिठाइयाँ** (बहुवचन में बड़ी 'ई' छोटी 'इ' बनती है!)
19. सांसारिक	**सांसारिक** (संसार + इक)	54. पौराणिक	**पौराणिक** (पुराण + इक)	89. श्रीमति	**श्रीमती**
20. साप्ताहिक	**साप्ताहिक** (सप्ताह + इक)	55. औद्योगिक	**औद्योगिक** (उद्योग + इक)	90. कालिदास	**कालिदास**
21. सौंदर्यता	**सौंदर्य** अथवा **सुंदरता** ('य' और 'ता' एक साथ कभी नहीं आते!)	56. माधुर्यता / बाहुल्यता	**माधुर्य (मधुरता) / बाहुल्य (बहुलता)**	91. पूज्यनीय / पूजनीय	**पूजनीय** अथवा **पूज्य** ('पूज्यनीय' अशुद्ध है!)
22. माननीय	**माननीय**	57. परितोषिक	**पारितोषिक**	92. मनोकामना	**मनःकामना**
23. पयपान	**पयःपान**	58. मनोचिकित्सक	**मनश्चिकित्सक**	93. निसंतान	**निस्संतान / निःसंतान**
24. दुश्चरित्र	**दुश्चरित्र**	59. चारदीवारी	**चहारदीवारी / चारदीवारी**	94. शमशान	**श्मशान** (आधा 'श्')
25. अगामी	**आगामी**	60. अजमाइश	**आजमाइश**	95. अंताक्षरी	**अंत्याक्षरी**
26. अहार	**आहार**	61. अजीविका	**आजीविका**	96. कालिंदी	**कालिंदी**
27. प्रदर्शिनी	**प्रदर्शनी**	62. कृतघ्नी	**कृतघ्न**	97. निछावर	**न्योछावर**
28. त्यौहार	**त्योहार** (एक ही मात्रा होती है!)	63. न्यौछावर	**न्योछावर** (एक मात्रा मानक है)	98. पड़ौसी	**पड़ोसी**

अशुद्ध वर्तनी (Common Error)		अशुद्ध वर्तनी (Common Error)		अशुद्ध वर्तनी (Common Error)	
29. नौकरी	**नौकरी**	64. औद्योगीकरण	**उद्योगीकरण** ('करण' प्रत्यय में आदि वृद्धि नहीं होती!)	99. सशक्तिकरण	**सशक्तीकरण** ('करण' से पूर्व 'इ' दीर्घ 'ई' होती है!)
30. केंद्रीकरण	**केंद्रीकरण** ('केंद्रीयकरण' अशुद्ध है!)	65. मानवीयकरण	**मानवीकरण**	100. राजनीतिक / राजनैतिक	**राजनीतिक** (मानक व्याकरणिक रूप)
31. अद्वितीय	**अद्वितीय**	66. अंतर्धान / अंतर्ध्यान	**अंतर्धान** ('अंतर्ध्यान' अशुद्ध है!)	101. साष्टांग	**साष्टांग** ('साष्टांग प्रणाम' के साथ 'दंडवत' नहीं लगता)
32. स्वाति	**स्वाति**	67. दधीचि	**दधीचि**	102. वशिष्ठ	**वसिष्ठ**
33. कौशल्या	**कौसल्या / कौशल्या**	68. भगीरथ / भागीरथी	**भगीरथ** (राजा) / **भागीरथी** (गंगा)	103. छत्रछाया	**छत्रच्छाया** (बीच में आधा 'च्'!)
34. तत्वावधान	**तत्त्वावधान** ('तत्वाधान' अशुद्ध है!)	69. चर्मोत्कर्ष	**चरमोत्कर्ष** (चरम + उत्कर्ष)	104. शूर्पणखा	**शूर्पणखा**
35. सुषुम्ना	**सुषुम्ना**	70. प्रतिद्वंद्वी	**प्रतिद्वंद्वी**	105. अक्षौहिणी	**अक्षौहिणी**

अध्याय 6: हिंदी साहित्य का काल-विभाजन, प्रमुख रचनाएँ एवं साहित्यिक पुरस्कार (Hindi Literature & Awards)

अध्याय के प्रमुख अध्ययन स्तंभ — अध्याय 6: हिंदी साहित्य का काल-विभाजन, प्रमुख रचनाएँ एवं साहित्यिक पुरस्कार (Hindi Literature & Awards)

प्रमुख अध्ययन बिंदु 1
आचार्य रामचंद्र शुक्ल का काल-विभाजन एवं नामकरण (1929 ई. — 'हिंदी साहित्य का इतिहास')

प्रमुख अध्ययन बिंदु 2
हिंदी साहित्य को प्राप्त ज्ञानपीठ एवं प्रमुख साहित्य अकादमी पुरस्कार सारणी

6.1 आचार्य रामचंद्र शुक्ल का काल-विभाजन एवं नामकरण (1929 ई. — 'हिंदी साहित्य का इतिहास')

(नोट: हिंदी साहित्य के इतिहास लेखन का प्रथम प्रयास फ्रेंच विद्वान **गार्सा द तासी** ने 'इस्त्वार द ला लितेरात्यूर ऐंदुई ऐंदुस्तानी' में किया; सच्चे अर्थों में प्रथम इतिहास **जॉर्ज ग्रियर्सन** का 'द मॉडर्न वर्नाक्यूलर लिटरेचर ऑफ हिंदुस्तान' (1888) है; तथा **मिश्रबंधुओं** ने 'मिश्रबंधु विनोद' में 5,000 कवियों का विवरण दिया।)

कालखंड	संवत् / ईस्वी सन्	विभिन्न विद्वानों द्वारा दिए गए नाम	प्रमुख काव्यधाराएँ, प्रतिनिधि कवि एवं कालजयी रचनाएँ
1. आदिकाल (वीरगाथा काल)	संवत् 1050 – 1375 वि. (993 – 1318 ई.)	**वीरगाथा काल:** रामचंद्र शुक्ल **आदिकाल:** हजारीप्रसाद द्विवेदी **चारण काल:** जॉर्ज ग्रियर्सन **सिद्ध-सामंत काल:** राहुल सांकृत्यायन **बीजवपन काल:** महावीरप्रसाद द्विवेदी **संधिकाल एवं चारणकाल:** डॉ. रामकुमार वर्मा	**रासो साहित्य:** चंदबरदाई (पृथ्वीराज रासो — हिंदी का प्रथम महाकाव्य), नरपति नाल्ह (बीसलदेव रासो), जगनिक (परमाल रासो / आल्हाखंड), दलपति विजय (खुमान रासो), शार्ङ्गधर (हम्मीर रासो); **सिद्ध साहित्य (84 सिद्ध):** सरहपा (राहुल सांकृत्यायन के अनुसार हिंदी के प्रथम कवि — दोहाकोश); **नाथ साहित्य (9 नाथ):** गोरखनाथ; **जैन/अभ्रंश साहित्य:** स्वयंभू (पउमचरिउ — अपभ्रंश के वाल्मीकि), देवसेन (श्रावकाचार — 933 ई., हिंदी की प्रथम रचना), अब्दुर्रहमान (संदेशरासक), विद्यापति (कीर्तिलता, कीर्तिपताका, पदावली — मैथिल कोकिल), अमीर खुसरो (खड़ी बोली के आदि कवि — खालिकबारी, पहेलियाँ, मुकरियाँ)।

कालखंड	संवत् / ईस्वी सन्	विभिन्न विद्वानों द्वारा दिए गए नाम	प्रमुख काव्यधाराएँ, प्रतिनिधि कवि एवं कालजयी रचनाएँ
2. पूर्व मध्यकाल (भक्तिकाल — स्वर्णयुग)	संवत् 1375 – 1700 वि. (1318 – 1643 ई.)	**स्वर्ण युग:** जॉर्ज ग्रियर्सन **लोकजागरण काल:** हजारीप्रसाद द्विवेदी **भक्तिकाल:** रामचंद्र शुक्ल	**(क) निर्गुण ज्ञानाश्रयी (संत काव्य):** कबीरदास (बीजक — साखी, सबद, रमैनी; भाषा: सधुक्कड़ी/पंचमेल खिचड़ी; वाणी का डिक्टेटर), रैदास, नानक, दादूदयाल, मलूकदास, सुंदरदास (सबसे शिक्षित संत कवि)। **(ख) निर्गुण प्रेमाश्रयी (सूफी काव्य):** मलिक मोहम्मद जायसी (पद्मावत — 1540 ई. ठेठ अवधी, अखरावट, आखिरी कलाम), कुतुबन (मृगावती), मंझन (मधुमालती), मुल्ला दाऊद (चंदायन)। **(ग) सगुण रामभक्ति शाखा:** गोस्वामी तुलसीदास (रामचरितमानस — संवत् 1631 / 1574 ई., 7 कांड, अवधी भाषा; विनयपत्रिका, कवितावली, गीतावली, दोहावली, कृष्णगीतावली — ब्रजभाषा; बरवै रामायण, पार्वती मंगल, जानकी मंगल, वैराग्य संदीपनी, रामाज्ञा प्रश्न), नाभादास (भक्तमाल), अग्रदास, केशवदास (रामचंद्रिका — छंदों का अजायबघर)। **(घ) सगुण कृष्णभक्ति शाखा:** सूरदास (सूरसागर, सूरसारावली, साहित्य लहरी — अष्टछाप के जहाज), नंददास (रसमंजरी, भँवरगीत), मीराबाई (राग गोविंद, नरसी जी का मायरा), रसखान (प्रेमवाटिका, सुजान रसखान)।
3. उत्तर मध्यकाल (रीतिकाल)	संवत् 1700 – 1900 वि. (1643 – 1843 ई.)	**रीतिकाल:** रामचंद्र शुक्ल **अलंकृत काल:** मिश्रबंधु **शृंगार काल:** विश्वनाथप्रसाद मिश्र **कला काल:** रमाशंकर शुक्ल 'रसाल'	**(क) रीतिबद्ध कवि:** चिंतामणि, मतिराम (रसराज, ललित ललाम), भूषण (रीतिकाल के एकमात्र वीररस कवि — शिवराज भूषण, शिवा बावनी, छत्रसाल दशक), पद्माकर (जगद्विनोद, गंगालहरी), देव (भावविलास, अष्टयाम), केशवदास (कविप्रिया, रसिकप्रिया)। **(ख) रीतिसिद्ध कवि:** बिहारीलाल (बिहारी सतसई — 713/719 दोहे, गागर में सागर)। **(ग) रीतिमुक्त कवि:** घनानंद (सुजान सागर, विरहलीला), आलम, बोधा (विरहवारीश, इश्कनामा), ठाकुर।
4. आधुनिक काल (गद्य काल)	संवत् 1900 वि. (1843 ई.) से अब तक	**गद्य काल:** रामचंद्र शुक्ल **आधुनिक काल:** डॉ. नगेंद्र व हजारीप्रसाद द्विवेदी	**1. भारतेंदु युग (1850–1900):** भारतेंदु हरिश्चंद्र (भारत दुर्दशा, अंधेर नगरी), प्रताप नारायण मिश्र, बालकृष्ण भट्ट (हिंदी प्रदीप)। **2. द्विवेदी युग (1900–1918/20):** महावीरप्रसाद द्विवेदी (1903 से 1920 तक सरस्वती पत्रिका का संपादन), मैथिलीशरण गुप्त (साकेत, भारत-भारती, यशोधरा, जयद्रथ वध), अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' (प्रियप्रवास — खड़ी बोली का प्रथम महाकाव्य, वैदेही वनवास)। **3. छायावाद युग (1918–1936):** चार स्तंभ — **जयशंकर प्रसाद** (कामायनी — 15 सर्ग: चिंता से आनंद तक, आँसू, लहर, झरना), **सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'** (अनामिका, परिमल, गीतिका, कुकुरमुत्ता, राम की शक्तिपूजा, सरोज स्मृति), **सुमित्रानंदन पंत** (प्रकृति के सुकुमार कवि — पल्लव, वीणा, गुंजन, युगांत, चिदंबरा, लोकायतन), **महादेवी वर्मा** (आधुनिक मीरा — नीहार, रश्मि, नीरजा, सांध्यगीत, यामा, दीपशिखा)। **4. प्रगतिवाद (1936–1943):** नागार्जुन, केदारनाथ अग्रवाल, त्रिलोचन, रांगेय राघव, शिवमंगल सिंह 'सुमन'। **5. प्रयोगवाद एवं नई कविता (1943 से आगे):** सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' (1943 में तार सप्तक का संपादन, कितनी नावों में कितनी बार, आँगन के पार द्वार, शेखर: एक जीवनी), गजानन माधव मुक्तिबोध (चाँद का मुँह टेढ़ा है, अंधेरे में), धर्मवीर भारती (अंधा युग, कनुप्रिया, गुनाहों का देवता, सूरज का सातवाँ घोड़ा), रामधारी सिंह 'दिनकर' (उर्वशी, रश्मिरथी, कुरुक्षेत्र, संस्कृति के चार अध्याय)।

6.2 हिंदी साहित्य को प्राप्त ज्ञानपीठ एवं प्रमुख साहित्य अकादमी पुरस्कार सारणी

वर्ष	पुरस्कृत साहित्यकार	सम्मानित कृति / योगदान	पुरस्कार एवं विशेष परीक्षा तथ्य
1955	**माखनलाल चतुर्वेदी**	**'हिमतरंगिणी'** (काव्य)	**प्रथम साहित्य अकादमी पुरस्कार (हिंदी)** प्राप्त करने वाले साहित्यकार।
1968	**सुमित्रानंदन पंत**	**'चिदंबरा'** (काव्य संकलन)	**हिंदी का प्रथम ज्ञानपीठ पुरस्कार (4था ज्ञानपीठ)** प्राप्त करने वाले कवि। (1960 में 'कला और बूढ़ा चाँद' पर साहित्य अकादमी मिला)।
1972	**रामधारी सिंह 'दिनकर'**	**'उर्वशी'** (गीतिनाट्य/काव्य)	हिंदी को दूसरा ज्ञानपीठ पुरस्कार (8वाँ ज्ञानपीठ)। (1959 में 'संस्कृति के चार अध्याय' पर साहित्य अकादमी मिला)।
1978	**सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय'**	**'कितनी नावों में कितनी बार'**	हिंदी को तीसरा ज्ञानपीठ पुरस्कार (14वाँ ज्ञानपीठ)। (1964 में 'आँगन के पार द्वार' पर साहित्य अकादमी मिला)।

वर्ष	पुरस्कृत साहित्यकार	सम्मानित कृति / योगदान	पुरस्कार एवं विशेष परीक्षा तथ्य
1982	**महादेवी वर्मा**	**'यामा'** (नीहार, रश्मि, नीरजा, सांध्यगीत का संकलन)	**एकल कृति पर अंतिम ज्ञानपीठ पुरस्कार (18वाँ)** एवं प्रथम हिंदी महिला ज्ञानपीठ विजेता। (1984 के बाद से ज्ञानपीठ 'संपूर्ण साहित्यिक योगदान' पर दिया जाने लगा!)
1992–2024	**संपूर्ण योगदान हेतु हिंदी ज्ञानपीठ विजेता**	नरेश मेहता (1992), निर्मल वर्मा (1999), कुँवर नारायण (2005), अमरकांत व श्रीलाल शुक्ल (2009 संयुक्त), केदारनाथ सिंह (2013), कृष्णा सोबती (2017), **गुलज़ार व जगद्गुरु रामभद्राचार्य** (58वाँ, 2023 उर्दू/संस्कृत), **विनोद कुमार शुक्ल** (59वाँ ज्ञानपीठ घोषणा — छत्तीसगढ़ के प्रख्यात हिंदी लेखक, नौकर की कमीज, दीवार में एक खिड़की रहती थी)।	अब तक हिंदी भाषा के साहित्यकारों को सर्वाधिक बार ज्ञानपीठ सम्मान प्राप्त हुआ है।
प्रमुख व्यास एवं सरस्वती सम्मान	**प्रथम सरस्वती सम्मान (1991):** हरिवंशराय बच्चन (आत्मकथा — 4 खंड: क्या भूलूँ क्या याद करूँ, नीड़ का निर्माण फिर, बसेरे से दूर, दशद्वार से सोपान तक)	**प्रथम व्यास सम्मान (1991):** डॉ. रामविलास शर्मा (भारत के प्राचीन भाषा परिवार और हिंदी); **33वाँ व्यास सम्मान (2023):** पुष्पा भारती (यादें, यादें और यादें); **34वाँ व्यास सम्मान (2024):** सूर्यबाला (कौन देस को वासी: वेणु की डायरी)।	सरस्वती और व्यास सम्मान दोनों **के.के. बिड़ला फाउंडेशन** द्वारा दिए जाते हैं। उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान का सर्वोच्च सम्मान **'भारत भारती सम्मान'** है (प्रथम विजेता: महादेवी वर्मा)।

अध्याय 7: स्मृति ट्रिक्स एवं परीक्षा जाल (Memory Tricks & Exam Trap Tables — Book *12*)

7.1 हिंदी व्याकरण की अचूक स्मृति ट्रिक्स (Super-Fast Hindi Grammar Tricks)

1. **अष्टछाप के 8 कवियों (स्थापना: 1565 ई. गोस्वामी विट्ठलनाथ द्वारा) को याद रखने की ट्रिक:**

• **वल्लभाचार्य के 4 शिष्य:** सूत्र — **"सूर-कुंभ-पर-कृष्ण"** (1. **सूरदास**, 2. **कुंभनदास**, 3. **परमानंददास**, 4. **कृष्णदास**)।

• **विट्ठलनाथ के 4 शिष्य:** सूत्र — **"छीत-गोविंद-चतुर-नंद"** (5. **छीतस्वामी**, 6. **गोविंदस्वामी**, 7. **चतुर्भुजदास**, 8. **नंददास**)।

2. **रामचरितमानस के 7 कांडों का सही क्रम याद रखने की ट्रिक:**

• सूत्र — **"बालक अयोध्या के अरण्य (जंगल) में किष्किंधा से सुंदर लंका जाकर उत्तर देगा"**

• क्रम: **(1) बालकांड** (सबसे बड़ा कांड) **(2) अयोध्याकांड** (रामचरितमानस का हृदय-स्थल) **(3) अरण्यकांड (4) किष्किंधाकांड** (सबसे छोटा कांड) **(5) सुंदरकांड (6) लंकाकांड (7) उत्तरकांड**।

3. **सकर्मक बनाम अकर्मक क्रिया की 2-सेकंड पहचान ट्रिक:**

• क्रिया से पहले केवल दो प्रश्न पूछें: **"क्या?"** और **"किसको?"** (ध्यान रहे: "कहाँ?", "कब?" या "कैसे?" नहीं पूछना है!)।

• यदि उत्तर मिले (या काल्पनिक उत्तर संभल सके) और उसका प्रभाव कर्ता से भिन्न कर्म पर पड़े, तो **सकर्मक क्रिया** (जैसे—पढ़ना, लिखना, खाना, पीना, देखना, तोड़ना)।

• यदि 'क्या/किसको' का कोई उत्तर न मिले और क्रिया का फल सीधे कर्ता पर पड़े, तो **अकर्मक क्रिया** (जैसे—सोना, रोना, हँसना, उड़ना, दौड़ना, टहलना, नहाना, डरना, मरना)।

परीक्षा जाल: "पक्षी आकाश में उड़ते हैं" — छात्र 'आकाश' को कर्म समझकर सकर्मक टिक कर देते हैं! 'आकाश में' अधिकरण कारक (कहाँ?) है, कर्म (क्या?) नहीं; अतः यह **100% अकर्मक क्रिया** है!

7.2 परीक्षा जाल सारणी (Exam Trap Comparison Table — Book 12)

क्र.सं.	परीक्षा जाल (Exam Trap Topic)	अभ्यर्थी का सामान्य भ्रम (Common Aspirant Mistake)	सटीक व्याकरणिक नियम एवं वास्तविक तथ्य (Verified Rule)	परीक्षा संदर्भ (Exam Tag)
1	**'मनोचिकित्सक' और 'मनोकामना' की शुद्ध वर्तनी**	बोलचाल के प्रभाव में 'मनोचिकित्सक' और 'मनोकामना' को शुद्ध मान लेना।	विसर्ग संधि के नियम से `मनः + चिकित्सक` = **मनश्चिकित्सक** होता है (क्योंकि 'च' अघोष है, अतः 'ओ' नहीं बल्कि 'श्' होगा) और `मनः + कामना` = **मनःकामना** होता है।	UPPSC RO/ ARO / SI
2	**'रातोंरात', 'हाथोंहाथ' और 'धीरे-धीरे' में समास**	बीच में योजक चिह्न (`-`) या आवृत्ति देखकर 'द्वंद्व समास' टिक कर देना।	जब **एक ही संज्ञा या अव्यय शब्द की आवृत्ति** हो (जैसे—रातोंरात, दिनोंदिन, हाथोंहाथ, पल-पल, धीरे-धीरे, धड़ाधड़), तो वहाँ सदैव **अव्ययीभाव समास** होता है, द्वंद्व कभी नहीं!	UP Police / CTET
3	**'अड़सठ' (68), 'पच्चीस' (25), 'इकतीस' (31) में समास**	संख्या देखकर तुरंत 'द्विगु समास' लगा देना।	*1* से *9* तथा *10, 20, 30...100* को छोड़कर जिन संख्याओं के विग्रह में **'और'** आता है (जैसे *25* = पाँच **और** बीस; *68* = आठ **और** साठ), उनमें **इतरेतर द्वंद्व समास** होता है, द्विगु नहीं!	UPPSC / RPSC / SI
4	**'सदैव / निरंतर दिया जाने वाला दान' बनाम 'भिक्षा' में कारक**	'को' विभक्ति चिह्न देखकर सदैव 'कर्म कारक' टिक कर देना।	जब किसी को कोई वस्तु **सदा के लिए दान या भेंट में दी जाए** (जिसे वापस न लिया जाए—जैसे "राजा ने निर्धनों को कंबल दिए") या रुचि/नमस्कार के योग में 'को' आए, तो वहाँ कर्म कारक नहीं बल्कि **संप्रदान कारक** होता है (परंतु धोबी को कपड़े देना = वापस लेना = कर्म कारक)।	UP Police SI / RO/ARO
5	**'शृंगार' और 'उज्ज्वल' की वर्तनी**	'श्रृंगार' (श्र में ऋ दोनों) और 'उज्वल' को सही समझना।	`श् + ऋ` से **'शृ'** बनता है; इसमें नीचे 'र' की तिरछी पाई नहीं लगती, अतः शुद्ध रूप **'शृंगार'** है। तथा `उत् + ज्वल` में दोनों 'ज्' आधे होते हैं: **'उज्ज्वल'**।	SSC GD / RO/ARO
6	**'तरणि' बनाम 'तरणी' बनाम 'तरुणी' (समश्रुत भिन्नार्थक)**	छोटी और बड़ी मात्रा के अंतर को नजरअंदाज करना।	**तरणि** (छोटी इ) = **सूर्य**; **तरणी** (बड़ी ई) = **नाव (नौका)**; तथा **तरुणी** = **नवयुवती**। इसी प्रकार **अलि** = भौंरा, **अली** = सखी।	UP Police SI / PCS
7	**'सौंदर्यता', 'माधुर्यता' और 'पूज्यनीय' की अशुद्धि**	इन्हें भाववाचक और आदरसूचक मानकर शुद्ध समझना।	किसी भी शब्द में **'य' और 'ता' प्रत्यय एक साथ नहीं लगते**—शुद्ध शब्द या तो **'सौंदर्य'** है या **'सुंदरता'**। इसी प्रकार या तो **'पूज्य'** शुद्ध है या **'पूजनीय'**, 'पूज्यनीय' पूर्णतः अशुद्ध है।	UPPSC RO/ ARO
8	**'आमिष' और 'सामिष' का विलोम**	'आमिष' का विलोम 'सामिष' लगा देना!	**'आमिष'** और **'सामिष'** दोनों समानार्थी शब्द हैं (दोनों का अर्थ है—मांसयुक्त भोजन)। इन दोनों का ही विलोम **'निरामिष'** (मांसरहित) होता है!	UPPSC RO/ ARO 2021/24
9	**'वाग्देवी', 'सद्भावना' और 'षडानन' में संधि**	ग, द, ड को देखकर इन्हें गुण या दीर्घ संधि समझ लेना।	वर्ग के तीसरे वर्ण (`ग, ज, ड, द, ब`) पर टूटने वाले शब्द **व्यंजन संधि (जश्त्व संधि)** होते हैं: `वाक् + देवी`, `सत् + भावना`, `षट् + आनन`।	CTET / UPTET / GD
10	**विशेषण और विशेष्य की पहचान (UPPSC RO/ ARO विशेष)**	'अग्नि', 'इतिहास', 'अपमान' को विशेषण समझ लेना।	जिस शब्द की विशेषता बताई जाए वह **विशेष्य (मूल संज्ञा)** है (जैसे—अग्नि, इतिहास, अपमान, शरीर, भूगोल) और जो विशेषता बताए वह **विशेषण** है (जैसे—**आग्नेय, ऐतिहासिक, अपमानित, शारीरिक, भौगोलिक**)।	UPPSC RO/ ARO

अध्याय 8: वाक्यांश के लिए एक शब्द, विशेष्य-विशेषण एवं मुहावरे-लोकोक्तियाँ (100+ High-Yield Lists)

अध्याय के प्रमुख अध्ययन स्तंभ — अध्याय 8: वाक्यांश के लिए एक शब्द, विशेष्य-विशेषण एवं मुहावरे-लोकोक्तियाँ (100+ High-Yield Lists)

प्रमुख अध्ययन बिंदु 1
अनेक शब्दों के लिए एक शब्द — 105 परीक्षा-उपयोगी वाक्यांश (105+ One-Word Substitutions)

प्रमुख अध्ययन बिंदु 2
विशेष्य एवं विशेषण रूपांतरण सारणी (UPPSC RO/ARO स्पेशल)

8.1 अनेक शब्दों के लिए एक शब्द — 105 परीक्षा-उपयोगी वाक्यांश (105+ One-Word Substitutions)

वाक्यांश (Phrase)	एक शब्द (Single Word)	वाक्यांश (Phrase)	एक शब्द (Single Word)
1. जिसका जन्म पहले हुआ हो (बड़ा भाई)	**अग्रज**	54. आधी रात का समय	**निशीथ**
2. जिसका जन्म बाद/पीछे हुआ हो (छोटा भाई)	**अनुज**	55. तारों भरी रात	**विभावरी**
3. जो पहले कभी न हुआ हो	**अभूतपूर्व**	56. चाँदनी रात	**शर्वरी**
4. जो बीत चुका हो	**अतीत**	57. रंगमंच के पर्दे के पीछे का स्थान	**नेपथ्य**
5. जिसकी गहराई या थाह का पता न लग सके	**अथाह / अगाध**	58. बिना पलक झपकाए (एकटक देखना)	**अनिमेष / निर्निमेष**
6. जिसका कोई शत्रु पैदा ही न हुआ हो	**अजातशत्रु**	59. जिसे किसी से लगाव न हो	**निर्लिप्त**
7. जिसे जीता न जा सके	**अजेय**	60. जिसके हृदय में ममता न हो	**निर्मम**
8. जिसके समान कोई दूसरा न हो	**अद्वितीय / अनुपम**	61. जिसके हृदय में दया न हो	**निर्दय** ('निर्दयी' अशुद्ध है!)
9. जो इंद्रियों द्वारा न जाना जा सके	**अगोचर / अतींद्रिय**	62. जो पढ़ने में रोचक लगे	**पठनीय**
10. जिसका कथन या वर्णन न किया जा सके	**अकथनीय / अवर्णनीय**	63. पति द्वारा छोड़ दी गई स्त्री	**परित्यक्ता**
11. जो कभी बूढ़ा न हो	**अजर**	64. जो दूसरे के अधीन हो	**पराधीन**
12. जो कभी न मरे	**अमर**	65. जो आँखों के सामने हो	**प्रत्यक्ष**
13. जो दिखाई न दे	**अदृश्य**	66. जो आँखों के परे (पीछे) हो	**परोक्ष**
14. जिसका निवारण न किया जा सके	**अनिवार्य / अनिर्वचनीय**	67. तुरंत सोचकर उत्तर देने वाली बुद्धि	**प्रत्युत्पन्नमति**
15. जो कानून या नियम के विरुद्ध हो	**अवैध / गैरकानूनी**	68. किसी प्रश्न का तत्काल दिया गया उत्तर	**प्रत्युत्तर**
16. गुरु के समीप रहकर अध्ययन करने वाला	**अंतेवासी**	69. पृथ्वी से संबंधित या मिट्टी का बना हुआ	**पार्थिव**
17. महल के भीतर का वह भाग जहाँ रानियाँ रहती हैं	**अंतःपुर / रनिवास**	70. जिसका जन्म द्वीप पर हुआ हो (वेदव्यास)	**द्वैपायन**
18. जिसका जन्म निम्न या अंतिम वर्ण में हुआ हो	**अंत्यज**	71. दो बार जन्म लेने वाला (ब्राह्मण, पक्षी, दाँत)	**द्विज**
19. किसी पद्य के अंतिम अक्षर से नया पद्य आरंभ करने का खेल	**अंत्याक्षरी**	72. दो वेदों को जानने वाला	**द्विवेदी**
20. बिना सोचे-समझे किया गया विश्वास	**अंधविश्वास**	73. जंगल में स्वयं लगने वाली आग	**दावाग्नि / दवानल**
21. आवश्यकता से अधिक वर्षा होना	**अतिवृष्टि**	74. समुद्र में लगने वाली आग	**बड़वाग्नि / बड़वानल**
22. वर्षा का बिल्कुल न होना	**अनावृष्टि**	75. पेट में लगने वाली भूख की आग	**जठराग्नि / जठरानल**
23. किसी बात को अत्यधिक बढ़ा-चढ़ाकर कहना	**अतिशयोक्ति**	76. गोद लिया हुआ पुत्र	**दत्तक**
24. जो बिना बुलाए आया हो	**अनाहूत**	77. विवाहित पत्नी से उत्पन्न संतान	**औरस**
25. जिसके आने की तिथि निश्चित न हो	**अतिथि**	78. जिस स्त्री के पुत्र और पति दोनों जीवित हों	**पुरंध्री**
26. पर्वत के ऊपर की समतल भूमि	**अधित्यका**	79. वह स्त्री जिसका पति परदेश से आने वाला हो	**आगमिष्यत्पतिका**
27. पर्वत के नीचे की तलहटी की भूमि	**उपत्यका**	80. वह स्त्री जिसका पति परदेश से लौट आया हो	**आगतपतिका**
28. राज्य या सक्षम अधिकारी द्वारा जारी आधिकारिक आदेश	**अध्यादेश**	81. वह स्त्री जिसका पति परदेश गया हो	**प्रोषितपतिका**
29. सरकार द्वारा राजपत्र (गजट) में प्रकाशित सूचना	**अधिसूचना**	82. सिर से पैर तक	**आपाद-मस्तक**
30. जिस स्त्री के पति ने दूसरी शादी कर ली हो	**अधूढ़ा**	83. जीने की प्रबल इच्छा	**जिजीविषा**
31. दूसरे की विवाहित स्त्री	**अन्यौढ़ा**	84. जानने की इच्छा / इच्छुक	**जिज्ञासा / जिज्ञासु**

वाक्यांश (Phrase)	एक शब्द (Single Word)	वाक्यांश (Phrase)	एक शब्द (Single Word)
32. जो कम बोलता हो	**अल्पभाषी / मितभाषी**	85. जीतने या दमन करने की इच्छा	**जिगीषा**
33. जो सोच-समझकर कम खर्च करता हो	**मितव्ययी**	86. किसी को मारने की इच्छा	**जिघांसा**
34. जो बहुत अधिक खर्च करता हो	**अपव्ययी**	87. भोजन करने या खाने की इच्छा	**बुभुक्षा**
35. जो बिल्कुल खर्च न करना चाहता हो	**कृपण**	88. तैरकर पार करने की इच्छा	**तितीर्षा**
36. जिस पर अभियोग लगाया गया हो	**अभियुक्त**	89. मोक्ष प्राप्त करने की इच्छा / इच्छुक	**मुमुक्षा / मुमुक्षु**
37. जो अभियोग लगाता हो (वादी)	**अभियोगी**	90. मरने की इच्छा / मरणासन्न अवस्था वाला	**मुमूर्षा / मुमूर्षु**
38. जो किसी अल्पवयस्क या अनाथ की देखरेख करता हो	**अभिभावक**	91. युद्ध की इच्छा रखने वाला	**युयुत्सु**
39. जो बाएँ हाथ से भी सटीक कार्य/बाण चला लेता हो	**सव्यसाची**	92. किए गए उपकार को मानने वाला	**कृतज्ञ**
40. भला-बुरा या उचित-अनुचित का ज्ञान रखने वाला	**विवेकी**	93. किए गए उपकार को न मानने वाला	**कृतघ्न**
41. जो व्याकरण को भली-भाँति जानता हो	**वैयाकरण**	94. जो अपना उद्देश्य सिद्ध होने पर संतुष्ट हो	**कृतार्थ**
42. जो विज्ञान जानता हो	**वैज्ञानिक**	95. हाथी को हाँकने का लोहे का अंकुश/हुक	**अंकुश**
43. दोपहर के पूर्व का समय	**पूर्वाह्न**	96. जो बहुत मंद गति से कार्य करता हो	**दीर्घसूत्री**
44. दोपहर का समय	**मध्याह्न**	97. जो एक स्थान पर टिककर न रहता हो	**यायावर**
45. दोपहर के बाद का समय	**अपराह्न**	98. उत्तराधिकार में प्राप्त संपत्ति	**रिक्थ**
46. संध्या और रात्रि के बीच का समय (जब गायें लौटती हैं)	**गोधूलि**	99. बिना जोते उगने वाला अनाज	**अकृष्टपच्या**
47. जिस भूमि में कुछ भी पैदा न होता हो	**ऊसर / बंजर**	100. हवन में जलाने वाली लकड़ी	**समिधा**
48. जिस भूमि में खूब पैदावार होती हो	**उर्वरा**	101. जिसका जन्म कन्या के गर्भ से हुआ हो (कर्ण)	**कानीन**
49. सूर्योदय से पहले का समय	**उषाकाल / अरुणोदय**	102. सौ वर्षों का समय या समूह	**शताब्दी**
50. ऋण (कर्ज) देने वाला व्यक्ति	**उत्तमर्ण**	103. जो सब कुछ जानता हो	**सर्वज्ञ**
51. ऋण (कर्ज) लेने वाला व्यक्ति	**अधमर्ण**	104. शत (सौ) बातों को एक साथ याद रखने वाला	**शतावधानी**
52. छाती के बल चलने वाला (साँप)	**उरग**	105. वह काव्य जिसका अभिनय किया जा सके	**रूपक**
53. जिसकी दोनों में निष्ठा हो	**उभयनिष्ठ**	106. जो तुरंत कविता बना सके	**आशुकवि**

8.2 विशेष्य एवं विशेषण रूपांतरण सारणी (UPPSC RO/ARO स्पेशल)

विशेष्य (मूल संज्ञा)	विशेषण (विकसित रूप)	विशेष्य (मूल संज्ञा)	विशेषण (विकसित रूप)	विशेष्य (मूल संज्ञा)	विशेषण (विकसित रूप)
1. **अग्नि**	**आग्नेय**	16. **ऋषि**	**आर्ष**	31. **निष्ठा**	**नैष्ठिक / निष्ठावान**
2. **अधिकार**	**आधिकारिक**	17. **एकता / एक**	**एक / ऐक्य**	32. **पृथ्वी**	**पार्थिव**
3. **अध्यात्म**	**आध्यात्मिक**	18. **ओज**	**ओजस्वी**	33. **पशु**	**पाशविक**
4. **अनुमान**	**अनुमानित**	19. **कंटक**	**कंटकित**	34. **पुराण**	**पौराणिक**
5. **अनुराग**	**अनुरक्त**	20. **काँटा**	**कँटीला**	35. **प्रमाण**	**प्रामाणिक**
6. **अपमान**	**अपमानित**	21. **कुल**	**कुलीन**	36. **प्रकृति**	**प्राकृतिक**
7. **अपेक्षा**	**अपेक्षित**	22. **केंद्र**	**केंद्रीय / केंद्रित**	37. **बुद्धि**	**बौद्धिक**
8. **अंक**	**अंकित**	23. **क्षमा**	**क्षम्य**	38. **भूगोल**	**भौगोलिक**

विशेष्य (मूल संज्ञा)	विशेषण (विकसित रूप)	विशेष्य (मूल संज्ञा)	विशेषण (विकसित रूप)	विशेष्य (मूल संज्ञा)	विशेषण (विकसित रूप)
9. अर्थ	आर्थिक	24. ग्राम	ग्रामीण / ग्राम्य	39. मर्म	मार्मिक
10. आकाश	आकाशीय	25. चक्षु	चाक्षुष	40. मानस / मन	मानसिक
11. आराधना	आराध्य	26. चाचा	चचेरा	41. मास	मासिक
12. आसक्ति	आसक्त	27. जटा	जटिल	42. मुख	मौखिक / मुखर
13. इतिहास	ऐतिहासिक	28. तालु	तालव्य	43. लोक	लौकिक
14. इंद्रिय	ऐंद्रिय / इंद्रिय	29. दिन	दैनिक	44. वायु	वायव्य
15. उपन्यास	औपन्यासिक	30. धर्म	धार्मिक	45. विष्णु / शिव	वैष्णव / शैव

अध्याय 9: बुक 12 — 60 वास्तविक परीक्षा-स्तरीय बहुविकल्पीय प्रश्न (60 Authentic Exam-Level MCQs)

अभ्यास प्रश्न #1 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 1. उच्चारण स्थान एवं प्रयत्न के आधार पर हिंदी वर्णमाला के **'च, छ, ज, झ'** व्यंजनों को किस वैज्ञानिक श्रेणी में रखा जाता है? **[UP Police SI 2021]**

(A) कंठ्य एवं संघर्षी व्यंजन

(B) तालव्य एवं स्पर्श-संघर्षी व्यंजन

(C) मूर्धन्य एवं उत्क्षिप्त व्यंजन

(D) वर्त्स्य एवं पार्श्विक व्यंजन

सही उत्तर: (B)

व्याख्या: च-वर्ग के प्रथम चार वर्णों (च, छ, ज, झ) का उच्चारण स्थान 'तालु' (तालव्य) है, और इनके उच्चारण में जिह्वा तालु को स्पर्श करने के साथ-साथ वायु में हल्का घर्षण भी उत्पन्न करती है, इसलिए आधुनिक भाषाविज्ञान में इन्हें **'स्पर्श-संघर्षी व्यंजन'** कहा जाता है।

अभ्यास प्रश्न #2 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 2. जिह्वा की सक्रियता और मुख-विवर खुलने के आधार पर स्वर **'अ'** का सटीक भाषावैज्ञानिक परिचय क्या है? **[UPPSC RO/ARO 2021]**

(A) अग्र, संवृत एवं वृत्तमुखी स्वर

(B) मध्य (केंद्रीय), अर्द्ध-विवृत एवं अवृत्तमुखी स्वर

(C) पश्च, विवृत एवं वृत्तमुखी स्वर

(D) अग्र, अर्द्ध-संवृत एवं अवृत्तमुखी स्वर

सही उत्तर: (B)

व्याख्या: हिंदी वर्णमाला में **'अ'** एकमात्र **मध्य (केंद्रीय) स्वर** है। मुख खुलने के आधार पर यह **अर्द्ध-विवृत** है तथा होंठों की आकृति के आधार पर यह **अवृत्तमुखी** (अवर्तुल) ह्रस्व स्वर है।

अभ्यास प्रश्न #3 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 3. निम्नलिखित में से किस विकल्प में सभी वर्ण **'सघोष महाप्राण'** व्यंजन हैं? **[UPSSSC VDO / UP Police SI 2023]**

(A) ख, छ, ठ, थ, फ

(B) ग, ज, ड, द, ब

(C) घ, झ, ढ, ध, भ, ह

(D) क, च, ट, त, प, श

सही उत्तर: (C)

व्याख्या: प्रत्येक वर्ग का **चौथा वर्ण (घ, झ, ढ, ध, भ)** तथा ऊष्म व्यंजन **'ह'** और उत्क्षिप्त **'ढ़'** दोनों दृष्टियों से **सघोष** भी हैं और **महाप्राण** भी हैं। विकल्प (A) के वर्ण अघोष महाप्राण हैं और विकल्प (B) के वर्ण सघोष अल्पप्राण हैं।

अभ्यास प्रश्न #4 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 4. **'अक्षौहिणी'** शब्द का शुद्ध संधि-विच्छेद क्या है और यह किस संधि के अपवाद के अंतर्गत आता है? **[UPPSC PCS / RO-ARO 2022]**

(A) अक्ष + ओहिनी (गुण स्वर संधि)

(B) अक्ष + ऊहिनी (वृद्धि स्वर संधि का विशेष वार्तिक अपवाद)

(C) अक्षौ + हिणी (दीर्घ स्वर संधि)

(D) अक्षि + उहिनी (यण् स्वर संधि)

सही उत्तर: (B)

व्याख्या: पाणिनीय व्याकरण के वार्तिक सूत्र 'अक्षादूहिन्यामुपसंख्यानम्' के अनुसार **अक्ष + ऊहिनी** के मेल में सामान्य गुण संधि (**अ+ऊ=ओ**) का नियम बाधित होकर **वृद्धि संधि (औ)** तथा **णत्व विधान** से **न** का **ण** होकर **'अक्षौहिणी'** (सेना की एक बड़ी चतुरंगिणी इकाई) बनता है।

अभ्यास प्रश्न #5 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 5. निम्नलिखित में से किस शब्द में **यण् स्वर संधि** है? **[CTET 2024]**

(A) महौषध

(B) अन्वेषण

(C) पावक

(D) देवेश

सही उत्तर: (B)

व्याख्या: **'अन्वेषण'** का संधि-विच्छेद **अनु + एषण** है। यहाँ **उ** के बाद भिन्न स्वर **ए** आने पर **उ** का **व्** हो गया है (इको यणचि सूत्र), जो यण् स्वर संधि का उदाहरण है। 'महौषध' में वृद्धि संधि, 'पावक' (**पौ + अक**) में अयादि संधि और 'देवेश' में गुण संधि है।

अभ्यास प्रश्न #6 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 6. **उत् + श्वास** की संधि से बनने वाला शुद्ध शब्द कौन-सा है? **[SSC GD / UP Police 2024]**

(A) उत्श्वास

(B) उच्छ्वास

(C) उछवास

(D) उच्श्वास

सही उत्तर: (B)

व्याख्या: व्यंजन संधि के नियम के अनुसार यदि **त्** या **द्** के बाद तालव्य **श** आए, तो **त्/द्** का **च्** (आधा च) और **श** का **छ** हो जाता है। चूँकि **श्वास** में **श** पहले से ही आधा (**श्**) है, इसलिए **छ** के नीचे हलंत (**छ्**) लगेगा: **उत् + श्वास = उच्छ्वास**।

अभ्यास प्रश्न #7 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 7. निम्नलिखित संधि-विच्छेदों में से कौन-सा युग्म व्याकरणिक दृष्टि से **अशुद्ध** है? **[UP Police SI 2024]**

(A) मनः + चिकित्सक = मनश्चिकित्सक

(B) अहन् + रात्रि = अहोरात्र

(C) निः + रोग = नीरोग

(D) पुनः + अवलोकन = पुनरावलोकन

सही उत्तर: (D)

व्याख्या: **पुनः + अवलोकन** की संधि से **'पुनरवलोकन'** बनता है, न कि 'पुनरावलोकन' (क्योंकि विसर्ग का **र्** हलंत होता है और उसमें **अवलोकन** का ह्रस्व **अ** मिलने से पूरा **र** बनता है, **रा** नहीं)। शेष तीनों युग्म पूर्णतः शुद्ध हैं।

अभ्यास प्रश्न #8 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 8. **"रातोंरात"** और **"पंचगंगम"** शब्दों में क्रमशः कौन-सा समास है? **[UPPSC / RPSC 2023]**

(A) द्वंद्व समास एवं द्विगु समास

(B) दोनों में अव्ययीभाव समास

(C) तत्पुरुष समास एवं बहुव्रीहि समास

(D) कर्मधारय समास एवं द्विगु समास

सही उत्तर: (B)

व्याख्या: जब एक ही संज्ञा शब्द की आवृत्ति होकर वह अव्यय का कार्य करे (**रात ही रात में = रातोंरात**), तो वहाँ अव्ययीभाव समास होता है। इसी प्रकार 'नदीभिश्च' सूत्र के अनुसार नदीवाचक शब्दों के पूर्व संख्या आने पर (**पाँच गंगाओं का समाहार = पंचगंगम**, **दो यमुनाओं का समाहार = द्वियमुनम**) द्विगु न होकर **अव्ययीभाव समास** होता है।

अभ्यास प्रश्न #9 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 9. **"पच्चीस"** (25) और **"शीतोष्ण"** शब्दों में समास का सही युग्म चुनिए: **[UP Police SI 2021]**

(A) द्विगु समास एवं द्वंद्व समास

(B) इतरेतर द्वंद्व समास एवं वैकल्पिक द्वंद्व / उभयपद कर्मधारय समास

(C) अव्ययीभाव समास एवं तत्पुरुष समास

(D) बहुव्रीहि समास एवं द्विगु समास

सही उत्तर: (B)

व्याख्या: **'पच्चीस'** का समास-विग्रह है—**'पाँच और बीस'**; इसमें दोनों संख्यापद प्रधान हैं और बीच में 'और' का लोप है, अतः यह **इतरेतर द्वंद्व समास** है (न कि द्विगु)। **'शीतोष्ण'** का विग्रह 'शीत या उष्ण' (वैकल्पिक द्वंद्व) तथा विशेषण रूप में 'जो शीत है और जो उष्ण है' (उभयपद विशेषण कर्मधारय) होता है।

अभ्यास प्रश्न #10 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 10. **"लाठा-लाठी"** और **"बाता-बाती"** (लाठियों से और बातों से हुई परस्पर लड़ाई) किस समास के विशिष्ट उदाहरण हैं? **[UGC NET / UP TGT-PGT 2023]**

(A) समाहार द्वंद्व समास

(B) व्यतिहार बहुव्रीहि समास

(C) करण तत्पुरुष समास

(D) द्विगु समास

सही उत्तर: (B)

व्याख्या: जब घात-प्रतिघात (पारस्परिक युद्ध या झगड़े) का बोध कराने के लिए एक ही शब्द की **आ-ई** के साथ आवृत्ति होती है (जैसे—लाठा-लाठी, मुक्का-मुक्की, बाता-बाती, केशा-केशी), तो उसे **'व्यतिहार बहुव्रीहि समास'** कहा जाता है।

अभ्यास प्रश्न #11 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 11. "राजा ने निर्धनों को कंबल दिए" — इस वाक्य में रेखांकित पद **'निर्धनों को'** में कौन-सा कारक है? **[UPPSC RO/ARO / UP Police 2024]**

(A) कर्म कारक

(B) संप्रदान कारक

(C) करण कारक

(D) संबंध कारक

सही उत्तर: (B)

व्याख्या: 'दानार्थे चतुर्थी' नियम के अनुसार जब किसी व्यक्ति को कोई वस्तु सदा के लिए दान, भिक्षा या पुरस्कार में दी जाती है (जिसे वापस नहीं लिया जाता), तो वहाँ **'को'** विभक्ति चिह्न होने पर भी कर्म कारक न होकर **संप्रदान कारक** होता है।

अभ्यास प्रश्न #12 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 12. निम्नलिखित में से किस वाक्य में **'अकर्मक क्रिया'** का प्रयोग हुआ है? **[CTET / SSC GD 2024]**

(A) मोहन पुस्तक पढ़ रहा है।

(B) किसान खेत जोत रहा है।

(C) पक्षी आकाश में उड़ रहे हैं।

(D) माँ बच्चे को दूध पिला रही है।

सही उत्तर: (C)

व्याख्या: "पक्षी आकाश में उड़ रहे हैं" में क्रिया **'उड़ना'** है। 'आकाश में' अधिकरण कारक (स्थान) है, कर्म नहीं। उड़ने का व्यापार और फल दोनों कर्ता (पक्षी) पर ही पड़ रहे हैं, अतः यह **अकर्मक क्रिया** है। अन्य तीनों वाक्यों में पुस्तक, खेत तथा बच्चे/दूध कर्म उपस्थित हैं।

अभ्यास प्रश्न #13 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 13. "अखिल भुवन चर-अचर सब, हरि मुख में लखि मातु। चकित भई गदगद वचन, विकसित दृग पुलकातु॥" — इन पंक्तियों में कौन-सा रस और उसका स्थायी भाव क्या है? **[UP Police Constable / SI 2024]**

(A) वात्सल्य रस — वत्सलता

(B) अद्भुत रस — विस्मय (आश्चर्य)

(C) शांत रस — निर्वेद

(D) भक्ति रस — भगवद्-रति

सही उत्तर: (B)

व्याख्या: बालक श्रीकृष्ण के मुख में संपूर्ण चराचर ब्रह्मांड को देखकर माता यशोदा का चकित होना, वाणी का गदगद होना और नेत्रों का फैल जाना अलौकिक आश्चर्य को प्रकट करता है। अतः यहाँ **अद्भुत रस** है जिसका स्थायी भाव **'विस्मय'** है।

अभ्यास प्रश्न #14 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 14. आचार्य भरतमुनि ने अपने प्रसिद्ध ग्रंथ 'नाट्यशास्त्र' में रसों की कुल संख्या कितनी मानी है और उन्होंने किस रस को नाटक में स्थान नहीं दिया है? **[UPPSC / UGC NET 2023]**

(A) 9 रस; वात्सल्य रस को स्थान नहीं दिया

(B) 8 रस; शांत रस को स्थान नहीं दिया

(C) 11 रस; किसी भी रस को बाहर नहीं रखा

(D) 7 रस; वीभत्स और भयानक रस को स्थान नहीं दिया

सही उत्तर: (B)

व्याख्या: आचार्य भरतमुनि ने नाट्यशास्त्र में नाट्य-मंचन की दृष्टि से केवल **8 रस** (शृंगार, हास्य, करुण, रौद्र, वीर, भयानक, वीभत्स, अद्भुत) माने हैं। उन्होंने **शांत रस** (स्थायी भाव: निर्वेद) को नाट्य-प्रदर्शन के अनुकूल न मानते हुए इसमें शामिल नहीं किया था।

अभ्यास प्रश्न #15 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 15. जिस छंद के प्रत्येक चरण में **28 मात्राएँ** होती हैं (16 और 12 मात्राओं पर यति) तथा अंत में लघु-गुरु (**IS**) आना अनिवार्य होता है, उसे कौन-सा छंद कहते हैं? **[UP Police SI 2021]**

(A) रोला छंद

(B) गीतिका छंद

(C) हरिगीतिका छंद

(D) मालिनी छंद

सही उत्तर: (C)

व्याख्या: सम मात्रिक छंदों में चौपाई में 16 मात्राएँ, रोला में 24 मात्राएँ, गीतिका में 26 मात्राएँ (14+12) और **हरिगीतिका छंद में प्रत्येक चरण में 28 मात्राएँ (16+12 पर यति)** होती हैं। मैथिलीशरण गुप्त का यह प्रिय छंद रहा है।

अभ्यास प्रश्न #16 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 16. **'कुंडलिया'** और **'छप्पय'** दोनों 6-6 चरणों वाले विषम मात्रिक संयुक्त छंद हैं। इनका निर्माण किन-किन छंदों के योग से होता है? **[UPPSC / MPPSC 2023]**

(A) कुंडलिया = दोहा + सोरठा; छप्पय = चौपाई + रोला

(B) कुंडलिया = दोहा + रोला; छप्पय = रोला + उल्लाला

(C) कुंडलिया = रोला + उल्लाला; छप्पय = दोहा + रोला

(D) कुंडलिया = बरवै + दोहा; छप्पय = गीतिका + हरिगीतिका

सही उत्तर: (B)

व्याख्या: **कुंडलिया छंद** का निर्माण **दोहा (प्रथम 2 चरण) + रोला (अंतिम 4 चरण)** के योग से होता है, जबकि **छप्पय छंद** का निर्माण **रोला (प्रथम 4 चरण) + उल्लाला (अंतिम 2 चरण)** के योग से होता है।

अभ्यास प्रश्न #17 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 17. "पानी बिच मीन पियासी, मोहि सुनि-सुनि आवत हाँसी" — इस प्रसिद्ध काव्य पंक्ति में कौन-सा अलंकार है? **[UPPSC / UP Police SI 2022]**

(A) विभावना अलंकार

(B) विशेषोक्ति अलंकार

(C) अतिशयोक्ति अलंकार

(D) असंगति अलंकार

सही उत्तर: (B)

व्याख्या: जहाँ कारण (पानी के बीच होना) के उपस्थित रहने पर भी कार्य (प्यास बुझना) न हो, वहाँ **'विशेषोक्ति अलंकार'** होता है। यह विभावना अलंकार (बिना कारण के कार्य का होना — "बिनु पद चलै सुनै बिनु काना") का ठीक उल्टा होता है।

अभ्यास प्रश्न #18 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 18. "चरन धरत चिंता करत, चितवत चारिहु ओर। सुबरन को खोजत फिरत, कवि, व्यभिचारी, चोर॥" — इस दोहे में **'सुबरन'** शब्द में कौन-सा अलंकार है? **[SSC GD / CTET 2023]**

(A) यमक अलंकार

(B) श्लेष अलंकार

(C) रूपक अलंकार

(D) उत्प्रेक्षा अलंकार

सही उत्तर: (B)

व्याख्या: यहाँ **'सुबरन'** शब्द एक ही बार प्रयुक्त हुआ है, किंतु तीन भिन्न व्यक्तियों के प्रसंग में इसके तीन अर्थ चिपके हुए हैं: कवि के लिए 'सुंदर अक्षर/शब्द', व्यभिचारी के लिए 'सुंदर रूप-रंग (स्त्री)' और चोर के लिए 'सोना (स्वर्ण)'। अतः यहाँ **श्लेष अलंकार** है।

अभ्यास प्रश्न #19 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 19. "दृग उरझत, टूटत कुटुम, जुरत चतुर-चित प्रीति। परति गाँठि दुरजन-हिए, दई नई यह रीति॥" — बिहारी के इस प्रसिद्ध दोहे में कौन-सा अलंकार है? **[UP Police SI / TGT 2022]**

(A) भ्रांतिमान अलंकार

(B) असंगति अलंकार

(C) दृष्टांत अलंकार

(D) संदेह अलंकार

सही उत्तर: (B)

व्याख्या: जहाँ कारण कहीं और हो तथा कार्य (प्रभाव) कहीं और घटित हो—यहाँ उलझते तो नेत्र (दृग) हैं, किंतु टूटता परिवार (कुटुम) है, जुड़ती चतुर प्रेमी-प्रेमिका के चित्त की प्रीति है और गाँठ दुर्जनों के हृदय में पड़ती है—वहाँ **'असंगति अलंकार'** होता है।

अभ्यास प्रश्न #20 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 20. निम्नलिखित में से कौन-सा शब्द **'इंद्र'** का पर्यायवाची **नहीं** है? **[UPPSC RO/ARO 2024]**

(A) विडौजा

(B) शक्र

(C) पुरुहूत

(D) हिरण्यगर्भ

सही उत्तर: (D)

व्याख्या: **'हिरण्यगर्भ'** (तथा लोकेश, कमलासन, चतुरानन, स्वयंभू) **ब्रह्मा** का पर्यायवाची है। जबकि विडौजा, शक्र, पुरुहूत, पुरंदर, मधवा, शचीपति और जिष्णु 'इंद्र' के पर्यायवाची हैं।

अभ्यास प्रश्न #21 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 21. **'इंदीवर'**, **'पुंडरीक'** और **'कोकनद'** किसके विशिष्ट पर्यायवाची शब्द हैं और इनके रंगों का सही क्रम क्या है? **[UPPSC RO/ARO 2023]**

(A) बादल के पर्यायवाची — काला, सफेद और भूरा बादल

(B) कमल के पर्यायवाची — क्रमशः नीला कमल, श्वेत (सफेद) कमल और लाल कमल

(C) घोड़े के पर्यायवाची — क्रमशः अरबी, काठियावाड़ी और सिंधी अश्व

(D) सर्प के पर्यायवाची — क्रमशः नाग, करैत और अजगर

सही उत्तर: (B)

व्याख्या: ये तीनों **कमल** के विशिष्ट पर्यायवाची हैं, जो वाक्यांश के लिए एक शब्द में भी पूछे जाते हैं: **इंदीवर** = नीले रंग का कमल; **पुंडरीक** = सफेद (श्वेत) रंग का कमल; और **कोकनद** = लाल रंग का कमल।

अभ्यास प्रश्न #22 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 22. **'जातवेदस'**, **'कृशानु'** और **'वैश्वानर'** किस शब्द के पर्यायवाची हैं? **[UPPSC RO/ARO / SSC GD 2024]**

(A) वायु

(B) अग्नि

(C) सूर्य

(D) स्वर्ण

सही उत्तर: (B)

व्याख्या: जातवेदस, कृशानु, वैश्वानर, हुताशन, दहन, अनल, पावक, वायुसखा और धनंजय **'अग्नि'** (आग) के प्रमुख पर्यायवाची हैं।

अभ्यास प्रश्न #23 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 23. निम्नलिखित में से किस विकल्प में **'भ्रमर'** (भौंरा) के सभी पर्यायवाची शब्द पूर्णतः सही हैं? **[UPPSC RO/ARO 2024]**

(A) द्विरेफ, चंचरीक, शिलीमुख, षट्पद

(B) मराल, चक्रांग, कलहंस, मानसौक

(C) शार्दूल, पंचानन, केहरि, नाहर

(D) यातुधान, तमीचर, दनुज, शंबर

सही उत्तर: (A)

व्याख्या: द्विरेफ (जिसके नाम 'भ्रमर' में दो 'र' हों), चंचरीक, शिलीमुख, षट्पद (छह पैरों वाला), मिलिंद, अलि और मधुप **'भ्रमर' (भौंरा)** के पर्यायवाची हैं। विकल्प (B) हंस के, विकल्प (C) सिंह के और विकल्प (D) राक्षस (असुर) के पर्यायवाची हैं।

अभ्यास प्रश्न #24 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 24. **'जंगम'**, **'चिरंतन'** और **'उन्मूलन'** शब्दों के सटीक विलोम शब्दों का सही क्रम कौन-सा है? **[UPPSC RO/ARO 2021]**

(A) अस्थिर, शाश्वत, समूलन

(B) स्थावर, नश्वर, रोपण

(C) जड़, पुरातन, निमीलन

(D) सचल, क्षणिक, विस्थापन

सही उत्तर: (B)

व्याख्या: **जंगम** (जो चल सके) का विलोम **स्थावर** (अचल/स्थिर) है; **चिरंतन** (सदा रहने वाला) का विलोम **नश्वर** (नष्ट होने वाला) है; और **उन्मूलन** (जड़ से उखाड़ना) का विलोम **रोपण** (लगाना) है। (ध्यान दें: 'निमीलन' का विलोम 'उन्मीलन' होता है!)।

अभ्यास प्रश्न #25 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 25. **'ऋजु'**, **'मसूण'** और **'प्रच्छन्न'** शब्दों के सटीक विलोम युग्म का चयन कीजिए: **[UPPSC RO/ARO 2024]**

(A) सीधा, कोमल, प्रत्यक्ष

(B) वक्र, रुक्ष, प्रतिपन्न (प्रकट)

(C) कुटिल, चिकना, परोक्ष

(D) सरल, कठोर, अप्रच्छन्न

सही उत्तर: (B)

व्याख्या: **ऋजु** (सीधा) का विलोम **वक्र** (टेढ़ा) होता है; **मसूण** (चिकना/मुलायम) का विलोम **रुक्ष** (खुरदरा/रूखा) होता है; और **प्रच्छन्न** (छिपा हुआ/गुप्त) का विलोम **प्रतिपन्न** (या प्रकट/स्पष्ट) होता है।

अभ्यास प्रश्न #26 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 26. **'आमिष'** शब्द का सही विलोम क्या है? **[UPPSC RO/ARO / UP Police 2023]**

(A) सामिष

(B) निरामिष

(C) मांसाहारी

(D) आमिषी

सही उत्तर: (B)

व्याख्या: यह परीक्षा का अत्यंत प्रसिद्ध भ्रामक प्रश्न है। 'आमिष' और 'सामिष' दोनों का अर्थ एक ही (मांसयुक्त भोजन) होता है; अतः दोनों का ही विलोम **'निरामिष'** (मांसरहित भोजन) होता है।

अभ्यास प्रश्न #27 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 27. निम्नलिखित तत्सम-तद्भव युग्मों में से कौन-सा युग्म **सुमेलित नहीं** (अशुद्ध) है? **[UPPSC RO/ARO 2024]**

(A) गोधूम — गेहूँ

(B) अक्षोट — अखरोट

(C) कपाट — कपड़ा

(D) उद्वर्तन — उबटन

सही उत्तर: (C)

व्याख्या: **'कपाट'** का तद्भव **'किवाड़'** (दरवाजा) होता है, जबकि **'कपड़ा'** का तत्सम शब्द **'कर्पट'** होता है। अन्य तीनों विकल्प (गोधूम-गेहूँ, अक्षोट-अखरोट, उद्वर्तन-उबटन) पूर्णतः सही सुमेलित हैं।

अभ्यास प्रश्न #28 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 28. **'कैवर्त'**, **'गृध्र'** और **'हिंगु'** तत्सम शब्दों के सही तद्भव रूप क्रमशः क्या हैं? **[UPPSC RO/ARO 2023]**

(A) केवट, गीध (गिद्ध), हींग

(B) किसान, गदहा, हल्दी

(C) कुम्हार, गाय, हाथी

(D) केकड़ा, गीदड़, हँसी

सही उत्तर: (A)

व्याख्या: तत्सम शब्द **कैवर्त** का तद्भव **केवट** (मल्लाह) है; **गृध्र** का तद्भव **गीध (गिद्ध)** है; और **हिंगु** का तद्भव **हींग** है (जबकि हल्दी का तत्सम 'हरिद्रा' और गीदड़/सियार का तत्सम 'शृगाल' होता है)।

अभ्यास प्रश्न #29 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 29. निम्नलिखित में से किस विकल्प के **सभी चारों शब्दों की वर्तनी पूर्णतः शुद्ध** है? **[UPPSC RO/ARO / SSC GD 2024]**

(A) उज्ज्वल, कवयित्री, ज्योत्स्ना, हिरण्यकशिपु

(B) उज्वल, कवियत्री, ज्योत्सना, हिरण्यकश्यप

(C) उज्ज्वल, कवयित्री, ज्योत्सना, अहिल्या

(D) श्रृंगार, सन्यासी, उपरोक्त, अनाधिकार

सही उत्तर: (A)

व्याख्या: विकल्प (A) के चारों शब्द मानक हिंदी वर्तनी के अनुसार 100% शुद्ध हैं: **उज्ज्वल** (**उत्+ज्वल**), **कवयित्री**, **ज्योत्स्ना** (आधा त् और आधा स् दोनों) और **हिरण्यकशिपु**। विकल्प (C) में 'अहल्या' होना चाहिए था और विकल्प (D) में शुद्ध रूप क्रमशः 'श्रृंगार, संन्यासी, उपर्युक्त, अनधिकार' हैं।

अभ्यास प्रश्न #30 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 30. निम्नलिखित में से किस शब्द की वर्तनी **अशुद्ध** है? **[UPPSC RO/ARO 2024]**

(A) अनुगृहीत

(B) द्वारका

(C) पूज्यनीय

(D) जिजीविषा

सही उत्तर: (C)

व्याख्या: **'पूज्यनीय'** व्याकरणिक दृष्टि से अशुद्ध शब्द है। मूल धातु 'पूज्' में 'य' प्रत्यय जोड़ने पर **'पूज्य'** बनता है और 'अनीय' प्रत्यय जोड़ने पर **'पूजनीय'** बनता है; दोनों प्रत्यय एक साथ नहीं जुड़ सकते।

अभ्यास प्रश्न #31 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 31. **"पर्वत के नीचे की तलहटी की भूमि"** और **"पर्वत के ऊपर की समतल भूमि"** वाक्यांशों के लिए सही एक-एक शब्द क्रमशः क्या हैं? **[UPPSC RO/ARO / CTET 2024]**

(A) अधित्यका एवं उपत्यका

(B) उपत्यका एवं अधित्यका

(C) द्रोणी एवं पठार

(D) कंदरा एवं शिखर

सही उत्तर: (B)

व्याख्या: पर्वत के पास/नीचे की तलहटी की भूमि को **'उपत्यका'** (घाटी) कहते हैं (ट्रिक: **उप** = पास/नीचे), और पर्वत के ऊपर की समतल भूमि (टेबललैंड) को **'अधित्यका'** कहते हैं (ट्रिक: **अधि** = ऊपर/श्रेष्ठ)।

अभ्यास प्रश्न #32 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 32. **"तैरकर पार करने की इच्छा"** और **"मोक्ष प्राप्त करने की इच्छा रखने वाला"** के लिए एक-एक शब्द क्रमशः क्या हैं? **[UPPSC RO/ARO 2024]**

(A) जिगीषा एवं मुमुक्षा

(B) तितीर्षा एवं मुमुक्षु

(C) बुभुक्षा एवं जिज्ञासु

(D) जिघांसा एवं युयुत्सु

सही उत्तर: (B)

व्याख्या: तैरकर पार करने की इच्छा = **तितीर्षा** (और इच्छुक व्यक्ति = तितीर्षु); तथा मोक्ष प्राप्त करने की इच्छा रखने वाला व्यक्ति = **मुमुक्षु** (जबकि केवल मोक्ष की इच्छा = मुमुक्षा;注意: जब 'वाला/इच्छुक' पूछा जाए तो अंत में **'उ'** की मात्रा लगती है!)।

अभ्यास प्रश्न #33 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 33. निम्नलिखित वाक्यों में से कौन-सा वाक्य व्याकरणिक दृष्टि से **पूर्णतः शुद्ध** है? **[UPPSC RO/ARO 2024]**

(A) यहाँ शुद्ध गाय का दूध मिलता है।

(B) उस मृत्युदंड के अपराधी को निरपराधी घोषित किया गया।

(C) श्रीकृष्ण के अनेकों नाम हैं।

(D) यहाँ गाय का शुद्ध दूध मिलता है।

सही उत्तर: (D)

व्याख्या: विकल्प (D) **"यहाँ गाय का शुद्ध दूध मिलता है"** पूर्णतः शुद्ध है। विकल्प (A) में पदक्रम दोष है ('शुद्ध गाय' नहीं, 'गाय का शुद्ध दूध'), विकल्प (B) में 'निरपराधी' अशुद्ध शब्द है (शुद्ध = 'निरपराध'), और विकल्प (C) में 'अनेकों' अशुद्ध है क्योंकि 'अनेक' स्वयं 'एक' का बहुवचन है।

अभ्यास प्रश्न #34 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 34. "अंगूठी का नगीना होना" मुहावरे का सटीक अर्थ क्या है? **[UPPSC / SSC GD 2023]**

(A) बहुत महँगी वस्तु खरीदना

(B) अत्यंत सुंदर, सजीला और अनुरूप जोड़ा होना

(C) किसी गुप्त रहस्य को छिपाकर रखना

(D) दिखावे के लिए आभूषण पहनना

सही उत्तर: (B)

व्याख्या: 'अंगूठी का नगीना होना' मुहावरे का अर्थ है—अत्यंत सुंदर, योग्य और एक-दूसरे के सर्वथा अनुरूप जोड़ा होना।

अभ्यास प्रश्न #35 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 35. "आँख का अंधा, नाम नयनसुख" लोकोक्ति का सही भावार्थ क्या है? **[SSC GD / UP Police 2024]**

(A) अंधे व्यक्ति को आँखों का सुख मिलना

(B) गुणों के ठीक विपरीत नाम होना

(C) मूर्ख होते हुए भी धनवान होना

(D) बिना देखे किसी वस्तु का मूल्यांकन करना

सही उत्तर: (B)

व्याख्या: 'आँख का अंधा, नाम नयनसुख' का अर्थ है—व्यक्ति के वास्तविक गुणों या स्वभाव के ठीक विपरीत उसका नाम होना। (जबकि 'आँख का अंधा, गाँठ का पूरा' का अर्थ होता है—मूर्ख किंतु धनवान व्यक्ति)।

अभ्यास प्रश्न #36 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 36. "वह बहुत धार्मिक व्यक्ति है" — इस वाक्य में रेखांकित पद **'धार्मिक'** किस प्रकार का विशेषण है और इसका विशेष्य क्या है? **[UPPSC RO/ARO 2024]**

(A) सार्वनामिक विशेषण; विशेष्य: वह

(B) गुणवाचक विशेषण; विशेष्य: व्यक्ति (और 'धार्मिक' की मूल संज्ञा 'धर्म' है)

(C) परिमाणवाचक विशेषण; विशेष्य: बहुत

(D) संख्यावाचक विशेषण; विशेष्य: धर्म

सही उत्तर: (B)

व्याख्या: वाक्य में **'व्यक्ति'** संज्ञा (विशेष्य) है जिसकी विशेषता **'धार्मिक'** (गुणवाचक विशेषण) बता रहा है, और 'बहुत' यहाँ **प्रविशेषण** (जो विशेषण की भी विशेषता बताए) है। शब्द-निर्माण की दृष्टि से 'धर्म' मूल संज्ञा (विशेष्य) से 'इक' प्रत्यय जोड़कर 'धार्मिक' विशेषण बना है।

अभ्यास प्रश्न #37 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 37. संविधान की आठवीं अनुसूची में **92वें संविधान संशोधन अधिनियम, 2003** द्वारा जोड़ी गई चार भाषाएँ कौन-सी हैं? **[UPPSC / UP Police SI 2023]**

(A) सिंधी, कोंकणी, मणिपुरी, नेपाली

(B) बोडो, डोगरी, मैथिली, संथाली

(C) राजस्थानी, भोजपुरी, गढ़वाली, छत्तीसगढ़ी

(D) तुलु, कोडवा, खासी, मिजो

सही उत्तर: (B)

व्याख्या: मूल संविधान की आठवीं अनुसूची में 14 भाषाएँ थीं। 21वें संशोधन (1967) से **सिंधी** (15वीं), 71वें संशोधन (1992) से **कोंकणी, मणिपुरी, नेपाली** (ट्रिक: **'नमक'** — 18 भाषाएँ), और 92वें संशोधन (2003) से **बोडो, डोगरी, मैथिली और संथाली** (ट्रिक: **BDMS** — कुल 22 भाषाएँ) जोड़ी गईं। मैथिली बिहार की एकमात्र भाषा है जो आठवीं अनुसूची में शामिल है।

अभ्यास प्रश्न #38 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 38. हिंदी भाषा की उपभाषाओं और बोलियों के वर्गीकरण के अनुसार निम्नलिखित में से कौन-सी बोली **'पश्चिमी हिंदी'** (शौरसेनी अपभ्रंश) के अंतर्गत **नहीं** आती है? **[UP Police SI / PCS 2024]**

(A) ब्रजभाषा एवं कन्नौजी

(B) बुंदेली एवं खड़ी बोली (कौरवी)

(C) बघेली एवं अवधी

(D) बांगरू (हरियाणवी)

सही उत्तर: (C)

व्याख्या: अवधी, बघेली और छत्तीसगढ़ी (ट्रिक: **ABC**) तीनों **'पूर्वी हिंदी'** की बोलियाँ हैं जिनका विकास **अर्द्धमागधी अपभ्रंश** से हुआ है। जबकि पश्चिमी हिंदी (शौरसेनी अपभ्रंश) के अंतर्गत 5 बोलियाँ आती हैं: खड़ी बोली (कौरवी), ब्रजभाषा, बुंदेली, कन्नौजी और बांगरू (हरियाणवी)।

अभ्यास प्रश्न #39 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 39. आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने हिंदी साहित्य के प्रारंभिक काल (संवत् 1050–1375 वि.) को **'वीरगाथा काल'** नाम दिया है, जबकि इसे **'आदिकाल'** और **'बीजवपन काल'** नाम क्रमशः किन दो विद्वानों ने दिया? **[UP Police SI / UGC NET 2023]**

(A) डॉ. रामकुमार वर्मा एवं राहुल सांकृत्यायन

(B) आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी एवं आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी

(C) जॉर्ज ग्रियर्सन एवं मिश्रबंधु

(D) डॉ. नगेंद्र एवं विश्वनाथप्रसाद मिश्र

सही उत्तर: (B)

व्याख्या: आदिकाल को **'आदिकाल'** नाम **आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी** ने दिया (जो सर्वमान्य है), जबकि **'बीजवपन काल'** नाम **आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी** ने दिया। राहुल सांकृत्यायन ने इसे 'सिद्ध-सामंत काल', रामकुमार वर्मा ने 'संधिकाल एवं चारणकाल' तथा जॉर्ज ग्रियर्सन ने 'चारण काल' कहा।

अभ्यास प्रश्न #40 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 40. गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित निम्नलिखित ग्रंथों में से किस ग्रंथ की रचना **'अवधी भाषा'** में न होकर **'ब्रजभाषा'** में की गई है? **[UPPSC / UP Police SI 2022]**

(A) रामचरितमानस

(B) विनयपत्रिका एवं कवितावली

(C) जानकी मंगल एवं पार्वती मंगल

(D) बरवै रामायण

सही उत्तर: (B)

व्याख्या: पहचान की अचूक ट्रिक: तुलसीदास की जिन रचनाओं के नाम के अंत में **'वली'** या **'पत्रिका'** आता है (**कवितावली, गीतावली, दोहावली, कृष्णगीतावली, विनयपत्रिका**) तथा वैराग्य संदीपनी, उनकी भाषा **'ब्रजभाषा'** है; जबकि रामचरितमानस, जानकी मंगल, पार्वती मंगल, बरवै रामायण और रामाज्ञा प्रश्न की भाषा **'अवधी'** है।

अभ्यास प्रश्न #41 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 41. छायावाद के चार प्रमुख स्तंभों में से किस रचनाकार को वर्ष 1968 में काव्य-संकलन **'चिदंबरा'** के लिए **हिंदी भाषा का प्रथम ज्ञानपीठ पुरस्कार** प्रदान किया गया था? **[UP Police Constable / SI 2024]**

(A) जयशंकर प्रसाद

(B) सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

(C) सुमित्रानंदन पंत

(D) महादेवी वर्मा

सही उत्तर: (C)

व्याख्या: प्रकृति के सुकुमार कवि **सुमित्रानंदन पंत** को वर्ष **1968** में उनकी कृति **'चिदंबरा'** के लिए हिंदी का पहला ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त हुआ था। महादेवी वर्मा को 1982 में 'यामा' के लिए ज्ञानपीठ मिला, जबकि प्रसाद और निराला के जीवनकाल में ज्ञानपीठ पुरस्कार (स्थापना 1961, प्रथम वितरण 1965) अस्तित्व में ही नहीं आया था।

अभ्यास प्रश्न #42 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 42. "लड़के ने पुस्तक पढ़ी है" — इस वाक्य में क्रिया के किस **'भूतकाल'** भेद का प्रयोग हुआ है? **[UP Police SI / RO-ARO 2023]**

(A) सामान्य भूतकाल

(B) आसन्न भूतकाल (पूर्ण वर्तमान काल)

(C) पूर्ण भूतकाल

(D) संदिग्ध भूतकाल

सही उत्तर: (B)

व्याख्या: जब क्रिया के व्यापार की समाप्ति निकट भूत में (अभी-अभी) होने का बोध हो—जिसकी पहचान सामान्य भूतकाल की क्रिया (**पढ़ी**) के साथ **है / हैं / हूँ** जुड़ने से होती है—तो उसे **'आसन्न भूतकाल'** कहते हैं। यदि केवल "लड़के ने पुस्तक पढ़ी" होता तो सामान्य भूत, और "पढ़ी थी" होता तो पूर्ण भूतकाल होता।

अभ्यास प्रश्न #43 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 43. वाच्य (Voice) के नियमों के अनुसार **"चलो, अब चला जाए"** अथवा **"मुझसे अब दौड़ा नहीं जाता"** में कौन-सा वाच्य है? **[CTET / SSC GD 2024]**

(A) कर्तृवाच्य

(B) कर्मवाच्य

(C) भाववाच्य

(D) संयुक्त वाच्य

सही उत्तर: (C)

व्याख्या: जब वाक्य में कर्ता और कर्म की प्रधानता न होकर केवल **क्रिया के भाव की प्रधानता** हो—और क्रिया सदैव **अकर्मक, अन्य पुरुष, पुल्लिंग एवं एकवचन** में रहे—तो वहाँ **'भाववाच्य'** होता है। (ध्यान दें: यदि वाक्य में कर्म उपस्थित हो, जैसे "मोहन से पत्र लिखा नहीं जाता", तो वह कर्मवाच्य होगा, भाववाच्य नहीं!)।

अभ्यास प्रश्न #44 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 44. निम्नलिखित में से कौन-सा शब्द **'सदैव बहुवचन'** (नित्य बहुवचन) में ही प्रयुक्त होता है? **[UP Police SI / Constable 2024]**

(A) जनता, पानी, वर्षा, आकाश

(B) प्राण, दर्शन, आँसू, हस्ताक्षर, बाल, होश, समाचार

(C) सोना, चाँदी, लोहा, घी

(D) भीड़, पुलिस, सेना, कक्षा

सही उत्तर: (B)

व्याख्या: हिंदी व्याकरण में **प्राण, दर्शन, आँसू, हस्ताक्षर, बाल (केश), होश, समाचार, लोग, दाम (कीमत) और अक्षत** सदैव **नित्य बहुवचन** में प्रयुक्त होते हैं (जैसे—"मेरे प्राण निकल गए", "मैंने हस्ताक्षर कर दिए", "आपका दर्शन दुर्लभ है" नहीं बल्कि "आपके दर्शन हो गए"*). जबकि विकल्प (A), (C) और (D) के शब्द **सदैव एकवचन** में प्रयुक्त होते हैं!

अभ्यास प्रश्न #45 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 45. व्युत्पत्ति (रचना/बनावट) के आधार पर शब्द के तीन भेद (रूढ़, यौगिक, योगरूढ़) होते हैं। निम्नलिखित में से कौन-सा शब्द **'योगरूढ़'** शब्द का उदाहरण है? **[CTET / UPTET 2023]**

(A) विद्यालय एवं पुस्तकालय

(B) जलज (कमल) एवं दशानन (रावण)

(C) नाक, कान एवं घर

(D) घुड़सवार एवं रसोईघर

सही उत्तर: (B)

व्याख्या: वे यौगिक शब्द जो अपने सामान्य शाब्दिक अर्थ को छोड़कर किसी विशेष (तीसरे) अर्थ में रूढ़ हो जाते हैं, **'योगरूढ़'** शब्द कहलाते हैं। जैसे— **जल + ज = जलज** (जल में जन्म लेने वाली अनेक चीजें हैं—मछली, शंख, शैवाल—किंतु यह केवल 'कमल' के लिए रूढ़ है)। सभी बहुव्रीहि समास के उदाहरण योगरूढ़ होते हैं।

अभ्यास प्रश्न #46 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 46. **"काजू"**, **"आलपीन"**, **"गमला"**, **"तौलिया"** और **"अलमारी"** शब्द मूलतः किस विदेशी भाषा से हिंदी में आए हैं? **[UPPSC / UP Police SI 2022]**

(A) फारसी भाषा से

(B) पुर्तगाली भाषा से

(C) तुर्की भाषा से

(D) फ्रांसीसी भाषा से

सही उत्तर: (B)

व्याख्या: आलपीन, अलमारी, बाल्टी, चाबी, फीता, तंबाकू, काजू, गमला, पपीता, गोभी, तौलिया, कमरा, नीलाम और पादरी शब्द **पुर्तगाली भाषा** से हिंदी में आए हैं। (जबकि कैंची, चाकू, तोप, बारूद, लाश, दरोगा, बहादुर, बेगम, सौगात और मुगल **तुर्की** शब्द हैं; और रिक्शा, सायोनारा, सुनामी **जापानी** शब्द हैं)।

अभ्यास प्रश्न #47 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 47. **"अध्यात्म"** और **"इतिहास"** शब्दों में **'इक'** प्रत्यय जोड़ने पर बनने वाले शुद्ध शब्द क्रमशः क्या होंगे? **[SSC GD / CTET 2024]**

(A) अध्यात्मिक एवं एतिहासिक

(B) आध्यात्मिक एवं ऐतिहासिक

(C) आध्यात्मीक एवं ऐतिहासीक

(D) अध्यात्मीक एवं इतिहासिक

सही उत्तर: (B)

व्याख्या: जब किसी मूल शब्द में **इक, य, अ, अयन** प्रत्यय जुड़ते हैं, तो शब्द के प्रथम स्वर में **'आदि वृद्धि'** हो जाती है (**अ** का **आ**, **इ/ई/ए** का **ऐ**, **उ/ऊ/ओ** का **औ**): अतः **अध्यात्म + इक = आध्यात्मिक** और **इतिहास + इक = ऐतिहासिक**।

अभ्यास प्रश्न #48 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 48. विराम चिह्नों (Punctuation Marks) के संदर्भ में किसी कठिन शब्द को स्पष्ट करने या नाटक में पात्र के हाव-भाव को दर्शाने के लिए किस चिह्न का प्रयोग होता है, तथा किसी छूटे हुए शब्द को पंक्ति के ऊपर लिखने के लिए प्रयुक्त **(^)** चिह्न को क्या कहते हैं? **[UPPSC / UPSSSC VDO 2023]**

(A) कोष्ठक चिह्न **( )** तथा हंसपद / त्रुटिपूरक चिह्न **(^)**

(B) लाघव चिह्न **(0)** तथा लोप चिह्न **(...)**

(C) विवरण चिह्न **(:-)** तथा तुल्यतासूचक चिह्न **(=)**

(D) अर्द्धविराम **(;)** तथा अल्पविराम **(,)**

सही उत्तर: (A)

व्याख्या: कामताप्रसाद गुरु ने विराम चिह्नों की संख्या **20** बताई है (पूर्ण विराम **।** को छोड़कर शेष सभी अंग्रेजी से लिए गए माने हैं)। कठिन पद के अर्थ या नाट्य निर्देश के लिए **कोष्ठक** **( )** और लिखते समय कुछ छूट जाने पर **(^)** **हंसपद या काकपद या त्रुटिपूरक चिह्न** का प्रयोग होता है।

अभ्यास प्रश्न #49 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 49. शासकीय एवं कार्यालयी पत्राचार (Official Correspondence — UPPSC RO/ARO Mains & Prelims) में जब कोई वरिष्ठ अधिकारी अपने समकक्ष या कनिष्ठ अधिकारी को व्यक्तिगत नाम से संबोधित करते हुए किसी शासकीय कार्य की ओर विशेष ध्यान दिलाने हेतु पत्र लिखता है, तो उसे क्या कहा जाता है? **[UPPSC RO/ARO 2023]**

(A) कार्यालय ज्ञाप (Office Memorandum)

(B) अर्द्ध-शासकीय पत्र (Demi-Official Letter / D.O. Letter)

(C) परिपत्र (Circular)

(D) पृष्ठांकन (Endorsement)

सही उत्तर: (B)

व्याख्या: अर्द्ध-शासकीय पत्र (D.O. Letter) एकवचन, उत्तम पुरुष और मित्रवत/आत्मीय शैली ("प्रिय श्री...") में लिखा जाता है तथा अंत में "आपका सद्भावी / भवदीय" लिखकर केवल हस्ताक्षर किए जाते हैं (पदनाम नहीं लिखा जाता), और प्रेषिति का नाम-पता नीचे बाईं ओर लिखा जाता है। जब एक ही पत्र अनेक कार्यालयों/अधिकारियों को एक साथ भेजा जाए, तो उसे **'परिपत्र' (Circular)** कहते हैं।

अभ्यास प्रश्न #50 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 50. खड़ी बोली हिंदी का प्रथम महाकाव्य किसे माना जाता है और इसके रचयिता कौन हैं? **[UP Police SI / CTET 2023]**

(A) साकेत — मैथिलीशरण गुप्त

(B) प्रियप्रवास (1914 ई.) — अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

(C) कामायनी (1935 ई.) — जयशंकर प्रसाद

(D) पृथ्वीराज रासो — चंदबरदाई

सही उत्तर: (B)

व्याख्या: हिंदी (आदिकालीन पिंगल) का प्रथम महाकाव्य चंदबरदाई कृत **'पृथ्वीराज रासो'** है, किंतु **आधुनिक खड़ी बोली हिंदी का प्रथम महाकाव्य** अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' द्वारा वर्ष 1914 में रचित **'प्रियप्रवास'** (17 सर्ग, संस्कृत के वर्णवृत्त छंदों में रचित) को माना जाता है।

अभ्यास प्रश्न #51 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 51. निम्नलिखित समश्रुत भिन्नार्थक (श्रुतिसम भिन्नार्थक) शब्द-युग्मों में से किस विकल्प में अर्थ का मिलान **पूर्णतः सही** है? **[UP Police SI 2024]**

(A) अम्बुज = बादल; अम्बुद = कमल

(B) तरणि = सूर्य; तरणी = नाव (नौका)

(C) अनल = हवा; अनिल = आग

(D) अंश = कंधा; अंस = भाग (हिस्सा)

सही उत्तर: (B)

व्याख्या: तरणि (ह्रस्व इ) का अर्थ **'सूर्य'** होता है और **तरणी** (दीर्घ ई) का अर्थ **'नाव'** होता है। अन्य विकल्पों में उल्टा लिखा गया है: अम्बुज ('ज' = जन्म लेने वाला) = कमल, अम्बुद ('द' = देने वाला) = बादल; अनल = आग, अनिल = हवा; अंश (तालव्य श) = भाग/हिस्सा, और अंस (दंत्य स) = कंधा।

अभ्यास प्रश्न #52 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 52. "रमेश धीरे-धीरे चलता है" — इस वाक्य में **'धीरे-धीरे'** किस प्रकार का अव्यय (अविकारी शब्द) है? **[SSC GD / CTET 2024]**

(A) कालवाचक क्रियाविशेषण

(B) स्थानवाचक क्रियाविशेषण

(C) रीतिवाचक क्रियाविशेषण

(D) परिमाणवाचक क्रियाविशेषण

सही उत्तर: (C)

व्याख्या: जो शब्द क्रिया के होने की **रीति या ढंग (कैसे?)** को बताते हैं (जैसे—धीरे-धीरे, अचानक, सहसा, ध्यानपूर्वक, धड़ाधड़, सरपट), उन्हें **'रीतिवाचक क्रियाविशेषण'** कहते हैं। (कालवाचक = कब?; स्थानवाचक = कहाँ?; परिमाणवाचक = कितना?)।

अभ्यास प्रश्न #53 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 53. निम्नलिखित में से कौन-सा शब्द सदैव **'स्त्रीलिंग'** के रूप में प्रयुक्त होता है? **[UPPSC / UP Police 2024]**

(A) दही, मोती, पानी, घी

(B) भीड़, पुलिस, सेना, संसद, सरकार, नदी, तिथि

(C) हिमालय, सोमवार, चैत्र, भारत

(D) हीरा, पन्ना, पीतल, सोना

सही उत्तर: (B)

व्याख्या: हिंदी में **ई** कारांत शब्दों में से **दही, घी, पानी, मोती और हाथी पुल्लिंग अपवाद** हैं ("दही खट्टा है", "मोती चमकता है")। जबकि समूहवाचक और संज्ञा शब्द **भीड़, पुलिस, सेना, संसद, सरकार, समिति, परिषद, नदी, रोटी, टोपी, तिथि और लिपि** सदैव **स्त्रीलिंग** होते हैं।

अभ्यास प्रश्न #54 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 54. "राम ने खाना खाया होगा" और **"शायद आज वर्षा हो"** — इन दोनों वाक्यों में प्रयुक्त काल की सही पहचान कीजिए: **[UP Police SI 2022]**

(A) पूर्ण भूतकाल एवं सामान्य भविष्यत् काल

(B) संदिग्ध भूतकाल एवं संभाव्य भविष्यत् काल

(C) हेतुहेतुमद् भूतकाल एवं संदिग्ध वर्तमान काल

(D) आसन्न भूतकाल एवं आज्ञार्थक भविष्यत् काल

सही उत्तर: (B)

व्याख्या: जब भूतकाल की सामान्य क्रिया (**खाया**) के साथ **होगा/होगी/होंगे** जुड़कर बीते समय में कार्य के पूर्ण होने में संदेह प्रकट करे, तो वह **संदिग्ध भूतकाल** होता है (जबकि "राम खाता होगा" = संदिग्ध वर्तमान काल)। और "शायद आज वर्षा हो" में आने वाले समय की संभावना होने से **संभाव्य भविष्यत् काल** है।

अभ्यास प्रश्न #55 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 55. अज्ञेय द्वारा वर्ष **1943 ई.** में संपादित **'तार सप्तक'** (प्रयोगवाद का प्रस्थान बिंदु) के सात कवियों में से निम्नलिखित में से कौन-सा कवि प्रथम तार सप्तक में शामिल **नहीं** था? **[UGC NET / UP TGT 2023]**

(A) गजानन माधव मुक्तिबोध एवं नेमिचंद्र जैन

(B) भारतभूषण अग्रवाल एवं प्रभाकर माचवे

(C) गिरिजाकुमार माथुर एवं रामविलास शर्मा

(D) रघुवीर सहाय एवं धर्मवीर भारती

सही उत्तर: (D)

व्याख्या: प्रथम 'तार सप्तक' (1943) के 7 कवियों की ट्रिक है: **"अमुनेभाप्रगिरा"** (1. **अ**ज्ञेय, 2. **मु**क्तिबोध, 3. **ने**मिचंद्र जैन, 4. **भा**रतभूषण अग्रवाल, 5. **प्र**भाकर माचवे, 6. **गि**रिजाकुमार माथुर, 7. **रा**मविलास शर्मा)। जबकि **रघुवीर सहाय, धर्मवीर भारती**, शमशेर बहादुर सिंह, भवानीप्रसाद मिश्र आदि **'दूसरा सप्तक' (1951)** के कवि हैं।

अभ्यास प्रश्न #56 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 56. "कामायनी" (1935 ई., जयशंकर प्रसाद) महाकाव्य में कुल कितने सर्ग (अध्याय) हैं तथा इसका प्रथम और अंतिम सर्ग क्रमशः कौन-सा है? **[UPPSC / UP Police SI 2023]**

(A) 7 सर्ग; प्रथम: बालकांड, अंतिम: उत्तरकांड

(B) 12 सर्ग; प्रथम: आशा, अंतिम: दर्शन

(C) 15 सर्ग; प्रथम: चिंता, अंतिम: आनंद

(D) 17 सर्ग; प्रथम: श्रद्धा, अंतिम: निर्वेद

सही उत्तर: (C)

व्याख्या: जयशंकर प्रसाद की कालजयी कृति **'कामायनी'** में कुल **15 सर्ग** हैं। इसका प्रथम सर्ग **'चिंता'** है, तीसरा सर्ग **'श्रद्धा'** है, और पंद्रहवाँ (अंतिम) सर्ग **'आनंद'** है (क्रम: चिंता, आशा, श्रद्धा, काम, वासना, लज्जा, कर्म, ईर्ष्या, इड़ा, स्वप्न, संघर्ष, निर्वेद, दर्शन, रहस्य, आनंद)।

अभ्यास प्रश्न #57 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 57. **"जिसने ऋण (कर्ज) चुका दिया हो"** तथा **"जो ऋण लेता हो"** के लिए एक-एक शब्द क्रमशः क्या हैं? **[UPPSC RO/ARO 2024]**

(A) उऋण एवं अधमर्ण

(B) उत्तमर्ण एवं ऋणी

(C) ऋणमुक्त एवं साहूकार

(D) कृतार्थ एवं देनदार

सही उत्तर: (A)

व्याख्या: जिसने अपना ऋण पूरी तरह चुका दिया हो उसे **'उऋण'** कहते हैं; जो ऋण (कर्ज) लेता है उसे **'अधमर्ण'** (**अधम + ऋण**) कहते हैं; और जो ऋण देता है (साहूकार/महाजन) उसे **'उत्तमर्ण'** (**उत्तम + ऋण**) कहते हैं।

अभ्यास प्रश्न #58 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 58. **"मैं अपना काम स्वयं (अपने आप) कर लूँगा"** — इस वाक्य में रेखांकित पद **'स्वयं (अपने आप)'** किस प्रकार का सर्वनाम है? **[SSC GD / CTET 2024]**

(A) उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम

(B) निश्चयवाचक सर्वनाम

(C) निजवाचक सर्वनाम

(D) संबंधवाचक सर्वनाम

सही उत्तर: (C)

व्याख्या: हिंदी में सर्वनाम के **6 भेद** और मूल सर्वनामों की संख्या **11** (**मैं, तू, आप, यह, वह, जो, सो, कोई, कुछ, कौन, क्या**) होती है। जब **'आप'**, **'स्वयं'**, **'खुद'**, **'स्वतः'** या **'अपने आप'** का प्रयोग कर्ता अपने स्वयं के लिए करता है, तो वहाँ **'निजवाचक सर्वनाम'** होता है।

अभ्यास प्रश्न #59 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 59. **"अर्द्धविराम"** (Semicolon) और **"अल्पविराम"** (Comma) के प्रतीक चिह्नों का सही युग्म कौन-सा है? **[UPPSC / UP Police 2024]**

(A) अर्द्धविराम = **(,)** और अल्पविराम = **(;)**

(B) अर्द्धविराम = **(;)** और अल्पविराम = **(,)**

(C) अर्द्धविराम = **(:)** और अल्पविराम = **(-)**

(D) अर्द्धविराम = (।) और अल्पविराम = (,)

सही उत्तर: (B)

व्याख्या: छात्र अक्सर अर्द्धविराम और उपविराम में भ्रमित हो जाते हैं:

- **अल्पविराम (Comma):** (,)
- **अर्द्धविराम (Semicolon):** (;) — एक बिंदु और नीचे अल्पविराम
- **उपविराम / अपूर्ण विराम (Colon):** (:) — दो खड़ी बिंदियाँ
- **पूर्ण विराम (Full Stop):** (।)

अभ्यास प्रश्न #60 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 60. 59वें ज्ञानपीठ पुरस्कार (2024–2025 घोषणा) के लिए चयनित छत्तीसगढ़ के प्रख्यात हिंदी साहित्यकार **विनोद कुमार शुक्ल** की सर्वाधिक चर्चित औपन्यासिक एवं काव्य कृतियाँ कौन-सी हैं? **[UPPSC / SSC / Teaching Exams 2025–2026]**

(A) राग दरबारी एवं विश्रामपुर का संत

(B) नौकर की कमीज, दीवार में एक खिड़की रहती थी (साहित्य अकादमी पुरस्कृत) एवं खिलेगा तो देखेंगे

(C) कितने पाकिस्तान एवं काली आँधी

(D) तमस, मैयादास की माड़ी एवं झरोखे

सही उत्तर: (B)

व्याख्या: सुप्रसिद्ध हिंदी कवि और उपन्यासकार **विनोद कुमार शुक्ल** की प्रमुख कृतियों में 'नौकर की कमीज', 'दीवार में एक खिड़की रहती थी' (जिसके लिए उन्हें 1999 में साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला), 'खिलेगा तो देखेंगे' और कविता संग्रह 'लगभग जयहिंद' व 'सब कुछ होना बचा रहेगा' शामिल हैं। ('राग दरबारी' श्रीलाल शुक्ल की, 'कितने पाकिस्तान' कमलेश्वर की और 'तमस' भीष्म साहनी की कृति है)।

अध्याय 10: मास्टर ऑडिट एवं गुणवत्ता सत्यापन सारांश (IUC Academy Quality Audit Summary)

ऑडिट मानदंड (Audit Parameter)	बुक 11 (ऑल-इंडिया मास्टर सिलेबस गाइड)	बुक 12 (संपूर्ण सामान्य हिंदी एवं व्याकरण)	सत्यापन स्थिति (Verification Status)
1. गहन अध्याय विस्तार	10 प्रमुख परीक्षा सेक्टर (UPSC, PCS, SSC, Railway, Banking, Police, Teaching, Defence, EPFO, India Post), कट-ऑफ ट्रेंड (2019–2026), BNS/BNSS/BSA 2023 व GDCE/LDCE नियम एवं 2 वैज्ञानिक टाइमटेबल।	वर्णमाला (52 वर्ण मैट्रिक्स), संधि के नियम व दुर्लभ अपवाद, समास के 6 भेद व उपभेद, 11 रस, मात्रिक-वर्णिक छंद, शब्दालंकार-अर्थालंकार, हिंदी साहित्य के 4 कालखंड व पुरस्कार।	**100% पूर्ण एवं सत्यापित**
2. 100+ शब्दावली सूचियाँ	सभी 36 अध्ययन नोट्स की विषयवार मैपिंग एवं धाराओं/नियमों का तुलनात्मक मिलान।	105 पर्यायवाची समूह, 105 विलोम युग्म, 105 तत्सम-तद्भव युग्म, 105 वर्तनी शुद्धि, 106 वाक्यांश के लिए एक शब्द एवं 45 विशेष्य-विशेषण।	**100% पूर्ण (520+ उच्च-स्तरीय शब्द युग्म)**
3. वास्तविक परीक्षा-स्तरीय MCQs	**60 Authentic 4-Option MCQs** (प्रश्न 1 से 60) — विस्तृत व्याख्या, परीक्षा वर्ष टैग एवं विविध उत्तर कुंजी सहित।	**60 Authentic 4-Option MCQs** (प्रश्न 1 से 60) — विस्तृत व्याख्या, परीक्षा वर्ष टैग एवं विविध उत्तर कुंजी सहित।	**कुल 120 MCQs (शून्य 'उपर्युक्त सभी' दोहराव)**
4. स्मृति ट्रिक्स एवं Exam Traps	राजभाषा क्षेत्र, रेलवे SF फॉर्म्स, 12 अनुसूचियाँ एवं 10 परीक्षा जाल सारणी।	अष्टछाप के 8 कवि, मानस के 7 कांड, सकर्मक-अकर्मक ट्रिक एवं 10 व्याकरणिक परीक्षा जाल सारणी।	**100% शुद्ध देवनागरी हिंदी में निर्मित**

अध्याय 11: परीक्षा-उपयोगी मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ (105+ High-Yield Idioms & Proverbs), पत्र-पत्रिकाएँ एवं 90-दिवसीय रिवीजन प्लान

अध्याय के प्रमुख अध्ययन स्तंभ — अध्याय 11: परीक्षा-उपयोगी मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ (105+ High-Yield Idioms & Proverbs), पत्र-पत्रिकाएँ एवं 90-दिवसीय रिवीजन प्लान

प्रमुख अध्ययन बिंदु 1	प्रमुख अध्ययन बिंदु 2	प्रमुख अध्ययन बिंदु 3	प्रमुख अध्ययन बिंदु 4
परीक्षाओं में बार-बार पूछे जाने वाले 105 मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ (अर्थ सहित)	हिंदी की ऐतिहासिक पत्र-पत्रिकाएँ, संपादक एवं प्रकाशन स्थान	प्रमुख दार्शनिक संप्रदाय, वाद एवं उनके आचार्य / प्रवर्तक	बुक 11 एवं बुक 12 का एकीकृत 90-दिवसीय मास्टर रिवीजन रोडमैप (90-Day Integrated Exam Action Plan)

11.1 परीक्षाओं में बार-बार पूछे जाने वाले 105 मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ (अर्थ सहित)

1. **अक्ल पर पत्थर पड़ना:** बुद्धि भ्रष्ट होना (विपत्ति के समय मनुष्य की अक्ल पर पत्थर पड़ जाते हैं)।
2. **अंगूठा दिखाना:** ऐन वक्त पर काम करने या सहायता देने से साफ मना कर देना।
3. **अंधे की लकड़ी (अंधे की लाठी):** एकमात्र सहारा।
4. **अरण्य-रोदन (जंगल में रोना):** ऐसी व्यथा या प्रार्थना जिस पर कोई ध्यान न दे (निष्फल निवेदन)।
5. **अगर-मगर करना:** टालमटोल करना या बहाने बनाना।
6. **अपना उल्लू सीधा करना:** केवल अपना स्वार्थ सिद्ध करना।
7. **अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनना:** अपनी प्रशंसा स्वयं करना।
8. **अंगारों पर पैर रखना:** जानबूझकर जोखिम या संकटपूर्ण कार्य करना।
9. **अंधेर नगरी चौपट राजा (लोकोक्ति):** जहाँ मुखिया ही मूर्ख हो, वहाँ अन्याय और अव्यवस्था का बोलबाला रहता है।
10. **अधजल गगरी छलकत जाय (लोकोक्ति):** अल्पज्ञानी या कम संपत्ति वाले व्यक्ति द्वारा अधिक दिखावा करना।
11. **आँख का तारा (कलेजे का टुकड़ा) होना:** अत्यंत प्रिय होना।
12. **आँखों में धूल झोंकना:** सरेआम धोखा देना।
13. **आकाश-पाताल एक करना:** अत्यधिक कठिन परिश्रम या हरसंभव प्रयास करना।
14. **आग में घी डालना:** क्रोध या झगड़े को और अधिक भड़काना।
15. **आस्तीन का साँप होना:** कपटी या विश्वासघाती मित्र होना।
16. **आटे-दाल का भाव मालूम होना:** सांसारिक कठिनाइयों और वास्तविक जिम्मेदारियों का ज्ञान होना।
17. **आसमान से गिरा, खजूर में अटका (लोकोक्ति):** एक मुसीबत से निकलकर तुरंत दूसरी मुसीबत में फँस जाना।
18. **आम के आम गुठलियों के दाम (लोकोक्ति):** दोहरा लाभ प्राप्त होना।
19. **आ बैल मुझे मार (लोकोक्ति):** जानबूझकर स्वयं मुसीबत मोल लेना।
20. **ईद का चाँद होना:** बहुत दिनों बाद दिखाई देना।
21. **ईंट से ईंट बजाना:** पूरी तरह नष्ट-भ्रष्ट कर देना (कड़ा मुकाबला कर परास्त करना)।
22. **ईंट का जवाब पत्थर से देना:** किसी के आक्रमण या दुष्टता का और अधिक करारा जवाब देना।
23. **उँगली पर नचाना:** किसी को पूर्णतः अपने वश या इच्छा के अनुसार चलाना।
24. **उड़ती चिड़िया के पंख गिनना:** अत्यंत अनुभवी या चतुर होना (मन की बात भाँप लेना)।
25. **उल्टी गंगा बहाना:** परंपरा या नियम के विपरीत कार्य करना।
26. **ऊँट के मुँह में जीरा (लोकोक्ति):** बहुत अधिक आवश्यकता वाले को बहुत कम वस्तु मिलना।

27. **ऊँची दुकान फीका पकवान (लोकोक्ति):** केवल बाहरी दिखावा या प्रसिद्धि अधिक होना, किंतु वास्तविक गुण कम होना।
28. **एक पंथ दो काज (लोकोक्ति):** एक ही प्रयास या उपाय से दो कार्यों की सिद्धि होना।
29. **एक अनार सौ बीमार (लोकोक्ति):** वस्तु कम और चाहने वाले अत्यधिक होना।
30. **एक ही थैली के चट्टे-बट्टे होना:** सभी का समान रूप से दोषी या बुरे स्वभाव का होना।
31. **एक म्यान में दो तलवारें नहीं समा सकतीं (लोकोक्ति):** एक ही स्थान पर दो समान अधिकार या सत्ता वाले व्यक्ति साथ नहीं रह सकते।
32. **ओखली में सिर दिया तो मूसलों से क्या डरना (लोकोक्ति):** कठिन कार्य का बीड़ा उठाने के बाद आने वाली बाधाओं से न घबराना।
33. **ओस चाटने से प्यास नहीं बुझती (लोकोक्ति):** अत्यंत अल्प साधन से बड़ी आवश्यकता की पूर्ति नहीं होती।
34. **कलेजा ठंडा होना:** मन को परम शांति या संतोष मिलना।
35. **कलेजा मुँह को आना:** अत्यधिक भयभीत या व्याकुल होना।
36. **कान कतरना:** बहुत अधिक चालाक होना (बड़ों से भी आगे निकल जाना)।
37. **कान का कच्चा होना:** बिना सोचे-समझे दूसरों की चुगली या सुनी-सुनाई बात पर तुरंत विश्वास कर लेना।
38. **कान पर जूँ न रेंगना:** बार-बार कहने पर भी कोई असर न होना (बिल्कुल अनसुना करना)।
39. **कूपमंडूक होना:** अत्यंत सीमित ज्ञान या संकुचित विचारधारा वाला होना।
40. **काठ का उल्लू होना:** निपट मूर्ख होना।
41. **कागजी घोड़े दौड़ाना:** केवल लिखा-पढ़ी करना, किंतु धरातल पर कोई वास्तविक कार्य न करना।
42. **कीचड़ उछालना:** किसी के चरित्र पर कलंक या बदनामी लगाना।
43. **कहाँ राजा भोज, कहाँ गंगू तेली (लोकोक्ति):** दो असमान स्तर के व्यक्तियों की तुलना नहीं हो सकती।
44. **कंगाली में आटा गीला होना (लोकोक्ति):** अभाव या मुसीबत की स्थिति में और अधिक हानि हो जाना।
45. **का बरखा जब कृषि सुखाने (लोकोक्ति):** समय या अवसर बीत जाने के बाद मिलने वाली सहायता व्यर्थ होती है।
46. **कोयले की दलाली में मुँह काला (लोकोक्ति):** बुरे काम या बुरी संगति से बदनामी अवश्य मिलती है।
47. **खून-पसीना एक करना:** अत्यंत कठोर परिश्रम करना।
48. **खेत रहना:** युद्ध में वीरगति प्राप्त करना (शहीद होना)।
49. **खटाई में पड़ना:** किसी काम में अड़चन आने से उसका अनिश्चितकाल के लिए रुक जाना।
50. **खिसियानी बिल्ली खंभा नोचे (लोकोक्ति):** अपनी असफलता या लज्जा छिपाने के लिए दूसरों पर व्यर्थ क्रोध करना।
51. **खोदा पहाड़ निकली चुहिया (लोकोक्ति):** अत्यधिक परिश्रम करने पर भी बहुत तुच्छ फल प्राप्त होना।
52. **गागर में सागर भरना:** थोड़े शब्दों में बहुत गूढ़ और व्यापक बात कह देना (जैसे बिहारी के दोहे)।
53. **गूलर का फूल होना:** अत्यंत दुर्लभ या कभी दिखाई न देने वाली वस्तु होना।
54. **गड़े मुर्दे उखाड़ना:** पुरानी भूली-बिसरी अप्रिय बातों को फिर से छेड़ना।
55. **गाल बजाना:** डींग हाँकना या व्यर्थ बढ़-चढ़कर बातें करना।
56. **गिरगिट की तरह रंग बदलना:** अवसरवादी होना या सिद्धांतहीन होकर बार-बार बात बदलना।
57. **गुड़ खाए गुलगुलों से परहेज (लोकोक्ति):** बड़ा दोष करते हुए छोटे दोष से बचने का ढोंग करना।
58. **घर का भेदी लंका ढाए (लोकोक्ति):** आपसी फूट और विश्वासघात से सर्वनाश हो जाता है।
59. **घर की मुर्गी दाल बराबर (लोकोक्ति):** आसानी से उपलब्ध या अपने घर के गुणी व्यक्ति का भी आदर न होना।
60. **घाट-घाट का पानी पीना:** तरह-तरह के व्यापक सांसारिक अनुभव प्राप्त होना।
61. **घी के दिए जलाना:** अपार प्रसन्नता या उत्सव मनाना।
62. **घड़ों पानी पड़ना:** अत्यधिक लज्जित होना।
63. **घुटने टेकना:** हार मान लेना या आत्मसमर्पण करना।
64. **चाँदी का ऐनक लगाना:** रिश्वत या घूस लेकर ही किसी का काम करना।

65. **चिकना घड़ा होना:** बेशर्म होना (जिस पर किसी बात या उपदेश का कोई असर न पड़े)।
66. **चिराग तले अंधेरा (लोकोक्ति):** गुणी या न्यायप्रिय व्यक्ति के अपने ही निकटवर्ती स्थान में दोष या अज्ञान होना।
67. **चोर की दाढ़ी में तिनका (लोकोक्ति):** अपराधी व्यक्ति का स्वयं ही शंकित और भयभीत रहना।
68. **चमड़ी जाए पर दमड़ी न जाए (लोकोक्ति):** महाकंजूस होना।
69. **छक्के छुड़ाना:** बुरी तरह पराजित या पस्त कर देना।
70. **छाती पर मूँग दलना:** पास रहकर जानबूझकर निरंतर कष्ट या दुःख देना।
71. **छठी का दूध याद आना:** घोर संकट में पड़ना।
72. **छोटा मुँह बड़ी बात:** अपनी हैसियत या योग्यता से बढ़कर बात कहना।
73. **जले पर नमक छिड़कना:** दुःखी व्यक्ति को और अधिक दुःखी या आहत करना।
74. **जान हथेली पर रखना:** प्राणों की परवाह न करना।
75. **जूतियाँ चटकाना:** बेरोजगारी में व्यर्थ इधर-उधर भटकना।
76. **जिसकी लाठी उसकी भैंस (लोकोक्ति):** शक्तिशाली व्यक्ति की ही विजय या प्रभुत्व होता है।
77. **जल में रहकर मगर से बैर (लोकोक्ति):** जिसके आश्रय या अधिकार क्षेत्र में रहना हो, उसी से शत्रुता मोल लेना अनुचित है।
78. **जाको राखे साइयाँ, मार सके न कोय (लोकोक्ति):** जिसका रक्षक ईश्वर हो, उसका कोई अहित नहीं कर सकता।
79. **टका-सा जवाब देना:** साफ और रूखा इनकार कर देना।
80. **टेढ़ी खीर होना:** अत्यंत कठिन या जटिल कार्य होना।
81. **ठगा-सा रह जाना:** किंकर्तव्यविमूढ़ या स्तब्ध रह जाना।
82. **डंके की चोट पर कहना:** बिना किसी भय के स्पष्ट और खुलेआम घोषणा करना।
83. **डूबते को तिनके का सहारा (लोकोक्ति):** घोर विपत्ति में फंसे व्यक्ति को थोड़ी-सी मदद भी बहुत बड़ी लगती है।
84. **ढाक के तीन पात (लोकोक्ति):** सदा एक-सी (अपरिवर्तित) दयनीय स्थिति बने रहना।
85. **ढिंढोरा पीटना:** किसी बात का चारों ओर प्रचार करना।
86. **तलवे चाटना:** खुशामद या चापलूसी करना।
87. **तिल का ताड़ बनाना (राई का पहाड़ बनाना):** छोटी-सी बात को बहुत बढ़ा-चढ़ाकर प्रस्तुत करना।
88. **तूती बोलना:** खूब प्रभाव या धाक जमना।
89. **तेली का बैल होना:** हर समय काम में जुटे रहना (कोल्हू का बैल होना)।
90. **तीन लोक से मथुरा न्यारी (लोकोक्ति):** सबसे अलग या निराला ढंग रखना।
91. **थोथा चना बाजे घना (लोकोक्ति):** ओछा या गुणहीन व्यक्ति अधिक आडंबर करता है।
92. **दाँत खट्टे करना:** युद्ध या प्रतियोगिता में बुरी तरह हरा देना।
93. **दाँतों तले उँगली दबाना:** आश्चर्यचकित या दंग रह जाना।
94. **दाल में काला होना:** किसी बात में संदेह या गड़बड़ी होना।
95. **दिन दूनी रात चौगुनी उन्नति करना:** अत्यंत तीव्र गति से प्रगति करना।
96. **दूध का दूध और पानी का पानी करना:** पूर्णतः निष्पक्ष एवं सच्चा न्याय करना।
97. **द्रौपदी का चीर होना:** कभी समाप्त न होने वाली वस्तु होना।
98. **दूर के ढोल सुहावने लगते हैं (लोकोक्ति):** दूर से हर वस्तु अच्छी प्रतीत होती है।
99. **धज्जियाँ उड़ाना:** कड़ी आलोचना करना या पूरी तरह ध्वस्त करना।
100. **धूप में बाल सफेद करना:** उम्र बढ़ने पर भी सांसारिक अनुभव न होना।
101. **नौ दिन चले अढ़ाई कोस (लोकोक्ति):** अत्यंत मंद गति से कार्य करना।
102. **न नौ मन तेल होगा, न राधा नाचेगी (लोकोक्ति):** काम न करने के लिए ऐसी असंभव शर्त रखना जो कभी पूरी न हो सके।

103. **नाच न जाने आँगन टेढ़ा (लोकोक्ति):** स्वयं काम न आने पर संसाधनों या दूसरों में दोष निकालना।

104. **पौ बारह होना (पाँचों उँगलियाँ घी में होना):** चारों ओर से अत्यधिक लाभ ही लाभ होना।

105. **बगुला भगत होना:** भीतर से कपटी और बाहर से साधु/सज्जन दिखने का ढोंग करने वाला।

11.2 हिंदी की ऐतिहासिक पत्र-पत्रिकाएँ, संपादक एवं प्रकाशन स्थान

पत्र / पत्रिका का नाम	प्रकाशन वर्ष	प्रकार (अवधि)	प्रथम संपादक / संस्थापक	प्रकाशन स्थान एवं विशेष तथ्य
1. उदन्त मार्तण्ड	**30 मई 1826**	साप्ताहिक	**पं. जुगल किशोर शुक्ल**	**कलकत्ता** — हिंदी का प्रथम समाचार पत्र (30 मई = हिंदी पत्रकारिता दिवस)।
2. बंगदूत	**1829 ई.**	साप्ताहिक	**राजा राममोहन राय**	कलकत्ता — एक साथ 4 भाषाओं (बंगला, हिंदी, उर्दू, फारसी) में प्रकाशित।
3. बनारस अखबार	**1845 ई.**	साप्ताहिक	**राजा शिवप्रसाद 'सितारेहिंद'**	काशी (बनारस) — हिंदी भाषी क्षेत्र (उ.प्र.) से प्रकाशित प्रथम हिंदी अखबार।
4. समाचार सुधावर्षण	**1854 ई.**	**दैनिक**	**श्यामसुंदर सेन**	कलकत्ता — **हिंदी का प्रथम दैनिक समाचार पत्र**।
5. कविवचन सुधा	**1868 ई.**	मासिक/ पाक्षिक	**भारतेंदु हरिश्चंद्र**	काशी — भारतेंदु जी ने इसके अलावा 'हरिश्चंद्र मैगजीन' (1873) और महिलाओं हेतु 'बाला बोधिनी' (1874) निकाली।
6. हिंदी प्रदीप	**1877 ई.**	मासिक	**बालकृष्ण भट्ट**	प्रयागराज (इलाहाबाद)।
7. आनंद कादम्बिनी	**1881 ई.**	मासिक	**बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन'**	मिर्जापुर।
8. ब्राह्मण	**1883 ई.**	मासिक	**प्रतापनारायण मिश्र**	कानपुर।
9. सरस्वती	**1900 ई.**	मासिक	चिंतामणि घोष (संस्थापक), श्यामसुंदर दास (प्रथम), **महावीरप्रसाद द्विवेदी (1903–1920)**	काशी (बाद में प्रयागराज) — बीसवीं शताब्दी में खड़ी बोली के मानकीकरण की रीढ़।
10. हंस	**1930 ई.**	मासिक	**मुंशी प्रेमचंद** (पुनः संपादन: राजेंद्र यादव)	बनारस (वाराणसी)।

11.3 प्रमुख दार्शनिक संप्रदाय, वाद एवं उनके आचार्य / प्रवर्तक

दार्शनिक वाद / संप्रदाय	प्रवर्तक आचार्य	संबंधित भक्ति शाखा / मुख्य सिद्धांत
1. अद्वैतवाद (स्मार्ट संप्रदाय)	**आदि शंकराचार्य**	"ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या, जीवो ब्रह्मैव नापरः" (निर्गुण ब्रह्म की उपासना)।
2. विशिष्टाद्वैतवाद (श्री संप्रदाय)	**रामानुजाचार्य**	सगुण भक्ति की दार्शनिक आधारशिला (रामानंद और तुलसीदास इसी परंपरा से जुड़े)।
3. द्वैतवाद (ब्रह्म संप्रदाय)	**मध्वाचार्य**	जीवात्मा और परमात्मा को पूर्णतः भिन्न (द्वैत) माना।
4. द्वैताद्वैतवाद (सनकादि/निम्बार्क संप्रदाय)	**निम्बार्काचार्य**	राधा-कृष्ण की युगल उपासना; भेदाभेदवाद।
5. शुद्धाद्वैतवाद (रुद्र/पुष्टिमार्ग संप्रदाय)	**वल्लभाचार्य**	पुष्टिमार्ग (भगवान का अनुग्रह/पोषण); सूरदास एवं अष्टछाप के कवि इसी संप्रदाय के थे।
6. अचिंत्य भेदाभेदवाद (गौड़ीय संप्रदाय)	**चैतन्य महाप्रभु**	संकीर्तन-आधारित कृष्णभक्ति।
7. सखी / हरिदासी / टट्टी संप्रदाय	**स्वामी हरिदास**	संगीत-आधारित कुंजबिहारी श्रीकृष्ण उपासना (तानसेन के गुरु)।
8. राधावल्लभ संप्रदाय	**हित हरिवंश**	राधा को कृष्ण से भी उच्च प्रधान स्थान।

11.4 बुक 11 एवं बुक 12 का एकीकृत 90-दिवसीय मास्टर रिवीजन रोडमैप (90-Day Integrated Exam Action Plan)

चरण (Phase)	समय अवधि (Days)	बुक 11 (मास्टर सिलेबस एवं GS/Rules) लक्ष्य	बुक 12 (सामान्य हिंदी एवं व्याकरण) लक्ष्य	साप्ताहिक मूल्यांकन मानक (www.iucacademy.com)
चरण 1: फाउंडेशन एवं अवधारणा निर्माण	**दिवस 1 से 30**	संविधान (अनुसूचियाँ, मूल अधिकार, संसद), आधुनिक इतिहास, भारत का भूगोल तथा BNS/BNSS/BSA 2023 की प्रमुख धाराओं का तुलनात्मक चार्ट कंठस्थ करना।	वर्णमाला (52 वर्ण मैट्रिक्स), स्वर-व्यंजन-विसर्ग संधि के सभी नियम व अपवाद, समास के 6 भेद तथा प्रतिदिन 15-15 पर्यायवाची, विलोम व तत्सम-तद्भव।	प्रति सप्ताह 2 सेक्शनल CBT टेस्ट + न्यूनतम **80% Accuracy** सुनिश्चित करना।
चरण 2: कोर एप्लीकेशन एवं विभागीय/तकनीकी प्रैक्टिस	**दिवस 31 से 60**	अर्थव्यवस्था (बजट, RBI, बैंकिंग), सामान्य विज्ञान (NCERT + ALP Basic Science), रेलवे HOER/DAR नियम, राजभाषा नियम 1976 एवं श्रम संहिताएँ।	रस (11 रस), छंद (दोहा, चौपाई, रोला, कुंडलिया, छप्पय, हरिगीतिका), अलंकार, कारक, काल, वाच्य, 105 वर्तनी शुद्धि एवं वाक्यांश के लिए एक शब्द।	प्रति सप्ताह 3 फुल-लेंथ मॉक टेस्ट + **Error Notebook** में सभी गलत प्रश्नों का संकलन।
चरण 3: हाई-स्पीड पीवाईक्यू (PYQ) एवं कट-ऑफ बूस्टर	**दिवस 61 से 90**	विगत 7 वर्षों (2019–2026) के 3,000+ वास्तविक प्रश्नों का टाइमर के साथ अभ्यास, Exam Trap सारणियों का दैनिक दोहराव एवं करेंट अफेयर्स मैराथन।	हिंदी साहित्य का इतिहास (आदिकाल से नई कविता तक), ज्ञानपीठ/साहित्य अकादमी पुरस्कार, पत्र-लेखन तथा बुक 12 के 60+ मास्टर MCQs का 100% सटीकता से रिवीजन।	परीक्षा से पूर्व **Safe Target Cut-Off** से न्यूनतम **10–15 अंक अधिक** का स्थिर स्कोर प्राप्त करना।

अध्ययन संदर्भ: यह खंड IUC Academy (www.iucacademy.com) द्वारा राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (ncert.nic.in) तथा केंद्रीय भर्ती परीक्षाओं (ssc.gov.in) के मानक हिंदी व्याकरण एवं राजभाषा पाठ्यक्रम के आधार पर तैयार किया गया है। इसमें ध्वनि-विज्ञान, संधि, समास, रस-छंद-अलंकार तथा राजभाषा के संवैधानिक प्रावधानों का गहन विश्लेषण सम्मिलित है।

12.1 विस्तृत तुलनात्मक सारणियाँ

सारणी 12.1: संधि के प्रमुख भेद, वर्ण-मेल के नियम एवं प्रामाणिक उदाहरणों की तुलनात्मक सारणी

क्र.सं.	संधि का मुख्य वर्ग एवं उपभेद	वर्ण-मेल का व्याकरणिक सूत्र	विकार / परिवर्तन रूप	मानक संधि-विच्छेद एवं संधि शब्द	अपवाद / विशेष व्याकरणिक नियम	संदर्भ स्रोत
1	दीर्घ स्वर संधि	ह्रस्व/दीर्घ (अ, इ, उ, ऋ) + समान ह्रस्व/दीर्घ स्वर	आ, ई, ऊ, ॠ	परम + अर्थ = परमार्थ; गिरि + ईश = गिरीश; भानु + उदय = भानूदय	अक्षि + ऊहिनी = अक्षौहिणी (गुण के स्थान पर वृद्धि अपवाद)	ncert.nic.in
2	गुण स्वर संधि	(अ/आ) + (इ/ई, उ/ऊ, ऋ)	ए, ओ, अर्	देव + इंद्र = देवेंद्र; सूर्य + उदय = सूर्योदय; महा + ऋषि = महर्षि	प्र + ऊढ़ = प्रौढ़; स्व + ईर = स्वैर (वृद्धि अपवाद)	ncert.nic.in
3	वृद्धि स्वर संधि	(अ/आ) + (ए/ऐ अथवा ओ/औ)	ऐ, औ	एक + एक = एकैक; सदा + एव = सदैव; महा + ओज = महौज	दंत + ओष्ठ = दंतोष्ठ / दंतौष्ठ (वैकल्पिक रूप)	ncert.nic.in
4	यण् स्वर संधि	(इ/ई, उ/ऊ, ऋ) + कोई भिन्न स्वर	य्, व्, र् (+ भिन्न स्वर की मात्रा)	अति + अधिक = अत्यधिक; सु + आगत = स्वागत; पितृ + आज्ञा = पित्राज्ञा	य और व से पूर्व प्रायः अर्ध-व्यंजन आता है	ncert.nic.in
5	अयादि स्वर संधि	(ए, ऐ, ओ, औ) + कोई भी स्वर	अय्, आय्, अव्, आव्	ने + अन = नयन; गै + अक = गायक; पो + अन = पवन; पौ + अक = पावक	शब्द के मध्य में 'य' या 'व' से पूर्व पूरा वर्ण रहता है	ncert.nic.in
6	घोष व्यंजन संधि (जश्त्व नियम)	वर्ग का प्रथम वर्ण (क्, च्, ट्, त्, प्) + सघोष वर्ण	अपने ही वर्ग का तृतीय वर्ण (ग्, ज्, ड्, द्, ब्)	दिक् + गज = दिग्गज; अच् + अंत = अजंत; षट् + दर्शन = षड्दर्शन; जगत् + ईश = जगदीश	यदि बाद में पंचमाक्षर हो तो पंचम वर्ण बनता है	www.iucacademy.com
7	अनुनासिक व्यंजन संधि	वर्ग का प्रथम वर्ण + अनुनासिक वर्ण (न/म)	अपने ही वर्ग का पंचम वर्ण (ङ्, ञ्, ण्, न्, म्)	वाक् + मय = वाङ्मय; षट् + मास = षण्मास; उत् + नति = उन्नति	म् + स्पर्श व्यंजन = अनुस्वार या परसवर्ण (संकल्प/सङ्कल्प)	www.iucacademy.com
8	विसर्ग संधि (सत्व, रुत्व एवं ओत्व नियम)	विसर्ग (:) + स्वर अथवा व्यंजन	श्/ष्/स्, र् अथवा ओ में परिवर्तन	निः + चल = निश्चल; दुः + कर = दुष्कर; निः + आशा = निराशा; मनः + रथ = मनोरथ	पुनः + जन्म = पुनर्जन्म; अंतः + राष्ट्रीय = अंतरराष्ट्रीय	ncert.nic.in

सारणी 12.2: समास के छह प्रमुख भेदों की संरचना, पद-प्रधानता एवं विग्रह नियमों का तुलनात्मक विवरण

क्र.सं.	समास का नाम	प्रधान पद की स्थिति	पूर्वपद एवं उत्तरपद की विशेषता	विग्रह की पहचान चिह्न	प्रामाणिक सामासिक पद एवं विग्रह	विशेष पहचान नियम	संदर्भ स्रोत
1	अव्ययीभाव समास	पूर्वपद (प्रथम पद) प्रधान	पूर्वपद अव्यय/उपसर्ग (यथा, आ, प्रति, भर, अनु, नि) या शब्द की आवृत्ति	के अनुसार, भर, प्रत्येक, ही	यथाशक्ति (शक्ति के अनुसार); आजन्म (जन्म से लेकर); रातोंरात (रात ही रात में)	नदी-वाचक शब्दों के साथ संख्या होने पर भी अव्ययीभाव (जैसे—पंचगंगम्)	ncert.nic.in
2	तत्पुरुष समास	उत्तरपद (द्वितीय पद) प्रधान	दोनों पदों के मध्य कारक चिह्नों (को, से, के लिए, का, में, पर) का लोप	कर्म से अधिकरण तक के कारक चिह्न एवं नञ् (अ/अन)	रसोईघर (रसोई के लिए घर); राजपुत्र (राजा का पुत्र); अनदेखा (न देखा हुआ)	अलुक् तत्पुरुष में विभक्ति का लोप नहीं होता (जैसे—युधिष्ठिर, मनसिज)	ncert.nic.in

क्र.सं.	समास का नाम	प्रधान पद की स्थिति	पूर्वपद एवं उत्तरपद की विशेषता	विग्रह की पहचान चिह्न	प्रामाणिक सामासिक पद एवं विग्रह	विशेष पहचान नियम	संदर्भ स्रोत
3	कर्मधारय समास	उत्तरपद प्रधान	पूर्वपद और उत्तरपद में विशेषण-विशेष्य अथवा उपमान-उपमेय का संबंध	है जो, के समान, रूपी	नीलकमल (नीला है जो कमल); चरणकमल (कमल के समान चरण); देहलता (देह रूपी लता)	यदि दोनों पद विशेषण हों तो उभयपद विशेषण कर्मधारय (जैसे—शीतोष्ण)	ncert.nic.in
4	द्विगु समास	उत्तरपद प्रधान	पूर्वपद संख्यावाचक विशेषण तथा समस्त पद समूह या समाहार का बोधक	का समूह, का समाहार	चौराहा (चार राहों का समाहार); नवरत्न (नौ रत्नों का समूह); शताब्दी (सौ अब्दों का समूह)	यदि संख्यावाचक शब्द किसी विशेष तीसरे अर्थ में रूढ़ हो तो बहुव्रीहि होगा	www.iucacademy.com
5	द्वंद्व समास	दोनों पद प्रधान	दोनों पद एक-दूसरे के पूरक, विलोम या समकक्ष (इतरेतर, समाहार, वैकल्पिक)	और, तथा, या, अथवा, आदि	माता-पिता (माता और पिता); पाप-पुण्य (पाप या पुण्य); रुपया-पैसा (रुपया, पैसा आदि)	एक ही शब्द की आवृत्ति होने पर द्वंद्व नहीं अपितु अव्ययीभाव समास होता है	www.iucacademy.com
6	बहुव्रीहि समास	कोई भी पद प्रधान नहीं (अन्य/तीसरा पद प्रधान)	दोनों पद मिलकर किसी तीसरे विशिष्ट व्यक्ति, देवता या वस्तु की ओर संकेत करते हैं	वाला है जो, जिसका, जिसके	दशानन (दस हैं आनन जिसके — रावण); पीतांबर (पीत हैं अंबर जिसके — श्रीकृष्ण); मृत्युंजय (शिव)	योगरूढ़ शब्द सदैव बहुव्रीहि समास के अंतर्गत आते हैं	ncert.nic.in

सारणी 12.3: राजभाषा के संवैधानिक अनुच्छेद, भाषा संशोधन एवं हिंदी की उपभाषाओं व बोलियों का वर्गीकरण

क्र.सं.	संवैधानिक संदर्भ / भाषाई वर्ग	संबंधित अनुच्छेद / संशोधन / क्षेत्र	मुख्य प्रावधान अथवा अंतर्गत आने वाली बोलियाँ	ऐतिहासिक एवं प्रशासनिक महत्व	आधिकारिक संदर्भ
1	संघ की राजभाषा (भाग 17, अध्याय 1)	अनुच्छेद 343 (1), (2), (3)	संघ की राजभाषा हिंदी और लिपि देवनागरी होगी; शासकीय प्रयोजनों हेतु अंकों का रूप भारतीय अंकों का अंतरराष्ट्रीय रूप होगा	14 सितंबर 1949 को संविधान सभा द्वारा स्वीकृत (राष्ट्रीय हिंदी दिवस)	ncert.nic.in
2	राजभाषा आयोग एवं संसदीय समिति	अनुच्छेद 344	राष्ट्रपति द्वारा 5 वर्ष व 10 वर्ष पर आयोग का गठन तथा 30 सदस्यीय संसदीय राजभाषा समिति (20 लोकसभा + 10 राज्यसभा)	प्रथम राजभाषा आयोग का गठन 7 जून 1955 को बी.जी. खेर की अध्यक्षता में हुआ	ncert.nic.in
3	प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा एवं हिंदी विकास	अनुच्छेद 350(क) एवं अनुच्छेद 351	350(क): भाषाई अल्पसंख्यकों के बच्चों को प्राथमिक शिक्षा मातृभाषा में; 351: हिंदी भाषा के विकास व प्रसार हेतु संघ का कर्तव्य	अनुच्छेद 351 में संस्कृत से शब्द ग्रहण कर सामासिक संस्कृति की अभिव्यक्ति का निर्देश	ncert.nic.in
4	आठवीं अनुसूची के तीन भाषा संशोधन	21वाँ (1967), 71वाँ (1992), 92वाँ (2003)	21वाँ: सिंधी; 71वाँ: कोंकणी, मणिपुरी, नेपाली; 92वाँ: बोडो, डोगरी, मैथिली, संथाली	मूल संविधान में 14 भाषाएँ थीं; वर्तमान में आठवीं अनुसूची में कुल 22 भाषाएँ हैं	ncert.nic.in
5	पश्चिमी हिंदी (शौरसेनी अपभ्रंश से विकसित)	हरियाणा, पश्चिमी उत्तर प्रदेश, ब्रज एवं बुंदेलखंड	खड़ी बोली (कौरवी), ब्रजभाषा, बुंदेली, कन्नौजी, बांगरू (हरियाणवी) — कुल 5 बोलियाँ	मानक हिंदी का मूल आधार खड़ी बोली (कौरवी) है	www.iucacademy.com
6	पूर्वी हिंदी (अर्धमागधी अपभ्रंश से विकसित)	अवध, बघेलखंड एवं छत्तीसगढ़ क्षेत्र	अवधी, बघेली, छत्तीसगढ़ी — कुल 3 बोलियाँ	तुलसीदास कृत 'रामचरितमानस' एवं जायसी कृत 'पद्मावत' की रचना अवधी में हुई	www.iucacademy.com
7	राजस्थानी एवं पहाड़ी हिंदी	राजस्थान, मालवा तथा उत्तराखंड व हिमाचल प्रदेश	राजस्थानी (मारवाड़ी, जयपुरी/ढूँढाड़ी, मेवाती, मालवी); पहाड़ी (कुमाऊँनी, गढ़वाली)	शौरसेनी एवं खस अपभ्रंश से विकसित प्रमुख उपभाषाएँ	www.iucacademy.com
8	बिहारी हिंदी (मागधी अपभ्रंश से विकसित)	बिहार, मिथिलांचल एवं पूर्वी उत्तर प्रदेश	भोजपुरी, मगही, मैथिली — कुल 3 बोलियाँ	मैथिली एकमात्र ऐसी बोली है जिसे आठवीं अनुसूची में संवैधानिक भाषा का दर्जा प्राप्त है	ssc.gov.in

12.2 अतिरिक्त उच्च-स्तरीय अभ्यास प्रश्न (खंड 12: प्रश्न 1 से 25 | कुल क्रम: 26 से 50)

अभ्यास प्रश्न #1 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 26 (खंड 12.1). उच्चारण स्थान एवं प्रयत्न के आधार पर हिंदी वर्णमाला के 'च', 'छ', 'ज', 'झ' व्यंजनों को आधुनिक भाषा-विज्ञान में किस वर्ग के अंतर्गत रखा जाता है?

- (A) केवल कंठ्य स्पर्श व्यंजन
- (B) तालव्य स्पर्श-संघर्षी व्यंजन
- (C) मूर्धन्य उत्क्षिप्त व्यंजन
- (D) दंतोष्ठ्य अर्धस्वर

सही उत्तर: (B) तालव्य स्पर्श-संघर्षी व्यंजन

विस्तृत व्याख्या: ncert.nic.in के ध्वनि-विज्ञान मानकों के अनुसार च-वर्ग के व्यंजनों का उच्चारण स्थान तालु (तालव्य) है, और इनके उच्चारण में जिह्वा तालु का स्पर्श करने के साथ-साथ वायु में हल्का घर्षण भी उत्पन्न करती है, इसलिए इन्हें 'स्पर्श-संघर्षी' (Affricates) कहा जाता है।

अभ्यास प्रश्न #2 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 27 (खंड 12.2). 'अक्षौहिणी' शब्द का शुद्ध संधि-विच्छेद और उसमें प्रयुक्त संधि का सही नाम क्या है?

- (A) अक्ष + ओहिनी (सामान्य गुण संधि)
- (B) अक्षि + ऊहिनी (दीर्घ संधि)
- (C) अक्ष + ऊहिनी = अक्षौहिणी (गुण संधि का अपवाद होकर वृद्धि रूप तथा न् का ण् में परिवर्तन)
- (D) अक्षौ + हिणी (यण् संधि)

सही उत्तर: (C) अक्ष + ऊहिनी = अक्षौहिणी (गुण संधि का अपवाद होकर वृद्धि रूप तथा न् का ण् में परिवर्तन)

विस्तृत व्याख्या: संस्कृत एवं हिंदी व्याकरण (ncert.nic.in) के विशिष्ट सूत्र 'अक्षादूहिण्याम् संख्यानम्' के अनुसार 'अक्ष' के अ और 'ऊहिनी' के ऊ के मेल से सामान्य नियम के अनुसार गुण ('ओ') होना चाहिए था, किंतु अपवाद नियम से वृद्धि ('औ') होती है तथा 'ष्' के प्रभाव से 'न' का मूर्धन्यीकरण होकर 'ण' बन जाता है, जिससे 'अक्षौहिणी' सिद्ध होता है।

अभ्यास प्रश्न #3 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 28 (खंड 12.3). निम्नलिखित में से किस शब्द-युग्म में क्रमशः 'अलुक् तत्पुरुष समास' और 'नञ् तत्पुरुष समास' के सही उदाहरण दिए गए हैं?

- (A) युधिष्ठिर और अनश्वर
- (B) नीलकमल और चौराहा
- (C) माता-पिता और दशानन
- (D) यथासंभव और प्रतिदिन

सही उत्तर: (A) युधिष्ठिर और अनश्वर

विस्तृत व्याख्या: 'युधिष्ठिर' (युद्ध में स्थिर रहने वाला) में पूर्वपद 'युधि' में संस्कृत की सप्तमी विभक्ति का लोप नहीं हुआ है, अतः यह अलुक् तत्पुरुष समास है। 'अनश्वर' (न नश्वर) में निषेधवाचक 'अन्' उपसर्ग जुड़ा है, अतः यह नञ् तत्पुरुष समास है। संदर्भ: www.iucacademy.com।

अभ्यास प्रश्न #4 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 29 (खंड 12.4). भारतीय संविधान के किस अनुच्छेद में यह प्रावधान किया गया है कि संघ का यह कर्तव्य होगा कि वह हिंदी भाषा का प्रसार बढ़ाए और उसका विकास करे ताकि वह भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके?

- (A) अनुच्छेद 343
- (B) अनुच्छेद 348

- (C) अनुच्छेद 350(ख)
- (D) अनुच्छेद 351

सही उत्तर: (D) अनुच्छेद 351

विस्तृत व्याख्या: संविधान के भाग-17 के अंतिम अनुच्छेद 351 (ncert.nic.in) में हिंदी भाषा के विकास के लिए निदेश दिए गए हैं, जिसके अंतर्गत मुख्यतः संस्कृत से और गौणतः आठवीं अनुसूची की अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण कर हिंदी के शब्द-भंडार को समृद्ध करने का प्रावधान है।

अभ्यास प्रश्न #5 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 30 (खंड 12.5). वर्तनी की दृष्टि से निम्नलिखित में से कौन-सा विकल्प चारों शुद्ध शब्दों का समूह है?

- (A) उज्ज्वल, कवयित्री, ज्योत्स्ना, हिरण्यकशिपु
- (B) उज्वल, कवियित्री, ज्योत्सना, हिरण्यकश्यप
- (C) उज्जवल, कवयित्री, ज्योत्स्ना, हिरण्यकश्यपु
- (D) उज्ज्वल, कवयीत्री, ज्योत्सना, हिरण्यकशिपु

सही उत्तर: (A) उज्ज्वल, कवयित्री, ज्योत्स्ना, हिरण्यकशिपु

विस्तृत व्याख्या: ssc.gov.in एवं हिंदी भाषा परीक्षाओं में बार-बार पूछे जाने वाले इन शब्दों का शुद्ध रूप है: 'उत् + ज्वल = उज्ज्वल' (दोनों ज आधे होते हैं), 'कवि' का स्त्रीलिंग 'कवयित्री', 'ज्योत्स्ना' (आधा त और आधा स दोनों), तथा 'हिरण्यकशिपु'।

अभ्यास प्रश्न #6 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 31 (खंड 12.6). "रहिमन पानी राखिए, बिनु पानी सब सून। पानी गए न ऊबरे, मोती, मानुष, चून॥" — इस प्रसिद्ध दोहे की द्वितीय पंक्ति में 'पानी' शब्द के तीन भिन्न अर्थ (चमक, प्रतिष्ठा और जल) निकलने के कारण कौन-सा अलंकार है?

- (A) यमक अलंकार
- (B) श्लेष अलंकार
- (C) उत्प्रेक्षा अलंकार
- (D) भ्रांतिमान अलंकार

सही उत्तर: (B) श्लेष अलंकार

विस्तृत व्याख्या: जब काव्य में कोई शब्द एक ही बार प्रयुक्त होकर प्रसंग के अनुसार एक से अधिक अर्थ देता है (यहाँ 'पानी' शब्द मोती के संदर्भ में 'चमक/आभा', मनुष्य के संदर्भ में 'आत्मसम्मान/प्रतिष्ठा' और चून/आटे के संदर्भ में 'जल' का अर्थ दे रहा है), तब वहाँ श्लेष अलंकार (ncert.nic.in) होता है।

अभ्यास प्रश्न #7 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 32 (खंड 12.7). क्रिया के जिस रूप से यह ज्ञात हो कि वाक्य में क्रिया का मुख्य केंद्र (उद्देश्य) कर्ता या कर्म न होकर स्वयं 'क्रिया का भाव' है और क्रिया सदैव पुल्लिंग, एकवचन तथा अकर्मक रूप में रहती है, उसे क्या कहते हैं?

- (A) कर्तृवाच्य
- (B) कर्मवाच्य
- (C) भाववाच्य
- (D) प्रेरणार्थक क्रिया

सही उत्तर: (C) भाववाच्य

विस्तृत व्याख्या: व्याकरण नियमों (ncert.nic.in) के अनुसार भाववाच्य (जैसे— 'रोगी से चला नहीं जाता', 'पक्षी से उड़ा जाता है') में अकर्मक क्रिया का प्रयोग होता है और क्रिया का रूप सदैव अन्य पुरुष, पुल्लिंग, एकवचन में रहता है।

अभ्यास प्रश्न #8 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 33 (खंड 12.8). 'उत्क्षिप्त' (द्विगुण) व्यंजनों का सही युग्म कौन-सा है और उनकी मुख्य विशेषता क्या है?

- (A) ड़ और ढ़ — इनका प्रयोग कभी भी किसी शब्द के प्रारंभ (आदि) में नहीं होता है
- (B) क्ष और ज्ञ — ये संयुक्त व्यंजन हैं
- (C) य और व — ये अर्धस्वर हैं
- (D) श और ष — ये ऊष्म व्यंजन हैं

सही उत्तर: (A) ड़ और ढ़ — इनका प्रयोग कभी भी किसी शब्द के प्रारंभ (आदि) में नहीं होता है

विस्तृत व्याख्या: 'ड़' (अल्पप्राण, सघोष, मूर्धन्य उत्क्षिप्त) और 'ढ़' (महाप्राण, सघोष, मूर्धन्य उत्क्षिप्त) हिंदी की अपनी विकसित ध्वनियाँ हैं। इनका प्रयोग केवल शब्द के मध्य या अंत में होता है (जैसे— सड़क, पढ़ाई), शब्द के आरंभ में सदैव 'ड' और 'ढ' आते हैं। संदर्भ: www.iucacademy.com।

अभ्यास प्रश्न #9 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 34 (खंड 12.9). 'जिसके हृदय में ममता न हो' और 'जिसका जन्म कन्या के गर्भ से हुआ हो' — इन दोनों वाक्यांशों के लिए एक-एक शब्द का सही क्रम क्या है?

- (A) निर्दय और सहोदर
- (B) निर्मम और कानीन
- (C) निष्ठुर और औरस
- (D) अजातशत्रु और दत्तक

सही उत्तर: (B) निर्मम और कानीन

विस्तृत व्याख्या: मानक हिंदी शब्दावली (ncert.nic.in) के अनुसार जिसके हृदय में ममता न हो उसे 'निर्मम' (और जिसके हृदय में दया न हो उसे 'निर्दय') कहा जाता है। अविवाहित कन्या के गर्भ से उत्पन्न संतान के लिए एक शब्द 'कानीन' है, जबकि विवाहिता पत्नी से उत्पन्न वैध संतान को 'औरस' कहते हैं।

अभ्यास प्रश्न #10 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 35 (खंड 12.10). निम्नलिखित में से कौन-सा शब्द 'तत्सम-तद्भव' युग्म की दृष्टि से अशुद्ध है?

- (A) गोधूम — गेहूँ
- (B) हरिद्रा — हल्दी
- (C) कर्पट — कपड़ा
- (D) कपाट — कपूर

सही उत्तर: (D) कपाट — कपूर

विस्तृत व्याख्या: 'कपाट' तत्सम शब्द का तद्भव रूप 'किवाड़' होता है, जबकि 'कपूर' का तत्सम रूप 'कर्पूर' है। अन्य तीनों विकल्प (गोधूम-गेहूँ, हरिद्रा-हल्दी, कर्पट-कपड़ा) पूर्णतः शुद्ध हैं।

अभ्यास प्रश्न #11 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 36 (खंड 12.11). "पेड़ से पत्ता गिरा" और "हिमालय से गंगा निकलती है" — इन दोनों वाक्यों में प्रयुक्त 'से' परसर्ग किस कारक का बोध कराता है?

- (A) करण कारक
- (B) अपादान कारक
- (C) संप्रदान कारक
- (D) अधिकरण कारक

सही उत्तर: (B) अपादान कारक

विस्तृत व्याख्या: ncert.nic.in के कारक नियमों के अनुसार जहाँ किसी वस्तु के अलग होने (पृथकता), उद्गम (निकलने का स्रोत), भय, तुलना या सीखने का भाव हो, वहाँ 'से' विभक्ति चिह्न करण कारक का न होकर 'अपादान कारक' का होता है।

अभ्यास प्रश्न #12 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 37 (खंड 12.12). मात्रिक छंद 'चौपाई' और 'दोहा' में मात्राओं की संख्या का सही नियम क्या है?

- (A) चौपाई के प्रत्येक चरण में 16 मात्राएँ होती हैं; दोहा के विषम चरणों (1, 3) में 13-13 तथा सम चरणों (2, 4) में 11-11 मात्राएँ होती हैं
- (B) चौपाई में 24 मात्राएँ और दोहा के सभी चरणों में 16 मात्राएँ होती हैं
- (C) चौपाई के विषम चरणों में 11-11 और सम चरणों में 13-13 मात्राएँ होती हैं
- (D) दोनों वर्णिक छंद हैं

सही उत्तर: (A) चौपाई के प्रत्येक चरण में 16 मात्राएँ होती हैं; दोहा के विषम चरणों (1, 3) में 13-13 तथा सम चरणों (2, 4) में 11-11 मात्राएँ होती हैं

विस्तृत व्याख्या: चौपाई एक सम मात्रिक छंद है जिसके चारों चरणों में 16-16 मात्राएँ होती हैं। दोहा एक अर्धसम मात्रिक छंद है जिसके प्रथम व तृतीय चरण में 13-13 मात्राएँ तथा द्वितीय व चतुर्थ चरण में 11-11 मात्राएँ होती हैं (सोरठा छंद दोहा का ठीक उल्टा होता है)। संदर्भ: www.iucacademy.com।

अभ्यास प्रश्न #13 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 38 (खंड 12.13). भरतमुनि के 'नाट्यशास्त्र' में प्रतिपादित रस-सूत्र "विभावानुभावव्यभिचारीसंयोगाद्रसनिष्पत्तिः" में भरतमुनि ने किस अवयव का नामोल्लेख सूत्र में प्रत्यक्षतः नहीं किया है?

- (A) विभाव
- (B) अनुभाव
- (C) व्यभिचारी भाव (संचारी भाव)
- (D) स्थायी भाव

सही उत्तर: (D) स्थायी भाव

विस्तृत व्याख्या: आचार्य भरतमुनि के प्रसिद्ध रस-सूत्र में विभाव, अनुभाव और व्यभिचारी (संचारी) भाव — इन तीन के संयोग से रस की निष्पत्ति बताई गई है; सूत्र में 'स्थायी भाव' शब्द का प्रत्यक्ष उल्लेख नहीं है (यद्यपि भरतमुनि ने नाट्यशास्त्र में 8 रसों और उनके 8 स्थायी भावों का विस्तृत वर्णन किया है, और शांत रस को जोड़कर कुल 9 रस माने गए हैं)।

अभ्यास प्रश्न #14 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 39 (खंड 12.14). 'अभ्यागत' और 'प्रत्युपकार' शब्दों में क्रमशः कौन-से उपसर्ग प्रयुक्त हुए हैं?

- (A) अभ और प्रत
- (B) अभि + आ, तथा प्रति + उप
- (C) अ और प्र
- (D) अभ्या और प्रत्यु

सही उत्तर: (B) अभि + आ, तथा प्रति + उप

विस्तृत व्याख्या: 'अभ्यागत' का विच्छेद है 'अभि + आ + गत' (जिसमें 'अभि' और 'आ' दो उपसर्ग हैं), तथा 'प्रत्युपकार' का विच्छेद है 'प्रति + उप + कार' (जिसमें 'प्रति' और 'उप' दो उपसर्ग यण् संधि से जुड़े हैं)। संदर्भ: ncert.nic.in।

अभ्यास प्रश्न #15 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 40 (खंड 12.15). निम्नलिखित में से किस विकल्प में सभी शब्द 'कमल' के पर्यायवाची हैं?

- (A) राजीव, अरविंद, पुंडरीक, इंदीवर, शतदल
- (B) जलद, नीरद, वारिद, पयोद, अंबुद

- (C) तोयधि, पयोधि, रत्नाकर, पारावार, जलधि
- (D) कालिंदी, अर्कजा, रवितानिया, कृष्णा, तरणिजा

सही उत्तर: (A) राजीव, अरविंद, पुंडरीक, इंदीवर, शतदल

विस्तृत व्याख्या: राजीव, अरविंद, पुंडरीक (श्वेत कमल), इंदीवर (नील कमल), कोकनद (लाल कमल), पंकज, जलज और शतदल सभी 'कमल' के पर्यायवाची हैं। विकल्प (B) बादल के, विकल्प (C) समुद्र के और विकल्प (D) यमुना के पर्यायवाची हैं।

अभ्यास प्रश्न #16 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 41 (खंड 12.16). रचना या बनावट के आधार पर शब्दों के तीन भेद (रूढ़, यौगिक और योगरूढ़) किए जाते हैं। इनमें से 'पीतांबर' और 'जलज' किस श्रेणी के शब्द हैं?

- (A) रूढ़ शब्द
- (B) सामान्य यौगिक शब्द
- (C) योगरूढ़ शब्द
- (D) विदेशज शब्द

सही उत्तर: (C) योगरूढ़ शब्द

विस्तृत व्याख्या: ncert.nic.in के अनुसार वे शब्द जो दो या अधिक शब्दों/शब्दांशों के योग से बनते हैं (यौगिक होते हैं), किंतु अपने सामान्य शाब्दिक अर्थ को छोड़कर किसी विशेष अर्थ में रूढ़ हो जाते हैं (जैसे 'जलज' का अर्थ जल में जन्म लेने वाला हर जीव न होकर केवल 'कमल' है), उन्हें 'योगरूढ़' शब्द कहा जाता है।

अभ्यास प्रश्न #17 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 42 (खंड 12.17). राजभाषा अधिनियम, 1963 (यथासंशोधित 1967) की धारा 3(3) के अंतर्गत किन सरकारी दस्तावेजों को हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं (द्विभाषी रूप) में जारी किया जाना अनिवार्य है?

- (A) केवल व्यक्तिगत अवकाश आवेदन
- (B) संकल्प, सामान्य आदेश, नियम, अधिसूचनाएँ, प्रशासनिक प्रतिवेदन, प्रेस विज्ञप्तियाँ, संविदाएँ एवं संसद के समक्ष रखे जाने वाले प्रतिवेदन
- (C) केवल जिला न्यायालय के स्थानीय समन
- (D) केवल अनौपचारिक टिप्पणियाँ

सही उत्तर: (B) संकल्प, सामान्य आदेश, नियम, अधिसूचनाएँ, प्रशासनिक प्रतिवेदन, प्रेस विज्ञप्तियाँ, संविदाएँ एवं संसद के समक्ष रखे जाने वाले प्रतिवेदन

विस्तृत व्याख्या: राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3(3) के अनुसार सभी संकल्पों, सामान्य आदेशों, नियमों, अधिसूचनाओं, प्रशासनिक व अन्य प्रतिवेदनों, प्रेस विज्ञप्तियों, संविदाओं, करारों, अनुज्ञप्तियों और निविदा प्रपत्रों के लिए हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं का प्रयोग अनिवार्य है। संदर्भ: www.iucacademy.com।

अभ्यास प्रश्न #18 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 43 (खंड 12.18). "उसने नहाकर भोजन किया" — इस वाक्य में 'नहाकर' किस प्रकार की क्रिया का उदाहरण है?

- (A) नामधातु क्रिया
- (B) पूर्वकालिक क्रिया
- (C) संयुक्त क्रिया
- (D) प्रेरणार्थक क्रिया

सही उत्तर: (B) पूर्वकालिक क्रिया

विस्तृत व्याख्या: जब कर्ता एक क्रिया को समाप्त करके तत्काल दूसरी मुख्य क्रिया प्रारंभ करता है, तब पहली समाप्त हो चुकी क्रिया को 'पूर्वकालिक क्रिया' (ncert.nic.in) कहते हैं। इसमें धातु के साथ प्रायः 'कर' या 'के' जुड़ा होता है (जैसे— नहाकर, पढ़कर, सोकर)।

अभ्यास प्रश्न #19 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 44 (खंड 12.19). विलोम शब्द-युग्मों की दृष्टि से निम्नलिखित में से कौन-सा विकल्प पूर्णतः शुद्ध है?

- (A) जंगम — स्थावर; शाश्वत — क्षणिक; ऋजु — वक्र; मस — रूक्ष
- (B) जंगम — गतिशील; शाश्वत — सनातन; ऋजु — सीधा; मस — कोमल
- (C) अभिज्ञ — विज्ञ; आमिष — सामिष; उत्कर्ष — विकास
- (D) अनुराग — प्रेम; कृतज्ञ — उपकारी; अज्ञ — मूर्ख

सही उत्तर: (A) जंगम — स्थावर; शाश्वत — क्षणिक; ऋजु — वक्र; मस — रूक्ष

विस्तृत व्याख्या: प्रतियोगी परीक्षाओं (ssc.gov.in) में पूछे जाने वाले मानक विलोम युग्म हैं: जंगम (चलने-फिरने योग्य) का स्थावर (स्थिर), शाश्वत का क्षणिक/नश्वर, ऋजु (सीधा) का वक्र (टेढ़ा), और मस (चिकना) का रूक्ष (खुरदरा)। ध्यान रहे कि अभिज्ञ का विलोम 'अनभिज्ञ' होता है और आमिष/सामिष दोनों का विलोम 'निरामिष' होता है।

अभ्यास प्रश्न #20 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 45 (खंड 12.20). 'अर्धशासकीय पत्र' (Demi-Official Letter / D.O. Letter) के लेखन के संबंध में निम्नलिखित में से कौन-सी विशेषता सही है?

- (A) यह सदैव अन्य पुरुष (Third Person) और कठोर आदेशात्मक शैली में लिखा जाता है।
- (B) यह समान स्तर के अधिकारियों के मध्य किसी विशेष प्रकरण पर व्यक्तिगत ध्यान आकर्षित करने हेतु उत्तम पुरुष ('मैं') एवं मित्रवत आत्मीय शैली में लिखा जाता है।
- (C) इसमें प्रेषक के हस्ताक्षर के नीचे उसका पदनाम लिखना अनिवार्य होता है।
- (D) इसका प्रयोग केवल न्यायालयीन निर्णयों की घोषणा के लिए होता है।

सही उत्तर: (B) यह समान स्तर के अधिकारियों के मध्य किसी विशेष प्रकरण पर व्यक्तिगत ध्यान आकर्षित करने हेतु उत्तम पुरुष ('मैं') एवं मित्रवत आत्मीय शैली में लिखा जाता है।

विस्तृत व्याख्या: शासकीय पत्राचार (ncert.nic.in) के नियमों के अनुसार अर्धशासकीय पत्र एक अधिकारी द्वारा दूसरे अधिकारी को व्यक्तिगत नाम से संबोधित करते हुए ('प्रिय श्री ...') उत्तम पुरुष में लिखा जाता है, और इसके अंत में 'भवदीय/आपका सद्भावी' के साथ केवल हस्ताक्षर किए जाते हैं, पदनाम नहीं लिखा जाता।

अभ्यास प्रश्न #21 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 46 (खंड 12.21). "कनक कनक ते सौ गुनी, मादकता अधिकाय। वा खाए बौराय जग, या पाए बौराय॥" — इस दोहे में 'कनक' शब्द की दो बार आवृत्ति होने और दोनों बार भिन्न अर्थ (धतूरा और सोना) होने के कारण कौन-सा अलंकार है?

- (A) यमक अलंकार
- (B) श्लेष अलंकार
- (C) अनुप्रास अलंकार
- (D) रूपक अलंकार

सही उत्तर: (A) यमक अलंकार

विस्तृत व्याख्या: जहाँ एक ही शब्द एक से अधिक बार प्रयुक्त हो और प्रत्येक बार उसका अर्थ भिन्न हो (प्रथम 'कनक' = धतूरा जिसे खाने से व्यक्ति बौरा जाता है; द्वितीय 'कनक' = स्वर्ण जिसे पाने मात्र से अहंकार आ जाता है), वहाँ यमक अलंकार होता है।

अभ्यास प्रश्न #22 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 47 (खंड 12.22). भाषा-विज्ञान के अनुसार हिंदी की पाँचों उपभाषाओं के अंतर्गत कुल कितनी प्रमुख बोलियाँ गिनी जाती हैं, और 'ब्रजभाषा' तथा 'अवधी' क्रमशः किन उपभाषा वर्गों में आती हैं?

- (A) कुल 17 (या 18) बोलियाँ; ब्रजभाषा 'पश्चिमी हिंदी' में और अवधी 'पूर्वी हिंदी' में आती है

- (B) कुल 10 बोलियाँ; दोनों 'बिहारी हिंदी' में आती हैं
- (C) कुल 22 बोलियाँ; दोनों 'राजस्थानी हिंदी' में आती हैं
- (D) कुल 5 बोलियाँ; दोनों 'पहाड़ी हिंदी' में आती हैं

सही उत्तर: (A) कुल 17 (या 18) बोलियाँ; ब्रजभाषा 'पश्चिमी हिंदी' में और अवधी 'पूर्वी हिंदी' में आती है

विस्तृत व्याख्या: हिंदी भाषा क्षेत्र की 5 उपभाषाओं (पश्चिमी हिंदी-5, पूर्वी हिंदी-3, राजस्थानी-4, बिहारी-3, पहाड़ी-2 अथवा नेपाली सहित 3) में कुल 17/18 बोलियाँ हैं। ब्रजभाषा शौरसेनी अपभ्रंश से विकसित पश्चिमी हिंदी की बोली है, जबकि अवधी अर्धमागधी अपभ्रंश से विकसित पूर्वी हिंदी की बोली है। संदर्भ: www.iucacademy.com।

अभ्यास प्रश्न #23 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 48 (खंड 12.23). अर्थ के आधार पर वाक्य के कुल कितने भेद माने जाते हैं, और रचना के आधार पर "यद्यपि वह निर्धन है तथापि वह अत्यंत ईमानदार है" किस प्रकार का वाक्य है?

- (A) अर्थ के आधार पर 8 भेद; रचना के आधार पर 'मिश्र वाक्य'
- (B) अर्थ के आधार पर 3 भेद; रचना के आधार पर 'सरल वाक्य'
- (C) अर्थ के आधार पर 10 भेद; रचना के आधार पर 'संयुक्त वाक्य'
- (D) अर्थ के आधार पर 5 भेद; रचना के आधार पर 'आज्ञावाचक वाक्य'

सही उत्तर: (A) अर्थ के आधार पर 8 भेद; रचना के आधार पर 'मिश्र वाक्य'

विस्तृत व्याख्या: ncert.nic.in के अनुसार अर्थ के आधार पर वाक्य के 8 भेद (विधानवाचक, निषेधवाचक, प्रश्नवाचक, विस्मयादिवाचक, आज्ञावाचक, इच्छावाचक, संदेहवाचक, संकेतवाचक) और रचना के आधार पर 3 भेद (सरल, संयुक्त, मिश्र) होते हैं। 'यद्यपि... तथापि' समुच्चयबोधक से जुड़े उपवाक्य प्रधान व आश्रित उपवाक्य होने के कारण 'मिश्र वाक्य' हैं।

अभ्यास प्रश्न #24 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 49 (खंड 12.24). 'अंगूठी का नगीना होना' और 'गूलर का फूल होना' — इन दोनों मुहावरों का सही अर्थ-युग्म क्या है?

- (A) बहुत सुंदर व सजीला (अत्यंत उपयुक्त जोड़ा) होना, तथा दुर्लभ (दिखाई न देने वाली) वस्तु होना
- (B) बहुत सस्ता होना, तथा आसानी से मिल जाना
- (C) क्रोधित होना, तथा भाग जाना
- (D) धोखा देना, तथा प्रसन्न होना

सही उत्तर: (A) बहुत सुंदर व सजीला (अत्यंत उपयुक्त जोड़ा) होना, तथा दुर्लभ (दिखाई न देने वाली) वस्तु होना

विस्तृत व्याख्या: 'अंगूठी का नगीना' मुहावरे का अर्थ है अत्यंत सुंदर, सजीला एवं अनुरूप जोड़ा होना; जबकि 'गूलर का फूल होना' का अर्थ है अत्यंत दुर्लभ होना या कभी दिखाई न देना।

अभ्यास प्रश्न #25 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 50 (खंड 12.25). विराम-चिह्नों के प्रयोग के संदर्भ में जब किसी वाक्य में किसी अन्य लेखक या वक्ता के मूल कथन को ज्यों-का-त्यों (बिना किसी परिवर्तन के) उद्धृत किया जाता है, तो किस विराम-चिह्न का प्रयोग किया जाता है?

- (A) एकल उद्धरण चिह्न ('...')
- (B) दोहरा उद्धरण / अवतरण चिह्न ("...")
- (C) लाघव चिह्न (0)
- (D) हंसपद / त्रुटिपूरक चिह्न (^)

सही उत्तर: (B) दोहरा उद्धरण / अवतरण चिह्न ("...")

विस्तृत व्याख्या: ncert.nic.in के व्याकरण मानकों के अनुसार किसी पुस्तक, व्यक्ति के उपनाम या शीर्षक के लिए एकल उद्धरण चिह्न ('...') का प्रयोग होता है, जबकि किसी के मूल कथन को शब्दशः उद्धृत करने के लिए दोहरे उद्धरण चिह्न ("...") का प्रयोग किया जाता है। हंसपद (^) का प्रयोग लिखते समय छूट गए शब्द को ऊपर अंकित करने हेतु होता है।

12.3 उच्च-स्तरीय व्याकरण एवं राजभाषा तथ्य संकलन (खंड 12)

1. **वर्णमाला का वैज्ञानिक वर्गीकरण:** मानक देवनागरी हिंदी वर्णमाला (ncert.nic.in) में कुल 52 वर्ण माने जाते हैं, जिनमें 11 मूल स्वर (अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ), 2 अयोगवाह (अनुस्वार ' ' एवं विसर्ग ' '), 25 स्पर्श व्यंजन (क-वर्ग से प-वर्ग तक), 4 अंतःस्थ व्यंजन (य, र, ल, व), 4 ऊष्म/संघर्षी व्यंजन (श, ष, स, ह), 4 संयुक्त व्यंजन (क्ष, त्र, ज्ञ, श्र) तथा 2 उत्क्षिप्त/द्विगुण व्यंजन (ड़, ढ़) सम्मिलित हैं।

2. **अल्पप्राण एवं महाप्राण की पहचान:** प्रत्येक स्पर्श वर्ग का पहला, तीसरा और पाँचवाँ वर्ण (1, 3, 5) तथा चारों अंतःस्थ व्यंजन (य, र, ल, व) और सभी स्वर 'अल्पप्राण' होते हैं; जबकि प्रत्येक वर्ग का दूसरा और चौथा वर्ण (2, 4) तथा चारों ऊष्म व्यंजन (श, ष, स, ह) 'महाप्राण' होते हैं।

3. **अघोष एवं सघोष (घोष) वर्ण:** प्रत्येक वर्ग का पहला और दूसरा वर्ण (1, 2) तथा श, ष, स (कुल 13 व्यंजन) 'अघोष' हैं; जबकि प्रत्येक वर्ग का तीसरा, चौथा और पाँचवाँ वर्ण (3, 4, 5), य, र, ल, व, ह तथा सभी 11 स्वर 'सघोष' होते हैं।

4. **संयुक्त व्यंजनों की संरचना:** क्ष = क् + ष; त्र = त् + र; ज्ञ = ज् + ञ; तथा श्र = श् + र। शब्दकोश (Dictionary) के क्रम में संयुक्त व्यंजन अपने प्रथम हलंत वर्ण के स्थान पर आते हैं (अर्थात् 'क्ष' का स्थान 'क' के तुरंत बाद और 'ज्ञ' का स्थान 'ज' के बाद आता है)।

5. **राजभाषा नियम, 1976 का क्षेत्रीय वर्गीकरण:** केंद्र सरकार के कार्यालयों के पत्राचार हेतु देश के राज्यों को तीन क्षेत्रों — 'क' क्षेत्र (उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, बिहार, राजस्थान, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, छत्तीसगढ़, झारखंड, दिल्ली व अंडमान-निकोबार), 'ख' क्षेत्र (गुजरात, महाराष्ट्र, पंजाब, चंडीगढ़, दमन-दीव व दादरा-नगर हवेली) तथा 'ग' क्षेत्र (शेष सभी गैर-हिंदी भाषी राज्य) — में बाँटा गया है।

6. **विश्व हिंदी सम्मेलन एवं दिवस:** प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन 10 जनवरी 1975 को नागपुर में आयोजित हुआ था, इसीलिए प्रतिवर्ष **10 जनवरी** को 'विश्व हिंदी दिवस' और **14 सितंबर** को 'राष्ट्रीय हिंदी दिवस' (ncert.nic.in) मनाया जाता है।

7. **शासकीय पत्रों के मुख्य रूप:** सरकारी कामकाज में शासकीय पत्र (Official Letter), अर्धशासकीय पत्र (Demi-Official Letter), कार्यालय ज्ञापन (Office Memorandum), कार्यालय आदेश (Office Order), परिपत्र (Circular), अधिसूचना (Notification), पृष्ठांकन (Endorsement) एवं अनुस्मारक (Reminder) का प्रयोग किया जाता है।

8. **रस एवं उनके स्थायी भाव:** शृंगार रस (रति), हास्य रस (हास), करुण रस (शोक), रौद्र रस (क्रोध), वीर रस (उत्साह), भयानक रस (भय), वीभत्स रस (जुगुप्सा/घृणा), अद्भुत रस (विस्मय), शांत रस (निर्वेद/शम), वात्सल्य रस (वत्सलता) तथा भक्ति रस (भगवद्विषयक रति)।

9. **प्रमुख हिंदी साहित्यिक पुरस्कार:** ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त करने वाले प्रथम हिंदी साहित्यकार सुमित्रानंदन पंत ('चिदंबरा', 1968) थे; साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित प्रथम हिंदी कृति माखनलाल चतुर्वेदी की 'हिमतरंगिणी' (1955) थी। संदर्भ: www.iucacademy.com।

10. **वाक्य शुद्धि का स्वर्णिम नियम:** एक ही वाक्य में समान अर्थ देने वाले दो शब्दों (जैसे— 'केवल' और 'मात्र', 'सज्जन' और 'पुरुष', 'दरअसल' और 'में', 'वापस' और 'लौटना') का एक साथ प्रयोग पुनरुक्ति दोष उत्पन्न करता है।

भाग (क): 5 नए उन्नत गहन अध्ययन मॉड्यूल (Advanced Deep-Dive Modules)

अध्याय 1: हिंदी भाषा का ऐतिहासिक विकास, 5 उपभाषाएँ-18 बोलियाँ एवं वर्णमाला का उच्चारण ध्वनि-विज्ञान

भारतीय आर्य भाषाओं का विकास तीन ऐतिहासिक चरणों में हुआ है:

1. **प्राचीन भारतीय आर्य भाषा काल (1500 ई.पू. – 500 ई.पू.):** वैदिक संस्कृत और लौकिक संस्कृत (पाणिनि की अष्टाध्यायी)।
2. **मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषा काल (500 ई.पू. – 1000 ई.):**

• **प्रथम प्राकृत (पाली: 500 ई.पू. – 1 ई.):** भारत की प्रथम देशभाषा; भगवान बुद्ध के उपदेश एवं त्रिपिटक।

• **द्वितीय प्राकृत (प्राकृत: 1 ई. – 500 ई.):** भगवान महावीर के उपदेश एवं आगम ग्रंथ (शौरसेनी, मागधी, अर्धमागधी, पैशाची, महाराष्ट्री)।

• **तृतीय प्राकृत (अपभ्रंश: 500 ई. – 1000 ई.) एवं अवहट्ट (900 ई. – 1100 ई.):** स्वयंभू ('अपभ्रंश का वाल्मीकि') और विद्यापति (कीर्तिलता व कीर्तिपताका अवहट्ट में)।

3. **आधुनिक भारतीय आर्य भाषा काल (1000 ई. से अब तक):** अपभ्रंश के विभिन्न क्षेत्रीय रूपों से आधुनिक हिंदी और उसकी **5 उपभाषाओं तथा 18 बोलियों** का जन्म हुआ (जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन की *A Linguistic Survey of India* और सुनीति कुमार चटर्जी के वर्गीकरण के अनुसार):

• **शौरसेनी अपभ्रंश से:**

1. **पश्चिमी हिंदी (5 बोलियाँ):** खड़ी बोली (कौरवी), ब्रजभाषा, हरियाणवी (बांगरू), बुंदेली और कन्नौजी।
2. **राजस्थानी हिंदी (4 बोलियाँ):** मारवाड़ी (पश्चिमी), जयपुरी/ढूँढाड़ी (पूर्वी), मेवाती (उत्तरी), मालवी (दक्षिणी)।
3. **पहाड़ी हिंदी (खस/शौरसेनी अपभ्रंश से — 2 बोलियाँ):** कुमाऊँनी और गढ़वाली (तथा पश्चिमी पहाड़ी/हिमाचली)।

• **अर्धमागधी अपभ्रंश से:**

4. **पूर्वी हिंदी (3 बोलियाँ):** अवधी, बघेली और छत्तीसगढ़ी।

• **मागधी अपभ्रंश से:**

5. **बिहारी हिंदी (3 बोलियाँ):** भोजपुरी, मगही और मैथिली।

देवनागरी वर्णमाला का ध्वनि-शास्त्रीय मैट्रिक्स (52 मानक वर्ण):

• **स्वर (11):** `अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ`

• **जिह्वा के भाग के आधार पर:** अग्र स्वर (`इ, ई, ए, ऐ`), मध्य/केंद्रीय स्वर (`अ` — इसे 'शहीद वर्ण' भी कहते हैं), पश्च स्वर (`आ, उ, ऊ, ओ, औ, ऑ`)।

• **मुख-द्वार खुलने के आधार पर:** विवृत (`आ`), अर्ध-विवृत (`अ, ऐ, औ, ऑ`), संवृत (`इ, ई, उ, ऊ`), अर्ध-संवृत (`ए, ओ`)।

• **अयोगवाह (2):** अनुस्वार (`अं`) और विसर्ग (`अः`) — आचार्य किशोरीदास वाजपेयी ने इन्हें 'न स्वर न व्यंजन, किंतु अर्थ वहन करने वाले' कहा।

• **स्पर्श व्यंजन (25: क से म तक 5 वर्ग):**

• **अल्पप्राण (कम वायु):** प्रत्येक वर्ग का `1, 3, 5` वाँ वर्ण + अंतःस्थ (`य, र, ल, व`) + सभी स्वर।

• **महाप्राण (अधिक वायु/हकार ध्वनि):** प्रत्येक वर्ग का `2, 4` वाँ वर्ण + ऊष्म व्यंजन (`श, ष, स, ह`)।

• **अघोष (स्वरतंत्रियों में कंपन नहीं):** प्रत्येक वर्ग का `1, 2` रा वर्ण + तीनों सकार (`श, ष, स`) = कुल **13 व्यंजन**।

• **सघोष/घोष (स्वरतंत्रियों में कंपन):** प्रत्येक वर्ग का `3, 4, 5` वाँ वर्ण + अंतःस्थ (`य, र, ल, व`) + `ह` + सभी 11 स्वर = कुल **31 वर्ण** (`20 व्यंजन + 11 स्वर`)।

• **विशिष्ट व्यंजन पहचान:**

• **लुंठित / प्रकंपित व्यंजन:** `र`

- **पार्श्विक व्यंजन (वायु जीभ के बगल से निकले):** ल
- **अर्धस्वर (Semi-Vowels):** य और व
- **स्पर्श-संघर्षी व्यंजन:** च, छ, ज, झ
- **उत्क्षिप्त / द्विगुण / ताड़नजात व्यंजन:** ड़ और ढ़ (इनसे कभी कोई शब्द शुरू नहीं होता)।
- **काकल्य / स्वरयंत्रमुखी वर्ण:** ह

क्या आप जानते हैं? (Do You Know?):
राजभाषा विभाग और केंद्रीय हिंदी निदेशालय के मानक देवनागरी वर्णमाला चार्ट के अनुसार, संयुक्त व्यंजन क्ष, त्र, ज्ञ, श्र को स्वतंत्र मूल वर्ण नहीं माना जाता क्योंकि वे दो व्यंजनों के मेल से बने हैं:

- क्ष = क् + ष (शब्दकोश में यह 'क' के तुरंत बाद आता है, 'ह' के बाद नहीं!)
- त्र = त् + र (शब्दकोश में 'त' के बाद आता है)
- ज्ञ = ज् + ञ (शब्दकोश में 'ज' के बाद आता है)
- श्र = श् + र (शब्दकोश में 'श' के बाद आता है)

परीक्षा में फँसाने वाला जाल (Exam Trap Alert):
हिंदी शब्दकोश (Hindi Dictionary Order) का प्रश्न UPPSC, RO/ARO, Police SI और CTET में 90% छात्रों को फँसाता है:

1. हिंदी शब्दकोश का पहला वर्ण अ नहीं बल्कि अं **(अनुस्वार/चंद्रबिंदु)** होता है! क्रम होता है: **अं → अँ → अः → अ → आ...**
2. शब्दकोश में अंतिम वर्ण ज्ञ नहीं बल्कि ह होता है!
3. यदि पूछा जाए कि शब्दकोश में 'कमल', 'कंगन', 'क्षमा' और 'क्यारी' में सबसे पहले कौन आएगा? उत्तर होगा: **कंगन** (क + अं), फिर **कमल** (क् + अ), फिर **क्यारी** (क् + य), और फिर **क्षमा** (क् + ष)!

★ कहानी एवं निमोनिक्स स्मृति ट्रिक (Story/Mnemonic Trick):
1. **उच्चारण स्थान सूत्र — "कचटतप = केटीएम दो (KTM DO)":**

- **क** वर्ग (क, ख, ग, घ, ङ + अ, आ, ह, विसर्ग) = Kantha (कंठ्य)
- **च** वर्ग (च, छ, ज, झ, ञ + इ, ई, य, श) = Talu (तालव्य)
- **ट** वर्ग (ट, ठ, ड, ढ, ण + ऋ, र, ष) = Murdha (मूर्धन्य)
- **त** वर्ग (त, थ, द, ध, न + ल, स) = Danta (दंत्य)
- **प** वर्ग (प, फ, ब, भ, म + उ, ऊ) = Ostha (ओष्ठ्य)

2. **पूर्वी और पश्चिमी हिंदी की बोलियों की ट्रिक:**
- पूर्वी हिंदी = **"अब छत्तीस"** (अ वधी, ब घेली, छत्तीस गढ़ी — अर्धमागधी से)।
- बिहारी हिंदी = **"एमएमबी (MMB)"** (म गही, मै थिली, भो जपुरी — मागधी से)।
- पश्चिमी हिंदी = **"कब कब है (KB KB H)"** (क न्नौजी, बुं देली, ख ड़ी बोली, ब्र ज, ह रियाणवी — शौरसेनी से)।

अध्याय 2: संधि एवं समास का गणितीय सूत्र-तंत्र (वर्ण-समीकरण एवं अपवाद विश्लेषण)

भाग 1: स्वर संधि के 5 भेदों का गणितीय वर्ण-सूत्र

स्वरों को तीन समूहों (Box A, Box B, Box C) में बाँट लीजिए:

- **Box A:** अ, आ

- **Box B:** इ, ई, उ, ऊ, ऋ
- **Box C:** ए, ऐ, ओ, औ

अब पाँचों स्वर संधियाँ केवल एक समीकरण से हल हो जाती हैं:

1. **दीर्घ स्वर संधि (सजातीय मेल = बड़ा स्वर):**

अ/आ + अ/आ = आ (जैसे: परम + अर्थ = परमार्थ, कवि + इंद्र = कवींद्र, भानु + उदय = भानूदय, पितृ + ऋण = पितृण)।

2. **गुण स्वर संधि (Box A + Box B = ए, ओ, अर्):**

- अ/आ + इ/ई = ए (नर + इंद्र = नरेंद्र, रमा + ईश = रमेश)
- अ/आ + उ/ऊ = ओ (सूर्य + उदय = सूर्योदय, महा + उत्सव = महोत्सव)
- अ/आ + ऋ = अर् (महा + ऋषि = महर्षि, देव + ऋषि = देवर्षि)

(पहचान: शब्द के बीच में ऊपर **एक मात्रा** `या **अथवा अंत में** र्षि` दिखे)।

3. **वृद्धि स्वर संधि (Box A + Box C = ऐ, औ):**

- अ/आ + ए/ऐ = ऐ (एक + एक = एकैक, सदा + एव = सदैव, मत + ऐक्य = मतैक्य)
- अ/आ + ओ/औ = औ (महा + ओज = महौज, वन + औषधि = वनौषधि)

(पहचान: शब्द के बीच में ऊपर **दो मात्राएँ** `या `दिखें)।

4. **यण् स्वर संधि (Box B + भिन्न स्वर = य्, व्, र्):**

- इ/ई + भिन्न स्वर = य् (अति + अधिक = अत्यधिक, प्रति + एक = प्रत्येक, देवी + आगमन = देव्यागमन)
- उ/ऊ + भिन्न स्वर = व् (सु + आगत = स्वागत, अनु + एषण = अन्वेषण, मधु + अरि = मध्वरि)
- ऋ + भिन्न स्वर = र् (पितृ + आज्ञा = पित्राज्ञा, मातृ + आनंद = मात्रानंद)

(पहचान: **य, व, र** से ठीक पहले **आधा व्यंजन** आता है)।

5. **अयादि स्वर संधि (Box C + भिन्न स्वर = अय्, आय्, अव्, आव्):**

- ए + अ = अय (ने + अन = नयन, शे + अन = शयन)
- ऐ + अ = आय (गै + अक = गायक, नै + इका = नायिका)
- ओ + अ = अव (पो + अन = पवन, भो + अन = भवन)
- औ + अ = आव (पौ + अन = पावन, नौ + इक = नाविक, भौ + उक = भावुक)

भाग 2: समास के 6 भेदों का पद-प्रधानता मैट्रिक्स

- **अव्ययीभाव समास (पूर्वपद प्रधान / उपसर्ग युक्त):** यथा, आ, प्रति, भर, अनु, नि, बे, बा अथवा **समान संज्ञा की आवृत्ति** (जैसे: रातोंरात, दिनोंदिन, हाथोंहाथ, धीरे-धीरे, द्वार-द्वार — ये द्वंद्व नहीं, अव्ययीभाव हैं!)।
- **तत्पुरुष समास (उत्तरपद प्रधान — कारक चिह्न का लोप):** कर्ता और संबोधन को छोड़कर 6 कारक भेद तथा **नञ् तत्पुरुष** (नकारात्मक उपसर्ग अ/अन्: अनाथ = न नाथ, अधर्म = न धर्म, अनादि = न आदि)।
- **कर्मधारय समास (उत्तरपद प्रधान — विशेषण-विशेष्य या उपमान-उपमेय):** नीलकमल, महात्मा, चरणकमल, क्रोधाग्नि, लालमिर्च।
- **द्विगु समास (उत्तरपद प्रधान — पूर्वपद संख्यावाची समूह):** चौराहा, नवरत्न, सप्तर्षि, शताब्दी, तिराहा।
- **द्वंद्व समास (दोनों पद प्रधान):**

1. इतरेतर द्वंद्व (माता-पिता, राम-लक्ष्मण),
2. समाहार द्वंद्व (कपड़ा-लत्ता, रुपया-पैसा),
3. वैकल्पिक द्वंद्व — विलोम युग्म (पाप-पुण्य, लाभ-हानि, धर्माधर्म = धर्म या अधर्म, शीतोष्ण = शीत या उष्ण, थोड़ा-बहुत)।

• **बहुव्रीहि समास (कोई पद प्रधान नहीं — तीसरा सांकेतिक अर्थ प्रधान):** दशानन (रावण), लंबोदर (गणेश), चक्रपाणि (विष्णु), मृत्युंजय (शिव), पंकज (कमल)।

क्या आप जानते हैं? (Do You Know?):
हिंदी व्याकरण में संख्याओं में भी द्वंद्व समास होता है! 1 से 9 और 10 से विभाज्य संख्याओं (10, 20, 30... 100) तथा 19, 29, 39... 89 (उन- उपसर्ग वाले अव्ययीभाव/बहुव्रीहि) को छोड़कर शेष दो अंकों की संख्याओं में **इतरेतर द्वंद्व समास** होता है: जैसे पच्चीस (पाँच और बीस), अड़सठ (आठ और साठ), इकतीस (एक और तीस) — इनमें द्विगु समास नहीं बल्कि द्वंद्व समास होता है!

परीक्षा में फँसाने वाला जाल (Exam Trap Alert):
1. **संधि के प्रसिद्ध अपवाद:**

• अक्ष + ऊहिनी = अक्षौहिणी (दिखने में गुण संधि का नियम अ + ऊ = ओ लगता है, परंतु इसमें अपवाद स्वरूप **वृद्धि संधि** होती है!)।

• प्र + ऊढ़ = प्रौढ़ और दंत + ओष्ठ = दंतौष्ठ / दंतोष्ठ तथा अधर + ओष्ठ = अधरोष्ठ।

• मनः + रथ = मनोरथ, यशः + द = यशोदा, पयः + धर = पयोधर, सरः + ज = सरोज — इनमें बीच में `` की मात्रा देखकर छात्र 'गुण स्वर संधि' लगा देते हैं, जबकि ये सभी **विसर्ग संधि** के उदाहरण हैं!

2. **समास का वरीयता नियम:**

यदि विकल्प में 'पीतांबर', 'नीलकंठ', 'त्रिलोचन' या 'चतुर्भुज' के लिए कर्मधारय/द्विगु और **बहुव्रीहि** दोनों दिए हों और वाक्य-प्रयोग न हो, तो आयोग सदैव **बहुव्रीहि समास (समासों का राजा)** को सही मानता है।

★ कहानी एवं निमोनिक्स स्मृति ट्रिक (Story/Mnemonic Trick):
समास की पद-प्रधानता याद रखने की 10-सेकंड की ट्रिक:

• **अ**व्ययीभाव = **अ**गला (पहला पद प्रधान)

• **त**त्पुरुष (तथा उसी के दो बेटे कर्मधारय व द्विगु) = **दू**सरा (उत्तर पद प्रधान)

• **द्वं**द्व = **दो**नों (दोनों पद प्रधान)

• **ब**हुव्रीहि = **बा**हरी (तीसरा पद प्रधान)

अध्याय 3: शब्द-संपदा, तत्सम-तद्भव पहचान सूत्र एवं वर्तनी-वाक्य शुद्धि विज्ञान

तत्सम और तद्भव पहचानने के 8 अचूक वैज्ञानिक नियम:

1. **क्ष का प्रयोग सदैव तत्सम में होता है,** तद्भव में यह ख या छ बन जाता है:

क्षीर → खीर, क्षेत्र → खेत, अक्षि → आँख, इक्षु → ईख, मक्षिका → मक्खी, परीक्षा → परख, साक्षी → साखी, रक्षा → राखी, क्षार → खार।

2. **व का प्रयोग प्रायः तत्सम में और ब का प्रयोग तद्भव में होता है:**

वणिक → बनिया, वर्षा → बरसात, वक → बगुला, वरयात्रा → बारात, वानर → बंदर, विद्युत → बिजली, वधू → बहू, वर्तिका → बाती।

3. **श और ष तत्सम में तथा स तद्भव में होता है:**

श्यामल → साँवला, श्वसुर → ससुर, श्मशान → श्मशान/मसान, शूक → सूआ, शुष्क → सूखा, शीर्ष → सीस, कृषक → किसान।

4. **ऋ की मात्रा (`) और र के रेफ/पदेन रूप (र्) तथा त्र` सदैव तत्सम होते हैं:**

घृत → घी, गृह → घर, मृत्तिका → मिट्टी, नृत्य → नाच, रात्रि → रात, सूत्र → सूत, मित्र → मीत, चैत्र → चैत, आम्र → आम, ताम्र → ताँबा, भ्रमर → भँवरा, ग्राम → गाँव।

5. **चंद्रबिंदु (``) वाला शब्द 99.9% मामलों में तद्भव होता है:**

गोधूम → गेहूँ, मुख → मुँह, दंत → दाँत, चंचु → चोंच, उष्ट्र → ऊँट, अंधकार → अँधेरा, अश्रु → आँसू, चंद → चाँद।

6. **ण** का तद्भव में **न** हो जाता है:

कण → कन, **कर्ण → कान**, **चूर्ण → चूरन**, **स्वर्ण → सोना**, **लवण → नोन/लोन**, **पाषाण → पाहन**।

सर्वोच्च-आवृत्ति शुद्ध वर्तनी शब्दकोश (Top 30 Exam Spelling Traps):

- **उज्ज्वल** (दोनों **ज्** आधे होते हैं: **उत् + ज्वल**), जबकि **प्रज्वलित** में केवल एक आधा **ज्** होता है (**प्र + ज्वलित**)!
- **कवयित्री** (**कव** पर कोई मात्रा नहीं, **यि** पर छोटी इ)।
- **आशीर्वाद** (**वा** के ऊपर **र्** लगता है, **शी** के ऊपर नहीं)।
- **अंताक्षरी** नहीं बल्कि शुद्ध रूप **अंत्याक्षरी** है (**अंत्य + अक्षरी**)।
- **अनाधिकार** नहीं बल्कि शुद्ध रूप **अनधिकार** है (**अन् + अधिकार** — **न** में **अ** मिलने से **न** पूरा हुआ, **ना** नहीं!)। इसी प्रकार **अनभिज्ञ**, **अनापेक्षित** **नहीं बल्कि** **अनपेक्षित**।
- **अहिल्या** नहीं बल्कि शुद्ध रूप **अहल्या** है; **द्वारिका** नहीं बल्कि शुद्ध रूप **द्वारका** है।
- **मिठाई** में **ठा** है, किंतु दुकान पर लिखे बोर्ड के विपरीत शुद्ध तत्सम शब्द **मिष्टान्न** (**मिष्ट + अन्न** = मीठा अन्न) है, **मिष्ठान** अशुद्ध है!
- **हिरण्यकशिपु** शुद्ध है (**हिरण्यकश्यप** अशुद्ध है)।
- **संन्यासी** में ऊपर अनुस्वार और आधा **न्** दोनों आते हैं (**सम् + न्यासी = संन्यासी**)।
- **वाल्मीकि** (**मी** बड़ी, **कि** छोटी), **कालिदास** (**लि** छोटी), **मैथिलीशरण** (**थि** छोटी, **ली** बड़ी), **सांकृत्यायन** (राहुल सांकृत्यायन), **जीजीविषा** नहीं बल्कि **जिजीविषा** (**जि** छोटी, **जी** बड़ी, **वि** छोटी = जीने की इच्छा)।

क्या आप जानते हैं? (Do You Know?):
अंतरराष्ट्रीय और **अंतर्राष्ट्रीय** दोनों रूप मानक हिंदी में प्रचलित हैं, परंतु अर्थ-भेद व संधि-नियम के अनुसार: जब **अंतः + राष्ट्रीय** (विसर्ग संधि = राष्ट्र के भीतर/अंतर्गत) हो तो **अंतर् + राष्ट्रीय = अंतर्राष्ट्रीय** बनता है, और जब **अंतर + राष्ट्रीय** (दो राष्ट्रों के बीच — International) हो तो **अंतरराष्ट्रीय** (पूरा **र**) अधिक वैज्ञानिक माना जाता है।

परीक्षा में फँसाने वाला जाल (Exam Trap Alert):
वाक्य शुद्धि में **'पुनरुक्ति दोष' (Redundancy / Superfluous Words)** सबसे बड़ा जाल है:

- **अशुद्ध:** "कृपया आज का अवकाश देने की कृपा करें।" (**कृपया** और **कृपा** एक साथ नहीं आते)।
- **अशुद्ध:** "वह प्रातःकाल के समय टहलता है।" (**प्रातःकाल** में 'काल' का अर्थ ही समय है; शुद्ध: "वह प्रातःकाल टहलता है")।
- **अशुद्ध:** "केवल मात्र दस रुपये चाहिए।" (**केवल** और **मात्र** एक साथ नहीं आते)।
- **अशुद्ध:** "सप्रमाण सहित उत्तर दें।" (**स** उपसर्ग का अर्थ ही 'सहित' है; शुद्ध: "सप्रमाण उत्तर दें" या "प्रमाण सहित उत्तर दें")।
- **अशुद्ध:** "यद्यपि वह गरीब है, लेकिन ईमानदार है।" (**यद्यपि** के साथ जोड़े में सदैव **तथापि** आता है, **लेकिन/किंतु** नहीं!)।

★ कहानी एवं निमोनिक्स स्मृति ट्रिक (Story/Mnemonic Trick):
"इया-इका-इत" प्रत्यय नियम:

जब किसी शब्द में **इत** या **इक** प्रत्यय जुड़ता है, तो पहले वर्ण का स्वर दीर्घ/वृद्धि हो जाता है:

- **समाज + इक = सामाजिक** (**स** का **सा** बना)
- **अध्यात्म + इक = आध्यात्मिक** (**अ** का **आ** बना)
- **इतिहास + इक = ऐतिहासिक** (**इ** का **ऐ** बना)
- **भूगोल + इक = भौगोलिक** (**भू** का **भौ** बना)
- **प्रमाण + इक = प्रामाणिक** (**प्र** का **प्रा** बना)

अध्याय 4: रस, छंद एवं अलंकार का शास्त्रीय एवं गणितीय विश्लेषण

1. रस-सिद्धांत (आचार्य भरतमुनि — नाट्यशास्त्र):

भरतमुनि का प्रसिद्ध रस-सूत्र है: **"विभावानुभावव्यभिचारीसंयोगाद्रसनिष्पत्तिः"** (अर्थात् विभाव, अनुभाव और व्यभिचारी/संचारी भावों के संयोग से रस की निष्पत्ति होती है)।

- **रस के 4 अंग:**

1. **स्थायी भाव (9 मूल + 2 बाद के = 11):** रति (श्रृंगार — रसराज), हास (हास्य), शोक (करुण), क्रोध (रौद्र), उत्साह (वीर), भय (भयानक), जुगुप्सा/घृणा (वीभत्स), विस्मय (अद्भुत), निर्वेद/शम (शांत — 9वां रस, उद्भट/अभिनवगुप्त), वत्सलता (वात्सल्य — 10वां रस, विश्वनाथ/सूरदास) और भगवद्-विषयक रति/अनुराग (भक्ति रस — 11वां रस, रूप गोस्वामी)।

2. **विभाव (2 प्रकार):** आलंबन विभाव (जिसके कारण भाव जागे) और उद्दीपन विभाव (जो भाव को तीव्र करे)।

3. **अनुभाव (4 प्रकार — कायिक, वाचिक, आहार्य, सात्त्विक):** आश्रय की बाह्य चेष्टाएँ; **सात्त्विक अनुभावों की संख्या 8** होती है (स्तंभ, स्वेद, रोमांच, स्वरभंग, कंप, वैवर्ण्य, अश्रु, प्रलय)।

4. **संचारी / व्यभिचारी भाव:** मन में पानी के बुलबुलों की तरह उठने-मिटने वाले भाव; **इनकी कुल संख्या 33** होती है।

2. छंद-गणित (आचार्य पिंगल — छंदशास्त्र):

- **मात्रा गणना नियम:** ह्रस्व स्वर (अ, इ, उ, ऋ एवं चंद्रबिंदु ` ) = 1 मात्रा (लघु I ); दीर्घ स्वर (आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ , अनुस्वार , विसर्ग तथा संयुक्त अक्षर के ठीक पूर्व का लघु वर्ण) = 2 मात्राएँ (गुरु S`)।

- **प्रमुख सम मात्रिक छंद (चारों चरण समान):**

- **चौपाई:** प्रत्येक चरण में **16 मात्राएँ** (अंत में दो गुरु शुभ)।

- **रोला:** प्रत्येक चरण में **24 मात्राएँ** (11 और 13 पर यति)।

- **गीतिका:** प्रत्येक चरण में **26 मात्राएँ** (14 और 12 पर यति)।

- **हरिगीतिका:** प्रत्येक चरण में **28 मात्राएँ** (16 और 12 पर यति)।

- **प्रमुख अर्धसम मात्रिक छंद:**

- **दोहा:** विषम चरण (1, 3) में **13 मात्राएँ** और सम चरण (2, 4) में **11 मात्राएँ** (कुल 24)।

- **सोरठा (दोहे का ठीक उल्टा):** विषम चरण (1, 3) में **11 मात्राएँ** और सम चरण (2, 4) में **13 मात्राएँ**।

- **बरवै:** विषम में **12** और सम में 7 **मात्राएँ** (कुल 19)।

- **उल्लाला:** विषम में **15** और सम में **13 मात्राएँ** (कुल 28)।

- **प्रमुख विषम मात्रिक छंद (6 चरण):**

- **कुंडलिया (दोहा + रोला):** जिस शब्द से शुरू होती है, उसी शब्द पर समाप्त होती है!

- **छप्पय (रोला + उल्लाला):** प्रथम 4 चरण रोला (24) और अंतिम 2 चरण उल्लाला (28)।

3. अलंकार-विभेदक सारणी:

- **अनुप्रास (वर्ण की आवृत्ति):** छेकानुप्रास (एक बार क्रमिक आवृत्ति), वृत्त्यनुप्रास (अनेक बार आवृत्ति), लाटानुप्रास (पूरा वाक्य/उपवाक्य दोहराया जाए पर अन्वय करने पर अर्थ बदल जाए: "पूत कपूत तो का धन संचय, पूत सपूत तो का धन संचय"), अंत्यानुप्रास (तुक मिलना), श्रुत्यानुप्रास (एक ही उच्चारण स्थान के वर्ण)।

- **यमक बनाम श्लेष: यमक** में एक शब्द **2 या अधिक बार** आता है और हर बार अर्थ अलग होता है ("कनक कनक ते सौ गुनी", "काली घटा का घमंड घटा", "तीन बेर खाती थीं वे तीन बेर खाती हैं"); **श्लेष** में शब्द **एक ही बार** आता है पर प्रसंगानुसार उसके कई अर्थ चिपके होते हैं ("रहिमन पानी राखिए... मोती, मानुष, चून" में पानी के तीन अर्थ: चमक, प्रतिष्ठा, जल)।

- **उपमा बनाम रूपक बनाम उत्प्रेक्षा:**

• **उपमा (तुलना):** वाचक शब्द **सा, सी, से, सम, सरिस, सदृश** ("पीपर पात सरिस मन डोला").

• **रूपक (अभेद आरोप):** उपमेय और उपमान के बीच योजक चिह्न और कोई वाचक शब्द नहीं ("चरन कमल बंदौ हरिराई", "मैया मैं तो चंद्र-खिलौना लैहौं").

• **उत्प्रेक्षा (संभावना/कल्पना):** वाचक शब्द **मनु, मानो, मनहुँ, जनु, जानो, जनहुँ, ज्यों** ("सोहत ओढे पीत पट, श्याम सलोने गात। मनहुँ नीलमणि शैल पर, आतप परयो प्रभात॥").

• **संदेह बनाम भ्रांतिमान: संदेह** में अंत तक अनिश्चय बना रहता है ("सारी बीच नारी है कि नारी बीच सारी है"); **भ्रांतिमान** में भ्रम को सच मानकर प्रतिक्रिया भी कर ली जाती है ("नाक का मोती अधर की कांति से, बीज दाड़िम का समझकर भ्रांति से... शुक मौन है").

क्या आप जानते हैं? (Do You Know?):
भरतमुनि ने अपने नाट्यशास्त्र में केवल **8 रसों** का ही उल्लेख किया है! उन्होंने 'शांत रस' को नाटक में अभिनय के अयोग्य मानते हुए रस की श्रेणी में नहीं रखा था। बाद में आचार्य उद्भट और अभिनवगुप्त ने शांत रस (स्थायी भाव: निर्वेद) को 9वें रस के रूप में प्रतिष्ठित किया।

परीक्षा में फँसाने वाला जाल (Exam Trap Alert):
विभावना अलंकार बनाम विशेषोक्ति अलंकार:

• जब **बिना कारण के ही कार्य हो जाए** तो **विभावना अलंकार** होता है ("बिनु पद चलै सुनै बिनु काना, कर बिनु करम करै विधि नाना").

• जब **कारण उपस्थित होने पर भी कार्य न हो** तो **विशेषोक्ति अलंकार** होता है ("पानी बिच मीन पियासी, मोहि सुनि सुनि आवत हाँसी" या "नीर भरे नित प्रति रहें, तऊ न प्यास बुझाय").

★ **कहानी एवं निमोनिक्स स्मृति ट्रिक (Story/Mnemonic Trick):**
1. **छंदों का सूत्र — "चारों सम: चौरासी गीत हर के (16-24-26-28)":**

चौपाई (16) → **रो**ला (24) → **गी**तिका (26) → हरिगीतिका (28)।

2. **कुंडलिया और छप्पय की ट्रिक — "डॉक्टर (DR) साहब कुंडली देखते हैं और आरयू (RU) छपवाते हैं":**

• **कुंडलिया** = **D** + **R** (**Doha + Rola**)

• **छप्पय** = **R** + **U** (**Rola + Ullala**)

3. **गणों का राजमाता सूत्र:**

यमाताराजभानसलगा (8 गण: यगण **ISS**, मगण **SSS**, तगण **SSI**, रगण **SIS**, जगण **ISI**, भगण **SII**, नगण **III**, सगण **IIS**)।

अध्याय 5: हिंदी साहित्य का काल-विभाजन, अमर कृतियाँ एवं प्रमुख पुरस्कार (ज्ञानपीठ व साहित्य अकादमी)

आचार्य रामचंद्र शुक्ल (हिंदी साहित्य का इतिहास, 1929) और डॉ. नागेंद्र के समन्वित काल-विभाजन के अनुसार:

1. **आदिकाल / वीरगाथा काल (संवत् 1050–1375 / 1000–1350 ई.):**

• प्रमुख रासो ग्रंथ: चंदबरदाई (पृथ्वीराज रासो — हिंदी का प्रथम महाकाव्य), नरपति नाल्ह (बीसलदेव रासो — श्रृंगार प्रधान), जगनिक (परमाल रासो / आल्हा-खंड), दलपति विजय (खुमान रासो), शार्ङ्गधर (हम्मीर रासो)।

• सिद्ध साहित्य (सरहपा — राहुल सांकृत्यायन के अनुसार हिंदी के प्रथम कवि; दोहाकोश), नाथ साहित्य (गोरखनाथ), अमीर खुसरो (खड़ी बोली के आदि कवि, पहेलियाँ व मुकरियाँ) और विद्यापति ('मैथिल कोकिल' — पदावली)।

2. **भक्तिकाल / पूर्व मध्यकाल (संवत् 1375–1700 — जॉर्ज ग्रियर्सन ने इसे 'हिंदी साहित्य का स्वर्णयुग' कहा):**

• **निर्गुण ज्ञानाश्रयी (संत काव्य):** कबीरदास (बीजक: साखी, सबद, रमैनी — संकलन धर्मदास; हजारीप्रसाद द्विवेदी ने कबीर को 'वाणी का डिक्टेटर' और शुक्ल जी ने इनकी भाषा को 'सधुक्कड़ी' तथा श्यामसुंदर दास ने 'पंचमेल खिचड़ी' कहा), रैदास, नानक, दादू दयाल, मलूकदास।

• **निर्गुण प्रेमाश्रयी (सूफी काव्य):** मलिक मुहम्मद जायसी (पद्मावत, अखरावट, आखिरी कलाम — ठेठ अवधी में), कुतुबन (मृगावती), मंझन (मधुमालती), मुल्ला दाऊद (चंदायन)।

• **सगुण रामाश्रयी शाखा:** गोस्वामी तुलसीदास (रामचरितमानस — 1574 ई./संवत् 1631, अवधी भाषा, 7 कांड: बालकांड, अयोध्याकांड, अरण्यकांड, किष्किंधाकांड, सुंदरकांड, लंकाकांड, उत्तरकांड; तथा विनयपत्रिका, कवितावली, गीतावली, दोहावली, कृष्णगीतावली — ब्रजभाषा में!), केशवदास (रामचंद्रिका — 'छंदों का अजायबघर'), नाभादास (भक्तमाल)।

• **सगुण कृष्णाश्रयी शाखा (अष्टछाप — स्थापना 1565 ई., गोस्वामी विट्ठलनाथ द्वारा):** वल्लभाचार्य के 4 शिष्य (सूरदास — 'अष्टछाप का जहाज', सूरसागर, सूरसारावली, साहित्य लहरी; कुंभनदास, परमानंददास, कृष्णदास) + विट्ठलनाथ के 4 शिष्य (नंददास, चतुर्भुजदास, छीतस्वामी, गोविंदस्वामी); मीराबाई, रसखान (प्रेमवाटिका, सुजान रसखान)।

3. **रीतिकाल / उत्तर मध्यकाल (संवत् 1700–1900):**

• **रीतिबद्ध:** केशवदास (कविप्रिया, रसिकप्रिया), चिंतामणि, मतिराम, देव, पद्माकर, भूषण (रीतिकाल के एकमात्र वीर रस के कवि — शिवराज भूषण, शिवा बावनी, छत्रसाल दशक)।

• **रीतिसिद्ध:** बिहारीलाल (बिहारी सतसई — 713/719 दोहे, 'गागर में सागर')।

• **रीतिमुक्त:** घनानंद ('प्रेम की पीर के कवि' — सुजान सागर), आलम, बोधा, ठाकुर।

4. **आधुनिक काल (संवत् 1900 से अब तक):**

• **भारतेंदु युग (1850–1900):** भारतेंदु हरिश्चंद्र (अंधेर नगरी, भारत दुर्दशा), प्रताप नारायण मिश्र, बालकृष्ण भट्ट (हिंदी प्रदीप)।

• *द्विवेदी युग (1900–1920 — महावीर प्रसाद द्विवेदी, सरस्वती पत्रिका के संपादक 1903–1920): मैथिलीशरण गुप्त ('राष्ट्रकवि' — साकेत, यशोधरा, भारत-भारती, जयद्रथ वध), अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' (प्रियप्रवास — खड़ी बोली हिंदी का प्रथम महाकाव्य, वैदेही वनवास*)।

• **छायावाद युग (1918–1936 — चार स्तंभ):** जयशंकर प्रसाद (कामायनी — 15 सर्ग: चिंता से आनंद तक, आँसू, लहर, झरना, नाटक: चंद्रगुप्त, स्कंदगुप्त, ध्रुवस्वामिनी), सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' (अनामिका, परिमल, राम की शक्तिपूजा, सरोज स्मृति — हिंदी का सर्वश्रेष्ठ शोकगीत, कुकुरमुत्ता), सुमित्रानंदन पंत ('प्रकृति के सुकुमार कवि' — पल्लव, चिदंबरा, लोकायतन), महादेवी वर्मा ('आधुनिक युग की मीरा' — यामा, नीहार, रश्मि, नीरजा, सांध्यगीत, अतीत के चलचित्र)।

• *प्रगतिवाद, प्रयोगवाद (अज्ञेय — तार सप्तक 1943, कितनी नावों में कितनी बार, शेखर: एक जीवनी) एवं नई कविता: रामधारी सिंह 'दिनकर' (उर्वशी, रश्मिरथी, कुरुक्षेत्र, संस्कृति के चार अध्याय), हरिवंश राय बच्चन (मधुशाला 1935, आत्मकथा 4 भाग: क्या भूलूँ क्या याद करूँ, नीड़ का निर्माण फिर, बसेरे से दूर, दशद्वार से सोपान तक), मुंशी प्रेमचंद (गोदान, गबन, कर्मभूमि, रंगभूमि, निर्मला, सेवासदन, मानसरोवर), फणीश्वरनाथ रेणु (मैला आँचल* — प्रथम आंचलिक उपन्यास)।

क्या आप जानते हैं? (Do You Know?):
हिंदी का *प्रथम समाचार-पत्र 'उदंत मार्तंड' **था, जिसका प्रकाशन** 30 मई 1826 **को कलकत्ता से पंडित जुगल किशोर शुक्ल ने साप्ताहिक रूप में किया था। इसी कारण प्रतिवर्ष** 30 मई को 'हिंदी पत्रकारिता दिवस'* मनाया जाता है!

परीक्षा में फँसाने वाला जाल (Exam Trap Alert):
तुलसीदास की रचनाओं की भाषा पर प्रश्न आता है: ध्यान रखें कि **'रामचरितमानस', 'पार्वती मंगल', 'जानकी मंगल', 'बरवै रामायण' और 'रामललानहछू' — ये 5 रचनाएँ अवधी भाषा** में हैं; जबकि जिस भी रचना के नाम में **'वली'** या **'पत्रिका'** आता है (**'विनयपत्रिका', 'कवितावली', 'दोहावली', 'गीतावली', 'कृष्णगीतावली', 'वैराग्य संदीपनी'**) — वे सभी **ब्रजभाषा** में हैं!

★ कहानी एवं निमोनिक्स स्मृति ट्रिक (Story/Mnemonic Trick):
हिंदी में ज्ञानपीठ पुरस्कार विजेताओं की कालानुक्रमिक ट्रिक — "पंत-दिनकर-अज्ञेय-महादेवी ने नरेश-निर्मल-अमर-केदार-कृष्णा-विनोद-रामभद्राचार्य को ज्ञान दिया":

1. **1968:** सुमित्रानंदन पंत (चिदंबरा — हिंदी का प्रथम ज्ञानपीठ)
2. **1972:** रामधारी सिंह 'दिनकर' (उर्वशी)
3. **1978:** सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' (कितनी नावों में कितनी बार)
4. **1982:** महादेवी वर्मा (यामा — इसके बाद एकल कृति के बजाय संपूर्ण साहित्यिक योगदान पर पुरस्कार मिलने लगा)

5. **1992:** नरेश मेहता | **1999:** निर्मल वर्मा | **2005:** कुँवर नारायण | **2009:** अमरकांत व श्रीलाल शुक्ल (राग दरबारी) | **2013:** केदारनाथ सिंह | **2017:** कृष्णा सोबती (जिंदगीनामा) | **2023 (58वां):** जगद्गुरु रामभद्राचार्य (संस्कृत) व गुलज़ार (उर्दू) | **2024 (59वां): विनोद कुमार शुक्ल** (छत्तीसगढ़ के प्रसिद्ध हिंदी साहित्यकार — नौकर की कमीज, दीवार में एक खिड़की रहती थी)।

भाग (ख): बुक 12 — 100 पूर्णतः हल किए गए विगत वर्षों के प्रश्न (Solved Chapter-wise PYQs 2018–2026)

अध्याय 1: वर्णमाला, संधि, समास एवं शब्द-भेद (प्रश्न 1 से 35)

अभ्यास प्रश्न #1 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 1. निम्नलिखित में से कौन-सा वर्ण 'अघोष महाप्राण' (Voiceless Aspirated) और 'मूर्धन्य' (Retroflex) दोनों है? [UPPSC RO/ARO 2023 / UP Police SI 2021]

(A) ट

(B) ठ

(C) ड

(D) ढ

उत्तर: (B) ठ

व्याख्या: ट-वर्ग के सभी वर्ण (**ट, ठ, ड, ढ, ण**) मूर्धन्य हैं। इनमें प्रथम दो वर्ण (**ट, ठ**) अघोष हैं और दूसरा व चौथा वर्ण (**ठ, ढ**) महाप्राण हैं। अतः 'ठ' अघोष भी है, महाप्राण भी है और मूर्धन्य भी है।

अभ्यास प्रश्न #2 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 2. 'वाग्जाल' और 'सच्चिदानंद' शब्दों का सही संधि-विच्छेद और संधि का नाम क्या है? [MPPSC Mains / RPSC PSI 2022]

(A) वाक् + जाल (व्यंजन संधि) तथा सत् + चित् + आनंद (व्यंजन संधि)

(B) वाग + जाल (स्वर संधि) तथा सच्चि + आनंद (दीर्घ संधि)

(C) वाः + जाल (विसर्ग संधि) तथा सत् + चिदानंद (गुण संधि)

(D) वाक् + गजाल तथा सची + आनंद

उत्तर: (A) वाक् + जाल (व्यंजन संधि) तथा सत् + चित् + आनंद (व्यंजन संधि)

व्याख्या: व्यंजन संधि के प्रथम नियम (**क, च, ट, त, प** के बाद सघोष वर्ण आने पर अपने ही वर्ग के तीसरे वर्ण **ग, ज, ड, द, ब** में परिवर्तन) से **वाक् + जाल = वाग्जाल** बनता है। इसी प्रकार **सत् + चित् + आनंद = सच्चिदानंद** (**त् + च = च्च** और **त् + आ = दा**) व्यंजन संधि है।

अभ्यास प्रश्न #3 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 3. 'अन्वय' और 'अन्वेषण' शब्दों में कौन-सी स्वर संधि है और इनका सही संधि-विच्छेद क्या है? [UPPSC CSAT 2023 / CTET 2024]

(A) अयादि संधि: अन + वय और अन + वेषण

(B) यण् स्वर संधि: अनु + अय और अनु + एषण

(C) गुण स्वर संधि: अनू + अय और अनू + एषण

(D) दीर्घ स्वर संधि: अनु + आय और अनु + ऐषण

उत्तर: (B) यण् स्वर संधि: अनु + अय और अनु + एषण

व्याख्या: यण् संधि के नियम **उ + भिन्न स्वर = व्** के अनुसार: **अनु + अय = अन्वय** (**न्** आधा हो गया और **उ + अ = व**) तथा **अनु + एषण = अन्वेषण**। ध्यान रहे कि 'अन्वेषण' के विच्छेद में **एषण** (एक मात्रा) होता है, **ऐषण** नहीं!

अभ्यास प्रश्न #4 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 4. निम्नलिखित में से किस शब्द में 'विसर्ग संधि' है? [SSC GD 2024 / BPSC TRE 2023]

(A) नीरव और नीरोग

(B) तल्लीन और उड्डयन

(C) महौषधि और सदैव

(D) प्रत्येक और स्वागत

उत्तर: (A) नीरव और नीरोग

व्याख्या: विसर्ग संधि के नियम के अनुसार यदि **निः** (छोटी इ) के बाद **र** आए, तो विसर्ग का लोप हो जाता है और उससे पहले की ह्रस्व **इ** दीर्घ **ई** में बदल जाती है:

निः + रव = नीरव, **निः + रोग = नीरोग**, **निः + रस = नीरस**, **निः + रज = नीरज**। (इसी कारण शुद्ध वर्तनी 'नीरोग' होती है, 'निरोग' अशुद्ध है!)।

अभ्यास प्रश्न #5 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 5. 'मृत्युंजय' और 'चक्रपाणि' में कौन-सा समास है? [UP Police Constable 2024 / High Court RO/ARO 2023]

(A) कर्मधारय समास

(B) तत्पुरुष समास

(C) बहुव्रीहि समास

(D) अव्ययीभाव समास

उत्तर: (C) बहुव्रीहि समास

व्याख्या: मृत्यु को जीतने वाला अर्थात् भगवान शिव (**मृत्युंजय** — अलुक् तत्पुरुष भी है किंतु योगरूढ़ अर्थ में बहुव्रीहि सर्वोच्च है) और चक्र है पाणि (हाथ) में जिसके अर्थात् भगवान विष्णु (**चक्रपाणि**) — दोनों में तीसरा विशेष अर्थ प्रधान होने से बहुव्रीहि समास है।

अभ्यास प्रश्न #6 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 6. 'मुँहतोड़', 'गगनचुंबी' और 'रथचालक' किस प्रकार के तत्पुरुष समास के उदाहरण हैं? [DSSSB TGT/PRT 2023]

(A) कर्म तत्पुरुष (द्वितीया तत्पुरुष — 'को' विभक्ति का लोप)

(B) करण तत्पुरुष ('से/के द्वारा' का लोप)

(C) अपादान तत्पुरुष ('से अलग होने' का लोप)

(D) संबंध तत्पुरुष ('का/के/की' का लोप)

उत्तर: (A) कर्म तत्पुरुष (द्वितीया तत्पुरुष — 'को' विभक्ति का लोप)

व्याख्या: मुँह को तोड़ने वाला (**मुँहतोड़**), गगन को चूमने वाला (**गगनचुंबी**) और रथ को चलाने वाला (**रथचालक**) — इन सभी में कर्म कारक की विभक्ति 'को' का लोप हुआ है।

अभ्यास प्रश्न #7 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 7. 'रेलगाड़ी', 'टिकटघर', 'लाठीचार्ज' और 'वर्षगाँठ' शब्द रचना और स्रोत के आधार पर किस श्रेणी के शब्द हैं? [UPSSSC VDO 2023 / Bihar SI 2023]

(A) तत्सम शब्द

(B) देशज शब्द

(C) संकर शब्द (Hybrid Words)

(D) योगरूढ़ शब्द

उत्तर: (C) संकर शब्द (Hybrid Words)

व्याख्या: दो अलग-अलग भाषाओं के शब्दों के मेल से बने शब्द 'संकर शब्द' कहलाते हैं: **रेल (अंग्रेजी) + गाड़ी (हिंदी)**, **टिकट (अंग्रेजी) + घर (हिंदी)**, **लाठी (हिंदी) + चार्ज (अंग्रेजी)**, **वर्ष (संस्कृत) + गाँठ (हिंदी)**, **छाया (संस्कृत) + दार (फारसी) = छायादार**।

अभ्यास प्रश्न #8 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 8. 'आलमारी', 'गमला', 'चाबी', 'तौलिया', 'कनस्तर' और 'पपीता' हिंदी में किस विदेशी भाषा से आए शब्द हैं? [UPPSC RO/ARO Prelims 2021 / 2024]

(A) तुर्की

(B) पुर्तगाली (Portuguese)

(C) फारसी

(D) अरबी

उत्तर: (B) पुर्तगाली (Portuguese)

व्याख्या: पुर्तगाली शब्द (ट्रिक: "पादरी ने आलमारी से चाबी निकालकर गमला, तौलिया, बाल्टी, साबुन, पपीता, गोभी और तंबाकू की नीलामी की"): आलमारी, आलपिन, चाबी, फीता, तंबाकू, गमला, तौलिया, बाल्टी, साबुन, पपीता, काजू, आलू, गोभी, कमरा, मिस्त्री, पादरी, नीलाम।

अभ्यास प्रश्न #9 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 9. 'कैंची', 'चाकू', 'तोप', 'बारूद', 'लाश', 'दरोगा', 'बहादुर' और 'बेगम' किस भाषा के शब्द हैं? [UP Police SI / SSC GD 2024]

(A) तुर्की (Turkish)

(B) अरबी

(C) फारसी

(D) जापानी

उत्तर: (A) तुर्की (Turkish)

व्याख्या: तुर्की शब्द (ट्रिक: "बहादुर दरोगा ने बेगम की लाश के पास कैंची, चाकू, तोप, तमंचा और बारूद की तलाश में कुर्की की"): उर्दू, मुगल, आका, कैंची, चाकू, तोप, बारूद, लाश, दरोगा, बहादुर, बेगम, बावर्ची, चम्मच, चेचक, सौगात, सुराग, कुर्की।

अभ्यास प्रश्न #10 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 10. 'गोधूम', 'हरिद्रा', 'श्मश्रु' और 'उपालंभ' तत्सम शब्दों के सही तद्भव रूप क्रमशः क्या हैं? [UPPSC RO/ARO Special 2023]

(A) गोबर, हरी, आँसू, उलाहना

(B) गेहूँ, हल्दी, मूँछ, उलाहना

(C) गाय, हरड़, सास, उपमा

(D) गेहूँ, अदरक, दाढ़ी, शिकायत

उत्तर: (B) गेहूँ, हल्दी, मूँछ, उलाहना

व्याख्या: **गोधूम → गेहूँ** (**गोमय → गोबर**), **हरिद्रा → हल्दी** (**आर्द्रक → अदरक**), **श्मश्रु → मूँछ** (**अश्रु → आँसू**, **श्वश्रू → सास**), और **उपालंभ → उलाहना**।

अध्याय 2: संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, कारक, वाच्य एवं काल (प्रश्न 11 से 50)

अभ्यास प्रश्न #11 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 11. "राजा ने भिक्षुक को दान दिया" और "पेड़ से पत्ता गिरा" — इन दोनों वाक्यों में क्रमशः कौन-से कारक प्रयुक्त हुए हैं? [CTET 2024 / UPPSC CSAT 2023]

(A) कर्म कारक और करण कारक

(B) संप्रदान कारक और अपादान कारक

(C) कर्म कारक और अपादान कारक

(D) संबंध कारक और अधिकरण कारक

उत्तर: (B) संप्रदान कारक और अपादान कारक

व्याख्या: जब किसी को कोई वस्तु **सदा के लिए दान या भेंट** दी जाती है (जो वापस न ली जाए), तो 'को' विभक्ति होने पर भी वहाँ कर्म कारक नहीं बल्कि **संप्रदान कारक** ("कर्मणा यमभिप्रैति स संप्रदानम्") होता है! (जबकि "धोबी को कपड़े दिए" में कपड़े वापस लेने हैं, इसलिए वहाँ कर्म/संबंध कारक होता है)। दूसरे वाक्य में पेड़ से पत्ते के **अलग होने (Alagav)** का भाव है, अतः **अपादान कारक** है।

अभ्यास प्रश्न #12 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 12. निम्नलिखित में से किस वाक्य में 'अपादान कारक' (Ablative Case) का प्रयोग हुआ है? [RPSC PSI / UP Police 2024]

(A) बच्चा कुत्ते से डरता है।

(B) सीता गीता से सुंदर है।

(C) गंगा हिमालय से निकलती है और छात्र गुरु से विद्या सीखता है।

(D) उपर्युक्त सभी में अपादान कारक है।

उत्तर: (D) उपर्युक्त सभी में अपादान कारक है।

व्याख्या: अपादान कारक (**से**) केवल अलग होने में ही नहीं, बल्कि **डर/भय** ("कुत्ते से डरता है"), **तुलना** ("गीता से सुंदर है"), **उद्गम/आरंभ** ("हिमालय से निकलती है"), **नियमपूर्वक शिक्षा ग्रहण करना** ("गुरु से सीखता है"), **लज्जा/शर्म** ("बहू ससुर से लजाती है") और **घृणा** में भी प्रयुक्त होता है!

अभ्यास प्रश्न #13 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 13. हिंदी में मूल सर्वनामों (Original Pronouns) की संख्या कितनी है और सर्वनाम के कुल कितने भेद होते हैं? [UPSSSC Lekhpal / VDO 2023]

(A) मूल सर्वनाम 6 और भेद 11

(B) मूल सर्वनाम 11 और भेद 6

(C) मूल सर्वनाम 8 और भेद 6

(D) मूल सर्वनाम 10 और भेद 5

उत्तर: (B) मूल सर्वनाम 11 और भेद 6

व्याख्या: कामताप्रसाद गुरु के अनुसार हिंदी में **मूल सर्वनाम 11** हैं: **मैं, तू, आप, यह, वह, जो, सो, कोई, कुछ, कौन, क्या**। प्रयोग के आधार पर सर्वनाम के **6 भेद** हैं: 1. पुरुषवाचक (उत्तम, मध्यम, अन्य), 2. निश्चयवाचक (**यह, वह**), 3. अनिश्चयवाचक (**कोई, कुछ**), 4. संबंधवाचक (**जो-सो**), 5. प्रश्नवाचक (**कौन, क्या**), और 6. निजवाचक (**आप/स्वयं**)।

अभ्यास प्रश्न #14 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 14. "यह पुस्तक मेरी है" और "यह मेरी पुस्तक है" — इन दोनों वाक्यों में 'यह' शब्द व्याकरणिक दृष्टि से क्रमशः क्या है? [KVS / DSSSB / CTET Paper-2 2024]

(A) दोनों में निश्चयवाचक सर्वनाम है

(B) प्रथम वाक्य में 'सार्वनामिक विशेषण' (Demonstrative Adjective) और द्वितीय वाक्य में 'निश्चयवाचक सर्वनाम' (Demonstrative Pronoun) है

(C) प्रथम में सर्वनाम और द्वितीय में विशेषण है

(D) दोनों में परिमाणवाचक विशेषण है

उत्तर: (B) प्रथम वाक्य में 'सार्वनामिक विशेषण' (Demonstrative Adjective) और द्वितीय वाक्य में 'निश्चयवाचक सर्वनाम' (Demonstrative Pronoun) है

व्याख्या: स्वर्णिम नियम: जब `यह / वह` के **तुरंत बाद वही संज्ञा शब्द** आए जिसकी ओर संकेत किया जा रहा है ("यह पुस्तक..."), तो वह **सार्वनामिक (संकेतवाचक) विशेषण** कहलाता है; और जब `यह / वह` के तुरंत बाद संज्ञा न आकर अन्य पद आए ("यह मेरी पुस्तक है"), तो वह **निश्चयवाचक सर्वनाम** कहलाता है!

अभ्यास प्रश्न #15 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 15. "मुझसे अब चला नहीं जाता" और "पक्षी आकाश में उड़ते हैं" — इन दोनों वाक्यों में क्रमशः कौन-सा वाच्य (Voice) है? [SSC GD / UP Police Constable 2024]

(A) कर्मवाच्य और कर्तृवाच्य

(B) भाववाच्य (Impersonal Voice) और कर्तृवाच्य (Active Voice)

(C) कर्तृवाच्य और भाववाच्य

(D) भाववाच्य और कर्मवाच्य

उत्तर: (B) भाववाच्य (Impersonal Voice) और कर्तृवाच्य (Active Voice)

व्याख्या: जब कर्ता के साथ `से / के द्वारा` लगा हो, क्रिया **अकर्मक, एकवचन, पुल्लिंग, अन्य पुरुष** में हो और प्रायः असमर्थता का भाव हो ("मुझसे चला नहीं जाता", "दादी से उठा नहीं जाता"), तो वहाँ **भाववाच्य** होता है। "पक्षी आकाश में उड़ते हैं" में कर्ता ('पक्षी') प्रधान है और 'से/द्वारा' नहीं है, अतः यह **कर्तृवाच्य** है।

(प्रश्न 16 से 100: संपूर्ण सामान्य हिंदी व्याकरण, शब्दकोश एवं साहित्य के 85 पूर्णतः हल किए गए *PYQs — 2018–2026*)

प्र. सं.	परीक्षा एवं वर्ष	वास्तविक परीक्षा प्रश्न (PYQ)	सही उत्तर एवं सटीक व्याकरणिक व्याख्या
16	UPPSC RO/ARO 2024	'जंगल में लगने वाली आग', 'समुद्र में लगने वाली आग' और 'पेट में लगने वाली आग' के लिए एक शब्द क्रमशः क्या हैं?	**दावाग्नि (दावानल)** = जंगल की आग; **बड़वाग्नि (बड़वानल)** = समुद्र की आग; **जठराग्नि (जठरानल)** = पेट की आग।
17	UPPSC RO/ARO 2023	'जिस स्त्री के पुत्र और पति न हों', 'जिसका पति परदेश से आने वाला हो' और 'जिसका पति परदेश से लौट आया हो' के लिए एक शब्द क्या हैं?	**अवीरा** (पुत्र व पति रहित स्त्री; अबला नहीं!), **आगमिस्यत्पतिका** (पति आने वाला हो), **आगतपतिका** (पति लौट आया हो), **प्रोषितपतिका** (पति परदेश गया हो)।
18	RPSC PSI 2023	'आधी रात का समय', 'चाँदनी रात' और 'तारों भरी रात' के लिए वाक्यांश के एक शब्द क्रमशः क्या हैं?	**निशीथ** (आधी रात का समय), **शर्वरी** (चाँदनी रात), **विभावरी** (तारों भरी रात), **त्रियामा** (रात्रि के तीन प्रहर)।
19	UP Police SI 2021	'उत्तराधिकार में प्राप्त संपत्ति' और 'बिना जोते उगने वाली फसल' के लिए एक शब्द क्या है?	**रिक्थ** (उत्तराधिकार में प्राप्त संपत्ति; धरोहर/थाती अमानत होती है) और **अकृष्टपच्या** (बिना जोते उगने वाली फसल)।
20	SSC GD 2024	'तैरने की इच्छा', 'मोक्ष की इच्छा' और 'युद्ध की इच्छा' तथा इनके इच्छुक व्यक्ति को क्या कहते हैं?	इच्छा: **तितीर्षा, मुमुक्षा, युयुत्सा** (`आ` की मात्रा = इच्छा); इच्छुक व्यक्ति: **तितीर्षु, मुमुक्षु, युयुत्सु** (`उ` की मात्रा = व्यक्ति)।
21	UPPSC RO/ARO 2023	'अज्ञ' का सही विलोम क्या है और 'सृष्टि' तथा 'इप्सित' के सही विलोम क्या हैं?	`अज्ञ → विज्ञ / प्रज्ञ` (सर्वज्ञ का विलोम अल्पज्ञ होता है!); `सृष्टि → प्रलय` (व्यष्टि का समष्टि); `ईप्सित → अनीप्सित`।
22	UPPSC RO/ARO 2021	'जंगम', 'स्थावर', 'ऋजु' और 'मृसण' के सही विलोम शब्द क्या हैं?	`जंगम ↔ स्थावर`, `ऋजु (सीधा) ↔ वक्र (टेढ़ा)`, `मृसण (चिकना) ↔ रूक्ष (खुरदरा)`, `उद्धत ↔ विनीत`।

प्र. सं.	परीक्षा एवं वर्ष	वास्तविक परीक्षा प्रश्न (PYQ)	सही उत्तर एवं सटीक व्याकरणिक व्याख्या
23	BPSC Teacher 2024	'अंतरंग', 'उन्मीलन', 'आविर्भाव' और 'चिरंतन' के विलोम शब्द बताइए।	**अंतरंग ↔ बहिरंग**, **उन्मीलन (आँख खुलना) ↔ निमीलन (आँख बंद होना)** (उन्मूलन का रोपण होता है!), **आविर्भाव ↔ तिरोभाव**, **चिरंतन ↔ नश्वर**।
24	High Court RO 2023	'बिड़ौजा', 'मधवा', 'शचीपति', 'पुरंदर' और 'वासव' किस देवता के पर्यायवाची शब्द हैं?	**इंद्र** के पर्यायवाची हैं (अन्य: देवराज, मघवा, सहस्राक्ष, वज्रधर, जिष्णु)।
25	UPPSC RO/ ARO 2023	'मार', 'स्मर', 'मदन', 'मनसिज', 'अतनु', 'अनंग', 'पंचशर' और 'रतिपति' किसके पर्यायवाची हैं?	**कामदेव** के पर्यायवाची हैं (अतनु/अनंग = बिना शरीर वाला, मकरध्वज, मीनकेतु, कंदर्प)।
26	MPPSC 2023	'जातवेदस', 'वैश्वानर', 'कृशानु', 'हुताशन', 'धनंजय' और 'वायुसखा' किसके पर्यायवाची हैं?	**अग्नि (आग)** के पर्यायवाची हैं।
27	UP Police 2024	'केहरी', 'शार्दूल', 'मृगेंद्र', 'पंचानन', 'नाहर' और 'केसरी' किसके पर्यायवाची हैं?	**सिंह (शेर)** के पर्यायवाची हैं (जबकि 'वाजि, तुरंग, घोटक, हय, सैंधव, रविसुत' **घोड़े** के पर्यायवाची हैं)।
28	SSC GD 2024	'अलि – अली' और 'अंबुज – अंबुद' समश्रुत भिन्नार्थक शब्द-युग्मों का सही अर्थ क्या है?	**अलि** (छोटी इ) = भँवरा, **अली** (बड़ी ई) = सखी; **अंबुज** (**ज** = जन्म लेने वाला) = कमल, **अंबुद** (**द** = देने वाला) = बादल, **अंबुधि** (**धि** = धारण करने वाला) = समुद्र।
29	RPSC PSI 2022	'तरणि – तरणी – तरुणी' शब्द-त्रय का सही अर्थ-भेद क्या है?	**तरणि** (छोटी इ) = सूर्य; **तरणी** (बड़ी ई) = नाव (नौका); **तरुणी** = युवती।
30	UPSSSC VDO 2023	'अंश – अंस' और 'अनिल – अनल' का सही अर्थ क्या है?	**अंश** = भाग/हिस्सा, **अंस** = कंधा; **अनिल** = हवा (वायु), **अनल** = आग (अग्नि)।
31	CTET Jan 2024	"माँ ने बच्चे को सुलाया" और "मोहन ने सोहन से पत्र लिखवाया" — इन दोनों में क्रमशः कौन-सी प्रेरणार्थक क्रिया है?	पहले में **प्रथम प्रेरणार्थक क्रिया** ('सुलाया' — कर्ता स्वयं कार्य में प्रेरक है) और दूसरे में **द्वितीय प्रेरणार्थक क्रिया** ('लिखवाया' — कर्ता किसी तीसरे से कार्य करवाता है)।
32	DSSSB 2024	"वह खाकर सो गया" वाक्य में 'खाकर' कौन-सी क्रिया है?	**पूर्वकालिक क्रिया** (जब कर्ता एक क्रिया समाप्त कर तुरंत दूसरी क्रिया प्रारंभ करता है, तो पहली क्रिया में **कर/के** जुड़ा होता है)।
33	UP Police 2024	"शायद आज वर्षा हो" और "यदि तुम पढ़ते तो अवश्य पास हो जाते" में काल (Tense) का कौन-सा भेद है?	पहले में **संभाव्य भविष्यत् काल** और दूसरे में **हेतुहेतुमद् भूतकाल** (एक क्रिया का होना दूसरी क्रिया की शर्त पर निर्भर था जो भूतकाल में अधूरी रह गई)।
34	UPPSC CSAT 2024	हिंदी में 'प्राण', 'दर्शन', 'आँसू', 'होश', 'बाल' और 'हस्ताक्षर' शब्दों का प्रयोग किस वचन में होता है?	**सदैव बहुवचन (Always Plural)** में (जैसे: "मेरे प्राण निकल गए", "आपके दर्शन दुर्लभ हैं", "मैंने हस्ताक्षर कर दिए हैं")।
35	BPSC TRE 2024	'जनता', 'पुलिस', 'भीड़', 'पानी', 'सोना' (धातु), 'आकाश' और 'सत्य' शब्दों का प्रयोग किस वचन में होता है?	**सदैव एकवचन (Always Singular)** में (जैसे: "जनता जाग चुकी है", "भीड़ जमा हो गई")।
36	UPPSC RO/ ARO 2023	'दही', 'घी', 'पानी', 'मोती' और 'हाथी' शब्द पुल्लिंग हैं या स्त्रीलिंग?	ये सभी **पुल्लिंग (Masculine)** शब्द हैं! (ईकारांत शब्द प्रायः स्त्रीलिंग होते हैं, किंतु दही, घी, पानी, मोती, हाथी, जी, कवि इसके प्रसिद्ध पुल्लिंग अपवाद हैं — "दही खट्टा है", "दही खट्टी है" अशुद्ध है!)।
37	SSC GD 2024	'आँख की किरकिरी होना' और 'गूलर का फूल होना' मुहावरों का सही अर्थ क्या है?	**आँख की किरकिरी होना** = अप्रिय लगना; **गूलर का फूल होना** = अत्यंत दुर्लभ या कभी दिखाई न देना।
38	UP Police 2024	'अंगूठा दिखाना', 'काठ का उल्लू होना' और 'चाँदी का ऐनक लगाना' मुहावरों का अर्थ क्या है?	**अंगूठा दिखाना** = समय पर साफ इनकार कर देना; **काठ का उल्लू** = निपट मूर्ख; **चाँदी का ऐनक लगाना** = किसी न किसी प्रकार प्रतिष्ठा बनाए रखना।
39	RPSC / MPPSC 2023	मुहावरा और लोकोक्ति (कहावत) में मूल व्याकरणिक अंतर क्या है?	**मुहावरा** एक 'वाक्यांश' (Phrase) होता है जिसके अंत में प्रायः 'ना' आता है और यह स्वतंत्र वाक्य नहीं होता; जबकि **लोकोक्ति** लोक-अनुभव पर आधारित एक 'पूर्ण स्वतंत्र वाक्य' (Proverb) होती है।

प्र. सं.	परीक्षा एवं वर्ष	वास्तविक परीक्षा प्रश्न (PYQ)	सही उत्तर एवं सटीक व्याकरणिक व्याख्या
40	CTET Aug 2023	'खग जाने खग ही की भाषा' और 'आँख के अंधे नाम नयनसुख' लोकोक्तियों का अर्थ क्या है?	**खग जाने खग ही की भाषा** = समान प्रवृत्ति वाले लोग ही एक-दूसरे को समझते हैं; **आँख के अंधे नाम नयनसुख** = गुण के बिल्कुल विपरीत नाम होना।
41	UP Police SI 2021	"अखियाँ हरि-दरसन की भूखी। कैसे रहें रूप-रस राँची ए बतियाँ सुनि रूखी॥" — इन पंक्तियों में कौन-सा रस है?	**वियोग (विप्रलंभ) श्रृंगार रस** (गोपियाँ श्रीकृष्ण के विरह में व्याकुल हैं)।
42	UPPSC CSAT 2022	"हिमाद्रि तुंग शृंग से प्रबुद्ध शुद्ध भारती, स्वयंप्रभा समुज्ज्वला स्वतंत्रता पुकारती" — जयशंकर प्रसाद की इस पंक्ति में कौन-सा रस और गुण है?	**वीर रस** (स्थायी भाव: उत्साह) और **ओज गुण**।
43	BPSC TRE 2023	"सिर पर बैठ्यो काग आँख दोउ खात निकारत। खींचत जीभहिं स्यार अतिहि आनंद उर धारत॥" — इसमें कौन-सा रस है?	**वीभत्स रस** (स्थायी भाव: जुगुप्सा या घृणा)।
44	MPPSC 2024	"मन रे तन कागद का पुतला। लागै बूँद बिनसि जाय छिन में, गरब करै क्या इतना॥" — इसमें कौन-सा रस है?	**शांत रस** (स्थायी भाव: निर्वेद / वैराग्य)।
45	UP Police 2024	"यशोदा हरि पालने झुलावै। हलरावै दुलराइ मल्हावै जोइ सोइ कछु गावै॥" — इसमें कौन-सा रस है?	**वात्सल्य रस** (स्थायी भाव: वत्सलता / संतान-प्रेम)।
46	High Court RO 2023	"तरनि तनूजा तट तमाल तरुवर बहु छाए" में कौन-सा अलंकार है और 'तरनि तनूजा' का अर्थ क्या है?	**वृत्त्यनुप्रास अलंकार** (`त` वर्ण की आवृत्ति) और 'तरनि तनूजा' का अर्थ **यमुना नदी** (सूर्य की पुत्री) है।
47	UPPSC RO/ ARO 2023	"चरण धरत चिंता करत, चितवत चारहु ओर। सुबरन को ढूँढ़त फिरत, कवि, व्यभिचारी, चोर॥" — इसमें कौन-सा अलंकार है?	**श्लेष अलंकार** ('सुबरन' शब्द एक बार आया है किंतु इसके तीन अर्थ हैं: कवि के लिए 'सुंदर अक्षर/वर्ण', व्यभिचारी के लिए 'सुंदर रूप-रंग', और चोर के लिए 'स्वर्ण/सोना')।
48	SSC GD / Police 2024	"हनुमान की पूँछ में लगन न पाई आग। लंका सिगरी जल गई, गए निशाचर भाग॥" — इसमें कौन-सा अलंकार है?	**अतिशयोक्ति अलंकार** (बात को लोक-सीमा से अत्यंत बढ़ा-चढ़ाकर प्रस्तुत किया गया है)।
49	DSSSB TGT 2023	"फूल हँसे कलियाँ मुस्काईं" और "मेघ आए बड़े बन-ठन के सँवर के" में कौन-सा अलंकार है?	**मानवीकरण अलंकार (Personification)** — जड़ प्रकृति पर मानवीय भावनाओं और क्रियाओं का आरोप।
50	CTET 2024	"उदित उदयगिरि मंच पर, रघुबर बाल पतंग। विकसे संत सरोज सब, हरषे लोचन भृंग॥" — इसमें कौन-सा अलंकार है?	**रूपक अलंकार (सांग रूपक)** — उदयगिरि पर मंच का, रघुबर पर बाल-सूर्य का, संतों पर कमल का और नेत्रों पर भँवरों का अभेद आरोप।
51	UP Police SI 2021	11 वर्णों वाले प्रसिद्ध वर्णिक छंद 'इंद्रवज्रा' और 12 वर्णों वाले 'भुजंगप्रयात' तथा 31 वर्णों वाले 'कवित्त (मनहरण)' की पहचान क्या है?	**इंद्रवज्रा** (11 वर्ण: तगण, तगण, जगण + 2 गुरु), **भुजंगप्रयात** (12 वर्ण: 4 यगण `ISS`), **मालिनी** (15 वर्ण), **मंदाक्रांता** (17 वर्ण), **सवैया** (22 से 26 वर्ण) और **कवित्त/घनाक्षरी** (31 वर्ण, 16-15 पर यति)।
52	UGC-NET / PGT 2024	"नील परिहन बीच सुकुमार खुल रहा मृदुल अधखुला अंग, खिला हो ज्यों बिजली का फूल मेघ बन बीच गुलाबी रंग" — जयशंकर प्रसाद की इस पंक्ति में कौन-सा छंद व अलंकार है?	**रोला छंद** (24 मात्राएँ) तथा **उत्प्रेक्षा और उपमा अलंकार** ('ज्यों बिजली का फूल')।
53	UPPSC CSAT 2023	अर्धविराम (Semicolon), अल्पविराम (Comma), विवरण चिह्न, हंसपद (त्रुटिपूरक) और लाघव चिह्न के प्रतीक क्या हैं?	अर्धविराम `(;)`, अल्पविराम `(,)`, उपविराम `(:)`, विवरण चिह्न `(:-)`, **हंसपद / काकपद** `(^)` (छूटे शब्द को ऊपर लिखने हेतु), और **लाघव चिह्न** `(0)` (जैसे: डॉ0, प्रो0)।
54	UPSSSC VDO 2023	सरकारी पत्राचार में जब कोई पत्र एक साथ अनेक मंत्रालयों, विभागों या अधीनस्थ कार्यालयों को भेजा जाता है, तो उसे क्या कहते हैं?	**परिपत्र (Circular)**।
55	High Court RO 2023	जब किसी पूर्व-प्रेषित सरकारी पत्र का उत्तर समय पर प्राप्त नहीं होता, तो उसे याद दिलाने के लिए भेजा जाने वाला पत्र क्या कहलाता है?	**अनुस्मारक (Reminder / स्मरण-पत्र)**।
56	UPPSC RO/ ARO Mains	समान स्तर के दो अधिकारियों के बीच किसी शासकीय मामले पर व्यक्तिगत स्तर पर ध्यान आकृष्ट करने हेतु उत्तम पुरुष ('मैं' और 'प्रिय श्री...') में लिखा जाने वाला पत्र क्या कहलाता है?	**अर्ध-शासकीय पत्र (Demi-Official Letter — D.O. Letter)**, जिसमें प्रेषक बाईं ओर ऊपर अपना नाम-पदनाम लिखता है और नीचे केवल हस्ताक्षर करता है (पदनाम नहीं)।

प्र. सं.	परीक्षा एवं वर्ष	वास्तविक परीक्षा प्रश्न (PYQ)	सही उत्तर एवं सटीक व्याकरणिक व्याख्या
57	UPPSC RO/ARO 2023	राजपत्र (Official Gazette) में प्रकाशित होने वाली सरकारी नियुक्ति, स्थानांतरण, नियम या आदेश की सूचना क्या कहलाती है?	**अधिसूचना (Notification)**, जो सदैव अन्य पुरुष (Third Person) में लिखी जाती है।
58	Bank SO Rajbhasha 2024	प्रशासनिक शब्दावली में 'Ad-hoc', 'Ex-officio', 'Deputation', 'Lien' और 'Honorarium' के मानक हिंदी पर्याय क्या हैं?	**Ad-hoc** = **तदर्थ**, **Ex-officio** = **पदेन**, **Deputation** = **प्रतिनियुक्ति**, **Lien** = **धारणाधिकार (पुनर्ग्रहण अधिकार)**, **Honorarium** = **मानदेय**।
59	SSC JHT 2024	प्रशासनिक शब्दावली में 'Quorum', 'Minutes', 'Agenda', 'Gazette' और 'Affidavit' के सही हिंदी पर्याय क्या हैं?	**Quorum** = **गणपूर्ति (कोरम)**, **Minutes** = **कार्यवृत्त**, **Agenda** = **कार्यसूची**, **Gazette** = **राजपत्र**, **Affidavit** = **शपथ-पत्र (हलफनामा)**।
60	Railway Rajbhasha 2024	'Subjudice', 'Suo Motu', 'Sine die', 'Prima facie' और 'Status quo' विधिक वाक्यांशों का हिंदी अर्थ क्या है?	**Subjudice** = **न्यायाधीन (विचाराधीन)**, **Suo Motu** = **स्वप्रेरणा से (स्वतः संज्ञान)**, **Sine die** = **अनिश्चित काल के लिए**, **Prima facie** = **प्रथम दृष्टया**, **Status quo** = **यथास्थिति**।
61	UP Police 2024	हिंदी साहित्य के इतिहास-लेखन का सबसे पहला प्रयास किस विद्वान ने, किस भाषा में और किस ग्रंथ के माध्यम से किया?	फ्रेंच विद्वान **गार्सा द तासी** ने फ्रेंच भाषा में **'इस्त्वार द ला लितरेत्यूर ऐंदुई ऐंदुस्तानी'** (1839 ई.) नामक ग्रंथ लिखकर किया।
62	BPSC TRE 2024	काल-क्रमानुसार हिंदी साहित्य का प्रथम वास्तविक इतिहास ग्रंथ 'द मॉडर्न वर्नाक्यूलर लिटरेचर ऑफ हिंदुस्तान' (1888) किसने लिखा?	**सर जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन** ने (एशियाटिक सोसायटी ऑफ बंगाल की पत्रिका के विशेषांक के रूप में)।
63	UPPSC 2022	हिंदी का प्रथम मौलिक उपन्यास किसे माना जाता है और इसके लेखक कौन हैं?	**'परीक्षा गुरु'** (1882 ई.) — लेखक: **लाला श्रीनिवास दास** (आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार)।
64	MPPSC / RPSC 2023	हिंदी की प्रथम मौलिक कहानी 'इंदुमती' (1900 ई., सरस्वती पत्रिका में प्रकाशित) के लेखक कौन हैं, तथा आधुनिक शोध में 'एक टोकरी भर मिट्टी' (1901) किसकी कहानी है?	'इंदुमती' के लेखक **किशोरीलाल गोस्वामी** हैं और 'एक टोकरी भर मिट्टी' के लेखक **माधवराव सप्रे** हैं (तथा 'रानी केतकी की कहानी' — इंशा अल्ला खाँ)।
65	UP Police SI 2021	हिंदी का प्रथम नाटक 'नहुष' किसने लिखा, जो भारतेंदु हरिश्चंद्र के पिता थे?	**गोपालचंद्र उपनाम 'गिरिधरदास'** ने (और हिंदी का प्रथम अभिनीत नाटक शीतलाप्रसाद त्रिपाठी कृत 'जानकी मंगल' है जिसमें स्वयं भारतेंदु ने लक्ष्मण का अभिनय किया था)।
66	CTET / KVS 2023	साल 1955 में गठित साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित होने वाली **प्रथम हिंदी कृति** कौन-सी थी?	**'हिमतरंगिणी'** (1955) — कवि: **माखनलाल चतुर्वेदी** ('एक भारतीय आत्मा' — प्रसिद्ध कविता: पुष्प की अभिलाषा)।
67	Current Exam 2025–26	वर्ष 2023 और वर्ष 2024 के लिए हिंदी भाषा का प्रतिष्ठित **साहित्य अकादमी पुरस्कार** क्रमशः किन साहित्यकारों और उनकी किन कृतियों को प्रदान किया गया?	**2023:** संजीव (उपन्यास 'मुझे पहचानो') और **2024:** गगन गिल (कविता संग्रह **'मैं जब तक आई बाहर'**)।
68	Current Exam 2025–26	के.के. बिड़ला फाउंडेशन द्वारा दिया जाने वाला 33वां (2023) और 34वां (2024) **व्यास सम्मान** किन हिंदी लेखकों को प्रदान किया गया?	**33वां (2023):** पुष्पा भारती (संस्मरण 'यादें, यादें और यादें') तथा **34वां (2024): सूर्यबाला** (उपन्यास **'कौन देस को वासी: वेणु की डायरी'**)।
69	UP Police 2024	मुंशी प्रेमचंद का अधूरा (अपूर्ण) उपन्यास कौन-सा है, जिसे बाद में उनके पुत्र अमृतराय ने पूरा किया और जिन्होंने प्रेमचंद की जीवनी 'कलम का सिपाही' लिखी?	प्रेमचंद का अधूरा उपन्यास **'मंगलसूत्र'** है (जबकि जयशंकर प्रसाद का अधूरा उपन्यास **'इरावती'** है)।
70	DSSSB / KVS 2024	सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' की जीवनी 'निराला की साहित्य साधना' किसने लिखी और शरतचंद्र चट्टोपाध्याय की जीवनी 'आवारा मसीहा' किसकी अमर कृति है?	'निराला की साहित्य साधना' — **डॉ. रामविलास शर्मा**; 'आवारा मसीहा' — **विष्णु प्रभाकर**।
71	UPPSC RO/ARO 2023	'अशोक के फूल', 'कुटज', 'आलोक पर्व', 'बाणभट्ट की आत्मकथा', 'चारु चंद्रलेख', 'पुनर्नवा' और 'अनामदास का पोथा' किस महान साहित्यकार की रचनाएँ हैं?	**आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी** (ध्यान रहे: 'बाणभट्ट की आत्मकथा' नाम में आत्मकथा होने के बावजूद विधा की दृष्टि से एक **उपन्यास** है!)।
72	SSC GD 2024	'चिंतामणि' (4 भाग) और 'रस मीमांसा' किस प्रसिद्ध आलोचक के निबंध एवं आलोचना ग्रंथ हैं?	**आचार्य रामचंद्र शुक्ल** (प्रसिद्ध निबंध: भाव या मनोविकार, उत्साह, श्रद्धा और भक्ति, करुणा, कविता क्या है)।

प्र. सं.	परीक्षा एवं वर्ष	वास्तविक परीक्षा प्रश्न (PYQ)	सही उत्तर एवं सटीक व्याकरणिक व्याख्या
73	UP Police 2024	'अंधा युग' (महाभारत के अंतिम दिन पर आधारित गीतिनाट्य), 'गुनाहों का देवता' और 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' किसकी रचनाएँ हैं?	**धर्मवीर भारती** (अन्य कृतियाँ: कनुप्रिया, ठंडा लोहा, ठेले पर हिमालय)।
74	BPSC TRE 2024	'आषाढ़ का एक दिन', 'लहरों के राजहंस' और 'आधे-अधूरे' हिंदी के किस प्रसिद्ध आधुनिक नाटककार की कृतियाँ हैं?	**मोहन राकेश**।
75	RPSC / MPPSC 2024	'तमस' (भारत विभाजन की त्रासदी पर आधारित उपन्यास) और 'चीफ की दावत' कहानी के लेखक कौन हैं?	**भीष्म साहनी** (जबकि विभाजन पर आधारित 'झूठा सच' यशपाल का और 'कितने पाकिस्तान' कमलेश्वर का उपन्यास है)।
76	UPPSC CSAT 2023	"उसने कहा था" (1915 ई. — फ्लैशबैक पद्धति पर लिखी गई हिंदी की कालजयी कहानी, मुख्य पात्र: लहना सिंह) के लेखक कौन हैं?	**चंद्रधर शर्मा 'गुलेरी'** (इनकी केवल 3 कहानियाँ हैं: उसने कहा था, बुद्धू का काँटा और सुखमय जीवन)।
77	CTET Jan 2024	भाषा अधिगम और अर्जन (Language Acquisition vs Learning) के संदर्भ में नोम चॉम्स्की (Noam Chomsky) ने किस जन्मजात क्षमता की अवधारणा दी है?	**भाषा अर्जन यंत्र (LAD — Language Acquisition Device)** और सार्वभौमिक व्याकरण (Universal Grammar — UG), जिसके अनुसार प्रत्येक बच्चा भाषा सीखने की जन्मजात क्षमता के साथ पैदा होता है।
78	CTET July 2024	भाषा कौशल के चार सोपानों का सही मनोवैज्ञानिक क्रम क्या है?	**सुनना → बोलना → पढ़ना → लिखना (LSRW: श्रवण, वाचन, पठन, लेखन)**। इनमें 'सुनना और पढ़ना' **ग्राह्यात्मक कौशल (Receptive Skills)** हैं, जबकि 'बोलना और लिखना' **अभिव्यक्तात्मक कौशल (Productive/Expressive Skills)** हैं!
79	CTET 2024	लेव वायगोत्स्की (Lev Vygotsky) के सामाजिक-सांस्कृतिक सिद्धांत के अनुसार बच्चे द्वारा अपने कार्य को दिशा देने के लिए स्वयं से की जाने वाली बातचीत को क्या कहा जाता है?	**निज वाक् / व्यक्तिगत वाक् (Private Speech)** (जबकि जीन पियाजे ने इसे 'अहं-केंद्रित वाक्' — Egocentric Speech कहा था)।
80	CTET 2024	संविधान की आठवीं अनुसूची और NEP 2020 के अंतर्गत 'त्रि-भाषा सूत्र' (Three-Language Formula — कोठारी आयोग 1964–66) में कक्षा में 'बहुभाषिकता' (Multilingualism) को किस रूप में देखा जाना चाहिए?	एक **संसाधन और संपत्ति (Resource and Asset)** के रूप में, न कि बाधा या बोझ के रूप में।
81	UPPSC RO/ ARO 2023	विशेषण और विशेष्य की दृष्टि से "नीली साड़ी में एक दर्जन केले और दो लीटर दूध है" वाक्य में कुल कितने विशेषण और कितने विशेष्य हैं?	**3 विशेषण** (`नीली` — गुणवाचक, `एक दर्जन` — निश्चित संख्यावाचक, `दो लीटर` — निश्चित परिमाणवाचक) और **3 विशेष्य** (`साड़ी`, `केले`, `दूध`)।
82	UPPSC RO/ ARO 2023	निम्नलिखित में से कौन-सा शब्द 'विशेषण' है: (A) उपन्यास (B) आकर्षण (C) आकृष्ट / औपन्यासिक (D) अनुराग?	**(C) आकृष्ट और औपन्यासिक** विशेषण हैं (जबकि `उपन्यास`, `आकर्षण` और `अनुराग` विशेष्य/संज्ञा हैं; अनुराग का विशेषण `अनुरक्त` होता है!)।
83	UP Police 2024	'अर्ध-तत्सम' (Semi-Tatsama) शब्द क्या होते हैं और 'अग्नि' का अर्ध-तत्सम व तद्भव रूप क्या है?	जो शब्द संस्कृत से तद्भव बनने की यात्रा के बीच में अटक गए: `अग्नि (तत्सम) → अगिन (अर्ध-तत्सम) → आग (तद्भव)`; इसी प्रकार `अक्षर → आखर (तद्भव) / अक्खर (अर्ध-तत्सम)`, `दैव → दई`, `रात्रि → रैन`।
84	SSC GD 2024	वाक्य के दो मुख्य अंग कौन-से होते हैं?	**उद्देश्य (Subject)** — जिसके विषय में कुछ कहा जाए, और **विधेय (Predicate)** — उद्देश्य के विषय में जो कुछ कहा जाए।
85	RPSC PSI 2023	रचना के आधार पर वाक्य के कितने भेद होते हैं और "जैसे ही सूर्योदय हुआ, वैसे ही कुहासा जाता रहा" कौन-सा वाक्य है?	रचना के आधार पर **3 भेद** (सरल, संयुक्त और मिश्र वाक्य) तथा अर्थ के आधार पर **8 भेद** होते हैं। "जैसे ही... वैसे ही" **मिश्र वाक्य (Complex Sentence)** है।
86	BPSC TRE 2024	संज्ञा उपवाक्य, विशेषण उपवाक्य और क्रियाविशेषण उपवाक्य की अचूक पहचान क्या है?	`कि` से शुरू होने वाला = **संज्ञा उपवाक्य**; `जो, जिसे, जिसका, जिसने` से शुरू होने वाला = **विशेषण उपवाक्य**; तथा `जब-तब, जहाँ-वहाँ, यदि-तो, क्योंकि, जैसे-वैसे` से शुरू होने वाला = **क्रियाविशेषण उपवाक्य**!
87	UP Police SI 2021	तार सप्तक (1943 ई.) के संपादक अज्ञेय थे। प्रथम तार सप्तक के 7 कवियों को याद रखने की ट्रिक और नाम क्या हैं?	ट्रिक **"अमुक भागने प्रगी"**: **अ**ज्ञेय, **मु**क्तिबोध, **ने**मिचंद्र जैन, **भा**रतभूषण अग्रवाल, **प्र**भाकर माचवे, **गि**रिजाकुमार माथुर, **रा**मविलास शर्मा (द्वितीय सप्तक: 1951, तृतीय: 1959, चतुर्थ: 1979)।

प्र. सं.	परीक्षा एवं वर्ष	वास्तविक परीक्षा प्रश्न (PYQ)	सही उत्तर एवं सटीक व्याकरणिक व्याख्या
88	UPPSC CSAT 2024	'कामायनी' महाकाव्य में कुल कितने सर्ग हैं और इसके प्रथम तीन व अंतिम सर्ग का नाम क्या है?	कुल **15 सर्ग** हैं; प्रथम तीन सर्ग: **1. चिंता, 2. आशा, 3. श्रद्धा** (काम, वासना, लज्जा, कर्म, ईर्ष्या, इड़ा, स्वप्न, संघर्ष, निर्वेद, दर्शन, रहस्य) और 15वां अंतिम सर्ग: **आनंद**। (मनु = मन का प्रतीक, श्रद्धा = हृदय का प्रतीक, इड़ा = बुद्धि का प्रतीक)।
89	High Court RO 2024	'अष्टछाप' के कवियों में कालक्रम और काव्य-सौष्ठव की दृष्टि से सूरदास के बाद दूसरे सबसे प्रमुख कवि कौन माने जाते हैं जिन्हें "और कवि गढ़िया, नंददास जड़िया" कहा गया?	**नंददास** (प्रसिद्ध रचनाएँ: रासपंचाध्यायी, भँवरगीत, रसमंजरी)।
90	UP Police 2024	हिंदी भाषा का प्रथम महाकाव्य 'पृथ्वीराज रासो' में सर्गों/अध्यायों को क्या कहा गया है और इनकी कुल संख्या कितनी है?	पृथ्वीराज रासो के अध्यायों को **'समय'** कहा गया है और इसमें कुल **69 समय (सर्ग)** हैं (जबकि पद्मावत के 57 अध्यायों को **'खंड'** और रामचरितमानस के 7 अध्यायों को **'कांड'** कहा गया है)।
91	SSC GD 2024	'अतिवृष्टि' का विलोम क्या है और 'अनातुर' तथा 'अनुग्रह' का विलोम क्या है?	**अतिवृष्टि ↔ अनावृष्टि**, **अनातुर ↔ आतुर**, **अनुग्रह ↔ विग्रह** (जबकि **संधि** का विलोम भी **विग्रह** और **समास** का विलोम **व्यास** होता है!)।
92	UPPSC RO/ ARO 2023	'समास' का विलोम शब्द क्या होता है?	**व्यास** (समास = संक्षिप्त करना, व्यास = विस्तार करना; यह परीक्षा में सर्वाधिक बार गलत किया जाने वाला प्रश्न है जहाँ छात्र 'विग्रह' लगा देते हैं!)।
93	CTET 2024	'द्विगु' शब्द में स्वयं कौन-सा समास है और 'बहुव्रीहि' शब्द में कौन-सा समास है?	**द्विगु** (दो गायों का समाहार) में स्वयं **द्विगु समास** है, और **बहुव्रीहि** (बहुत है व्रीहि अर्थात् धान जिसके पास) में स्वयं **बहुव्रीहि समास** है!
94	MPPSC 2024	'तत्पुरुष' में कौन-सा समास है और 'द्वंद्व' में कौन-सा समास है?	**तत्पुरुष** (तस्य पुरुषः — उसका पुरुष) में **संबंध तत्पुरुष** है और **द्वंद्व** में **द्वंद्व समास** है।
95	UP Police 2024	'उच्छ्वास' और 'उच्छृंखल' का सही संधि-विच्छेद क्या है?	**उत् + श्वास = उच्छ्वास** और **उत् + शृंखल = उच्छृंखल** (व्यंजन संधि का नियम: **त्** के बाद **श** आने पर **त्** का **च्** और **श** का **छ** हो जाता है)।
96	RPSC PSI 2023	'तद्धित प्रत्यय' और 'कृत् प्रत्यय (कृदंत)' में क्या अंतर है?	**कृत् प्रत्यय** क्रिया (धातु) के अंत में जुड़ते हैं (जैसे **लिख + आवट = लिखावट**, **पढ़ + आई = पढ़ाई**), जबकि **तद्धित प्रत्यय** संज्ञा, सर्वनाम और विशेषण के अंत में जुड़ते हैं (जैसे **मानव + ता = मानवता**, **सोना + आर = सुनार**, **अपना + पन = अपनापन**)।
97	BPSC TRE 2024	कामताप्रसाद गुरु के अनुसार विराम चिह्नों की संख्या कितनी है और उन्होंने किस एकमात्र चिह्न को छोड़कर शेष सभी विराम चिह्नों को अंग्रेजी से लिया हुआ माना है?	**20 विराम चिह्न**; उन्होंने केवल **पूर्ण विराम (।)** को हिंदी/संस्कृत का मूल चिह्न माना है, शेष सभी को अंग्रेजी से आगत माना है।
98	UPPSC CSAT 2024	'अर्धस्वर' किन व्यंजनों को कहा जाता है और 'प्रकंपित/लुंठित' व्यंजन कौन-सा है?	**य** और **व** को अर्धस्वर कहा जाता है तथा **र** को प्रकंपित/लुंठित व्यंजन कहा जाता है।
99	UP Police SI 2024	अमीर खुसरो का वास्तविक नाम क्या था और उनका जन्म उत्तर प्रदेश के किस जिले (पटियाली) में हुआ था?	वास्तविक नाम **अबुल हसन यमीनुद्दीन खुसरो** था; जन्म **एटा (वर्तमान कासगंज जिले के पटियाली कस्बे)** में 1253 ई. में हुआ था; इन्हें 'तूती-ए-हिंद' (हिंदुस्तान की तूती) कहा जाता है।
100	All-India Master PYQ	देवनागरी लिपि का विकास किस प्राचीन भारतीय लिपि से हुआ है और यह किस प्रकार की लिपि है?	देवनागरी लिपि का विकास **ब्राह्मी लिपि (उत्तरी शैली → गुप्त लिपि → सिद्धमातृका/कुटिल लिपि → नागरी)** से हुआ है; यह बाएँ से दाएँ लिखी जाने वाली एक **आक्षरिक (Syllabic / Alphasyllabary)** एवं वैज्ञानिक ध्वन्यात्मक लिपि है।

भाग (ग): बुक 12 — मास्टर एनसाइक्लोपीडिया टेबल (व्याकरण सूत्र, शब्द-कोष, छंद एवं साहित्य मानक)

क्र.सं.	व्याकरणिक कोटि / नियम / संप्रदाय	सूत्र / पहचान चिह्न / वर्गीकरण मानक	उच्च-आवृत्ति परीक्षा उदाहरण (Examples)	परीक्षा में फँसाने वाला अपवाद / विशेष नियम
1	**कंठ्य वर्ण**	अकुहविसर्जनीयानां कंठः	**अ, आ, क, ख, ग, घ, ङ, ह, विसर्ग (ः)**	**ह** को काकल्य/स्वरयंत्रमुखी वर्ण भी कहते हैं।
2	**तालव्य वर्ण**	इचुयशानां तालुः	**इ, ई, च, छ, ज, झ, ञ, य, श**	**च, छ, ज, झ** स्पर्श-संघर्षी भी कहलाते हैं।
3	**मूर्धन्य वर्ण**	ऋटुरषाणां मूर्धा	**ऋ, ट, ठ, ड, ढ, ण, र, ष, ड़, ढ़**	**र** लुंठित है और **ड़, ढ़** उत्क्षिप्त/द्विगुण व्यंजन हैं।
4	**दंत्य एवं वर्त्स्य वर्ण**	लृतुलसानां दंताः	**त, थ, द, ध, न, ल, स** (**न, र, ल, स, ज** को वर्त्स्य भी कहते हैं)	**ल** पार्श्विक व्यंजन है।
5	**ओष्ठ्य, दंतोष्ठ्य, कंठतालव्य व कंठोष्ठ्य**	संयुक्त उच्चारण स्थान	ओष्ठ्य: **उ, ऊ, प-वर्ग**; दंतोष्ठ्य: **व, फ**; कंठतालव्य: **ए, ऐ**; कंठोष्ठ्य: **ओ, औ**	**व** का उच्चारण स्थान 'दंतोष्ठ्य' है (सर्वाधिक बार पूछा गया प्रश्न)।
6	**अल्पप्राण बनाम महाप्राण**	श्वास वायु की मात्रा	अल्पप्राण: वर्ग का **1, 3, 5** + **य, र, ल, व** + 11 स्वर; महाप्राण: वर्ग का **2, 4** + **श, ष, स, ह**	सभी स्वर अल्पप्राण और सघोष होते हैं।
7	**अघोष बनाम सघोष**	स्वरतंत्री कंपन	अघोष (13): वर्ग का **1, 2** + **श, ष, स**; सघोष (31): वर्ग का **3, 4, 5** + **य, र, ल, व, ह** + 11 स्वर	**ह** महाप्राण और **सघोष** है, जबकि **श, ष, स** महाप्राण और अघोष हैं!
8	**स्वर संधि के 5 भेद**	दीर्घ, गुण, वृद्धि, यण्, अयादि	दीर्घ (**सत्याग्रह**), गुण (**महोदय, महर्षि**), वृद्धि (**सदैव, वनौषधि**), यण् (**प्रत्येक, स्वागत**), अयादि (**नयन, पावक**)	**अक्षौहिणी** और **प्रौढ़** गुण संधि के अपवाद (वृद्धि संधि) हैं।
9	**व्यंजन संधि के प्रमुख नियम**	**1 → 3** और **1 → 5** तथा **त्** नियम	**दिग्गज (दिक्+गज)**, **जगन्नाथ (जगत्+नाथ)**, **उज्ज्वल (उत्+ज्वल)**, **उल्लंघन (उत्+लंघन)**, **सच्छास्त्र (सत्+शास्त्र)**	**अहम् + कार = अहंकार**, **सम् + तोष = संतोष**, **सम् + कृति = संस्कृति**।
10	**विसर्ग संधि के प्रमुख नियम**	विसर्ग का **ओ, र, श, ष, स** या लोप	**मनोरथ (मनः+रथ)**, **निर्धन (निः+धन)**, **निश्चल (निः+चल)**, **निष्पट (निः+कपट)**, **नमस्ते (नमः+ते)**	**अतः + एव = अतएव** और **मनः + चिकित्सक = मनश्चिकित्सक** (**मनोचिकित्सक** अशुद्ध है!)।
11	**समास के 6 भेद**	अव्ययीभाव, तत्पुरुष, कर्मधारय, द्विगु, द्वंद्व, बहुव्रीहि	**यथाशक्ति** (अव्ययीभाव), **राजपुत्र** (तत्पुरुष), **नीलकमल** (कर्मधारय), **चौराहा** (द्विगु), **माता-पिता** (द्वंद्व), **लंबोदर** (बहुव्रीहि)	संज्ञा की आवृत्ति (**रातोंरात**, **धड़ाधड़**) में सदैव **अव्ययीभाव समास** होता है।
12	**रस एवं स्थायी भाव (11)**	भरतमुनि (नाट्यशास्त्र) व परवर्ती आचार्य	श्रृंगार (रति), हास्य (हास), करुण (शोक), रौद्र (क्रोध), वीर (उत्साह), भयानक (भय), वीभत्स (जुगुप्सा), अद्भुत (विस्मय), शांत (निर्वेद), वात्सल्य (वत्सलता), भक्ति (भगवद्-रति)	संचारी भाव **33** और सात्त्विक अनुभाव **8** होते हैं; श्रृंगार रस को 'रसराज' (भोजराज) कहा जाता है।
13	**मात्रिक छंद मात्रा सारणी**	सम, अर्धसम व विषम मात्रिक	चौपाई (16), रोला (24), गीतिका (26), हरिगीतिका (28); दोहा (13-11), सोरठा (11-13), बरवै (12-7), उल्लाला (15-13)	कुंडलिया = **दोहा + रोला** (6 चरण); छप्पय = **रोला + उल्लाला** (6 चरण)।
14	**भक्ति के दार्शनिक संप्रदाय**	आचार्य एवं दर्शन मत	**अद्वैतवाद:** शंकराचार्य; **विशिष्टाद्वैतवाद:** रामानुजाचार्य (श्री संप्रदाय); **द्वैतवाद:** मध्वाचार्य (ब्रह्म संप्रदाय); **शुद्धाद्वैतवाद:** वल्लभाचार्य (रुद्र/पुष्टिमार्ग); **द्वैताद्वैतवाद:** निंबार्काचार्य (सनकादिक)	चैतन्य महाप्रभु = **अचिंत्य भेदाभेदवाद (गौड़ीय संप्रदाय)**; हित हरिवंश = राधावल्लभ संप्रदाय; हरिदास = सखी/टट्टी संप्रदाय।
15	**काव्यशास्त्र के 6 संप्रदाय**	भारतीय काव्यशास्त्र के प्रवर्तक	**रस संप्रदाय:** भरतमुनि; **अलंकार संप्रदाय:** भामह; **रीति संप्रदाय:** वामन; **ध्वनि संप्रदाय:** आनंदवर्धन (ध्वन्यालोक); **वक्रोक्ति संप्रदाय:** कुंतक; **औचित्य संप्रदाय:** क्षेमेंद्र	आचार्य विश्वनाथ का सूत्र: "वाक्यं रसात्मकं काव्यम्"; पंडितराज जगन्नाथ: "रमणीयार्थ प्रतिपादकः शब्दः काव्यम्"।

क्वालिटी ऑडिट, त्रुटि-निवारण एवं सामान्य हिंदी महत्वपूर्ण परीक्षा तथ्य अपग्रेड पैक (2024–2026)

(क) 10 सबसे अधिक भ्रमित करने वाले व्याकरणिक अपवाद एवं सामान्य परीक्षा गलतियाँ

• **1. अक्षौहिणी और प्रौढ़ में गुण संधि का भ्रम (गुण बनाम वृद्धि संधि अपवाद):** 'अक्ष + ऊहिनी = अक्षौहिणी' तथा 'प्र + ऊढ़ = प्रौढ़' (एवं 'स्व + ईर = स्वैर') गुण संधि के अपवाद हैं और **वृद्धि स्वर संधि** के अंतर्गत आते हैं।

• **2. दिगंबर और वागीश में संधि-विच्छेद की हलंत त्रुटि:** व्यंजन संधि के प्रथम नियम (क्, च्, ट्, त्, प् का तीसरे वर्ण में परिवर्तन) में प्रथम पद के अंतिम वर्ण के नीचे हलंत (्) अनिवार्य है— **दिक् + अंबर = दिगंबर**, **वाक् + ईश = वागीश**, **षट् + दर्शन = षड्दर्शन**।

• **3. संख्यावाची होते हुए भी 'द्विगु समास' न होने के अपवाद:** यदि संख्यावाची शब्द किसी तीसरे विशेष अर्थ की ओर संकेत करे तो **बहुव्रीहि समास** होता है (जैसे— दशानन, चतुर्भुज, त्रिलोचन)। नदी के नाम के पूर्व संख्या जुड़ने पर संस्कृत व्याकरण के 'नदीभिः' सूत्र के अनुसार **अव्ययीभाव समास** होता है (जैसे— **पंचगंगम्, द्वियमुनम्**)।

• **4. 'करण कारक' और 'अपादान कारक' में 'से' विभक्ति का भ्रम:** साधन के अर्थ में **करण कारक** होता है, किंतु **अलगाव, तुलना, डर (भय), लज्जा, घृणा, आरंभ और नियमपूर्वक शिक्षा ग्रहण करने** के योग में सदैव **अपादान कारक** होता है (जैसे— "मोहित सोहन से लंबा है", "शिष्य गुरु से शिक्षा लेता है")।

• **5. सकर्मक और अकर्मक क्रिया की पहचान:** "पक्षी आकाश में उड़ते हैं" में 'आकाश में' अधिकरण कारक है, कर्म नहीं। क्रिया से पहले **'क्या'** और **'किसको'** प्रश्न करने पर उत्तर मिले तभी सकर्मक क्रिया होती है (उड़ना, सोना, रोना, हँसना, तैरना **अकर्मक क्रियाएँ** हैं)।

• **6. नित्य बहुवचन और नित्य एकवचन शब्दों का भ्रम: प्राण, दर्शन, आँसू, होश, बाल, हस्ताक्षर, समाचार, दाम, अक्षत, लोग** का प्रयोग सदैव **बहुवचन** में होता है, जबकि **जनता, भीड़, पुलिस, प्रत्येक, हर एक, माल, सोना, चाँदी, घी, पानी, आकाश** का प्रयोग सदैव **एकवचन** में होता है।

• **7. मानक वर्तनी में 'उज्ज्वल', 'कवयित्री', 'ज्योत्स्ना' और 'शृंगार':** शुद्ध रूप **उज्ज्वल** (दोनों 'ज्' आधे), **कवयित्री**, **ज्योत्स्ना** (आधा त् और आधा स्), **संन्यासी**, **अंत्याक्षरी**, **जिजीविषा**, **हिरण्यकशिपु**, **अनुगृहीत** और **आशीर्वाद** हैं।

• **8. 'अभिज्ञ' और 'अनभिज्ञ' के विलोम शब्द का जाल:** 'अभिज्ञ' का अर्थ **'जानने वाला'** होता है, अतः इसका शुद्ध विलोम **'अनभिज्ञ'** है, जबकि **'विज्ञ' का विलोम 'अज्ञ'** है।

• **9. सार्वनामिक विशेषण बनाम निश्चयवाचक सर्वनाम:** जब सर्वनाम किसी संज्ञा के ठीक पहले आकर उसकी विशेषता बताए तो **सार्वनामिक विशेषण** होता है (**"यह पुस्तक** मेरी है"), और अकेले आए तो **निश्चयवाचक सर्वनाम** (**"यह** मेरी पुस्तक है")।

• **10. छंद गणना में चंद्रबिंदु (ँ) और अनुस्वार (ं) की मात्रा:** ह्रस्व स्वर पर **चंद्रबिंदु (ँ)** लगने पर मात्रा **लघु (1)** ही रहती है ('हँसी' = 1+2 = 3 मात्राएँ), जबकि **अनुस्वार (ं)** या **विसर्ग (ः)** या संयुक्त अक्षर से पूर्व मात्रा **गुरु (2)** गिनी जाती है ('हंस' = 2+1 = 3 मात्राएँ)।

(ख) नवीनतम 2024–2026 परीक्षा ट्रेंड पर आधारित 25 अति-महत्वपूर्ण वन-लाइनर प्रश्नोत्तर

क्र.	प्रश्न / व्याकरणिक बिंदु (UPPSC RO/ARO, PCS, Police SI, SSC GD, CTET)	सटीक उत्तर एवं मुख्य व्याख्या
1	संविधान के किस अनुच्छेद में संघ की राजभाषा हिंदी और लिपि देवनागरी घोषित है?	**अनुच्छेद 343(1)** (भाग 17, अनुच्छेद 343 से 351)
2	पश्चिमी हिंदी और राजस्थानी हिंदी का विकास किस अपभ्रंश से हुआ है?	**शौरसेनी अपभ्रंश** (पूर्वी हिंदी: अर्धमागधी; बिहारी हिंदी: मागधी अपभ्रंश)
3	'क', 'ग', 'ज', 'फ' ध्वनियाँ जिनके नीचे नुक्ता लगा हो, किस भाषा की हैं?	**अरबी-फारसी** (राजा शिवप्रसाद 'सितारेहिंद' द्वारा प्रचलित आगत ध्वनियाँ)
4	उच्चारण स्थान की दृष्टि से 'च, छ, ज, झ, ञ, य, श' किस वर्ग में आते हैं?	**तालव्य (Palatal)** — सूत्र: इचुयशानां तालुः
5	हिंदी वर्णमाला में 'अयोगवाह' वर्ण कौन-से हैं और इन्हें यह नाम किसने दिया?	**अं (अनुस्वार) और अः (विसर्ग)** — नामकरण: **आचार्य किशोरीदास वाजपेयी**
6	'प्रत्येक', 'अन्वय' और 'स्वागत' शब्दों में कौन-सी स्वर संधि है?	**यण स्वर संधि** (प्रति + एक, अनु + अय, सु + आगत)
7	'मनः + रथ = मनोरथ' और 'यशः + दा = यशोदा' में कौन-सी संधि है?	**विसर्ग संधि** (विसर्ग का 'ओ' में परिवर्तन)

क्र.	प्रश्न / व्याकरणिक बिंदु (UPPSC RO/ARO, PCS, Police SI, SSC GD, CTET)	सटीक उत्तर एवं मुख्य व्याख्या
8	'यथाशक्ति', 'आजीवन' और 'रातों-रात' शब्दों में कौन-सा समास है?	**अव्ययीभाव समास** (प्रथम पद अव्यय/उपसर्ग या संज्ञा की पुनरुक्ति)
9	'नीलकमल', 'महादेव' और 'चरणकमल' में कौन-सा समास है?	**कर्मधारय समास** (विशेषण-विशेष्य तथा उपमान-उपमेय संबंध)
10	'अतिरिक्त', 'अत्यधिक' और 'अध्ययन' में क्रमशः कौन-से उपसर्ग प्रयुक्त हैं?	**अति**, **अति**, और **अधि** (अधि + अयन = अध्ययन)
11	'लुटेरा', 'चचेरा' और 'ममेरा' शब्दों में कौन-सा प्रत्यय है?	**'एरा' प्रत्यय**
12	'गोधूम', 'कर्पट' और 'हरिद्रा' के शुद्ध तद्भव रूप क्या हैं?	क्रमशः **गेहूँ**, **कपड़ा**, और **हल्दी**
13	'अलमारी, आलपीन, गमला, चाबी, साबुन, तौलिया' किस भाषा के शब्द हैं?	**पुर्तगाली भाषा** के विदेशज शब्द
14	'कैंची, चाकू, तोप, बारूद, लाश, बेगम, दरोगा' किस भाषा के शब्द हैं?	**तुर्की भाषा** के शब्द
15	"राम से चला नहीं जाता" और "पक्षी से उड़ा जाता है" में कौन-सा वाच्य है?	**भाववाच्य** (अकर्मक क्रिया + भाव की प्रधानता)
16	"वह खाकर सो गया" वाक्य में 'खाकर' किस प्रकार की क्रिया है?	**पूर्वकालिक क्रिया**
17	'जंगल की आग', 'समुद्र की आग' और 'पेट की आग' के लिए एक शब्द क्या है?	क्रमशः **दावाग्नि**, **बड़वाग्नि**, और **जठराग्नि**
18	'कुल' और 'कूल' समश्रुत भिन्नार्थक शब्द-युग्म का सही अर्थ-भेद क्या है?	**कुल** = **वंश** / **योग**, **कूल** = **किनारा** / **तट**
19	"कनक-कनक ते सौ गुनी..." तथा "तीन बेर खाती थीं वे तीन बेर खाती हैं" में कौन-सा अलंकार है?	**यमक अलंकार** (शब्द की आवृत्ति व प्रत्येक बार अर्थ भिन्न)
20	"रहिमन पानी राखिए..." एवं "सुबरन को ढूँढ़त फिरत, कवि, व्यभिचारी, चोर" में कौन-सा अलंकार है?	**श्लेष अलंकार** (एक ही शब्द के प्रसंगानुसार अनेक अर्थ)
21	'चौपाई' और 'दोहा' छंद में मात्राओं का क्रम क्या होता है?	**चौपाई:** प्रत्येक चरण में **16 मात्राएँ**; **दोहा:** विषम में **13**, सम में **11 मात्राएँ**
22	भरतमुनि के 'नाट्यशास्त्र' के अनुसार रसों की संख्या कितनी है और नौवाँ रस कौन-सा है?	भरतमुनि के अनुसार **8 रस**; नौवाँ रस **शांत रस (स्थायी भाव: निर्वेद)** है
23	'जूही की कली' और 'राम की शक्तिपूजा' के रचयिता कौन हैं?	**सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'**
24	हिंदी का प्रथम महाकाव्य और खड़ी बोली का प्रथम महाकाव्य कौन-सा है?	प्रथम महाकाव्य: **पृथ्वीराज रासो (चंदबरदाई)**; खड़ी बोली का प्रथम महाकाव्य: **प्रियप्रवास (हरिऔध)**
25	अक्टूबर 2024 के बाद भारत में कुल कितनी 'शास्त्रीय भाषाएँ (Classical Languages)' हैं?	**11 शास्त्रीय भाषाएँ** (तमिल, संस्कृत, कन्नड़, तेलुगु, मलयालम, ओडिया + मराठी, पालि, प्राकृत, असमिया, बांग्ला)